HM-08

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

FAMILY RESOURCES MANAGEMENT & INTERIOR DESIGNING

परिवार संसाधन एवं आन्तरिक सज्जा

HM-08

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

संरक्षक	**अध्यक्ष**
प्रो. अशोक शर्मा	**प्रो. एल.आर. गुर्जर**
कुलपति	निदेशक (अकादमिक)
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक एवं सदस्य

संयोजक	**समन्वयक**
प्रो.(डॉ.) एच.बी.नन्दवाना	**डॉ. क्षमता चौधरी**
निदेशक,सतत शिक्षा	सहायक आचार्य, अंग्रेजी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सदस्य

प्रो. नीलिमा वर्मा
आचार्य,
महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भोपाल(म. प्र.)

प्रो.शशि जैन
आचार्य,
एम.पी.यू.ए.टी. उदयपुर,

प्रो. सुमन सिंह
आचार्य,
एम.पी.यू.ए.टी. उदयपुर

श्रीमती अंजली सक्सेना
व्याख्याता ,
माँ भारती पी.जी.कॉलेज,कोटा

पाठ्य लेखन	**सम्पादक (भाषा)**
समन्वयक	**डॉ. मीता शर्मा**
डॉ. क्षमता चौधरी	सहायक आचार्य, हिन्दी
सहायक आचार्य, अंग्रेजी	वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	

पाठ्यक्रम लेखन

1 **प्रो. नीलिमा वर्मा**
आचार्य, महारानी लक्ष्मीबाई
स्नातकोत्तरमहाविद्यालय,आचार्य,
भोपाल(म. प्र.)

2 **डॉ. बिंदु चतुर्वेदी**
व्याख्याता,
जे.डी.बी. कॉलेज, कोटा

3 **सुश्री मीनाक्षी यादव**
व्याख्याता,
एस.के. टी.टी. कॉलेज, कोटा

4 **सुश्री रेनू शर्मा**
व्याख्याता,
शिव ज्योति कॉलेज, कोटा

5 **श्रीमती लता हुड्डा**
शोद्यार्थी, (जे.आर.एफ)
गृह विज्ञान
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,जोधपुर

6 **श्रीमती अंजली सक्सेना**
व्याख्याता ,
माँ भारती पी.जी.कॉलेज,कोटा

7 **सुश्री वीनू यादव**
व्याख्याता (अतिथि संकाय)
डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. अशोक शर्मा
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

प्रो. एल.आर. गुर्जर
निदेशक (अकादमिक)
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन 2016

इस सामग्री के किसी भी अंश को व.म.खु.वि.वि., कोटा, की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अन्यत्र पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। व.म.खु.वि.वि., कोटा के लिए कुलसचिव, व.म.खु.वि.वि., कोटा (राजस्थान) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

HM-08

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

इकाई संख्या	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
इकाई-1	पारिवारिक प्रबन्ध : एक परिचय	1
इकाई-2	प्रबंध प्रक्रिया	19
इकाई-3	साधन	34
इकाई-4	ऊर्जा व्यवस्थापन	47
इकाई-5	पारिवारिक आय	77
इकाई-6	घरेलू उपकरण	92
इकाई-7	आवासीय डिजाइनिंग	121
इकाई-8	डिजाइन	130
इकाई-9	कला के सिद्धान्त	142
इकाई-10	कला के तत्व	162
इकाई-11	फर्नीचर व्यवस्था	173
इकाई-12	सजावट	186
इकाई-13	पुष्प सज्जा	201
इकाई-14	गृह निर्माण की योजना	216
इकाई-15	सजावट एवं सफाई	230

इकाई-1

पारिवारिक प्रबन्ध : एक परिचय

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 परिभाषा
1.3 विशेषता
1.4 महत्व
1.5 उद्देश्य
1.6 सारांश
1.7 अभ्यास प्रश्न
1.8 संदर्भ ग्रन्थ

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत

- पारिवारिक प्रबंध की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- पारिवारिक प्रबंध की विशेषता के बारे में जान सकेंगे।
- पारिवारिक प्रबंध के महत्व की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

गृह प्रबन्ध एक संयुक्त शब्द है जो गृह तथा प्रबन्ध दो भिन्न शब्दों से मिलकर बना है। गृह प्रबन्ध को भली -भाँति समझने के लिए गृह एवं प्रबन्ध के बारे में जानकारी प्राप्त करना परम आवश्यक है, तभी हम गृह प्रबन्ध को ठीक तरह से समझ सकेंगे। तो आइये पहले हम गृह के बारे में जानकारी प्राप्त करते है। गृह अर्थात् घर (Home) का तात्पर्य परिवार से होता है जहाँ हम सुख-शान्ति, अमन-चैन से रहकर पारिवारिक जीवन

व्यतीत करते है। साधारण बोलचाल की भाषा में गृह तथा मकान का एक ही अर्थ लिया जाता है। परन्तु गृह प्रबन्ध की दृष्टि से उन दोनों ही शब्दों में व्यापक भिन्नता है। गृह (Home) एक भावनात्मक शब्द है। यहाँ परिवार के सभी सदस्य आपस में प्रेम, स्नेह, करूणा, प्यार एवं सहानुभूति से रहकर अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करते है । लक्ष्यों का निर्धारण कर जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि करते है। परिवार के सभी सदस्य सुख-दु:ख के क्षणों में एक दुसरे का सहयोगी बनकर व चिन्तामुक्त होकर जीवन-व्यापन करते है तथा सुख एवं शान्ति का अनुभव करते है। आपसी प्रेम व सहयोग से व्यक्ति कर्तव्यनिष्ठ, परिश्रमी, ईमानदार एवं लगनशील बनकर शारीरिक व मानसिक विकास करते हुए अपने चरम लक्ष्य(Goal) को प्राप्त करते है।

ठसके ठीक विपरीत मकान (Home) ईट, चना, गारा, सीमेंन्ट, पत्थर या मिटटी से बना हुआ आश्रयस्थल होता है जहाँ भावनात्मक एवं संवेगात्मक लगाव (सम्बन्ध) नहीं होता है। उस मकान को छोडने में व्यक्ति को कोई मानसिक क्षोभ, वेदना, कष्ट, एवं क्लेश नहीं होता है, बल्कि कभी-कभी बेहद खुशी होती है। उपर्युक्त सूक्ष्म विश्लेषणों के आधार पर मकान को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है -"किसी के भी रहने के सुरक्षित स्थान को मकान कहा जाता है।''

व्यक्ति का विकास परिवार में होता है । सुसंस्कृत परिवार से ही सभ्य समाज का निर्माण होता है। परिवार में भी व्यक्ति के सम्पूर्ण गुणों का विकास होता है। अत: गृह-शब्द के अन्तर्गत परिवार की भौतिक सुख-सुविधाओं के साथ-साथ परिवार के मानवीय सम्बन्धों, संसाधनों (Resource), सांस्कृतिक मान्यताओं, जीवन मूल्यों आदि का विकास होता है। परिवार में रहकर बालक जो सीखता है वह उसके जीवन पर्यन्त काम आता है। सुख-शान्ति व चैन से जीवन व्यापन करने के लिए सह आवश्यक है कि घर में पर्याप्त स्थान हो। घर खुला-खुला , हवादार एवं प्रकाशयुक्त हो जिसमें परिवार के हरेक सदस्यों की शारीरिक, मानसिक, लैगिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं चारित्रिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके । उसमें अपने कर्तव्यों, अधिकारों एवं

उत्तरदायित्वों को समझने की भावना का बेहतर विकास हो सके। अर्थात् व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का चहुँमुखी विकास हो सके।

आर्थिक स्थिति के कारण, भले ही घर का आकार छोटा ही क्यों न हो, परन्तु सुन्दर तरीके से सजा हुआ व्यवस्थित रूप ही घर की शोभा है, जो परिवार के सदस्यों के आपसी प्रेम, करूणा, सौहार्द्र, सहयोग, सहानुभुति, एकता, सगठन, उचित व्यवस्था तथा समन्वय (Co-ordination) से ही लाया जा सकता है। यह कोरी कहावत नहीं बल्कि शत-प्रतिशत सच हैं -" A house is built by hands but a home is built by hearts." अर्थात् मकान हाथों द्वारा बनाया जाता है जबकी घर हृदय (दिल) से बनता है। यदि घर के सदस्यों में आपस में प्रेम, दया, करूणा, त्याग, सहानुभुति, सहयोग समन्वय की भावना हो तो घर स्वर्ग से भी सुन्दर एवं मनोहारी दिखने लगता है। ऐसे घर में रहकर हरेक व्यक्ति नैसर्गिक व अलौकिक आनन्द प्राप्त कर सकता है तथा जीवन में सफता की सीढ़ियाँ पार करताहुआ विकास के चरम लक्ष्य को प्राप्त करता है। परन्तु यह सब तभी सम्भव व मुमकिन है जब परिवार के प्रत्येक सदस्यों में त्याग, बलिदान, ममता, दया, करूणा, विश्वास, एकता एवं सहयोग की भावना कूट-कूटकर भरी हो तथा व्यक्ति द्वेश, इर्ष्या, आलोचना, कटाक्ष, काम चोरी आदि नकारात्मक विचारो से पूर्णत: मुक्त हो।

1.2 गृह प्रबंध की परिभाषा

प्रबन्ध (Manegement) - प्रबन्ध एक व्यापक शब्द है। जिसका उपयोग घर व्यवसाय एवं औधौगिक जगत में कई अर्थो में किया जाता है। प्रबन्ध एक मानसिक प्रक्रिया है जो अनिवार्यत: हरेक घरो में परिवार के सदस्यों द्वारा सम्पन्न की जाती है। सरल शब्दों में कहा जा सकता है-"प्रबन्ध का अभिप्राय विचारपूर्वक की गई व्यवस्था से है।" प्रबन्ध विज्ञान है जिसके अन्तर्गत नियोजन, सगठन, समन्वय, क्रियान्वयन,उत्प्रेरणा, नियन्त्रण तथा मूल्यांकन आदि का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है। प्रबन्ध से तात्पर्य है, व्यक्ति के पास जो भी साधन (समय, ऊर्जा , धन,) उपलब्ध होते हैं। उनका उपयोग इस तरह से किया जाए कि उससे अधिकतम लक्ष्यों की

प्राप्ति हो सके। प्रबन्ध न केवल विज्ञान है बल्कि कला भी है जिसके द्वारा किसी भी संस्था (उद्योग, संस्थान, परिवार आदि) के सदस्यों, माल तथा क्रियाओं को नियन्त्रित किया जाता है व इसकी रक्षा हेतु आर्थिक सिद्धान्तों की सहायता ली जाती है। कला का अर्थ सौन्दर्य है। संसार के प्रत्येक व्यक्ति में सौन्दर्य की अनुभूति तथा प्रवृति किसी-न-किसी रूप में अवश्य ही विद्यमान रहती है यह एक आन्तरिक गुण है। जो सभी व्यक्तियों में समान रूप से नहीं पाया जाता है इन्ही कारणों से कुछ व्यक्ति सभी साधनों के रहते हुए भी कुशल प्रबन्धक नहीं हो पाते जबकी कुछ लोग प्रर्याप्त साधनों के अभाव में भी कुशल प्रबन्धक हो जाते है। प्रबन्ध के और गृह प्रबंध को कई विद्वानों ने कई अर्थो में परिभाषित किया है, जैसे -

(1) **Sharma and kaushik** ने प्रबन्ध के सम्बन्ध में लिखा है-

"Management involves wise use of time, many, energy, as well as unproved inethods in doing household jobs."

(2) **मैक फोरलैण्ड अनुसार (MacForland)** "प्रबन्ध वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रबन्धक विधिपूर्वक, समन्वित एवं सहयोगपूर्ण रवैया अपनाकर मानवीय प्रयासों के माध्यम से सौददेश्य संगठनों का सृजन, निर्देशक एवं संचालन करतें है।"

(3) **निकेल एवं डार्सी के मतानुसार,** "प्रबन्ध एक योजनाबद्ध क्रिया है जो इच्छित अन्त को प्राप्त करने के लिए निर्देशित करते हैं।

"The concept management may be said to be planned activity direct towards accomplishing desired ends. " – Nickell & Dorsey

(4) **मेरी कुशिंग नाइल्स (Mary Cushing Niles)** ने प्रबन्ध के सम्बन्ध में लिखा है, "अच्छा प्रबन्ध मानवीय व भौतिक शक्ति तथा समय के सर्वोत्तम उपयोग से उसमें भाग लेने वाले तथा परिवार की संतुष्टि के साथ सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति करना हैं।

(5) **प्रो. आर. सी. डेविस के अनुसार** , " प्रबन्ध कहीं पर भी कार्यकारी नेतृत्व का कार्य है। यह संगठन के उददेष्यों की पूर्ति हेतु इसकी क्रियाओं का आयोजन, संगठन तथा नियन्त्रण करने का कार्य हैं।" इस प्रकार

हम पाते है कि प्रबन्ध प्रशासनात्मक पक्ष है। यह परिवार की सफलता के लिए परमावश्यक है।

(6) **गुड जॉनसन (Good johnson)**ने " गृह प्रबन्ध" को इस प्रकार से परिभाषित किया है- "गृह प्रबन्ध सभी देशों में पाया जाने वाला सबसे अधिक सामान्य व्यवसाय है जिसमें अधिकाश व्यक्ति कार्यरत है व अधिकांश धन का उपयोग किया जाता है तथा यह व्यक्तियों के स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।"

"Home Management is common in all countries, most common occupation employing most people handling most money and is of fundamental importance for the heath of the people. " – Good Johnson

(7) **ग्रॉस एवं क्रैन्डल** के अनुसार, "गृह व्यवस्था एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें पारिवारिक साधनों का उपयोग करके आयोजन, नियन्त्रण एवं मूल्यांकन के द्वारा पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है।" Home Management is a mental process through which one plans. Conlrols and evaluates the use of family resources in order to achieve the family goals ("Gross & Cranall) उपर्युक्त परिभाषा को समझानें का एक छोटा सा प्रयास किया गया है । इसका महत्व इस तथ्य में निहित है कि हमारे पास जो कुछ भी साधन उपलब्ध है उनका उपयोग इस तरह से किया जाए जिससे कि अधिकतम लक्ष्यों की प्राप्ति हो सके ।

(8) **"National Conference of Family Life"** की उपसमिति के प्रतिवेदन के अनुसार- "गृह व्यवस्था निर्णय करने सम्बन्धी क्रियाओं की वह श्रृंखला है जिसमें पारिवारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पारिवारिक साधनों के प्रयोग की प्रक्रिया सम्मिलित है। गृह प्रबन्ध पारिवारिक जीवन का एक आवश्यक अंग है।

(9) **ग्रॉस एवं क्रेन्डल ; Gross and Crandall)** की एक अन्य परिभाषा के अनुसार "गृह व्यवस्था निर्णयों की श्रृंखला है जिसमें पारिवारिक साधनों का उपयोग कर पारिवारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने

की प्रक्रिया सम्मिलित है। इस प्रक्रिया में एक-दूसरे पर निर्भर तीन से कम या अधिक चरण होते है। ये चरण है-(1) आयोंजन (2) आयोंजन के विभिन्न तत्वों का नियन्त्रण, चाहे वह स्वंय के द्वारा किया गया हो या अन्यो के द्वारा, और (3) परिमापो का मूल्यांकन जो आगामी आयोजन के लिए मार्ग दर्शन होता है।''

''Home management consists of a series of decision making up the prose of using family resources to achieve family goals. The process consist of three more or less consecutive steps-planing controlling the clements of the plan whil carring , it through whet her it is canceled by oneself or by others and evaluating results preparalory to future planing''-Gross and Crandall

(10) **इरीन ओपेनहेम के शब्दों में**, ''गृह व्यवस्था की जड़ संस्कृति में होती है। भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में गृह उत्तरदायिंत्वों की व्यवस्था में भिन्नता होती है। स्वयं संस्कृति मे भी प्रर्याप्त भिन्नता देखने को मिलती है।''

''Management of the home is rooted in the culture. There are vast differences in the way home responsilibility are managed in different culture. Even within a culture there is considerable variation .'' Irene Oppenheim

(11) **न्यूमैन** ने प्रबन्ध प्रक्रिया को प्रशासनिक क्रियात्मक के रूप में परिभाषित किया है जिसमे आयोंजन, संगठन साधनो की व्यवस्था, निर्देश तथा नियन्त्रण का समावेश् होता है।

(12) **राजमल पी. देवदास** ने गृह प्रबन्ध को निम्न प्रकार से पारिभाषित किया है- ''गृह प्रबन्ध में पारिवारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु पारिवारिक साधनों के उपयोग से सम्बन्धित निर्णयों को सम्मिलित किया जाता है।''Home managements consists of making decision about using family resources to achieve family goals.

" **Rajmal P.Devdas** पी. देवदास ने गृह प्रबन्ध की तुलना बाँध से की है। इनके अनुसार, "गृह-व्यवस्था एक बाँध के समान है जिसमें साधनों को नियमित किया जाता है। "; Home management is like a dam by which resources are regulated.") जिस प्रकार बाँध बनाकर वर्षा से प्राप्त जल को एकत्रित किया जाता है और फिर पूरे वर्ष नगरवासियों को नियमित जलापूर्ति की जाती है। तथा खेती-बाड़ी का कार्य किया जाता है । जिससें अन्न जल संकट उत्पन्न नहीं होता है, ठीक उसी प्रकार गृह व्यवस्था में साधनों (समय, धन, ऊर्जा , भौतिक वस्तुएँ) को बाँध के रूपमें एकत्र कर लिया जाता है तथा इसकी सहायता से परिवार के प्रत्येक सदस्यों के लक्ष्यो एवं उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है। इस तथ्य को निम्न चित्र द्वारा प्रदशित किया गया है - उपर्युक्त चित्र में ज्ञान, कौशल, धन, ऊर्जा, समय आदि मानवीय एवं अमानवीय साधनों की वर्षा हो रही है। जिसे गृह प्रबन्ध में, बाँध के रूप में एकत्रित कर लिया गया है। फिर इन साधनों के उच्च शिक्षा अच्छा जीवन, मनोरंजन, यात्रा एवं व्यवस्था सम्बन्धी अन्य लक्ष्यों को प्राप्त किया जा रहा है ।उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर निश्चित तौर से यह कहा जा सकता है कि गृह प्रबन्ध एक मानसिक प्रक्रिया है जिसका अर्थ न केवल किसी कार्य को निष्पादित करना या पूरा करना ही होता है बल्कि यह अत्यन्त सूक्ष्म निपुणता एवं कुशलता पूर्वक बनाये जाने वाली योजना है जिसमें परिवारिक साधनों का उपयोग परिवार के सदस्यों के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। जाकि उन्हें अधिकतम लाभ एवं संतुष्टि मिल सके।

कौटजीन (Kotzin) ने गृह व्यवस्था को व्यावहारिक विज्ञान की संज्ञा दी गई है। इनके अनुसार गृह व्यवस्था को मापने का कोई यन्त्र या कोई इकाई नहीं होती है। जैसा कि औषधि विज्ञान में दवाईयों आदि को कुछ अंश तक मापा जाता है। हाँ गृह व्यवस्था में प्रबन्ध को निपुणता एवं कुशलता की स्थिति में मापा जाता है।जिस घर में पूर्व निर्धारित लक्ष्य कुछ सीमा तक प्राप्त कर लिए जाते है। तथा परिवार के सभी सदस्य वांछित लक्ष्यों को प्राप्त कर लेते है। तो उसे व्यवस्थित घर कहा जाता है तथा उस घर के

मालिक को कुशल प्रबन्धक की संज्ञा दी जाती है। अत: गृह प्रबन्ध का महत्व कार्य की समाप्ति से नहीं अपितु संतुष्टि से होता है। यद्यापि गृह-प्रबन्ध एक आन्तरिक गुण है। जो सभी व्यक्तियों में समान रूप से विद्यामान नहीं रहता है परन्तु उसे अर्जित किया जा सकता है। निरन्तर श्रम, मेहनत, अनुभव, परामर्श, शिक्षा आदि गुणों को अपनाया जा सकता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जहाँ समय के मूल्यों मे काफी वृद्रि हुई है। नये-नये तकनीक एवं समय, श्रम, ऊर्जा बचत करने वाले उपकरणों में वृद्रि हुई है। वहाँ गृह प्रबन्ध का महत्व और भी अधिक बढ़ा है। आज के बदलते परिवेश में जहाँ गृहिणियों का कार्य स्थल न केवल घर तक ही सीमित हो गया है बल्कि घर से बाहर जाकर भी नौकरी करने लगी है, ऐसी परिस्थितियों में गृह-कार्य का उत्तरदायित्व परिवार के सभी सदस्यों पर रहता हैं। संयुक्त परिवार के विघटन से गृहिणी का कार्य-भार और भी बढ़ा है। गृहिणी अपने घर की स्वामिनी, बच्चों की माता व शिक्षिका तथा पति की सहयोगिनी होती है। वहीं घर की आधार पिता है । वह घर की संचालिका एवं निर्देशिका होती है। अत: घर के सुचारू रूप से संचालन का भार मुख्यत: गृहिणी के कंधों पर ही रहती है । जिस घर की गृहिणी कुशल प्रबन्धक कार्य में निपुण, शिक्षित, अच्छी सूझ-बूझ वाली व विवेकशील होती है, उस घर का वातावरण सुखद एवं शान्तिपूर्ण होता है। परिवार के सदस्यों का जीवन स्तर एवं रहन-सहन का स्तर भी उच्च होता है। क्योंकि उसमें समस्याओं को सुलझानें, कल्पनाओं को मुर्त रूप देने एवं परिवार की एक सूत्र में बादनें का विलक्षण एवं अद्‌भुत गुण होता है। घर की साफ-सफाई, भोजन तैयार करना व परोसना, बच्चों का ललन-पालन करना, कपड़े धोना एवं प्रेस करना, बर्तन धोना, घर को व्यवस्थित करन, बच्चों को पढ़ाना-लिखाना बाजार से वस्तुएँ खरीदन, घर के बड़े-बुजुर्गो की देख-रेख करना आदि अनेकानेक कार्य गृहिणी को ही करना पड़ता है इस कार्य में वह घर के सदस्यों से सहयोग ले सकती है। इस प्रकार गृहिणी घर की नेता के साथ ही कार्यकर्ता भी है, तभी परिवार अपने वांच्छित लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

1.3 गृह प्रबंध की विशेषताएँ (Characteristics of Management)

(1) प्रबन्ध एक कला है (Management is an Art)- प्रबन्ध एक कला है। कला का अर्थ सौदर्य एवं चातुर्य से है । चातुर्य का प्रयोग कर व्यक्ति इच्छित परिणाम पा सकता है । यह प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान रहता है। संसार के प्रत्येक मनुष्य में सौदंर्य की अनुभूति एवं प्रदर्शन की प्रवृति किसी-न-किसी रूप में अवश्य उपस्थिति रहती है। कुछ व्यक्ति सीमीत साधनों में भी अच्छें प्रबन्धक होते हैं । जबकी कुछ व्यक्ति प्रर्याप्त साधन रहने पर भी अच्छे प्रबन्धक नहीं बन पाते इसी कारण प्रबन्धक को कला कहा जाता है। क्योंकि प्रबन्धकीय कला एक व्यक्तिगत कला है। जो अन्तर्ज्ञान से प्राप्त की जाती है। अच्छे प्रबन्ध अपने चातुर्य एवं कुशल प्रबन्धक से परिवार या संस्था के सदस्यों को एक सूत्र में बाँधकर अनुकूल परिस्थितियों एवं खुशनुमा वातावरण तैयार कर देते है। तथा विभिन्नआचार विचार एवं स्वभाव वाले व्यक्तियों से भी वांछित कार्य करवा लेते है। इस दृष्टि से प्रबन्ध कला है।

(2) प्रबन्ध एक विज्ञान है (Management is a Science) - प्रबन्ध कला के साथ विज्ञान भी है । इसके अन्तर्गत नियोजन, संगठन क्रियान्वय, नियन्त्रण, मूल्यांकन आदि का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है। प्रबन्ध को अनुसंधान, परीक्षण एवं प्रयोग की तरह लागू कर विधि, नियम एवं सिद्वान्त प्रतिपादित किये जाते है।इन सिद्वान्तो एवे नियमों को अपनाकर निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किये जा सकते है। इन्है सभी जगह लगभग समान रूप से लागू किया जा सकता है।

(3) प्रबन्ध एक विशिष्ट प्रक्रिया है (Management is a Special Process)- प्रबन्ध एक प्रक्रिया है। आयोजन संगठन, क्रियान्वय, नियन्त्रण मूल्यांकन आदि इसकी विशिष्ट प्रक्रिया है। जो उस समय तक चलती रहती है जब तक कि निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो जाती। जो लोग इस प्रक्रिया को चलाते है अर्थात् सम्पादन करते हैं वे प्रबन्धक (Manager) कहलाते है। इसका मुख्य कार्य सीमीत साधनों में

परिवार/संस्था के सदस्यों के लक्ष्यों की प्राप्ति करना होता है। ताकि उन्हें अधिकतम संतुष्टि एवं लाभ प्राप्त हो सके। जार्ज आर. टेरी ने भी प्रबन्ध को एक प्रक्रिया ही कहा है।

(4) प्रबन्ध एक सामाजिक प्रक्रिया है (Management is a Social Process)- प्रबन्ध एक सामाजिक प्रक्रिया है क्योंकि इसके कार्य मौलिक रूप से मानवीय क्रियाओं से सम्बन्धित है। यथार्थ में प्रबन्ध मानव के प्रयासों में लक्ष्यानुकूल एकरूपता लाने के लिए सम्पादित होने वाली

प्रक्रिया है। प्रबन्ध के द्वारा ही मानवीय क्रियाओं को नियोजित संगठित, निर्देशित, समन्वित, उत्प्रेरित एवं नियंन्त्रित किया जाता है। इसी सदर्भ में E. F. L. Brech ने लिखा है- ''मानवीय तत्व की विद्यमानता ही प्रबन्ध को सामाजिक प्रक्रिया का विशेष लक्षण प्रदान करती है।''

(5) प्रबन्ध एक अदृश्य कौशल है (Management is an Intangible skill)-प्रबन्ध एक मानसिक प्रक्रिया हैं यह न दिखाई देने वाली एक अदृश्य कौशल है जो कार्य के परिणामों से जाना जाता है।

यह स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली कोई वस्तु नहीं है, परन्तु अहसास किया जा सकता है। यदि व्यक्ति अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर लेता है तथा सफलता मिल जाती है तो वह प्रबन्ध अच्छा कहलाता है। इसके ठीक विपरीत यदि लक्ष्यों को प्राप्ति नहीं हो पाती है अथवा प्रयास असफल हो जाते हैं तब वह प्रबन्ध अंकुश कहा जाता है। परिवार के सदस्यों की योग्यता, कुशलता, निपुणता, विवेक, ज्ञान, मनावांछित व्यवहार एवं सूझ-बूझ से जब लक्ष्यों की प्राप्ति हो जाती हैं तब उसे कुशल प्रबन्ध कहते हैं। इन्ही कारणों से प्रबन्ध को अदृश्य शक्ति कहते है। इस शक्ति को चित्रबद्ध नहीं किया जा सकता परन्तु सफलता मिल जाती है। तथा लक्ष्यों की प्राप्ति हो जाती है। तब तक शक्ति का अहसास किया जा सकता हैं व्यवहार में यह देखा जाता हैं कि पूरे एवं अकुशल प्रबन्ध की जानकारी जनता एवं कर्मचारियों को अति शीघ्रता से मिल जाती है। जबकी सम्पन्न प्रबन्ध की जानकारी काफी देरी से मिलती है।

(6) प्रबन्ध का पृथक अस्तित्व है। (Management has Separate Existence)-प्रबन्ध का पृथक एवं भिन्न अस्तित्व हैं। वास्तव में यह लोगो के द्वारा तथा उनके साथ मिलकर कार्य करने को करता हैं परन्तु यह कला उतनी आसान व साधारण नहीं है क्योंकि दूसरे लोगों से वांचित कार्य करना काफी ढेड़ी खीर हैं। इसके लिए अनुभव ज्ञान एवं चातुर्य को आवश्यकता होती हैं इसीलिए एक प्रबन्ध में प्रबन्ध कौशल, वाक्पटुता, चातुर्य, व्यावहारिक, ज्ञान एवं अच्छे सूझ- बूझ की अपेक्षा की जाती है।

(7) प्रबन्ध सार्वभौमिक प्रक्रिया है (Management is an Universal Process)- प्रबन्ध एक विश्वव्यापी प्रक्रिया है जो केवल किसी विशिष्ट कार्य, संस्था, अथवादेश तक सीमीत न रहकर सभी कार्यो, संस्थाओं एवं देशों में व्याप्त हैं। उदाहरणार्थ- एक सुयोग्य चिकित्सक किसी इेश या सम्प्रदायों के मध्य पुल (Bridge) की भाँति कार्य करता है। एवं सम्पूर्ण विश्व के लिए तथा मानव कल्याण के लिए होता है। ठीक उसी तरह प्रबन्ध के कार्य विधि, नियम युक्त सिद्वान्त प्रत्येक जगह परिस्थिति में लागू होते है। कूण्डज एवं प्रो. ड्रानेल के शब्दो में,''प्रबन्ध के कार्य सभी सगठनों में लागू होते हैं चाहै वो किसी भी प्रकृति के हो प्रबन्ध के कार्य संगठन के सभी स्तरों पर लागू होते हैं प्रबन्ध, संचालक, विभागाध्यक्ष, फोरमैन आदि सभी प्रबन्धकीय प्रक्रिया में भाग लेते हैं। ''हाँ इसके नियमों एवं सिद्वान्तों को सभी लोगों/परिवारों/संस्थाओं में समान रूप से लागू नहीं केया जा सकता हैं परन्तु इसके ज्ञान, कौशल एवं चातुर्य को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित अवश्य ही किया जाता है।

(8) प्रबन्ध सामूहिक प्रयास है(Management is a Grcup Efforts)-प्रबन्ध व्यक्तिगत प्रभाव न होकर सामूहिक प्रयास की ओर इंगित करता हैं। टीम भावना की स्थापना ही प्रबन्धकीय सफलता की कुंजी है। कूण्ट्ज एवं डोनैल के अनुसार, प्रबन्ध औपचारिक रूप से संगठित समुहो के माध्यम से तथा उनके साथ का सम्बन्ध केवल एक व्यक्ति से न होकर व्यक्तियों के समूह से होता है। दूसरे शब्दों में कहा

जाता है, "प्रबन्ध दूसरे व्यक्तियों से कार्य करने की युक्ति है। "अर्थात वह व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों से आसानी से कार्य कारा सकता है। वह कुशल प्रबन्धक कहलाता है। वांछित लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए औपचारिक रूप से संगठित होकर कार्य कारने की आवश्यकता है। कोई भी गृहिणी अकेले किसी कार्य को अकेले न करके परिवार के सदस्यों की सहायता से सामूहि प्रयासों के माध्यम से करती है। तो वह कार्य अत्यन्त ही सुगमता एवं सरलतापूर्वक सम्पन्न हो जाता है। क्योंकि उसमें समूह के प्रयासों का प्रभावपूर्ण नियोजन, संगटन, क्रियान्वयन, समन्वय एवं नियन्त्रण रहता है।

(9) प्रबन्ध की आवश्यकता सभी स्तरो पर होती है (Management is a Needed at all Levels)- प्रबन्ध एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। इसकी आवश्यकता पारिवारिक जीवन चक्र (Family Life Cycle) के सभी स्तरों पर होती है। प्रबन्ध के प्रत्येक चरण में निर्णय लेने पड़ते है तथा निर्णय करने का कार्य प्रबन्धक का होता है। इन्ही कारणों में प्रबन्ध स्तरों का श्रेणीकरण किया गया है ।

(10) प्रबन्ध एक पेशा है (Management in a Profession)- प्रबन्ध विशेषज्ञ प्रबन्ध को पेशा के रूप में मानते है । क्योंकि इसमें वे सभी लक्षण, विशेषताएँ व गुण विद्यमान होते है जो कि एक पेशे मे होते है।कारण स्पष्ट है, किसी भी पेशे की भाँति प्रबन्ध की भी अपनी नीतियाँनियम, विधियाँ एवं सिद्वान्त हैं जिनका उपयोग प्रबन्ध में किया जाने लगा है कि यदि व्यक्ति को प्रबन्ध शास्त्र का ज्ञान नहीं है। तथा उसने प्रबन्ध शास्त्र का अध्ययन भली-भाँति नहीं किया तो वह एक कुशल प्रबन्धक बन ही नहीं सकता इन्ही कारणों सें हमारे देश मे भी प्रबन्धकीय सलाहकार संस्थाओं (Management Consultants Institution) की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। विश्व के समुन्नत राष्ट्रों जैसे-फ्रांस, जर्मनी,जापान, अमेरिका, इंग्लैण्ड, रूस, चीन आदि में बहुत पहले से ही प्रबन्ध का विकास एक स्वतन्त्र पेशे के रूप में हो चुका है।

(11) प्रबन्ध पूर्व-निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति है (Management is a Achievement of Pre-determined Goals)-परिवार के प्रत्येक सदस्य के व्यक्तिगत एवं सामूहिक पूर्व- निर्धरित लक्ष्य होते है जिसकी पूर्ति हेतु सदस्यों के प्रयासों को नियोजित, संगठित, क्रियान्वित, उत्प्रेरित एवं नियन्त्रित करना पड़ता हैं । प्रबन्ध के माध्यम से इन लक्ष्यों को प्राप्त करने का पूरा- पूरा प्रयास किया जाता हैं। यदि व्यक्ति अपने पूर्व-निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति कर लेता है तब वह कुशल एवं योग्य प्रबन्धक कहलाता है। जॉर्ज आर. टैरी के शब्दों में, ''प्रबन्ध एक पृथक प्रक्रिया हैं जिसमें, नियोजन, संगठन, क्रियान्वयन एवं नियन्त्रण को सम्मिलित किया जाता हैं तथा इनका निष्पादन व्यक्तियों एवं साधनों के उपयोग द्वारा उद्देश्यों को निर्धारित एवं प्राप्त करने के लिए किया जाता है।'' C.W.Wilson ने इसी सन्दर्भ में प्रबन्ध के बारे में लिखा है- ''निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु मानवीय शक्तियों के प्रयोग एवं निर्देशन की प्रक्रिया प्रबन्ध कहलाती है।'' प्रबन्ध विद्वानों के अनुसार ''यदी उद्देश्य नहीं तो प्रबन्ध कैसा?''

1.4 गृह-प्रबन्ध का महत्व (Inportance of Home Management)

पूर्व में हम अध्ययन कर चुके है कि गृह प्रबन्ध कला के साथ विज्ञान भी है जो परिवार के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए परिवार के सभी सदस्यों के व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयासों के नियोजन, संगठन, क्रियान्वयन, उत्प्रेरण एवं नियन्त्रण से सम्बन्ध रखता हैं। अत्यन्त प्राचीन काल से गृह व्यवस्था कि आवश्यकता महसूस की गई परन्तु आज के जटिल एवं संघर्षपूर्ण भरी जिन्दगी में जहाँ साधन सीमित तथा साध्य अनन्त है, वहाँ इसका महत्व अधिक बढ़ा है। यद्यपि गृह प्रबन्ध सर्वव्यापी है तथा जाने-अनजाने प्रत्येक घर में प्रत्येक सदस्यों के द्वारा सम्पन्न की जाती है। परिवार की उन्नति एवं विकास के लिए गृह का प्रबन्ध अच्छा, कुशल एवं बेहतर होना चाहिए क्योंकि कुशल गृहप्रबन्ध पर ही परिवार के सदस्यों की कार्यक्षमता, नैतिक आचरण, कुशलता, स्वास्थ्य एवं मानसिक चिन्तन

निर्भर करता है। यदि गृहिणी/मुखिया में कुशल प्रबन्धक का गुण हैंतभी वह प्यार, स्नेह, चातुर्य एवं कौशल से परिवार के सदस्यों को सही मार्गदर्शन कर सकता/सकती है तथा उन्हें कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, सहनशील एवं क्रियाशील रहने के लिए उत्प्रेरित कर सकता/सकती है। वह अपने परिवार के सदस्यों के बीच मधुर सम्बन्ध स्थापित करती है। एवं लक्ष्यों की पूर्ति हेतु साधनों का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए उनका सक्रिय सहयोग लेती हैं। परिवार के सदस्यों में प्रेम, स्नेह, त्याग, बलिदान, कर्तव्य, धर्म, आदि की भावना पनपती हैं। परिवार एकता के सूत्र में बँधकर विकास की ओर अग्रसर होता हुआ अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करता है। जबकी हम सभी जानते है परिवार समाज का अभिन्न अंग है। परिवार के विकास से समाज का विकास होता है। समाज के विकास से राज्य का तथा राज्यके विकास से राष्ट्र का विकास होता है। इसलिए गृह प्रबन्ध का महत्व न केवल एक व्यक्ति विशेष या परिवार विशेष के लिए ही है। अपितु सम्पूर्ण देश एवं विश्व के लिए भी हैं । सम्पूर्ण संसार में सूख अमन चैन के लिए प्रबन्ध अत्यावश्यक है। भारत जैसे विकासशील देश में तो इसकी महत्ता काफी बहुत अधिक है क्योंकि हमारे यहाँ प्राकृतिक सम्पदा एवं मानवीय शक्तियों की कोई कमी नहीं हैं। फिर भी भारतवासी निर्धन गरीब एवं अशिक्षित है। कही सूखा की मार है तो कही अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ की गम्भीर स्थिति। परन्तु इन प्राकृतिक साधनों व सम्प्रदायों को देश हित में विधिवत् उपयोग किया जाए तो अकाल, बाढ़ व अन्य प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित व्यक्तियों को राहत पहुँचाया जा सकता है। परिवार के प्रत्येक सदस्य को रोजगार उपलब्ध करवाया जा सकता हैं। इसके ठीक विपरीत प्रर्याप्त साधन व आय होते हुए भी अकुशल गृह प्रबन्ध के कारण परिवार के सदस्यों की उन्नति नहीं होती हैं।उनकी अति आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती उनमें द्वेष कलह, कलेश की भावना पनपने लगती है। अभावों में रहने के कारण उनकी मानसिक चिन्तन एवं कार्य शक्ति कम हो जाती है। परिणामत: गृह का वातावरण अशान्त, खराब, दूषित एवं कलह क्लेशपूर्ण हो जाता हैं। परिवार के सदस्यों में फूट पड़ जाती है। वे एक-दूसरे से लडने झगड़ने लगते है।उनमें एक-दूसरे पर विश्वास करने की भावना समाप्त हो जाती हैं।

वे पथ भ्रष्ट होकर अनैतिक आचरण करने लगते है। ऐसी परिस्थिति में परिवार के बच्चों के लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा एवं विकास में विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। इन सबके कारण परिवार अवनति की श्रेणी में आकर खड़ा हो जाता है। सक्षेप में यह कहा जा सकता हैं कि कुशल व अच्छा प्रबन्धक परिवार के जीवन की आधारशिला है। यही परिवार की आर्थिक विकास की कुंजी है। यह वह जीवनदायी तत्व है जिसके बिना प्रबन्ध के उत्पादन के साधन केवल साधन मात्र ही रह जातें है। उत्पादक नहीं बन पातें। जहाँ प्रबन्ध हैं वहाँ व्यवस्था, कुशलता, चातुर्य, दक्षता, अनुशासन, निर्माण कार्य एवं सौदंर्य के दर्शन होते है। अन्यथा इसके अभाव में अव्यवस्था, कुशासन, अकुशलता, द्वेष, कलह, अशान्ति एवं अपव्यय ही दृष्टिगोचर होता है। अत: गृह प्रबन्ध परिवार की उन्नति के लिए हर दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है।

1.5 गृह प्रबन्ध के उद्देश्य

(Objectives of Home Management) गृह प्रबन्ध का मुख्य उद्देश्य है, ''उपलब्ध पारिवारिक साधनों से पारिवारिक लक्ष्यों की पूर्ति करना।'' गृह प्रबन्ध एक ऐसी मानसिक एवं बौद्धिक प्रक्रिया है जिसमें गृह सम्बधी उत्तरदायित्वों को निभानें के लिए परिवार के सभी सदस्यों को एक-साथ मिल-जुलकर कार्य करने पर बल दिया जाता है- Varghese Ogale & Srinivasan ने अपनी पुस्तक ''Home Management'' में इस बात की पुष्टि की है कि, '' Effective Management in the home depends to a large extent on the managerial ability, interest and leadership quality of the home maker and also their ability to motivate the family members in the right direction for achiving desired goals.'' यथार्थ में, प्रबन्ध निर्णयों की श्रृंखला है जिसमें पारिवारिक साधनों का उपयोग पारिवारिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। गृह प्रबन्ध के निम्न उद्देश्य है-

(1) परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति (Wants of all family Member's Must be Satisfied)- परिवार के

सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना गृह प्रबन्ध का एक अति महत्वपूर्ण एवं प्रथम उद्देश्य हैं रोटी, कपड़ा, और मकान जैसी आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति तो हर हाल में की जानी चाहिए। इसके साथ ही आरामदाय एवं कार्यक्षमता वृद्धि आवश्यकताओं की पूर्ति करना भी आवश्यक हैं। आज के बदलते परिवेश में, जिसे पहले विलासिता सम्बन्धी आवश्यकता समझी जाती थी वह आज आवश्यकता/आरामदायक सम्बन्धी आवश्यकता के अन्तर्गत आने लगी है जिसकी पूर्ति होना अनिवार्य है। तभी परिवार के उद्देश्य की कार्यक्षमता एवं ज्ञार्जन में वृद्धि हो सकेगी। उदाहरणार्थ- टी.वी., टेलीफोन, स्कूटर, कम्प्यूटर आदि विलासितापूर्ण आवश्यकता नहीं बल्कि यह कहीं-ना कहीं विशेषकर शोध के क्षेत्रों में आवश्यक आवश्यकता हैं जिसके बिना ज्ञानार्जन एवं शोधकार्य सम्पन्न नहीं हो पाते। भोजन न केवल क्षूधा तृप्ति के लिए ग्रहण किया जाता है बल्कि परिवार के प्रत्येक सदस्य को उसकी आयु लिंग, कार्य एवं शारीरिक आवश्यकताओ के अनुसार सन्तुलित भोजन मिलना चाहिए, तभी परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य उत्तम बना रह सकेगा तथा उनमें कार्यक्षमता की वृद्धि हो सकेगी। रोगावस्था में आहार की स्थिति भिन्न होती है। छोटे बालकों के उचित शारीरिक एवं मानसिक विकास क लिए पौष्टिक आहार आवश्यक है। इसी तरह परिवार के प्रत्येक सदस्य को प्रयाप्त एवं मौसम के अनुकूल आरामदाय वस्त्र होने चाहिए ताकि अवकाश के क्षणों में प्रत्येक व्यक्ति विश्राम एवं मनोंरजन कर सके। इसके लिए गृहिणी/प्रबन्धक को विभिन्न बातों की जानकारी होनी चाहिए जैसे-

(1) सस्ते भोज्य पदार्थ में भी वे सभी पौषक तत्व विद्यमान होते है, जो कि महँगें भोज्य पदार्थ में होते है।

(2) भोज्य तत्वों के गुण एवं विभिन्न भोज्य पदार्थो की विशेषताएँ।

(3) मौसम पर उपलब्ध भोज्य सामग्रियों को वर्ष भर तक संगृहीत रखने की जानकारी

(4) भोजन पकाने की विभिन्न विधियों का ज्ञान।

(5) भौजन परोसने के आकर्षण ढ़ग का ज्ञान।

(6) वस्त्रोत्पादक रेशों की जानकारी।

(7) मौसम के अनुकूल उपयुक्त वस्त्रों की जानकारी होना।

(8) विशिष्ट अवसर त्योहार, पार्टी या शादी विवाह में किस तरह का परिधान होगा।

(9) मकान हवादार है और उसमें प्रर्याप्त स्थान अथवा नहीं।

(10) घर की साफ-सफाई, व्यवस्था एवं सजावट आदि।

(2) सीमित आय से अधिकतम आवश्यकताओं की पूर्ति करना (To Satisfy Maximum Wants With Limited Income)- जैसा कि हम जानते हैं कि आवश्यकता अनन्त परन्तु साधन (धन) सीमित होते है आवश्यकताओं का सम्बन्ध मनुष्य की इच्छाओं से होता है। व इच्छाएँ मुक्त एवं कल्पनाओं से प्रेरित होती है। इस कारण आवश्यकताएँ विविध व नाना भाँति की होती है। सीमित साधनों में असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति करना वास्तव में एक विकट समस्या हैं। साथ ही आय को आसानी से बढ़ाया भी नहीं जा सकता है। गृह प्रबन्ध का दूसरा परन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण उद्देश्य है सीमित साधनों में ज्यादा-से-ज्यादा आवश्यकताओ को संतुष्ट किया जाए। कुशल गृहिणी का यह दायित्व है कि आय को व्यय से अधिक नहीं जाने देना चाहिए। इसके लिए उसे बजट बनाने, हिसाब लिखने, आय-व्यय का सही संन्तुलन आदि का पूरा-पूरा ज्ञान हो। इतना ही नहीं, उसे भविष्य की आवश्यकताओं के लिए भी कुछ बचत करनी चाहिए तथा धन के विनियोग सही तरीके से करना चाहिए। व्यय को आय से अधिक नहीं जाने देना चाहिए। कहा भी गया है, "जेते पांव भरसरिये तेरी लाम्बी सौर"। अत: बजट बनाकर उसी के अनुसार खर्च किया जाना चाहिए। आय में कमी होने पर व्यय में कटौती कर आय-व्यय को संन्तुलित करना चाहिए। बजट किस तरह से बनाना हैं, किन-किन सामग्रियों की खरीदारी की जानी है, वस्तुएँ कहाँ से खरीदनी है, परिवार की मासिक आय कितनी है? आदि महत्वपूर्ण बातों की जानकारी गृहिणी को होना चाहिए। पड़ोसियो की देखादेखी, छूट की लालच या विज्ञापनों के भ्रमजाल में फँसकर अनाप-शनाप खर्च करना तथा अनावश्यक वस्तुओं की खरीदारी नहीं की जानी चाहिए। ऐसा करने से व्यय आय से अधिक

हो जाता है। तथा परिवार कर्ज के बोझ के तले जाता है। बजट बनते समय व आवश्यक वस्तुओं की खरीदारी की करते समय गृहिणी को

निम्न बिन्दुओं पर करना चाहिए-

(1) आर्थिक स्थिति के अनुरूप् ही खरीददारी की जानी चाहिए। पड़ोसियों की देखा-देखी नहीं।

(2) महँगे वस्तु ही हमेशा उत्तम गुण वाली होती है, ऐसा हमेशा सच नहीं होता हैं। सस्ती वस्तुओं में भी महँगी वस्तु के समान गुण विद्यमान रहते हैं। उदाहरण - सस्तें फलों व सब्जियों में वे सभी पौष्टिक तत्व विद्यमान होते है जो कि महँगें फलों एवं सब्जियों में होते है।

(3) परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं एवं रूचि का ज्ञान होना चाहिए। वे आवश्यकताएँ जो अत्यधिक महत्व की है, उनकी पूर्ति पहले की जानी चाहिए।

(4) आय को केवल वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति में ही नहीं खर्च कर देना चाहिए बल्कि भविष्य के लिए भी बचाकर रखना चाहिए ताकि आकस्मिक आवश्यकताओं जैसे रोग, बीमारी, पार्टी, शादी, विवाह आदि के अवसारों पर आर्थिक तंगी नहीं रहें "आज की बचत

कल के लिए लाभप्रद होती है।" इस उक्ति को भूलना नहीं चाहिए।

(5) सामान सदैव विश्वसनीय दुकान से खरीदनी चाहिए।

(6) गृहिणी को बाजार भाव से परिचित होने के साथ ही कौनसी वस्तु किस जगह पर सस्ती मिलती है, इसका भी ज्ञान होना चाहिए।

(7) सामान थोक विक्रेता से ही खरीदना अच्छा रहतपा है। थोक मूल्य में चीजे सस्ती मिलती है। साथ ही बार बाजार जाने से समय, शक्ति एवं धन व्यय होता है तथा मानसिक परेशानी होती है, इन सबसे छुटकारा मिलता है।

(8) डिब्बा बंद या शील बंद सामग्री ही खरीदनी चाहिए तथा इस पर लगे लेबल को ध्यान से पढ़ना चाहिए।

(9) वैसे सामग्री जो प्रतिदिन नहीं खरीदे जा सकते है, जैसे - फर्नीचर, जमीन, पंखें, कूलर, पलंग टी.वी., कम्प्यूटर, रेड़ियों उन्हे खरीदते समय उनकी उपयोगिता, सुन्दरता, आकर्षण एवं टिकाऊपन पर ध्यान देना चाहिए।

(3) गृह को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करना (To do Home Work Skillfully)- गृह प्रबन्ध का एक अहम उद्देश्य "गृह कार्यो को कुशलतापूर्वक समय पर सम्पन्न करना भी है।" यहाँ कार्य को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने से तात्पर्य है, कार्य को इस ढ़ग से सम्पन्न किया जाए जिससें कि समय, शक्ति एवं श्रम की बचत हो किसी भी कार्य कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए गृहिणी को योजना (Planing) बना लेनी चाहिए योजना दिन भर, सप्ताह भर, माह भर तथा वर्ष भर की बनाई जा सकती है। कार्यों की योजना बना लेनें से काम करने में सुविधा रहती है। साथ ही कार्य शीघ्रता से सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो जाता है। कार्यो को महत्व तीव्रता एवं आवश्यकता के मुताबित प्राथमिकता देते हुए सम्पन्न करना चाहिए। हाँ! योजना बनाते समय परिवार के सदस्यों की राय लेना तथा उनकी मदद लेना आवश्यक है। योजनाओं को कार्य रूप देने में परिवार के सदस्यों से कौन-कौन से कार्य में सहायता मिल सकेगी इसका भी योजना में प्रावधान होना चाहिए योजना बनाते समय परिवार के सदस्यों कीरूचि, कार्यक्षमता, विश्राम आदि का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। कार्य को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए योजना बनाना ही काफी नहीं है बल्कि कार्य करने के तरीकों एवं विधियों का ज्ञान भी गृहणी को होना चाहिए।

(4) पारिवारिक स्तर को बनायें रखना (To Maintain Family Standred) - गृह प्रबन्ध का एक अहम् उद्देश्य परिवार के रहन-सहन के स्तर को भी बनाये रखना है। यदि सम्भव हो तो पारिवारिक स्तर को ओर भी ऊँचा उठायें जिससे परिवार के सदस्यों की शान-शौकत, ज्ञान, कुशलता, धार्मिक प्रवृतियों आदि में वृद्वि हो

(5) पारिवारिक वातावरण को स्वच्छ बनाये रखना (To keep Family Environment Clean) - हम सभी जानते हैं, "गृह प्रबन्ध का मुख्य उद्देश्य सम्पादित कार्यो कामूल्यांकन करना तथा पारिवारिक लक्ष्य प्राप्त करना है, "परन्तु पारिवारिक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए पारिवारिक वातावरण स्वच्छ, सुमधूर, सौहार्द्रपूर्ण एवं सुखद हो द्वेषपूर्ण व कलहपूर्ण वातावरण में पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं होती

है। यह जरूरी नहीं है कि पारिवारिक वातावरण तभी सुखद होगा जब घर में खूब धन-दौलत हो। कम पैसे या साधन में भी पारिवारिक वातावरण को सुखद एवं आनन्दमय बनाया जा सकता है। यह तो गृहिणी की कार्यकुशलता, चातुर्य, बुद्धिमता एवं कार्यशिलता पर निर्भर करता है। परिवार की सफलता घर की सुख समृद्धि सम्पन्नता एवं विकास गृहिणी पर ही निर्भर करता है। वह घर की संचालिका एवं निर्देशीका होती है। प्राय: ऐसा देखा गया है कि समान आर्थिक आय एवं साधन होते हुए भी दो परिवार के रहन- सहन, नैतिक आचरण एवं जीवन-स्तर में विभिन्नता होती है। जिस घर की गृहिणी कुशल प्रबन्धक एवं बुद्धिमान होती है उस परिवार का रहन-सहन जीवन स्तर गृहिणी वाले परिवार की अपेक्षा ऊचा रहता हैं। अत: परिवार के सदस्यों मेंआपसी प्रेम, स्नेह, सोहाद्र, अनुशासन एवं पारिवारिक मूल्यों को स्थापित करना भी गृह प्रबन्ध का उद्देश्य होता है।

गृहव्यवस्था के सुधार में बाधाएँ (Obstucles in the Improvement of Home Management)- गृह व्यवस्था को व्यावहारिक रूप देने में कई कठिनाईयाँ है जो गृहिणी के सक्षम एक चुनौति बनकर खड़ी हो जाती हैं, परन्तु यदि गृहिणी चाहे तो अपने ज्ञान, प्रबन्ध- पटुता, विवेक, बुद्धि कौशल, एवं चातुर्य का उपयोग कर इन चुनौतियों का सामना कर सकती है, तथा पूर्व निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर सकती हैं गृह व्यवस्था के सुधार मे निम्न बाधाएँ है जिन्हें दूर करना अत्यावश्यक हैं-

(1) अधिकांश परिवार को व्यवस्था-प्रक्रिया की जानकारी नहीं होती (Most Familyes are not Aware of Process of Management)- अधिकांश परिवार व्यवस्था के विभिन्न चरणों से भिज्ञ नहीं होते हैं उनकी गलतफहमी है कि व्यवस्था का अर्थ केवल योजना बनाना हैं। उन्हें संगठन, क्रियान्वयन, नियन्त्रण, मूंल्याकन आदि प्रबन्ध प्रक्रियों का समुचित ज्ञान नहीं होता है इस कारण वे इन चरणों पर विशेष ध्यान नहीं देते है। परिणामत: इन प्रक्रियों मे कही-न-कही त्रुटियाँ रह ही जाती है, जिससे लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पाती। असफलता की स्थिति में

वे निराश हो जाती है। तथा व्यवस्था को दोष देते है जबकी व्यवस्था का दोष होता ही नहीं हैं। यदि व्यवस्था प्रक्रिया की पूरी जानकारी होगी तो व्यक्ति सभी चरणों पर ध्यान देगा तथा लक्ष्य प्राप्ति में जो भी समस्याएँ आएँगी उनका निराकरण करेगा।

(2) व्यवस्था लक्ष्य से सम्बन्धित नहीं होती (Management is Not Related to Goals)- पारिवारिक उन्नति एवं विकास में लक्ष्य की अहम् भूमिका है। लक्ष्यों की विस्तृत श्रेणी होती है जिन्हें परिवार के सदस्यों की सूझ-बूझ से चयन करना आवश्यक होता है। परन्तु अधिकांश परिवारों को तो लक्ष्यों की जानकारी ही नहीं होती है। वे लक्ष्यों की व्यांख्या नहीं कर पाते और जब लक्ष्य ही नहीं होगें तो क्रियान्वयन किस दिशा में किया जाएगा क्योंकि लक्ष्य ही कार्य को सही दिशा में उत्प्रेरक की भाँति कार्य करता है । यह तो ठीक उस राहगीर की तरह से जिसे कहाँ जाना है, उसका कोई पता ठिकाना नहीं है और वह गली-गली, सड़क-सड़क, भटकता जाता है। परन्तु मंजिल नहीं मिलती। उदाहरणार्थ- यदि बी. ए. के एक विद्यार्थी से पूछा जाए कि तुम पढ़-लिख कर क्या बनना चाहतें हो, उसका उत्तर होता है- पता नहीं, जो भी नौकरी मिलेगी कर लूँगा। वह बैंक में बाबू बनने से लेकर जिले के जिलाधीश व न्यायधीश तक बनना चाहता हैं परन्तु एक लक्ष्य निर्धारित नहीं करता हैं। इस क्रम में न तो बैंक का बाबू बन पाता है और न ही जिले का जिलाधीश या न्यायाधीश। वह केवल बी. ए. की ड़िग्री प्राप्त करके एक बेरोजगार ग्रेजुएट बन जाता है। इसलिए लक्ष्य का निर्धारण करना जरूरी है। जब लक्ष्य का निर्धारण हो जाए तब उसकी पूर्ति हेतु उपलब्ध साधनों का सर्वोत्तम उपयोग करना चाहिए। हाँ! लक्ष्यों का निर्धारण साधनों की उपलब्धता, समय, शक्ति, एवं धन के अनुसार किया जाना चाहिए। फ्रोमैन एवं ड्यू के शब्दों में - "साधनों के विशिष्ट उपयोग में बहुत भिन्नता होती हैजो कि उस लक्ष्य पर निर्भर करती है जिसके लिए उसका उपयोग किया जाना है।" The specific use of resources will very greatly depending upon the goal which has been set."

(3) अधिकांश परिवार सभी संभवित साधनों से अनभिज्ञ होते हैं(Most Families not Aware of all Possible Resources)-गृह व्यवस्था को व्यावहारिक रूप देने में साधनों की अमूल्य भूमिका है। कई परिवार ऐसे होते है जिन्हें सम्भावित साधनों के बारें में समुचित जानकारी नहीं होती है। इस कारण वे साधनों का उपयोग नहीं कर पातें है। परिणामत: वांछित सफलता नहीं मिल पाती हैं। उदाहरणार्थ- शीला पढ़ी-लिखी युवती है, वह विद्यालय में जाकर गणित विषय पढ़ना चाहती है, परन्तु उसे यह जानकारी नहीं है कि विद्यालय उसके घर से कितना दूर है, क्या विद्यालय में गणित का पद खाली हैं? जब उसे विद्यालय का पता चल जाता है कि वह तो उसके घर के पास ही हैं तथा गणित का पद भी खाली है, तब वह उस विद्यालय में गणित की शिक्षिका के लिए आवेदन करती है तथा उसकी नियुक्ति हो जाती है। अत: संभावित साधनों की जानकारी होना जरूरी है। साधनों के अभाव में न तो किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व का विकास ही हो पाता है और न ही उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो पाती है।

(4) व्यवस्था सम्बन्धी निर्णयों के लिए प्रर्याप्त जानकारी की कमी (Lack of Required Information for Management Decisions)- व्यवस्था संबन्धी समस्याओं को सुलझानें हेतु विभिन्न प्रकार की जानकारीयों का होना अत्यावश्यक है। कई लोगों में आत्म विश्वास की बहुत कमी होती है। जिसके कारण वे निर्णय लेने में हिचकिचाते है। व निर्णय के परिणामों से ड़रते है। वे समय पर सही निर्णय नहीं कर पाते है। वे प्राय: दूसरे लोगों की देखा देखी निर्णयों का अनुकरण करते है। जो वास्तव में उनके अनुकूल नहीं होते फलत: आशानरूप सफलता नहीं मिलती। हाँ! समस्याओं को हल करनें में विषय विशेषज्ञों की सहायता ली जा सकती है। पुस्तकें, मैगजीन, अखबार आदि निर्णय लेने में सहायक हो सकते हैं क्योंकि इनमें कई सारी सूचनाएँ होती है। अनुभवी व्यक्तियों के अनुभव को व्यवस्थापन समस्याओं के निराकरण में मददगार साबित हो सकते है।

(5) योजना के अनुसार लक्ष्यों का निर्धारण नहीं होना (Goals Incompatible with the Plans)-अधिकांश भारतीय परिवार योजनानुकूल लक्ष्यों का निर्धारण नहीं करतें हैं। इस कारण वे असफल, निराश एवं कुठित हो जातें है। वे गृह व्यवस्था को साधन मात्र न समझकर साध्य मान लेते है। इसलिए भी गृह व्यवस्था में कठिनाई आती हैं।

(6) व्यवस्था सम्बन्धी समस्याओं के तैयार समाधानों की इच्छा (Desire for Readymade Solution for Taking Decision)-कुछ लोग ऐसे भी होते है जो बिना प्रयत्न किये ही सफलता की आशा लिए बैठें रहतें हैं। वे चाहतें है कि विशेषज्ञ उनकी समस्याओं का समाधान शीघ्रता से कर दे अथवा समस्याओं के समाधान हेतु रेडीमेंड फार्मूला मिल जायें परन्तु ऐसा सम्भव नहीं क्योंकि समान साधन, आय एवं पारिवारिक परिस्थितियाँ होते हुए भी दो परिवारों की समस्याएँ समान नहीं होती । जब समस्याएँ समान नहीं है। तब समाधान समान कैसे होगा । प्रत्येक घर में प्रत्येक व्यक्ति व परिवार की अलग-अलग समस्यएँ है। व्यावहारिक समस्याएँ काफी जटिल एवं पेषीदी होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु खुद ही प्रयास करे ।

(7) व्यवस्था का उत्तरदायित्व परिवार के सभी सदस्यों पर होता है(All Family Members are Responsible for Mnagement) - भारतीय परिवारों में मुखीयाँ गृहिणी ही प्रबन्ध होती है। घर के अन्य सदस्य प्रबन्ध प्रक्रिया में रूचि नहीं लेतें है। एक ही व्यक्ति के प्रबन्धक एवं कार्य-संपादनकर्ता होने से कई समस्याएँ उत्पन्न होती है। परिवार के अन्य सदस्य निर्णय लेने में आनाकानी करतें हैं वे कार्यो को भी रूचिपूर्वक नहीं करतें है फलस्वरूप कार्यों का सम्पादन ठीक तरीके से नहीं होता इस लिए यह जरूरी है कि नेतृत्व की जिम्मेंदारी परिवार के सभी सदस्यों को बारर-बारी से दी जाए ताकि व्यवस्था में होने वाली समस्याओं से परिवार के सभी सदस्य अवगत हो सकें। यदि आज के बदलते परिवेशएवं संघर्षभरी जिन्दगी में गृह प्रबन्ध के महत्व में काफी बढ़ोत्तरी हुई है, परन्तु कुछ भ्राँतियाँ एवं गलत धारणाएँ अभी भी विद्यमान है जो गृहिणी के समक्ष

कई मुश्किलें व कठिनाइयाँ उत्पन्न करती है। ये भ्राँतिया निम्नांकित है, जिन्हें कुशल प्रबन्ध के लिए दूर करना अत्यावश्यक है।

(1) प्रबन्ध एक साधन मात्र है, (Managemant is a Means and Not an End) - कई लोग गृह प्रबन्ध को साधन न मानकर साध्य मान लेते हैं। वे यह भूल जाते है कि प्रबन्ध साध्य (अन्त) (End) नहीं हैं। यह तो पारिवारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने का मात्र एक साधन हैंप्रबन्ध को साध्य मान लेने पर स्थिरता आ जाती है जबकी अथार्थ में प्रबन्ध लचीला है। उदाहरण- एक परिवार में किताबों को शौ-कैश में सजाकर रखा जाता है।उसका उपयोग पढ़ने-पढानें में नहीं किया जाता है। क्योंकि उन्हें उठानें हटानें से किताबों की व्यवस्था बिगड़ती है तथा शो-केश मे रखी किताबों का सोन्दर्य समाप्त हो जाता है। कहने का अर्थ है प्रबन्ध का उद्देश्य यह नहीं है। कि किताबों को उठाकर न पढ़ा जाए बल्कि इसका उद्देश्य है किताबों को पढ़कर इससे ज्ञानार्जन किया जाए, इसका अधिकाधिक उपयोग किया जाए ताकि व्यक्ति को अधिकतम लाभ पहुँचें।

(2) प्रबन्ध का सम्बन्ध केवल कार्य सम्पादन से ही नहीं है (Management is not mere performance of work) - कुछ लोगों मे जबर्दस्त भ्राँतियाँ है कि प्रबन्ध का अर्थ कार्य सम्पादन करना है जबकी यथार्थ में ऐसा नहीं है। केवल कार्य को करना मात्र ही प्रबन्ध नहींबल्कि कार्य को व्यवस्थित रूप देना प्रबन्ध है ताकि उपलब्ध साधनों का सर्वाधि उपयोग हो सके कार्य के सफल सम्पादन के लिए योजना बनानी पड़ती है। योजना को क्रियान्वित करने के लिए विभिन्न तत्वों को विभिन्न चरणों में नियन्त्रित करना पड़ता है। तथा प्राप्त परिणामों का मूल्यांकन करना पड़ता है। प्रबन्ध का प्रशासनात्मक पहलू तब और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। जब एक व्यक्ति योजना बनाता है तथा दूसरा व्यक्ति उसे क्रियान्वित करता है। इस सम्बन्ध में पारिवारिक जीवन पर राष्ट्रीय सम्मेंलन की गृह व्यवस्था उपसमिति ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है, “घर में व्यवस्थापन वस्त्र रूपी जीवन के तन्तु का एक ही भाग है। इसके धागें आपस में गुंथें हुए है क्योंकि इसमें साधनों के उपयोग के सम्बन्ध में निर्णय लिए जातें है। चाहें परिवार में कार्य किया जा रहा हो अथवा खेल।

भारतीय परिवारों में घर के मुखिया ही प्रबन्धक कार्य सम्पादनकर्ता, दोनों ही होते हैं। ऐसी परिस्थिति में योजना तों बना ली जाती है । परन्तु सफलता पूर्वक क्रियान्वयन नहीं हो पाता है। कारण स्पष्ट हैं, योजना एक व्यक्ति का काम है, उसे क्रियान्वित एवं नियन्त्रित करना दूसरे व्यक्ति का कार्य व्यक्तियों के सामूहिक प्रयास से ही वांछित सफलता प्राप्त हो सकती है। परन्तु जब एक ही व्यक्ति प्रबन्धक भी है। और कार्य सम्पादनकर्ता भी तो किसी-न-किसी चरण (stage) पर त्रुटि या कमी रह ही जाती है। फलत: वांछित सफलता नहीं मिल पाती है।

(3) अच्छें प्रबन्धक जन्म से ही नहीं, वरन् प्रशिक्षण से बनते है (Good Managers Not Born but Trained) -पहले यह माना जाता था कि, ‘‘प्रबन्ध एक जन्मजात प्रतिभा है, इसे अर्जित नहीं किया जा सकता है। ‘‘ प्ररम्परागत प्रबन्ध शास्त्रियों के अनुसार कुछ व्यक्ति जन्म सें ही इतनें अधिक योग्य, दूरदर्शी एवं प्रतिभाषाली होते हैं कि वे सरलता से नेतृत्व एवं संगठन करके कार्य सफलतापूर्वक कर लेते है। वे कवियों संगीतकारों, कलाकारों एवं विशिष्ट प्रतिभा वाले व्यक्तियों की तरह जन्म से ही कुशल प्रबन्ध के रूप में पैदा होता है, बनाये नहीं जा सकते। अमेरिका के हेनरी फोर्ड तथा भारत के जमशेद जी टाटा का बतौर उदाहरण पेश किया जाता है। परन्तु उनकी यह धारणापूर्णत: गलत है। आज लाखों नवयुवक युवतियाँ प्रबन्ध का प्रशिक्षण प्राप्त कर उद्योगों का संचालन सफलतापूर्वक कर रहें है। आज भी गृहिणी के मन-मस्तिष्क में बात कूट-कूटकर भरी हुई है। कि अच्छे कुशल गृह प्रबन्ध जन्मजात गुण है। वे अच्छा प्रबन्ध नहीं बन सकती । परन्तु यह भाव सही नहीं है। निरन्तर अभ्यास, कड़ी मेहनत, सें लेकर काम करने तथा प्रशिक्षण से प्रत्येक व्यक्ति कुशल प्रबन्धक बन सकता है। यदि कोई गृहिणी सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, पेंटिग या पाक-कलाम दक्ष है तों इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि वे जन्म से ही कलाओं में दक्ष व परिगंत थी बल्कि निरन्तर, अभ्यास, कठिन मेहनत एवं प्रशिक्षण के पश्चात ही वे इन कलाओं में दृढ़ता हासिल की है। अत: प्रबन्ध जन्मजात प्रतिभा के साथ अर्जित प्रतिभा भी है।

(4) प्रबन्ध परिवार के मुखिया तक ही सीमित नहीं है (Managemant is not limited to the head of the family) -भारतीय परिवारों में यह आम धारणा है कि प्रबन्ध परिवार के मुखिया तक ही सीमित है। परिवार के अन्य सदस्यों का इससे कोई लेना-देना नहीं है। परन्तु यह धारणा भी सच नहीं है। परिवार के निर्धारित लक्ष्यों एवं उद्देयों की पूर्ति हेतु सभी सदस्यों को एकजुट होकर सामूहिक प्रयास करने पड़ते है, तब कही जाकर वांछित सफलता मिलती है व लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। यदि प्रबंधक स्वयं ही कार्य सम्पादन कर्ता बन जाता है तब आशानुरूप सफलता नहीं मिलती है। वैसे भी आज को जटिलपूर्ण एवं सघर्षमय जिन्दगी में प्रत्येक व्यक्ति प्रबन्धक है क्योंकि उसे घर बाहर के अनेको कार्य निपटाने पड़ते है। घर में गृहिणी यदि गृह कार्यो के सम्बन्ध में प्रबन्ध करती है। तो परिवार के सदस्यों का सहयोग करना चाहिए। छोटे बालको की देख-रेख बडे-बुजुर्ग कर सकतें है। बड़ें बुजुर्गो की सेवा शुश्रुषा बड़े बालक एवं घर की बहुएँ कर सकती है। छोटे बच्चों को पढ़ाने का कार्य दादा-दादी, नाना-नानी, या घर के बड़ें बच्चें कर सकतें इस प्रकार मिल-जुलकर करने से कार्य शीघ्र सम्पन्न हो जाता है। तथा समय, शक्ति की बचत होती है। व परिवार के कार्य के प्रति उत्साह तथ आपसी प्रेम एवं स्नेह बना रहता है। इस प्रकार कार्य विभाजन से प्रबन्ध अच्छे श्रेणी का हो जाता है।

(5) केवल लक्ष्यों को प्राप्त करना ही प्रबन्ध नहीं है (Managemant is Not only to Acheye Goals) -कुछ लोगां के मन में आज भी यह भ्रम है। कि लक्ष्यों को प्राप्त करना प्रबन्ध है। परन्तु उनका ऐसा मानना भी गलत है। गृह प्रबन्ध सर्वव्यापी व सार्वभौमिक है। इसका क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत एवं फैला हुआ है। हाँ! लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए माध्यम आवश्यक है। गृह-प्रबन्ध का उद्देश्य है,एक साथ कई लोगों की पूर्ति करना। एक उद्देश्य/लक्ष्य की पूर्ति के साथ ही उसका कार्य समाप्त नहीं हो जाता ।

1.5 सारांश

सामान्यत: हमारे दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली है - पारिवारिक प्रबंध/सरल शब्दों में यह एक साधन मात्र है उनका सर्वोतम उपयोग इस ढंग से हो की उससे हमारी इच्छाएँ उद्देश्य की पूर्ति होते हुए

हम एक खुशहाल जीवन जी सके । परिवार के मानवीय सम्बन्ध सांस्कृतिक मूलो का विकास हो सके । गृह प्रबंध एक कला, एक विज्ञान एक सामाजिक प्रक्रिया सभी है और परिवार की उन्नति व शांति के लिए हर दृष्टि से मत्वपूर्ण है ।

1.6 अभ्यास प्रश्न

1. प्रबंध को परिभाषित कीजिये ?
2. प्रबंध की विशेषता बताइए?
3.गृह प्रबंध का महत्व बताइए ?
4.प्रबंध के उद्देश्य बताइए ?

1.7 संदर्भ ग्रन्थ

1. बी.के. बख्शी गृह व्यवस्था गृह सज्जा, साहित्य प्रकाशन आगरा
2. डा. वृंदा सिंह गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा पंचशील प्रकाशन जयपुर
3. डा. रीना खनुजा गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
4. Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"
5. Nickel Dorsey M & Sons Newyork "Managment in Family

इकाई-2

प्रबंध प्रक्रिया

2.0 उद्देश्य
2.1 प्रस्तावना
2.2 मूल्य
2.3 मूल्य की विशेषताएँ
2.4 मूल्यों के प्रकार
2.5 लक्ष्य की विशेषताएँ
2.6 स्तर
2.7 स्तर का वर्गीकरण
2.8 स्तर को प्रभावित करने वाले कारक
2.9 सारांश
2.10 अभ्यास प्रश्न
2.11 संदर्भ ग्रन्थ

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत

- छात्र प्रबंध के मूल्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- छात्र प्रबंध के लक्ष्यों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- छात्र प्रबंध के विभिन्न स्तरों जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

पारिवारिक जीवन में सफलता प्राप्त करने, घर में सुखद वातावरण बनाने तथा परिवार के सदस्यों की सुख, उन्नति एवं संन्तुष्टि के लिए लक्ष्यों को

प्राप्त करना नितान्त को आवश्यक है। लक्ष्यो की प्राप्ति हेतु निरन्तर संघर्ष करना पडता है तथा विकट-से-विकट समस्याओं सहर्ष स्वीकारते हुए उनका निराकरण करना आवश्यक होता है। इस प्रक्रिया में उसे कई.................है । यह निर्णय कुछ कारकों द्वारा निर्देशित होते हैं । यद्यपि निर्णयकर्ता इन निर्देशित तत्व वाली शक्तियों से बिलकुल ही अनजान व अनभिज्ञ होता है । इन्हीं शक्तियों को 'मुल्य', 'लक्ष्य' एवं 'स्तर' कहा जाता है। व्यवस्थापन का उद्देश्य इन्ही शक्तियों को व्यावहारिकता प्रदान करना है। Varghrec etal के अनुसार ''Individuals and families manage their proposal afters in a constanly changing world. They make decision to deal with any problem situation, something underlines these are the value goals and standards'' गृह व्यवस्था के तीन उत्प्रेरक कारक हैं- (1) मूल्य (2) लक्ष्य, एवं (3) स्तर। मूल्य लक्ष्य एवं स्तर इन तीनों में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। तथा ये अन्तर्सम्बन्धित होते है। इसे निम्न त्रिकोण द्वारा दर्शाया गया है। मूल्य त्रिकोण का केन्द्र बिन्दु है। यह लक्ष्य एवं स्तर से अधिक महत्वपूर्ण है। यद्यपि यह अधिक अस्पष्ट, अनिश्चित एवं आत्मगत होता है। लक्ष्य एवं स्तर मूल्य के सहायक होते हैं। इनकी उत्पत्ति मूल्यों से ही होती है। लक्ष्य एवं स्तर मूल्यों पर अपना प्रभाव डालती है। सरल शब्दों में मूल्य, लक्ष्य एवं स्तर को निम्न प्रकार से समझ सकते है-(1) मूल्य (Value)- यह अनिश्चितएवं आत्मगत होता है। (2) लक्ष्य (Goal)- यह मूल्यों की अपेक्षा अधिक स्पष्ट हैं। यथार्थ में यह ग्रहण करने योग्य वस्तु अन्त या उद्देश्य है । यह वह निश्चित वस्तु है जिसे प्राप्त करने की प्रत्येक व्यक्ति इच्छा रखता है ।(3)स्तर (Standerd)यह तुलना का आधार है। मुल्यों तथा लक्ष्यों की अपेक्षा यह अधिक स्थूल एवं व्यावहारिक होता है।

2.2 मूल्य (value)

दैनिक जीवन में हम सभी अक्सर साधारण बोलचाल की भाषा में मूल्य की बात करते हैं। इसे समझते भी हैं परन्तु इसे स्पष्ट करना एवं परिभाषित करना बड़ा ही मुश्किल कार्य हैं। मूल्य अस्पष्ट, अनिश्चित एवं आत्मगत होता है। यह मानवीय व्यवहार को प्रेरित करने वाला उत्प्रेरक

हैं। यह जीवन को सार्थकता प्रदान करता हैं। बिना मूल्यों के व्यक्ति विकास की ओर अग्रसर नहीं हो सकता है और न ही जीवन में सफलता हासिल कर सकता है। वास्तव में मूल्य व्यक्ति के जीवन के प्रेरक बिन्दु होते हैं। हम जो भी कार्य करते है उसके पिछे शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, तार्किक या धर्मिक तत्व होते हैं और यही तत्व जीवन के मूल्य होते हैं। यद्यपि यह आवश्यक नहीं है कि इन मूल्यों से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्षत: प्रभावित होता ही हैं। प्ररन्तु परोक्ष रूप से प्रत्येक व्यक्ति इन मूल्यों द्वारा ही प्रेरित होकर कार्य करता है। उदाहरणार्थ - भारतीय हिन्दू संस्कृति में बड़े - बजुर्गों को सम्मान से देखा जाता हैं, गाय को माता मान कर पूजा जाता है। तुलसी के पौधे के पत्ते को देवों के सिर चढ़ाया जाता है तथा प्रसाद में डालकर वितरित किया जाता है । परन्तु विदेशों में ऐसा नहीं है। वहाँ वृद्वों को उतना अधिक आदर-सम्मान नहीं मिलता है। इसी कारण वृद्धों के भरण-पोषण का भार वहाँ की जनता पर न होकर सरकार पर होता है। वृद्धों को मरणोंपरान्त होने वाली क्रियाओं के लिए पहले से ही उसे स्वयं ही इंतजाम करना पड़ता है। मूल्य निर्णय विवेचना तथा विश्लेषण का मुख्य आधार है। यह व्यक्ति की रूचियों एवं इच्छाओं से उत्पन्न होता है। सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य उन मुल्यों को अपनाता है। जिसे समाज ने मान्यता दे रखी है। प्रत्येक व्यक्ति के अपने कुछ मूल्य होते है। जिनसे प्ररित होकर वह कार्य करता है। इससें उसे संन्तुष्ट एवं सुख मिलता है। "प्रत्येक व्यक्ति का जीवन मूल्य एक जैसा ही हो हालॉकि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन मूल्यों का निर्माण प्राणी मात्र की सेवा एवं भलाई के लिए किसी जाना चाहिए।

परिभाषा

वर्तमान समय में न केवल दर्शन शास्त्रियों, ने वरन् समाज शास्त्रियों, अर्थ शास्त्रियों एवं विद्वानों ने मूल्य को काफी महत्व दिया है। इन्हों ने मूल्य के अभिप्राय को अपने-अपने तरीके से स्पष्ट किया हैं। इनके अवलोकन से मूल्य का अर्थ, महत्व, प्रत्यय सभी अधिक स्पष्ट हो जाता हैं-

लैविस समफोर्ड के अनुसार "मानव का प्रमुख प्रयोजन ,मूल्यों का सृजन करना एवं उन्हें संरक्षित करना है। यही बात सभ्यता को अर्थ प्रदान करती है। फ्रांसिस मैगर्बी मूल्य के सम्बन्ध में अपने विचार कुछ इस तरह से व्यक्त किये है "मूल्य वह आदर्श स्तर है जिससे मनुष्य अपने चुनाव की क्रिया में प्रभावित होता है"

निकेल एवं डार्सी[4]के अनुसार, "मूल्य मानवीय व्यवहार को प्रेरणा प्रदान करने वाले कारक है। यह न्याय विवेचन तथा विश्लेषण करने हेतु आधर प्रदान करते है तथा कुछ वह गुण होते है जिससें कि विभिन्न विकल्पों के मध्य बुद्धिमतापूर्वक चयन को सम्भव करते हैं ।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है, कि "मूल्य जीवन को सार्थकता प्रदान करने वाला वह प्रत्येक कारक है। जिसका सृजन (मूल्यांकन) व्यक्ति द्वारा होता है। यह मानवीय व्यवहारों एवं कार्यो को नियत्रित करता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति वस्तु की ओर अग्रसर होता हुआ अपने लक्ष्यों को पाने में सफलता होता है। परन्तु इसका उद्देश्य सदैव प्राणी मात्र की भलाई, सेवा एवं कल्याण से है । इसके अभाव में मूल्यों का कोई महत्व नहीं है।

मूल्यों का उद्गम और विकास (Origin and Development of values)-मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। परिवार द्वारा ही उसका पालन-पोषण होता है।वह जिस परिवार में पलता-बढ़ता है, जिस समाज में रहता है उसी के द्वारा बनायें गयें मूल्यों को ग्रहण करता हैं मायो के अनुसार, "मूल्यों के सम्बन्ध में परिवार न केवल लक्ष्य चयनकर्ता है वरन् उसमें निर्णयकर्ता भी है।" मुल्यो का निर्माण व्यक्ति की रूचि एवं इच्छाओं से होता है। वही इसका विकास, विलक्षण एवं उपभोग करता है। इसी से व्यक्ति की अभिवृत्रियाँ (Atitudes) बनती है। अभिवृतियाँ व्यवहार करने के तरीकों को संचालित करती है। मूल्यों से ही कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। इस लिए प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान होता है। वह अपने मूल्यों को सुरक्षित करके रखता है। तथा भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करता है इसका अर्थ यह कदापि न

समझा जाए कि मूल्य व्यक्ति में स्वत: ही वंशानुगत कारणों से आ जाता है। बल्कि उसे सीखना पड़ता है।

परिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक भिन्नताओं के कारण मूल्यों में भिन्नता पायी जाती है। प्रतयेक व्यक्ति का जीवन मूल्य भिन्न होता है। यहाँ तक कि एक ही परिवार में रहने, पलने-बढ़ने वाले दो बालको का जीवन मूल्य भी भिन्न होता है। हाँलाकि वह जीवन मूल्यों को अपने परिवार से ही सीखता है। तथा उन्हें कार्य रूप से पारिगाणित करता है । व्यक्ति उन्ही लोगों के साथ उठना-बैठना, बातें करना पसन्द करता है। जिनके जिवन मूल्य, आचार-विचार व्यवहार में काफी समानता हों प्रत्येक संस्कृति का अपना मूल्य होता है। यथार्थ में, मूल्य ही संस्कृति होती है। व्यक्ति जिन अच्छे व धनात्मक मूल्यो को सिखता है, अपनाता है, निर्माण एवं विकास करता है। तो संस्कृति विकसित होती है। परन्तु यह भी सच है। कि प्रत्येक संस्कृति का अपना मूल्य है। संस्कृति में भिन्नता होने से मूल्यों में भिन्नता हो जाती है। इसे निम्न उदाहरण द्वारा समझानें का प्रयास किया गया है, "भारतीय संस्कृति में स्त्रीं पति को परमेंश्वर मानती है। बड़े, बुजुर्गो, सास-ससुर को आदर-सम्मान देती है। गाय को माता कहकर पूजा जाता है। तुलसी के पौधों की पूजा की जाती है।

2.3 मूल्य की विशेषताए

पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक , भौगोलिक, राजनैतिक आादि कारणों से व्यक्ति के मूल्यों में भिन्नता पाई जाती है। विभिन्न संस्कृति के लोगों के जीवन मूल्य भी भिन्न होता है फिर भी, मूल्यों की अपनी कुछ विशेषताएँ होती है जो सभी के लिए समान होती है। मूल्य की विशेषताएँ निम्नलिखित है-

(1) मूल्य व्यक्तिगत होते है। इसी कारण ये मूल्य ग्रहण करने वाले व्यक्ति के लिए हमेशा ही महत्त्वपूर्ण होते है।

(2) मूल्य स्थायी एवं अस्थायी दोनो प्रकार के होते है शक्ति, प्रतिष्ठा, एवं सफलता को वास्तविक मूल्य के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है क्योंकि ये स्थायी होते है । कुछ मूल्य अस्थायी होते है इनमें परिवर्तन इतनी अधिकमंद गति से होते है जिसका अनुभव आसानी से नहीं किया जा सकता है, जैसे- एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के मूल्यों में होने वाला परिवर्तन। यह परिवर्तन बहुत बाद में दिखाई देता है। दादी-पोती के मूल्यों में परिवर्तन माँ-बेटी के मूल्यो में परिवर्तन।

(3) पूर्ण ऐच्छिक एवं संतुष्टि प्रदान करने वाले होते है।

(4) मूल्यों में स्व-निर्माण एवं विकास करने की योग्यता होती है।

(5) मूल्यों की तीव्रता प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न होती है। मनुष्य उन्ही मूल्यों को महत्व देता है तथा अपनाता है जिसे वह सर्वाधिक पसन्द करता है । उदाहरण- एक व्यक्ति अपने जीवन में धर्म, ईश्वर भजन, पूजा-पाठ को अधिक महत्व देता है। जबकी दूसरा व्यक्ति धन कमाने पर बल देता हैं। उसके लिए धन प्राप्ति महत्त्वपूर्ण है।

(6) मूल्य निर्देशात्मक होता है। यह व्यक्ति को कार्य करने की प्रेरणा देता है।

(7) मूल्य संस्कृति के परिचायक होते है। मूल्यों से किसी परिवार समाज राज्य, राज्य की संस्कृति को पहचाना जाता है। भारतीय संस्कृति हमें बडों को मान-सम्मन देना, परिवार में प्रेम व स्नेह से रहना, सभी से प्रेमपूर्वक व्यवहार करना, अतिथि देवोभव: गो-माता, सूर्य पूजा जैसी बाते सिखाती है। तो पाश्चात्य संस्कृति व्यक्तिवादी एवं भौतिकवादी है जहाँ लोग व्यक्ति से नहीं बल्कि उसके पद, व्यक्तित्व एवं कार्य से प्रेम करते है।

(8) मूल्य व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होते है यह व्यक्ति को कार्य करने के लिए उत्प्रेरक की भाँती कार्य करता है, व्यवहार को नियंत्रित करता है तथा अभिवृतियों (Auirudes) के निर्माण एवं विकास में सहायक होता है ।

(9) मूल्य धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनो ही प्रकृति के होते है। यह तो व्यक्ति के ऊपर निर्भर करता है। कि वह किन मूल्यों को अधिक महत्व देता है। एक बुद्धिमान व्यक्ति अपने स्वभाव के कारण सदैव धनात्मक मूल्यो को ग्रहण करता है। ऋणात्मक मूल्यों को छोड़ता (त्यागता) जाता है।

(10) मूल्यों को नापा व अध्ययन किया जा सकता है। हाँ! गणनात्म विधि (Quantitative Method) से इसे नापना बहुत ही मुश्किल है परन्तु गुणात्मक विधि (Quantitative Method) से अभिव्यक्त किया जा सकता है। जैसे-कम, अधिक, बहुत अधिक, अच्छा,बहुत बुरा आदि।

(11) मूल्य सामान्य तथ्यों पर आधारित होते है तथा स्थान, माहौल एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तीत हो जाते है । उदाहरण - एक ही व्यक्ति का मूल्य, घर बाहर, कार्यस्थल, खेल के मैदानों तथा बाजार में सामग्री क्रय करते समय भिन्न (बदल) हो जाते है । कार्यस्थल पर व्यक्ति का मूल्य घर के मूल्यों से भिन्न होगा। घर में वह पिता/पति के रूप में मूल्यों को निरूपित करेगा जबकी कार्यस्थल में अपने पद की गरीमा के अनुरूप । इसी तरह खेल के मैदान मे वह खिलाड़ी के रूप में अपने मूल्यों को स्वीकारता है।

2.4 मूल्यों के प्रकार

जैसा कि हम पूर्व में अध्ययन कर चुके है कि मूल्य अत्यन्त व्यक्तिगत होते है । काई भी दो व्यक्ति का मूल्य एक जैसा नहीं होता है । यहाँ तक कि एक ही माता की कोख से उत्पन्न बालक, जो एक ही परिवार में, समान वातावरण में पलता-बढ़ता हैं उनके भी मूल्य भिन्न-भिन्न होते है। शायद इसी कारण विभिन्न समाजशास्त्रियो, दार्शनिकों एवं विद्वानों मूल्य को अपनी-अपनी विचार धाराओं से प्रभावित होकर भिन्न-भिन्न तरीके से वर्गीकृत किया है। मूल्यों का वर्गीकरण निम्नानुसार है - (1) प्रभुत्व के आधार पर मूल्यों का वर्गीकरण (According to Hierarchy of Values) प्रभुत्व के आधार पर मूल्यों को दो वगोर्ं में बाँटा गया है-

(i) आन्तरिक एवं साधनात्मक मूल्य (Intrindic and Instrumental Value) (ii) आदर्शात्मक एवं तथ्यात्मक मूल्य (Nomative and factual value)

(i) **आन्तरिक मूल्य (Intrinsic value)-** व्यक्ति में पाये जाने वाले प्राकृतिक गुण आन्तरिक मूल्य कहलाते है । इस पर किसी का दबाव नहीं होता यह अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं वांछनीय होते है । उदाहरण- कला एवं सौन्दर्य के प्रति रूचि, पति-पत्नि के बीच प्रेम, माँ-बेटे का प्रेम आदि।

मैकी ने आन्तरिक मूल्य को निम्न प्रकार परिभाषित किया है- ''घर की स्थिति में कई असंख्य सम्बन्धों के मध्य किसी व्यक्ति की स्वास्थ्य वृद्वि ही उसका आन्तरिक मूल्य है।'' (The healthy growth of individual persons in their multiple relationship in a home situation is intrinsic value''– Mckee) वीमान के मतानुसार, ''आन्तरिक मूल्य ही महत्त्वपूर्ण एवं वांछनीय होता हैं।'' जैसे- कला के प्रति प्रेम, ईश्वर भक्ति में रूचि, भाई- बहन का प्रेम, भाई-भाई में प्यार आदि। साधनात्मक मूल्य (Instrumental Value) यह मूल्य अन्य मूल्य या लक्ष्य प्राप्त करने में। सहायक होता है, इसलिए इसें ''लक्ष्य-

मूल्य''(Goal-Value) भी कहतें है । आन्तरिक मूल्यों की प्राप्ति में भी यह एक साधन की तरह कार्य करता है। किसी कार्य को पूर्ण कुशलता व निपुणता से सम्पन्न करना साधनात्मक मूल्य है । शिल्प विज्ञान सम्बन्धी रूचियाँ एवं संतुष्टि इसी मूल्य के उदाहरण हैं। मैकी (Mckee) ने चार तरह के साधनात्मक मूल्यों के बारे में बताया है, ये मूल्य है-

POSE

(1) P = Planning (योजना)
(2) O = Order (क्रमबद्वता)
(3) S = Skills (कौशल)
(4) E = Efficiency (क्षमता)

कुछ मूल्य ऐसे भी होते है जिनमें आन्तरिक एवं साधनात्मक, दोनों ही मूल्यों के गुण विद्यमान रहतें है। जैसे - कला, खेल, आराम, स्वास्थ्य, महत्वाकांक्षा, प्यार आदि। सभी मूल्य एक-दूसरे पर आश्रित एवं सम्बन्धित होते है। तथा व्यक्ति के व्यवहार एवं आचरण को निर्देशित करतें है।

(i) **आदर्शात्मक मूल्य (Normative Value)-** ये वे मूल्य होते है जो नैतिकता पर आधारित होते है । इसके सृजन के समय सही-गलत, उचित-अनुचित, सत्य-असत्य का ध्यान रखा जाता है। इसकी जड़ें व्यक्ति के जीवन की गहराई तक जाती है। उदाहरण- यदि किसी व्यक्ति के जीवन में धन कमाना या किसी भी तरह से सफलता प्राप्त करना तथ्यात्मक मूल्य (Factual Value) है तो किसी के जीवन में ईमानदारी, सत्य, कर्तव्यनिष्ठा आदर्शात्मक मूल्य है। जिसे वह किसी भी हालत में छोड़ना पसन्द नहीं करता है। तथ्यात्मक मूल्य (Factual Value)- ये वे मूल्य होते है। जो विस्तृत एवं ऐच्छिक है । यह मुख्य व्यक्ति को इच्छाओं एवं प्राथमिकताओं पर आधारित होते है। इसका अध्ययन किया जा सकता है। वैज्ञानिक आविष्कार करना, धन अर्जित करना, सफलता प्राप्त करना, (चाहे केसे भी तरीके से सम्भव हो) आदि तथ्यात्मक मूल्य है। एंथुन के आधार पर मूल्यों के वर्गीकरण से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि, " आन्तरिक रचनात्मक मल्य की अपेक्षा उच्च होते है जबकी आदर्शात्मक मूल्य तथ्यात्मक मूल्य की अपेक्षा के होते है।

(2) पार्कर के अनुसार, प्रसिद्व समाजशास्त्री पार्कर ने मानव आचरण व समानता कर उत्प्रेरित एवं नियत्रित करने वाले मूल्यों को निम्न प्रकारों में बाँटा गया है-

(ii) प्रेम (Love) - प्रेम पारिवारिक जीवन की सफलता की कुजी है। प्रेम के बिना कोई भी व्यक्ति का परिवार उन्नति नहीं कर सकता क्योंकि यही आपसी विश्वास का आधर हैं। मानवीय सम्बन्धों में रूचि एवं सन्तुष्टि जो पति-पत्नि प्रेम, पिता-पुत्र प्रेम, भाई-बहन प्रेम, मित्रता, ईश्वर के प्रति प्रेम मानव जाती के लिए प्रेम, समुदाय के प्रति प्रेम, और आदर्श प्रेम के रूप में मनुष्य अभिव्यक्त करता है, दर्शाता है।

(iii) ज्ञान प्राप्ति की इच्छा (Desire for Knowledege)- मानवीय सम्बन्धों को सजीव व जीवन्त बनायें रखनें के लिए व्यक्ति में ज्ञान एवं विवेक का रहना अत्यावश्यक है। साथ में विश्वास करना और जीवन के सभी पक्षों के सम्बन्ध में सन्तोंषजनक ज्ञान प्राप्त करने में रूचि रखना।

(iv) कला (Art.)-सौन्दर्य एवं उनकी अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों मेंरूचि रखना ही 'कला' कहलाता है, जैसे-संगीत, नृत्य, लेखन कला, कविता लिखना, गृह सज्जा आदि। विभिन्न प्रकार के सौदर्य को जानना, उसकी प्रशंसा करना तथा सौन्दर्य को अनुभव या संन्तुष्ठ होना ।

(v) खेल (Play) - खेल व्यक्तित्व विकास के लिए अत्यावश्यक है। इससें कल्पना शक्ति विकास होता है। जिससें व्यक्ति रचनात्मक कार्यो की ओर मन को लगाता है। व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास के लिए जीवन में खेल के मूल्य का विकास करना अत्यन्त आवश्यक है । अर्थात कल्पना शक्ति (Imagination Power) तथा रचनात्मक कार्यो मेंरूचि रखना।

(vi) स्वास्थ्य (Health)- शारिरीक एवं मानसिक स्वास्थ्य में रूचि लेना क्योंकि अन्य मुल्यों कि प्राप्ति के लिए व्यक्ति को शारिरीक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ्य रहना आवश्यक है। पारिवारिक जीवन में सुख, आराम, आनन्द, संतोष एवं सफलता पाने के लिए लक्ष्यों को प्राप्त करना अत्यावश्यक है। हम सभी बोल चाल में लक्ष्य प्राप्त करने की बात करते है। तथा समझतें है। प्रत्येक परिवार नित्य प्रति नयें लक्ष्यों का निर्माण करता है तथा पूर्ति हेतु निरन्तर चेष्टा करता है। तो आइयें हम जाने कि आखिरी लक्ष्य क्या है? "सामान्य अर्थो में लक्ष्य जीवन के वे साध्य होते है जिन्हें प्राप्त करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति या परिवार प्रयत्नशील रहता है

लक्ष्यों का निर्माण व निर्धारण व्यक्ति की इच्छाओं, जीवन मूल्यों, दार्शनिक विचारधाराओं (Philosophies)और अभिवृतियों (Atitudes) से होता है। ये मूल्य से अधिक स्पष्ट एवं निश्चित होते है, क्योंकि इन्हें प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही इसे

आसानी से परिभाषित भी किया जा सकता है, जैसे-प्रेम एक मूल्य है, इसे दूसरे के सामने प्रकट किया जा सकता है, अनुभव किया जा सकता है परन्तु आसानी से स्पष्ट एवं परिभाषित नहीं किया जा सकता है। परन्तु स्वयं का मकान बनाना, गाड़ी खरीदना, यात्रा -प्रवास करना अच्छा है जिसे आसानी से समझा व परिभाषित किया जा सकता है। उपर्युक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि, "लक्ष्य एक उद्देश्य है। जिसकी प्राप्ति के लिए हम तत्पर रहते है। तथा नई तकनीकी कार्य प्रणाली विधियाँ, तरीके व कार्यक्रम तय करते है "यह ग्रहण करने सभी वस्तु का अर्थ है। जिसकी उत्पत्ति व्यक्ति के मूल्यों इच्छाओं से होती हैं। इससें व्यक्ति के जीवन में सूख एवं सन्तोष मिलता है। अधिकांश पारिवारिक लक्ष्यों का निर्माण ही सभी उद्देश्य से किया जाता है। (Nekell and Dorsey ने अपनी पुस्तक "Management in family Living " में लिखा है-, " लक्ष्य निन्मर चलने वाली प्रक्रिया है। जो जीवनपर्यन्त चलती रहती है। इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति अपने मूल्यों एवं इच्छाओं, विचारधाराओं एवं अभिवृत्तियों में परिवर्तन करना रहता है। यदि उसे किसी लक्ष्य की पूर्ति होने की आशा कम होती नजर आती है तो इन लक्ष्यो को छोड़कर नये लक्ष्यों का निर्माण करता है जैसे कोई छात्र डॉक्टरी पढ़ना परन्तु बार-बार प्रतियोगिता परिक्षा देने के उपरान्त भी वह सफल नहीं होता है तो डॉक्टरी पढ़ने का लक्ष्य त्यागकर शिक्षक, व्याख्याता या रेलवे की नौकरी प्राप्त करने का प्रावधान है। एक लक्ष्य की पूर्ति होने पर दूसरे लक्ष्य का निर्माण स्वत: हो जाता है तथा संयुक्त परिवार इसकी प्राप्ति हेतु जीवनभर संघर्षरत रहता है। जैसे- मकान बनाने के बाद इसकी सज्जा करना लक्ष्य है। गृह सज्जा हेतु प्रतिदिन घर की साफ-सफाई धूल झाड़ना आवश्यक है। इस प्रकार जीवनभर लक्ष्यों का निर्माण होता रहता है। हाँ! कुछ लक्ष्य आवश्यक होते है तो कुछ सामूहिक । कुछ दीर्घकाल में पूरें होते है तो कुछ अल्प काल में कुछ स्पष्ट होते है तो कुछ अस्पष्ट है। परन्तु इनकी पूर्ति से

हमेंशा ही व्यक्ति को सुख एवं सन्तोंष की प्राप्ति होती है। कुछ लक्ष्यों को पूरा करने हेतुसम्पूर्ण जीवनकाल भी कम प्रतीत होता है, जैसे-समाज कल्याण का कार्य, परिवार के सदस्यों की शारीरिक एवं मानसिक विकास आदि। लक्ष्यों का वर्गीकरण (Classification of Goals) लक्ष्य मुख्यत: तीन प्रकार के होते है-

(1) तात्कालिन या अल्पकालिक लक्ष्य (Intermediate or short term Goal)

(2) साधन समाप्ति लक्ष्य (Means End Goals)

(3) दीर्घकालिक लक्ष्य (Long Term Goals)

तात्कालिक या अल्पकालिक साधन समाप्तिदीर्घकालीन (मकान बनाना, उच्च शिक्षा ग्रहण करना) (गृह सज्जा, बर्तन माँजना, वस्त्र धोना आदि) (बिल भुगतान हेतु पैसा जमा करना)

(1) तात्कालिक या अल्पकालिक लक्ष्य (Intermediate or short Tem Goals)- ये लक्ष्य अधिक स्पष्ट एवं निश्चित होते हैं तथा असंख्य होते है । प्रत्येक परिवार प्रतिदिन इन लक्ष्यों का निर्माण एवं खोज करता रहता है तथा तीव्रता के अनुसार इन्हे प्राप्त भी करता है। सभी लक्ष्य समान रूप से महत्वपूर्ण एवं उपयोगी नहीं होते हैं । वे लक्ष्य जो अत्यधिक महत्वपूर्ण होते हैं उनकी पूर्ति पहले की जाती हैं कुछ लक्ष्य अन्य लक्ष्यों की प्राप्ति मे सहयोग करते है। कुछ लक्ष्य दीर्घकालीन लक्ष्यों की पूर्ति हेतु किए जाते है । जैसे- मकान बनाना, जमीन खरीदना, बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाना। ये सभी दीर्घकालीन लक्ष्य है जिनकी पूर्ति हेतु तात्कालिक लक्ष्य पूरे किये जाते है।

(2) साधन समाप्ति लक्ष्य (Means End Goals)-इसे "Mean End Chains " भी कहा जाता है। वास्तव में "साधन समाप्ति लक्ष्य" कोई लक्ष्य नहीं होता है। वरन् यह तात्कालिक लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन या निर्णय मात्र होता है। ऐसे लक्ष्यों की पूर्ति स्वत:ही कुछ क्रियाओं के बाद पूर्ण हो जाती है। जैसे- बैंक से पैसा निकालने हेतु

चेक काटना, बालको को पढ़ने हेतु किताबें खरीद कर देना, नये सूट सिलवाने हेतु वस्त्र खरीदना, गृह सज्जा हेतु डेकोरेटिव आइटम खरीदकर लाना आदि।

(3) दीर्घकालिक लक्ष्य (Long Term Goals)- वे लक्ष्य जिन्हें प्राप्त करने में अधिक समय लगता है, ''दीर्घकालिक लक्ष्य'' कहलाते है। कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करने में महीनों एवं सालों लग जाते है तथा कुछ लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु मानव का सम्पूर्ण जीवनकाल कम नजर आता है। ये अधिक स्थायी होते है। इनकी प्राप्ति हेतु व्यक्ति परिवार या जीवन पर्यन्त कठिन परिश्रम करता है। जैसे - बाँध का निर्माण, किला का निर्माण, भवन निर्माण, उच्च शिक्षा प्राप्त करना आदि। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति एवं परिवार के दीर्घकालिक लक्ष्य भिन्न-भिन्न होते है। परन्तु कुछ दीर्घकालिक लक्ष्य ऐसे भी है जिन्हें प्रत्येक परिवार पाने की चेष्ठा करता है। ये लक्ष्य है-

(1) स्वयं का आरामदायक एवं स्वास्थ्यकर आवास जिसमें परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके ।

(2) स्वयं का वाहन, (मोटर, साईकिल जीप, कार , बस, स्कूटर आदि।

(3) परिवार के प्रत्येक सदस्य को उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य एवं शैक्षिक विकास।

(4) मनोरंजन के साधन हेतु उपयोगी वस्तुओं की व्यवस्था।

(5) स्वास्थ्यकर वातावरण का निर्माण जिसमें सभी सदस्यों का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक, विकास बेहतर तरीके से हो सके।

(6) सन्तोषजनक व्यक्तिगत एवं पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित करना जिससें परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम, स्नेह, करूणा, सहयोग सहानुभूति, एकता एवं संगठन की भावना हों।

(7) परिवार की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उचित व्यवस्था करना। उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति एवं परिवार को जीवनपर्यन्त संघर्षरत होना पडता हैं। साधनों को जुटाना पडता हैतथा कठौर परिश्रम करना पडता है। इसके साथ ही परिवार के सभी सदस्यों के बीच आपसी प्रेम समझोंता स्नेह, सहानुभूति की आवश्यकता होती है। तभी दीर्घकालीन लक्ष्य पूरे हो पाते है। अन्यथा ये लक्ष्य मात्र एक स्वप्न बनकर रह जाते है, कभी साकार नहीं हो पाते है। क्योंकि एक-एक साधनों को नहीं जुटाया जा सकता है। साधनों को जुटाना तात्कालिक लक्ष्यों को पूरा करने से होता है।

2.5 लक्ष्य की विशेषताएँ (Characteristics of Goals)

(1) लक्ष्य सतत् चलने वाली एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जैसे ही एक लक्ष्य की पूर्ति होती है। दूसरा लक्ष्य स्वत: ही निर्मित हो जाता है तथा व्यक्ति या परिवार उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्न करता रहता है।

(2) लक्ष्य समय पर आधारित होते है। कुछ लक्ष्य तात्कालिक एवं अल्पकालिक होते है। जिनकी तात्कालिक पूर्ति करना आवश्यक होता है, जैसे- बस या ट्रेन से यात्रा करने हेतु टिकिट काटना टेलीफोन बिल जमा करवानें हेतु रूपये निकालकर देना। अल्पकालिक लक्ष्यों की पूर्ति होने से कई घण्टें से लेकर कई दिन लग सकते है। जैसे - खाना पकाना धूलाई करना गृह कि सजावट आदि। कुछ लक्ष्यों की प्राप्ति में महीनों एवं वर्ष लग जाते है। तथा कभी-कभी अपनी जिन्दगी भी थोड़ी लगती हैं।

(3) लक्ष्य परिवर्तनशील होते है। व्यक्ति की इच्छा रूचि, जीवन मूल्य, दार्शनिक विचारधारा, अभिवृत्तियो आदि में परिवर्तन होने से लक्ष्य परिवर्तित हो जाते है। हाँ! कुछ लक्ष्यों में परिवर्तन की गति इतनी धीमी होती है। कि स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर नहीं होता है, जैसे- पिता पुत्र का विचार।

(4) लक्ष्यों की उत्पत्ति मूल्यों से होती है। यदि एक व्यक्ति के मूल्य धार्मिक या शैक्षिक प्रवृति के है। त बवह अपने लक्ष्यों के निर्माण में धर्म एवं शिक्षा को ही प्राथमिकता देगा तथा इन्ही लक्ष्यों कि पूर्ति पहले करेगा।

(5) लक्ष्य से व्यक्तित्व का विकास होता है। सुनियोजित लक्ष्य से व्यक्ति की इच्छाओं, रूचियों अभिवृतियों एवं मूल्यों की पूर्ति होतीहै। जिससे उसे जीवन में सफलता प्राप्त होती है। परिणामस्वरूप उसमें आत्मविश्वास, एवं कर्तव्य के प्रर्ति निष्ठा का भाव जागृत होता है। वह हमेंशा नवीन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु नई-नई विधियों एवं तकनीको की खोज करता है।

(6) लक्ष्य व्यक्तिगत सामूहिक दोनो ही प्राकर के हो सकते है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सफलता, सुख-समृद्धि सन्तोष पाने के लिए लक्ष्यों का निर्माण एवं विकास करता है। उसके साथ ही वह परिवार के सदस्य के रूप में सामूहिक लक्ष्य के निर्माण एवं विकास में भी सहयोगी बनता है।

(7) लक्ष्य की प्रकृति गतिशील है। एक लक्ष्य का प्रभाव दूसरे तीसरे, चौथे और इसी तरह........... अनेक लक्ष्यों पर पडता है। जिससें दीर्घकालिक लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

(8) लक्ष्य व्यवहारवादी एवं यथार्थवादी होते है।इन्हें प्राप्त करना सम्भव होता है। जैसे - उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति या उच्च शिक्ष की प्राप्ति ।

(9) लक्ष्य समाज से प्रभावित होते है। समाज जिन मूल्यों को स्वीकारता है, महत्व देता है, व्यक्ति भी उन्हीं मूल्यों को स्वीकारते हुए लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है। विभिन्न रूचियों एवं पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों के सम्पर्क में नये लक्ष्य निर्मित कियें जातें है। इतना ही नहीं, व्यक्ति के लक्ष्यों से समाज भी प्रभावित होता है। तभी कहा जाता है। कि सुनागरिक से सुराष्ट्र का निर्माण होता है। जिस देश के नागरिक

आलसी, कामचोर, सुस्त एवं निर्बल होगें, वह राष्ट्र भी कमजोर एवं निर्बल होगा।

(10) लक्ष्य का सम्बन्ध "आशा"(Hope) से होता है। वे लक्ष्य जिनकी प्राप्ति होना मुश्किल होता है, त्याग दिया जाता है तथा उन्हीं लक्ष्यों का निर्माण किया जाता है। जिन्हें प्राप्त करने की आशा रहती है।

(11) परिवार के जीवन चक्र (Life Cycle) में परिवर्तन होने से लक्ष्यों में भी परिवर्तन हो जाते है। परिवार के मुखिया के आकस्मिक निधन, असाध्य बीमारी, भयानक दुर्घटना (Nevere Accidents) बेरोजगारी, फसल की बर्बादी, प्राकृतिक विपदा, आदि कारणों से व्यक्ति या परिवार का जीवन मैं एकदम से परिवर्तन आ जाते । ऐसी स्थिति में व्यक्ति या परिवार को अपने आर्थिक लक्ष्यों को बदलना अत्यन्त आवश्यक हो जाते है।

2.6 स्तर (Standard)

स्तर की उत्पत्ति मूल्य से होती है। मूल्य एवं लक्ष्य एक-दूसरें से घनिष्ठता से परिभाषित होते है स्तर भी मूल्य एवं लक्ष्य से सम्बन्धित होते है परन्तु इनके बीच कर्तव्य बन्धों की रेखा ढूँढना बेहद मुश्किल कार्य है । यद्यपि स्तर का निर्धारण मूल्य, लक्ष्य पूर्ण सर्घष से होता है । स्तर मूल्य एवं लक्ष्य की अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट, निश्चित, स्थूल एवं व्यावहारिक होते है किसी व्यक्ति के मल्य लक्ष्य के बार में केवल अनुमान लगाया जा सकता है। जबकी उस व्यक्ति के स्तर का निरिक्षण किया जा सकता है। ये हमारे जीवन में आदत के रूप में विकसित होते है। तथा हम उन्हें बिना अधिक सोचे-विचारें ही मान्यता दे देते है।

स्तर की परिभाषा "(Definition of Standard)

(1) **कूपर के अनुसार**-"हम प्रत्येक कार्य के लिए लक्ष्य को निर्धारित करते है। कि हम आन्तरिक रूप से सोचते है कि हमें इससें कितना अधिकतम संतुष्टि मिलेगी तथा जैसे रूप में हम इसके अधिकतम सहयोग द्वारा अपने जीवन की योजनाओं को समझते है।

(2) **ग्रास एवं कैन्डल के शब्दों में,** "गृह व्यवस्था से संम्बन्धित अधिकतम स्तरों कोजीवन को रहने योग्य बनानें हेतु आवश्यकता समझी जाने वाली स्थितियों को मानसिक चित्र के रूप में परिभाषि किया जा सकता है।

(3) **निकेल एवं डार्सी के मतानुसार-** "स्तर मूल्य के मापक होते है जिनकी उत्पति हमारे मूल्यों से होती है तथा यह हमारी किसी वस्तु में रूचियों की मात्रा एवं उनके प्रकार को निर्धारित करती है।

उरोंक्त परिभाषा से यह निष्कर्ष निकलता है, "स्तर एक आन्तरिक मानक है, जिसका चित्र व्यक्ति का मानस पटल पर चित्रित होता है। व्यक्ति इसे पूरा करता है। कोई बाहरी नियम या दबाव नहीं होता है। जो व्यक्ति को उसें पूरा करने हेतू दबाव डालें यह केवल व्यक्ति विशेष या समूह द्वारा मान्यता प्राप्त तरीको से किया जाता है। अर्थत् यह जीवन जीनें योग्य बनानें हेतु आवश्यक समझी जाने वाली स्थितियों का मानसिक चित्र है। इसकी प्राप्ति से सन्तोंष एवं नहीं मिलने से दु:ख पीड़ा असंतोष तथा बेचैनी होने लगती है।

2.7 स्तरों का वर्गीकरण "(Classification of Standard)

लक्ष्यों की भाँती स्तर भी विभिन्न प्रकार के होते है। विभिन्न विद्वानों ने अपनें-अपनें ढ़ग से इसे वर्गीकृत किया है। ग्रास एवं क्रेंन्डल ने मूल्यों के आधार पर स्तर को दों मूख्य भागों में बाँटा है-

(1) परम्परा स्तर"(Traditional or Conventional Standard)

(2) नमनीय या परिवर्तनशील "(Flexible or Changeable Standard)

(1) परम्परागत स्तर "(Traditional or Conventional Standard) स्तर रूढ़िगत एवं स्थिर होते है। इन्हें समाज के एक बडें समूह द्वारा स्वीकार किया जाता है। परिवार इसें बिना विचारें अपनाता

है। तथा पीढा-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करता है। निकेल एवं डार्सी ने इसी बात की पुष्टि अपनी पुस्तक **“Management in family living “** में की है । **“Rigid Standards are often associated with social or religious rites and imposed on the family by a social or religious group,”** व्यक्ति समाज में रहता है। वह समाज द्वारा निर्धारित नियमों, मूल्यों एवं स्तरों की पहचान न चाहतें हुए भी करता हैं। उसे समाज द्वारा निर्धारित स्तर को प्राप्त करने के लिए अति आवयश्कतानुसार स्वयं को बदलना पड़ता है। तथा समाज के साथ सामंजस्य बिठाना पड़ता है। ऐसे ही आपके लिए उसें कुछ कष्ठ उठाना पडें वास्तविकता तो यह है कि, “परम्परागत स्तर तुच्छ स्तर जिसे बनायें रखनें के लिए अधिक समय, श्रम एवं धन की आवश्यकता होती हैं ।

(2) नमनीय एवं परिवर्तनशील स्तर “**(Flexible or Changeable Standard)** यें स्तर परम्परागत स्तर पर ठीक विपरीत होते है। जिन्हें व्यक्ति अपनी इच्छा,रूचि, आवश्यकता एवं एवं सुविधानुकूल परिवर्तित कर लेते है। इन स्तरों को समाज के बड़ें समूह द्वारा परिभाषा नहीं दी जाती है। और न ही अपनाया जाता है। बल्कि व्यक्तिगत तौर पर इसका निर्माण किया जाता है। पारिवारिक जीवन में सुख, शान्ति, अपनत्व, प्रम स्नेह, मित्रता एवं आपसी सामंजस्य दिलाने हेतु व्यक्ति इन स्तरों को मानता हैं यह परिवर्तनशील स्तर है। अत: समय, स्थान, परिवार के अनुसार परिवर्तित हो जाते है। इन्हें कम समय एवं श्रम से प्राप्त किया जा सकता है। यथार्थ में ये परम्परागत स्तर के अपेक्षाकृत निम्न स्मर के है। तथा उन लोगों के लिए अनुकूल है। पारिवरिक जीवन में परिवर्तन के साथ गृह कार्यों का स्तर सामंजस्य ही परिवर्तनशील स्तर के महत्व को बताता है,

2.8 स्तरो को प्रभाववित करने वाले कारक Factors Affecting Standards

पारिवारिक जीवन में किन स्तरो को अपनाया जाए, किसे अधिक महत्व दिया जाए, यह कई कारको पर निर्भर करता है। इनमें से कुछ कारकों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है-

(1) स्तर की उत्पत्ति (Origin of Standards)-स्तरो को चयन करते समय या जानना अत्यन्त आवश्यक है कि आखिर इनकी उत्पत्ति कहाँ से हुई है ? जैसा कि हम सभी जानतें है स्तर जन्म परिवार के जीवन मूल्यों से होता है। तथा जीवन-मूल्यों की उत्पत्ति परिवार की सभ्यता एवं संस्कृति से होती है। अर्थात् स्तर की उत्पत्ति संस्कृति (Culture) से ही होती है। व्यक्ति या परिवार इन्हें ग्रहण करता है। तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी इनका हस्तान्तरण होता रहता है। यद्यपि स्तर समय, अवस्था प्रदेश के अनुसार परिवर्तित होते रहते है । यही कारण है कि एक समाज का स्तर दूसरे समाज के स्तर से बिल्कुल ही भिन्न होता है। एक ही व्यक्ति का स्तर अपने घरेलू एवं कार्यक्षेत्र के जीवन में भिन्न होता है। घर में परिवर्तनशील एवं लोचमय स्तर को अपनाता है । जबकी कार्यक्षेत्र में (Working Place) में उसका स्तर (Rigid) रहता है। उदाहरण- ग्रामीण महिला का रहन -सहन का स्तर, कार्य करने का ढंग शहरी महिला से बिल्कुल भिन्न होता है। इसी तरह प्राचीन समय में नारियों का जीवन स्तर आज के आधुनिक नारियों से बिलकुल भिन्न था। यह भी सच है कि समय के साथ स्तर परिवर्तन होता है। तब महिलाओं का कार्यक्षेत्र केवल घर की चारदीवारी तक सीमित था जबकी आज महिलाएँ अपने कार्यो को घर से बाहर भी चाहें वह अस्पताल में चिकित्सक के रूप में हो महाविद्यालय में प्रचार्य पद पर हो, सेना में सेनाधिकारी के रूप में हो, अपनें कार्यो को बखूबी निभाती है। और बेहत्तर अन्जाम देती है। अत: उनका जीवन स्तर प्राचीन समय की महिलाओं के जीवन स्तर से बिल्कुल ही भिन्न है यह काल (समय) परिवर्तन के कारण स्तर परिवर्तन का अच्छा उदाहरण है। किसी विशिष्ट स्तर की उत्पत्ति जानना बकहद मुश्किल है। परन्तु अधिकांश स्तर कुछ विशेष शक्तियों के कारण ही अपनायें जातें है तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित कियें जाते है, जैसे-

(i) भौतिक आवश्यकताओं के मूल्य के कारण

(ii) प्रतिष्ठात्मक मूल्य के कारण

(iii) समाज का समूह के कल्याण के कारण अथवा

(iv) इन तीनों के सम्मिलित प्रभाव के कारण। यह भी जरूरी नहीं है कि एक समूह के स्तर दूसरें समूह में भी मान्य हों स्तर के महत्व को स्वीकारतें हुए इसका चयन किया जाता है। यदि पारिवारिक जीवन की सफलता एवं उन्नति के लिए परम्परागत स्तर का महत्व है। तभी इसें अपनाया जाना चाहिए अन्यथा नहीं ।

2) स्तर का समय, श्रम एवं धन की दृष्टि से महत्व (Importance of Standred in Relation to time Energy and Money)-स्तर की उत्पत्ति, पारिवारिक जीवन मूल्यों से होता है। यदि जीवन मूल्यों को अपनाने से व्यक्ति को आर्थिक परेशानी नहीं होती है। तब तो इसे अपनाया जाना चाहिए। परम्परागगत स्तर जो कि रूढ़िगत स्तर है, उसे बनायें रखनें के लिए अधिक समय, शक्ति एवं धन की आवश्यकता होती है। परन्तु यदि किसी व्यक्ति या परिवार के पास इन तीनों ही साधनों (समय, शक्ति, धन,) का अभाव है तो अदृश्य स्तर में परिवर्तन करना आवश्यक है।

(3) मौलिक मूल्यों से सम्बन्ध(Relationship with Fundamental Values)- स्तरों के चयन की कसौटी में, मौलिक मूल्यों के स्तर से क्या सम्बन्ध है, यह जानना भी जरूरी है क्योंकि चयनकर्ता किन मूल्यों को ग्रहण करना चाहता हैवह उसके पास उपलब्ध साधनों पर निर्भर करता है। यदि व्यक्ति सामाजिक स्वीकृति एवं पूर्णता जैसे मूल्यों को अपनाना चाहता है। तथा उसके पास पर्याप्त मानवीय एवं भौतिक साधन (समय, धन तथा शक्ति) उपलब्ध होते है तब तो वह पारम्परिक स्तर को ही बनायें रखता है । परन्तु यदि वह आराम, सन्तोष, सुख, आपसी सामंजस्य एवं मित्रता जैसे मूल्यों को अपनाना चाहता है । तब वह अपने जीवन में परिवर्तनशील मूल्यों को ही महत्व देता है।

(4) स्तर को बनाये रखनें में परिवार के सदस्यों पर प्रभाव (Effect of Family Members in Maintaining Standard)-स्तरों के चयन में चयनकर्ताको यह भी जानना आवश्यक है कि इस स्तर को बनायें रखनें से परिवार के अन्य सदस्यों पर क्या प्रभाव पड़ेगा क्या वे इसे सहर्ष

स्वीकार करेंगें? क्या इस स्तर को अपनानें से परिवार के सदस्यों के विकास में बाधा तो उत्पन्न नहीं होगी आदि । यदि परिवार द्वारा निर्धारित स्तर परिवार के अन्य सदस्यों के विकास में बाधा उत्पन्न करता है। तो उस स्तर को बदल दिया जाना चाहिए।

(5) स्तरों का सामाजिक स्वकरण (Social Acceptance of Standards)-कई परिवर्तनशील स्तर पर परम्परागत स्तरों की अपेक्षा अधिक महत्व एवं गुण वाले होते है। क्योंकि इन्हें अपनानें में श्रम, शक्ति एवं धन व्यय होता है। यदि इन स्तरों को अपनानें के लिए समाज द्वारा स्वीकृति मिल जाती है। तब अधिकांश लोग इन स्तरों को अपनानें लगतें है। परम्परागत स्तर समाज द्वारा मन्य होते है। इनमें परिवार एवं समाज की आस्था एवं विश्वास होता है। जिन्हें बदना आसान कार्य नहीं है।

2.9 सारांश

ये स्तर किसी स्थान, समय विशेष कि संस्कृति के प्रतीक होते है। जिन्हें अपनाना व्यक्ति के लिए आवश्यक हो जाता है। उरोक्त वर्णन से स्पष्ट ज्ञात होता है कि परिवार के सदस्यों की इच्छाओं,रूचियों एवं अनुभवों के आधार पर जीवन मूल्यों, लक्ष्यों, अभिवृत्तियों एवं जीवन दर्शन का निर्माण होता है इन्ही के अनुसार स्तर निर्धारण होता है तथा ये ही किसी व्यक्ति, परिवार, समाज या राष्ट्र के रहन-सहन के स्तर को निर्धारित करते है यदि कोई व्यक्ति धर्म या शिक्षा को अपना मुख्य मूल्य समझता है। तब उसे पाने के लिए भौतिक सुख-सुविधाओं से दूर रहकर ईश्वर भजन कीर्तन में अपनें आपको रमाता है । उच्च शिक्षा की प्राप्ति हेतु निरन्तर प्रयत्नशील रहता है । साधनों को उपयोग कर वह इस मूल्य को अपना लक्ष्य बना लेता है। तथा एक स्तर को पानें की चेष्टा करता है।

2.10 अभ्यास प्रश्न

1. प्रबंध में मूल्यों का महत्व समझाइये
2. मूल्यों कितने प्रकार के होते है
3. लक्ष्यों को परिभाषित कीजिये

4. स्तरों को परिभाषित करते हुए उसके वर्गीकरण को समझाओ

2.11 संदर्भ ग्रन्थ

1. गृह व्यवस्था है। गृह सज्जा — बी.के. बख्शी, साहित्य प्रकाशन आगरा

2. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा — डा. वृंदा सिंह, पंचशील प्रकाशन जयपुर

3. गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य — विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, डा. रीना खनुजा

4. Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"

5. Nickel Dorsey M & Sons New york "Managment in Family

इकाई-3

साधन

3.0 उद्देश्य
3.1 प्रस्तावना
3.2 साधनों का वर्गीकरण
3.3 साधनों की विशेषता
3.4 साधनों के उपयोग की विशेषता
3.5 सिद्धांत
3.6 साधनों को प्रभावित करने वाले कारक
3.7 साधन- वृद्धि के उपाय
3.8 सारांश
3.9 अभ्यास प्रश्न
3.10 संदर्भ ग्रन्थ

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत

- साधनों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- साधनों की विशेषता के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- साधनों के वृद्धि करने के उपायों के बारे में जानकारी प्राप्त करसकेंगे ।
- साधनों के वृद्धि करने के उपायों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेगें ।

3.1 प्रस्तावना

पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए साधनों का सही ढंग से उपयोग करना अत्यावश्यक है। यहां साधन व्यवस्था से साधनों का संगठन करना एवं उसे गतिशील बनाना है। साधनों के बिना कार्य करना एवं लक्ष्यों तक पहुंच पाना संभव नहीं है। हम सभी इस बात से पूर्णत: सहमत है कि कोई भी व्यक्ति चाहे कितना ही चतुर, वाकपटु, कार्यकुशल, व्यावहारिक एवं बुद्धिमान क्यों न हो परन्तु यदि उसके पास साधन नहीं हो तो वह चाहकर भी लक्ष्यों तक नहीं पहुंच पाता है। प्रत्येक परिवार के पास चाहे वह अमीर

हो या गरीब अनेक साधन उपलब्ध होते है। हां । उनकी साधनों की प्रकृति अलग हो सकती है। किसी के पास समय अधिक तो किसी के पास शक्ति तो किसी के पास धन अधिक होता है। आवश्यकता इस बात की होती है कि वह अपने उपलब्ध साधनों को किस तरह से उपयोग करे जिससे कि उसे अधिकतम सन्तुष्टि लाभ मिले।

गृह व्यवस्था में पारिवारिक साधनों का उपयोग ऐसी कुशलता के साथ किया जाता है, ताकि पूर्व निर्धारित मूल्यों एवं लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। पारिवारिक साधनों का उपयोग यदि पूर्ण कुशलता, निपुणता, विवेकशीलता एवं मितव्ययतापूर्वक किया जाए तो इसमें कोई दो मत नहीं कि पारिवारिक लक्ष्यो एवं उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके। अर्थात् सर्वोत्तम गृह प्रबन्ध पारिवारिक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए उचित प्रयोग करने की एक कला है। व्यक्ति अपने बौद्धिक क्षमता का प्रयोग कर बेहतर गृह प्रबंध कर सकता है। कभी कभी ऐसे भी देखने को मिलता है। किसी व्यक्ति के पास साधनों की कोई कमी नहीं होती, परन्तु उचित व्यवस्था न होने से कार्य समय पर नहीं हो पाता। गृह व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य ही परिवार के सदस्यों को अधिकतम सुख, आनन्द लाभ एवं संतुष्टि प्रदान करना है, उनके बीच मधुर संबंध स्थापित करना है तथा कलह, द्वेष, मनमुटाव, वैमनस्य आदि की भावना खत्म करना है एवं उन्हें विकास की उत्तरोतर गति प्रदान करना है।

3.2 साधनों का वर्गीकरण

1. विभिन्न विद्वानों ने साधनों का वर्गीकरण विभिन्न तरीके से किया है। इनमें से कुछ प्रमुख वर्गीकरण निम्नानुसार हैं -

निकेल एवं डॉर्सी ने साधनों को मुख्य रूप से दो वर्गों में बांटा है

1. **मानवीय साधन -** बुद्वि, ज्ञान, रूचि, कौशल, शक्ति, अभिवृत्तियां आदि। ये सभी मानवीय साधन है।

2. अमानवीय साधन - इसके अन्तर्गत सामुदायिक सुविधायें, समय, धन, वस्तुएं आदि आते है।

2. "Home Economics Seminar" में सन् 1961 में इन्डियाना में फ्रेंच लिक में आयोजित "Home Economics Seminar" में साधनों को निम्नांकित तीन वर्गों में विभाजित किया गया था -

1 सामाजिक साधन - व्यवस्थापक को छोडकर अन्य सभी वस्तुएं एवं व्यक्ति सामाजिक साधन है।

2. व्यक्तिगत साधन या अव्यक्त साधन - इसके अन्तर्गत व्यक्ति की अभिवृत्तियां, रूचियां, विश्वास, संवेग,स्थायी, भाव, व्यक्तियों के पारस्परिक संबंध आदि आते हैं।

3. तकनीकी साधन - इसके अन्तर्गत वे सभी वस्तुएं एवं उपकरण आते हैं, चाहे वह प्राकृति हों अथवा मानव निर्मित।

3. ग्रॉस एवं क्रेन्डल ने साधनों को मुख्यत: दो वर्गों में बांटा है -

1. **मानवीय साधन -** रूचियां, कौशल, ज्ञान, योग्यताएं, समय शक्ति, अभिवृत्तियां आदि।

2. **अमानवीय साधन -** धन, भौतिक, वस्तुएं सामुदायिक सेवायें व साधन आदि अमानवीय साधन के अन्तर्गत सम्मिलित किये गये हैं। सामुदायिक साधनों में उद्यान, बाजार, अस्पताल, पार्क, जन्तुआलय, यातायात सुविधा, स्कूल, कॉलेज, पोस्ट ऑफिस आदि सुविधाएं आती हैं।

इन्होंने मानवीय साधन पर अधिक बल दिया है।

अध्ययन में सुविधा की दृष्टि से पारिवारिक साधनों को मुख्यत: दो वर्गों में बांटा जा सकता है -

1. मानवीय साधन

2. अमानवीय साधन

1. मानवीय साधन

मानवीय साधन व्यक्ति के भीतर अन्तनिर्हित गुण होते हैं। इसके अन्तर्गत, व्यक्ति परिवार के सदस्यों के जन्मजात एवं अर्जित दोनों ही आते है। प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक एवं बौद्धिक क्षमताएं सीमित होती हैं, परन्तु निरन्तर अभ्यास और गुण वृद्धि द्वारा इसे बढ़ाया जा सकता है। परिवार के सदस्यों की रूचियां, समय, शक्ति, ज्ञान, कौशल, चातुर्य, अभिवृत्तियां आदि प्रमुख मानवीय साधन है। मानवीय साधन में समाज द्वारा दी गई सुविधाएं, जैसे - चिकित्सा, परामर्श, शैक्षिक सुविधाएं, सामाजिक शिक्षा आदि सम्मिलित। मानवीय साधन अमानवीय साधनों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान होते हैं। क्योंकि एक योग्य एवं बुद्धिमान व्यक्ति अपने कौशल, बुद्धि, ज्ञान चातुर्य से अमानवीय साधनों को कुछ ही समय, दिनों, महीनो, वर्षों में जुटा सकता है जबकी अमानवीय साधनों के ढेर से तुरन्त ही आसानों से मानवीय साधन उपलब्ध नहीं हो सकते हैं।

मानवीय साधन निम्न हैं -

1. योग्यता - योग्यता एक महत्वपूर्ण मानवीय साधन है। ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ योग्यता देकर ही इस धरती पर भेजा है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी काम में प्रवीण एवं कुशल होता है। चाहे वह शारीरिक कार्य हो अथवा मानसिक। निरन्तर अभ्यास, कठोर परिश्रम एवं लगन से व्यक्ति अपनी योग्यताओं में वृद्धि कर सकता है। हां कुछ लोग अति विशिष्ट होते हैं, जिन्हें प्रकृति ने ही ढेर सारी योग्यता, कौशल एवं बुद्धि देकर ही इस संसार में भेजा है। परन्तु ऐसे व्यक्ति बिरले ही होते है। अधिकांश लोगों की योग्यता बढ़ाने के लिए कठोर परिश्रम वं निरन्तर अभ्यास करना ही पड़ता है।

2. रूचि - रूचि एक महत्वपूर्ण मानवीय साधन है। इसके होने पर कार्यकुशलता बढ़ जाती है। एक प्रसिद्ध कहावत है - ''जैसा मन वैसा तन और वहीं धन।'' अर्थात् मन, तन एवं धन ये तीनों ही एक दूसरे से घनिष्ठता से जुड़े होते है। जब व्यक्ति में कार्य के प्रति रूचि होगी तो वह काम को पूरे मनोयोग से करेगा जिससे उसे निश्चित ही सफलता प्राप्त होगी। बिना रूचि से काम करने पर लक्ष्य की प्राप्ति तो नहीं ही होती है, साथ ही कार्य नीरस, बोझिल, उबाऊ, एवं शीघ्र थका देने वाला होता है।

3. ज्ञान -आजकल बाजार में विभिन्न प्रकार की वस्तुएं, उपकरण, भोज्य सामग्री उपलब्ध है। गृहिणी अपने ज्ञान का सर्वोत्तम ढंग से उपयोग करके पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकती है तथा उन्हें संतुष्ट कर सकती है।

4. शक्ति - परिवार के सदस्यों की शारीरिक एवं मानसिक ऊर्जा भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पारिवारिक साधन है। किसी भी कार्य को सम्पन्न करने के लिए ऊर्जा की आवश्कयता होती है। चाहे वह शारीरिक ऊर्जा हो या मानसिक, जैसे पढ़ना, लिखना, झाड़ू लगाना, पौछा देना, खा पकाना कपडा धोना एवं प्रेस करना लकडी काटना, घर की साफ सफाई एवं सजावट करना आदि। व्यक्ति शारीरिक कार्य नहीं कर रहा होता है तथा पूर्णत: विश्राम की दशा में होता है तब भी शरीर की विभिन्न क्रियाओं को सम्पन्न करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। उदाहरणर्थ - सास लेना, भोजन पचाना, नींद आना, रक्त परिसंचरण, हृदय का धड़कना आदि।

5. अभिवृत्तियां - जो किसी कार्य को करने के लिए उत्साहित अथवा निरूत्साहित करती है। अभिवृत्तियां कहलाती है। परिवार के सदस्यों की अभिवृत्तियां भी एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक पारिवारिक साधन हैं। मूल्यों एवं लक्ष्यों से इसका निर्माण होता है। लक्ष्य तक पहुंचने के लिए व्यक्ति एवं परिवार की अभिवृत्तियों में समय, स्थान एवं परिस्थिति के अनुसार फेरबदल करना होता है तथा बदलते परिवेश एवं वातावरण के साथ सामजस्य स्थापित करना होता है।

6. कौशल - ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ विशेष कौशल हुनर देकर ही इस संसार में भेजा है। परन्तु सच यह भी नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक कार्य में दक्ष ही हो। कोई व्यक्ति सिलाई, कढाई, बुनाई कला में निपुण होता है तो कोई पढ़ने लिखने में, कोई पाक कला में कोई गृह सज्जा में। परिवार के जिन सदस्यों को जिस कार्य में रूचि हो उसे अवश्य ही विकसित करने का अवसर देना चाहिए।

7. समय - समय एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है जिसे किसी भी कीमत पर नकारा नहीं जा सकता। प्रत्येक काम को करने के लिए समय चाहिए। समय पर काम होने से ही सफलता मिलती है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन 24 घण्टे का ही समय उपलब्ध होता है। इतने ही समय में एक गृहिणी

प्रत्येक काम को समय से निपटाकर मनोरंजन एवं विश्राम के लिए भी समय निकाल लेती है।

2. अमानवीय साधन

अमानवीय अर्थात भौतिक साधन धन से प्राप्त किये जाते है। इन्हें देखा सुंघा एवं स्पर्श किया जा सकता है। स्कूटर, भोज्य सामग्री, वस्त्र, चल, एवं अचल सम्पत्ति औजार, बर्तन, उपकरण आदि वस्तुएं भौतिक साधन के उदाहरण है। धन से प्राप्त होने वाली सभी सुविधाएं जैसे पार्क बगीचा, अस्पताल, डाक सेवा, स्टेशन विश्रामालय पुस्तकालय रेल व बस सेवायें आदि भी भौतिक साधन ही है।

भौतिक साधन के अन्तर्गत निम्न सेवायें मुख्य है। जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है -

1. धन - धन एक महत्वपूर्ण भौतिक साधन है। बिना बिना धन के किसी व्यक्ति, परिवार, समाज या राष्ट्र का उत्थान संभव नहीं है। धन संसार की लगभग सभी भौतिक वस्तुएं या सेवाये प्राप्त की जा सकती है, जैसे भोजन,कपडा ,आवास फर्नीचर ,स्कूटर ,मोटरगाडी ,उच्चशिक्षा ,विदेश यात्रा आदि ।धन का विनिमय मूल्य होता है।

2. भौतिक वस्तुएं - वे सभी भौतिक वस्तुएं जिन्हे हम सभी रोज ही दैनिक जीवन में उपयोग करते है जैसे-भोज्य स्रामगी ,किताब, कापी, मेज, मकान, कपडा, पलंग, बर्तन, औजार, उपकरण आदि । धन के विनिमय द्वारा इन्हे खरीदा व बेचा जा सकता है।

3. सामुदायिक सुविधायें -इसके अन्तर्गत वे वस्तुएं आती है । जिसके लिए व्यक्ति या परिवार कोई धन नहीं खर्च करता है, बल्कि समाज का अभिन्न अंग होने के नाते वह इनका उपयोग करता है, यथा पार्क, पुस्तकालय, रेलगाडी, अस्पताल, स्कूल यातायात डाक सेवा, पुलिस रेलवे स्टेशन, महाविद्यालय, सड़क आदि। इन सेवाओं को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति, परिवार को सरकारी, अर्द्ध सरकारी या निजी संस्थानों को कुछ निर्धारित शुल्क भी चुकाना पड़ता है।

4. समय एवं ऊर्जा - कुछ विद्वानों ने समय एवं ऊर्जा की मानवीय साधन न मानकर, इन्हें भौतिक साधनों के अन्तर्गत गिनते है। कुछ विद्वानों ने समय एवं ऊर्जा को मानवीय साधन माना है। जब व्यक्ति स्वयं अपनी

ऊर्जा एवं समय का सदुपयोग कर किसी कार्य को करते हैं तथ लक्ष्य तक पहुंचते है तब यह मानवीय साधन कहलाते है। परन्तु जब धन खर्च करके इसे किसी अन्य व्यक्ति से काम करवाते है अथवा समय शक्ति बचत के उपकणों का उपयोग करते हैं तब यह भौतिक साधन कहलाता है।

3.3 साधनों की विशेषताएं

साधन चाहे मानवीय हो या भौतिक, इनकी अपनी कुछ विशेषताएं होती है। इन्हें पहचानना व इसके बारे में जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है, क्योंकि गृह प्रबंध में साधनों का विशेष महत्व है। साधनों के उचित प्रयोग से ही व्यक्ति, परिवार पूर्व निर्धारित एवं वांछित लक्ष्यों की प्राप्त कर सकता है। अत: साधनों का प्रबंध करना जरूरी है।

साधनों की निम्न विशेषताएं है -

सभी साधन सीमित होते हैं - साधनों की सबसे बडी खूबी है कि ये सीमित होते हैं, चाहे वह धन हो, समय हो, शक्ति हो या भौतिक वस्तुएं। जबकी आवश्यकताएं असीम एवं अनन्त होती है। सीमित साधनों का उपयोग कर लक्ष्यों की प्राप्ति करनी होती है। यदि साधन सीमित नहीं होते तो प्रबंध प्रक्रिया की आवश्यकता महसूस नहीं होती। साधनों की सीमितता को ध्यान मे रखते हुए व्यक्ति को पूर्व निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति करनी होती है एवं परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं को संतुष्ट करना होता है। वह व्यक्ति जो सीमित साधन में अधिकतम आवश्यकताओं को संतुष्ट करता है, कुशल प्रबंधक कहलाता है।

साधनों की सीमितता को दो वर्गों में बांटा जा सकता है -

1. गुणात्मकता सीमितता -मानवीय साधनों की सीमा गुणात्मक होती है। यह सच है कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति समान रूप से गुणी, ज्ञानी, बुद्धिमान, वाकपटु, चतुर आदि गुणों से परिपूर्ण नहीं होता है। प्रत्येक व्यक्ति की कार्यकुशलता, रूचि, कार्य करने का ढंग ज्ञान आदि में भिन्नता होती है। ये गुण के अन्दर निहित होते हैं तथा इनकी भी एक सीमा होती है। जैसा कि हम सभी जानते हैं, मानवीय साधनों ज्ञान, कौशल, बुद्धि, कार्यक्षमता, अभिरूचि आदि को देखा एवं स्पर्श नहीं किया जा सकता है, परन्तु एक निर्धारित कसोटी पर रखकर इन्हें महसूस किया जा सकता है

तथा प्रश्नावली, साक्षात्कार, परीक्षण द्वारा मापा जा सकता है। उदाहरण - विद्यार्थियों की प्रतिभा को मापने के लिए समय समय पर उनकी परीक्षाएं आयोजित की जाती है। कुछ लोगों में संगीत, नृत्य, पेटिंग, लेखन आदि में उच्च कोटि की कलात्मक प्रतिभा होती है

2. संख्यात्मक सीमा -

1. भौतिक साधन (धन, मुद्रा, औजार, भौतिक वस्तुएं भूमि, जल, ईधन, खाने, वन भोज्य, सामग्री आदि) भी सीमित होते है। इन्हें हम गिन सकते हैं। माप सकते है, अर्थात् संख्यात्मक होते है। रूपया, पैसा, मकान, कागज, फनीचर, दरियां पलंग विद्यालय आदि को गिना जा सकता है। भूमि कपड़ा, आदि को मापा जा सकता है। इसी तरह घी, तेल, दूध, पानी एवं अन्य तरल पदार्थ को तौला जा सकता है।

2. समस्त साधन उपयोगी होते हैं । यह अलग बात है कि किसी परिवार में कौन सा साधन ज्यादा उपयोगी है और कौन सा बिल्कुल कम। यह उस परिवार की आवश्यकताओं, रूचियों, एवं अभिवृत्तियों पर निर्भर करता है। उदाहरणार्थ - कुल्हाडी, दरांती, या हंसिया एक भौतिक साधन है। इसकी उपयोगिता मजदूर, किसान या लकडहारा परिवार में अधिक है जबकी कागज, कलम, फर्नीचर, आलमारी आदि वस्तुओं की उपयोगिता एक पढे लिखे परिवार में अधिक है। एक साधन जो एक परिवार के लिए उपयोगी हो सकता है, वह दूसरे के लिए अनुपयोगी हो सकता है। परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं समझा जाना चाहिए ये साधन हीं अनुपयोगी है।

3. साधन विकसित किये जा सकते है साधनों का विकास किया जा सकता है । आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है ।

आवश्यकता पड़ने पर साधन विकसित किये जाते हैं। जो व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र जितना अधिक साधनों का विकास अपने मेहनत, ज्ञान, बुद्धि, बल कौशल आदि के प्रयोग द्वारा करता है, वह उतना ही समृद्ध, उन्नत एवं प्रगतिशील कहलाता है। परिश्रम से धन कमाया जाता है । धन से सुख साधन की वस्तुएं खरीदी जाती है। वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा नये नये उपकरणों एवं चीजें तैयार की जाती है ।

4. साधनों का वैकल्पिक उपयोग किया जा सकता है - समय, स्थान, एवं परिस्थिति के अनुसार साधनों का वैकल्पिक उपयोग पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किया जा सकता है।

5. साधनों का वैकल्पिक उपयोग होता है प्रत्येक साधन का कोई न कोई विकल्प अवश्य होता है। उपलब्ध साधनों का उपयोग किस तरह किया जाना है किन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु करना है, यह उस परिवार के सदस्यों द्वारा निर्णय लिये जाने से है।

6. साधन पारस्परिक संबंधित होते हैं । सभी साधन एक दूसरे से संबंधित होते हैं। एक का प्रभाव दूसरे पर पड़ता है। किसी भी कार्य के संपादन के लिए न केवल एक साधन की जरूरत होती है, बलिक कई साधनों की आवश्यकता होती है। यदि एक व्यक्ति अपनी आय का आधा हिस्सा सुन्दर एवं वैभवपूर्ण सोफा सेट खरीदने में अथवा महेंगे सौन्दर्यशाली, हीरे जवाहरात जड़े गहने खरीदने में लगा देता है तो उसे अपने व अपने परिवार की कोई अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति में कटौती करनी पडती है। आगामी माह का बजट भी उसी के अनुरूप बनाना पड़ता है। अत: समस्त साधन अन्तर्सबंधित होते है।

7. साधनों के उपयोग पर प्रबंध प्रक्रिया का प्रभाव पडता है - सभी साधन सीमित होते है। सीमित साधनों में ही पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर लक्ष्यों की प्राप्ति करनी होती है। परन्तु यह तभी संभव है जब योजनाबद्ध तरीके से व्यवस्थित रूप में कार्य किया जाए, अन्यथा लक्ष्यों की प्राप्ति करना संभव नहीं है। प्रबंध प्रक्रिया के सभी सोपानों को क्रियान्वित करना, योजना पर नियंत्रण करना तथा क्रिया का मूल्यांकन करना। बिना इन सोपानों को पार किये साधनों की उचित व्यवस्था नही हो सकती है।

8. साधनों के उचित प्रयोग से जीवन स्तर में बढोतरी होती है - साधनों के उचित एवं योजनाबद्ध तरीके से उपयोग करने पर व्यक्ति, परिवार, के सदस्यों के रहन सहन का स्तर उंचा होता है। साधनों के समुचित प्रयोग से पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति होती है तथा जीवन की गुणवत्ता में बढोत्तरी होती है। अक्सर ऐसा देखा गया है कि दो समान आय वाले परिवारों में जिनकी पारिवारिक संरचना भी लगभग एक

जैसी होती है, में से जो परिवार विवेकपूर्ण ढंग से बुद्धिमतापूर्वक धन को व्यय करता है, समय का सदुपयोग करता है, उसका तथा उसके परिवार का रहन सहन एवं जीवन स्तर उंचा होता है। वह सीमित आय में भी परिवार के सदस्यों की अधिकतम आवश्यताओं की पूर्ति कर उन्हें संतुष्ट रखता है।

लक्ष्यों की पूर्ति के लिए परिवार के सदस्यों को प्रयास करना होता है। आवश्यकता एवं परिस्थिति के अनुसार दृष्टिकोण बदलना पडता है।

कई धर्मान्ध परिवार चुकन्दर, प्याज, मूली, लहसून, आलू, गोभी जैसे पौष्टिक सब्जियो का सेवन नहीं करते।कई शाकाहारी जैन परिवार मे भी दूध एंव दूध से बने व्यंजन का सेवन तक वर्जित है। जबकी दूध सम्पूर्ण आहार है। भौतिक वस्तुएं, उपकरणो एंव बर्तनो को क्रय करते समय यह ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि वे बहुप्रयोजनीय हो ।जिन साधनो की प्राप्ति मे कठिनाई होती हो, उसके स्थान पर आसानी एंव सुगमता से उपलब्ध साधनो को प्रयुक्त करना चाहिए। एक कुशल गृहणी उन्ही साधनो का अधिकतम उपयोग करती हैं जो सस्ते एवं सुलभ होते हैं तथा सुगमता से उपलब्ध हो जाते हैं।

3.4 साधनों के उपयोग के उद्देश्य

प्रत्येक साधन उपयोगी होता है, चाहे वह समय हो, शक्ति हो, धन हो या मानवीय साधन। यह अलग बात है कि व्यक्ति/परिवार साधनों का उपयोग किस सीमा तक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु करता है। जीवन में सफलता एवं लक्ष्यों की प्राप्ति साधनों की उपलब्धता पर कम, बल्कि इसकी उपयोगिता एवं प्रयोगकर्ता के कुशल प्रबंधन, चातुर्थ, ज्ञान एवं कुशाग्रबुद्धि पर निर्भर करता है। कई साधन सम्पन्न धनाढ्य परिवारों में ऐसा देखा गया है कि समस्त साधन उपलब्ध होने के बावजूद भी परिवार में कलह, द्वेष, एवं असंतोष का वातावरण छाया रहता है। परिवार के सदस्यों में हीन भावना भरी रहती है। इसके ठीक विपरित एक गरीब परिवार में जहां साधनों का काफी अभाव होता है परन्तु परिवार में एकता, सुख संतोष एवं प्रसन्नता रहती है।

साधनों के उपयोग के उद्देश्य निम्नानुसार है

लक्ष्यों की प्राप्ति -लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए साधनों का होना जितना जरूरी है उससे कहीं अधिक इसके उचित प्रयोग से है। पारिवारिक लक्ष्यों की पूर्ति साधनों के उचित प्रयोग से होती है। अत: साधनों का वितरण परिवार के सदस्यों के बीच इस तरह से किया जाना चाहिए कि लक्ष्य की प्राप्ति हो सके,

परिवार के सदस्यों का विकास - परिवार के सदस्यों के सर्वांगीण किवास के लिए साधनों का उचित उपयोग किया जाना नितान्त जरूरी है। यदि सही समय पर साधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाए तो परिवार के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक, आर्थिक एवं नैतिक विकास होता है। परिणामस्वरूप परिवार उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है।

मितव्ययिता - पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु मात्र साधनों की पर्याप्तता रहना ही काफी नहीं है, बल्कि साधनों की योजना इस तरह से की जानी चाहिए ताकि उसके उपयोग में मितव्ययिता लायी जा सके। प्रत्येक परिवार के पास कुछ न कुछ साधन अवश्य होता है। किसी के पास धन की प्रचुरता रहती है तो किसी के पास समय एवं मानवीय साधनों की। परन्तु साधनों का उचित वितरण किया जाना आवश्यक है तभी वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति होती है एवं जीवन में सफलता मिलती है। एक साधन की कमी की पूर्ति दूसरे साधन की बहुलता द्वारा किया जाना चाहिए।

संतुष्टि की इच्छा - लक्ष्यों की प्राप्ति में संतुष्टि मिलती है। साधनों के उचित उपयोग से न केवल व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, वरन् उसे परम सुख, आनन्द, हर्ष एवं उल्लास एवं संतोष की अनुभूति होती है जिससे उसका जीवन प्रसन्न एवं आनन्दित रहता है।

आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु - साधनों का उपयोग व्यक्ति, परिवार के शारीरिक मानसिक, सामाजिक, नैतिक, आर्थिक मनोवैज्ञानिक, धार्मिक आदि आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किया जाता है। इसके लिए मानवीय एवं भौतिक साधनों का उपयोग किया जाता है।

3.5 साधनों के उपयोग के सिद्धान्त

प्रत्येक व्यक्ति, परिवार के पास कुछ न कुछ मानवीय एवं भौतिक साधन अवश्य ही उपलब्ध होते हैं। वह साधनों का उपयोग इस तरह से करना चाहता है जिससे कि उसे अधिकतम संतुष्टि मिले। इस दृष्टि से साधनों के उपयोग में निम्नांकित सिद्धान्त हैं –

लक्ष्य निर्धारित करना -साधनों के उपयोग का पहला सिद्धान्त - पारिवारिक लक्ष्यों का निर्धारण करना । जब तक लक्ष्य निर्धारित नहीं किये जाएंगे तब तक साधनों के उपयोग की बात निरर्थक एवं उद्देश्यहीन है। प्रत्येक परिवार अपने मूल्स, दर्शन, रूचि, अभिवृति आदि के आधार पर लक्ष्य निर्धारित करता है फिर उसकी पूर्ति हेतु साधनों का उपयोग करता है।

योजना बनाना -साधनों के उपयोग का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धान्त योजना बनाना है। लक्ष्य की प्राप्ति किस तरह से की जानी है, क्या साधन उपयोग किये जाने है, किस समय किये जाने हैं, कौन व्यक्ति कार्य करेगा, कार्य सम्पादन में किन किन व्यक्तियों का सहयोग लेना है आदि अनेक बातों का योजना बनाना आवश्यक है। बिना योजना बनाये कार्य करना तुक्का लगाना अथवा अंधरे में तीर चलाने की भांति होगा। योजना बनाते समय उपलब्ध साधनों पर विचार किया जाना भी अत्यावश्यक है।

साधनों को एकत्रित करना - योजना बनाने से ही लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो जाती। योजना बनाने के उपरान्त साधनों को एकत्रित करना भी जरूरी है। जब तक साधनों को एकत्रित नहीं किया जाएगा तब तक लक्ष्य तक पहुंचना एवं सफलता प्राप्त करना संभव नहीं हो सकेगा।

साधनों को महत्व के क्रम के अनुरूप स्थापित करना - मात्र साधनों को इकट्ठा कर लेने से ही लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो जाती और न ही योजना सफल हो पाता है, बल्कि उन्हें एकत्रित करने के पश्चात साधन जो महत्व के होते हैं, उन्हें सबसे पहले एवं वे साधन जो कम महत्व के होते हैं, उन्हें सबसे अन्त में रखा जाता है।

क्रियान्वयन करना - कार्य के सम्पादन हेतु योजना बनाने के उपरान्त उसे क्रियान्वित करना बहुत जरूरी है, अन्यथा योजना मात्र एक सुखद सपना या दिवा स्वप्न ही बनकर रह जाएगा। साधनों के क्रियान्वयन करते समय

नियंत्रण भी किया जाना चाहिए, ताकि योजना के अनुरूप लक्ष्यों की प्राप्ति हो सके।

निरीक्षण करना - योजना के क्रियान्वित करने के बाद समय समय पर उसका निरीक्षण किया जाता है कि योजनानुसार कार्य हो रहा है अथवा नहीं। यदि नहीं तो क्या कारण है। क्या त्रुटियां/कमियां रह गई है। कौन कौन से साधन उपयोग में नहीं आ रहे हैं अथवा कौन से साधन के उपयोग में कठिनाईयां एवं अड़चने आ रही है। योजनानुसार कार्य सम्पन्न करने हेतु कहां किन किन जगहों पर परिवर्तन करना आवश्यक है । आदि बातों पर ध्यान दिया जाता है ताकि लक्ष्य की प्राप्ति हो सके ।

समायोजन - कार्य के निरीक्षण के दौरान जब यह पता चलता है कि अमुक साधनों की कमी, अनुपलब्धता, त्रुटि के कारण कार्य योजनानुसार सम्पन्न नहीं हो पा रहा है तथा लक्ष्यों की प्राप्ति में अड़चने आ रही है तब उसमें आवश्यकता व परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन करके समयोजन करना अत्यावश्यक होता है।इसके लिए निर्णयकर्ता को फिर से नये निर्णय लेने पड़ते है।

मूल्यांकन - साधनों के उपयोग एवं प्रबंध प्रक्रिया का यह सबसे अन्तिम सिद्धान्त है। इस चरण की समीक्षा की जाती है कि साधनों के प्रयोग से कितना संतोष प्राप्त हुआ।यदि संतुष्टि, लक्ष्यों, उद्देश्यों की प्राप्ति में कोई कमी रही तो इसके क्या कारण रहे है ताकि पुन: जब कार्य किये जाएं तो उसमें अपेक्षित सुधार किया जा सके

3.6 पारिवारिक साधनों को प्रभावित करने वाले कारक

पारिवारिक साधनों को प्रभावित करने वाले कारण निम्नलिखित है -

परिवार का सामाजिक एवं आर्थिक स्तर - पारिवारिक साधनों को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक महत्वपूर्ण कारक है - परिवार का सामाजिक एवं आर्थिकस्तर । समाज में विभिन्न आय वर्ग के लोग रहते हैं। उनका रहन सहन खान पान, रीति रिवाज, अभिवृत्तियां भी भिन्न भिन्न होती है। धनाढ्य वर्ग के लोग धन व्यय करके अधिकतम आवश्यकताओं की संतुष्टि करते हैं तथा अनेक भौतिक वस्तुओं का उपयोग करते है। अत: उनका रहन - सह का स्तर उंचा होता है। परिवार के सदस्य संतुष्ट एवं

प्रसन्न रहते हैं। इसके ठीक विपरित गरीब परिवारों में रहन सहन का स्तर निम्न कोटि का होता है। कई बार परिवार के सदस्यों में असंतुष्टि, हीन भावना एवं कुण्ठा पनपने लगती है।

पारिवारिक जीवन चक्र -पारिवारिक जीवन चक्र भी साधनों को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक प्रमुख कारक है। प्रत्येक परिवार विभिन्न जीवन चक्र से होकर गुजरता है। पारिवारिक जीवन चक्र भी सदैव एक सा नहीं रहता है। समय के साथ यह परिवर्तित होता रहता है। परिवार के सदस्यों को आयु बढ़ने के साथ ही साधनों की उपयोगिता में अन्तर आने लगता है। उदाहरणार्थ - जब परिवार में छोटे बालक होते हैं तब उनके पालन पोषण में अधिक समय व्यय होता है। बच्चों को खेलने के लिए खिलौने की जरूरत होती है। बच्चों की जैसे जैसे उम्र बढती जाती है। वे स्कूल से महाविद्यालय में प्रवेश कते है, वैसे वैसे उनकी आवश्यकताओं में भिननता आने लगती है।

परिवार का आकार एवं संगठन - परिवार का आकार एवं संगठन भी पारिवारिक साधनों को प्रभावित करता है। इसके साथ ही यदि परिवार विशेष अवस्थाओं जैसे - बाल्यावस्था, गर्भावस्था, धात्रीवस्था, वृद्धावस्था से गुजर रहा होता है तब उस परिस्थिति में भोजन, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं में वृद्धि हो जाती है। अत: साधनों में वृद्धि हो जाती है। इसके ठीक विपरीत यदि परिवार का आकार छोटा होता है तथा संगठन एकाकी होता है तब कम साधनों की जरूरत होती है।संयुक्त परिवार में सदस्यों में भोजन, पोषण, मनोरंजन, शिक्षा, वस्त्र, आवास आदि पर एकाकी परिवार की अपेक्षाकृत व्यय होता है।

जीवन का दृष्टिकोण - प्रत्येक व्यक्ति एवं परिवार के जीवन के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण होते है। कुछ लोग सांसारिक भागों में पूर्णत: लिप्त रहना चाहते है। उन्हें भौतिक वस्तुओं विशेषकर आरामदायी एवं विलासिता संबंधी वस्तुओं में काफी गहरा प्रेम करते है। जिस व्यक्ति की जैसी विचारधाराएं, मान्यताएं, मूल्य, अभिवृत्तियां एवं विश्वास होती हैं वह उसी के अनुरूप साधनों का उपयोग करता है। सांसारिक भोगों में सदैव लिप्त रहने वाला व्यक्ति, भौतिक वस्तुओं के क्रय, संग्रह एवं उपयोग पर अधिक बल देता है

जबकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति कम साधन में भी संतुष्ट रहकर प्रसन्न रहता है तथा सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

प्रबंध कुशलता - व्यक्ति की कार्यकुशलता, वाक्पटुता, चातुर्थ, बुद्धिमानी एवं प्रबंध कुशलता से भी पारिवारिक साधनों की उपयोगिता निर्भर करती है। वे व्यक्ति भी व्यावहारिक एवं प्रबंध कुशल होते हैं, वे नियोजित तरीकों से साधनों का उपयोग कर पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति करते हैं। वे सीमित साधनों का सही समय में उपयोग कर उससे लाभ उठाते हैं न कि साधनों का अपव्यय करते हैं। अत: परिवार के प्रत्येक सदस्य प्रसन्न, तुष्ट एवं आनन्दित दिखाई देते है।

व्यवसाय एवं पारिवारिक आय -साधनों की उपयोगिता को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक अति महत्वपूर्ण कारक होता है। कार्य की प्रकृति अर्थात् व्यवसाय एवं पारिवारिक आय/यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि जिस परिवार की आय अधिक होगी, उनका रहन सहन का स्तर उंचा होगा।

वह परिवार के सदस्यों को अधिकाधिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर उन्हें संतुष्ट कर सकेगा। इसके विपरीत निम्न आर्थिक वर्ग के लोग कम ही साधनों को प्रयुक्त कर पाते हैं।

मकान एवं उसकी स्थिति - मकान का आकर एवं इसकी स्थिति कि कहां पर स्थित है, से भी साधन प्रभावित होते हैं। यदि मकान शहर के बीचों बीच स्थित है तथा बाजार, रेलवे स्टेशन, विद्यालय, चिकित्सालय आदि में नजदीक है तब धन,समय एवं शक्ति की काफी बचत होती है। क्योंकि कम धन समय एवंश्रम व्यय करके आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है। परन्तु यदि मकान शहर से काफी दूर है तब विद्यालय, रेलवे स्टेशन बाजार आदि जगहरों में आने जाने में ही अधिक श्रम समय एवं धन व्यय होता है। क्योंकि स्कूटर ऑटोरिक्शा आदि का सहारा लेना पड़ता है। स्कूटर में पेट्रोल पर व्यय होता है । इसी तरह ग्रामीणों की साधन संबंधी आवश्यकताएं शहरी लोगों की अपेक्षाकृत काफी भिन्न होती है। ग्रामीण लोगों की आवश्यकताएं शहरी लोगों की अपेक्षाकृत कम काफी भिन्न होती है। ग्रामीण लोगों की आवश्यकताएं एवं दिनचर्या भिन्न रहने से साधनों की उपयोगिता में काफी अन्तर आ जाता है।

कामकाजी महिला - कामकाजी महिलाओं को दिनचर्या एवं आवश्यकताओं घरेलू महिलाओं से काफी भिनन होती है। कामकाजी महिला के लिए समय अमूल्य है जबकी घरेलू महिला के लिए समय का कम महत्व होता है। कामकाजी महिला समय को बचाने के लिए धन, समय,शक्ति बचत के उपकरण एवं अन्य साधनों का उपयोग करती है। समयाभाव की दशा में वह घर पर नाश्ता न बनाकर बाजार से बना बनाया परिवार को उपलब्ध करवाती है। घरेलू महिला अपने अधिकांश समय को पड़ोसी के साथ गप्पें मारने, सोने आराम फरमाने आदि में व्यतीत करती है। उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि साधनों का उपयोग घरेलू एवं कामकाजी महिला के लिए भिन्न होता है।

उपलब्ध साधनों एवं इसके विकल्पात्मक प्रयोग का ज्ञान - यदि गृहिणी प्रबंधक को उपलब्ध साधनों एवं प्रत्येक साधन के विकल्पात्मक प्रयोग की समुचित जानकारी हो तो साधनों की उपयोगिता बढ़ जाती है।

साधनों के कई विकल्पात्मक प्रयोग होते हैं। समय एक साधन है। इस साधन का उपयोग यदि गन्दे एवं अश्लील साहित्य पढ़कर लडाई झगडा कर अथवा अन्य कार्य कर कढाई पढाई आदि में नहीं किया जा सकता। परन्तु यदि समय का व्यय सोच समझकर आय अर्जित करने हेतु किया जाए तब पारिवारिक आय में वृद्धि होती है तथा मन में प्रसन्नता एवं खुशी मिलती है। इसके ठीक विपरित अश्लील साहित्य पढ़ने अथवा गंदी पिक्चरें देखने में केवल समय नष्ट होता है। साथ ही मन में गंदे विचार आते हैं।

3.7 साधन वृद्धि के उपाय

समस्त साधन सीमित होते हैं, चाहे वे मानवीय साधन हों अथवा भौतिक। सीमित साधनों में ही पारिवारिक आवश्यकताओं की अधिकाधिक पूर्ति कर लक्ष्यों को प्राप्त करना पड़ता है। सीमित साधनों के अधिकतम संतुष्टि किस प्रकार प्राप्त हो सकती है। इस संबंध में एलिजाबेथ हॉयट ने निम्न चार सुझाव दिये हैं -

1. साधनों की पूर्ति में वृद्धि करना
2. वैकल्पित प्रयोग की जानकारी
3. साधनों की उपयोगिता में वृद्धि एवं रूचियों में विस्तार

4. विकल्पों का साधनों के साथ संतुलन

साधनों की पूर्ति में वृद्धि करना -पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु साधनों का होना अत्यावश्यक है। प्रत्येक परिवार के पास कुछ न कुछ साधन निश्चित रूप से उपलब्ध होते हैं। यह अलग बात है कि किसी परिवार के पास समय अधिक तथा धन की कमी होती है। कुछ परिवार में धन एवं अन्य भौतिक वस्तुओं की अधिकता होती है जबकी मानवीय साधनों एवं समय की कमी होती है। परिवार के पास जो भी साधन उपलब्ध हों उसकी जानकारी प्रत्येक सदस्य को होनी चाहिए ताकि वे उस साधन का उपयोग कर पूर्व निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकें। परन्तु कई परिवार में साधनों विशेषकर, धन की जानकारी केवल घर के मुखिया, प्रबंधक को ही होती है। साधनों की समुचित जानकारी न होने से परिवार के सदस्य उसका उपयोग लक्ष्य प्राप्ति में नहीं कर पाते हैं। उदाहरणार्थ - परिवार के पास पर्याप्त धन होने के बावजूद भी यदि गृहिणी के पास समय शक्ति, बचत के उपकरण नहीं है तब गृहिणी को खाना पकाने एवं घरेलू कार्य को सम्पन्न करने हेतु काफी श्रम, समय एवं शक्ति व्यय करना पड़ता है। जैसे मसाला पीसने हेतु मिक्सर होने से सिल पाटी पर मसाला पीसना होता है। प्रेशर कूकर के अभाव में भगोने में दाल, चावल, पकानी होती है। वाशिंग मशीन के अभाव में हाथ से कपड़े धोने पड़ते है जो कि वास्तव में श्रमसाध्य कार्य है। परन्तु इसके ठीक विपरित एक साधारण आय अर्जित करने वाले परिवार जिनमें काम करने वाले सदस्यों की सं
ख्या अधिक है, अपनी आय को अधिकांश हिस्सा समय शक्ति बचत के उपकरणों पर व्यय कर देता है।

वैकल्पिक प्रयोग की जानकारी - साधनों का उपयोग एक से अधिक प्रयोजन हेतु काम में लाया जा सकता है । उदाहरणार्थ - शीशम की लकडी एक साधन है। इससे चारपाई, पलंग, टेबूल, कुर्सी, सजावट के समान आदि अनेक वस्तुएं तैयार की जा सकती हैं।लकड़ी का उपयोग जलाने के रूप में भी किया जाता है। अब गृहिणी को यह सोचना होगा कि वह लकडी का उपयोग किस रूप में करें ताकि उससे परिवार के सदस्यों को अधिकतम सुख सुविधा एवं संतुष्टि मिल सके। पारिवारिक लक्ष्य को ध्यान में रखकर साधनों का प्रयोग सर्वोत्तम विकल्पों में किया जाना चाहिए। परन्तु यह

सब तभी संभव है जब गृहिणी की साधनों के प्रयुक्त होने के विभिन्न विकल्पों की समुचित जानकारी हो। इसे भी कदापि नहीं नकारा जा सकता है कि एक साधन का एक बार उपयोग हो जाने पर उसी साधन का उपयोग दोबारा नहीं किया जा सकता है। उदाहरणार्थ समय एक साधन है । यह अमूल्य है। बीता हुआ समय कदापि लौटाया नहीं जा सकता। खेल खेलने में व्यय किया गयासमय अध्ययन करने पर व्यय नहीं किया जा सकता है। अर्थात् जो समय मनोरंजन करने में या यात्रा करने में अथवा गप्पें मारने में व्यय किया गया हो, उसी समय का दोबारा उपयोग पूजा करने, भोजन पकाने या सिलाई बुनाई करने में नहीं किया जा सकता है। इसी तरह जिस धन का उपयोग कलम या किताब खरीदने में व्यय किया गया हो उसी धन का पुन: व्यय फल या सब्जी खरीदने में नहीं किया जा सकता है। पारिवारिक लक्ष्य प्राप्ति हेतु कई साधनों का प्रयोग किया जाता है। परन्तु बुद्धिमता इसी में है कि उन्हीं साधनलों का उपयोग किया जाए जो साधन सरलता से उपलब्ध हो सकते है।

साधनों की उपयोगिता में वृद्धि एवं रूचियों में विस्तार - साधनों की उपयोगिता में वृद्धि का ज्ञान गृहिणी को होना आवश्यक है। प्रत्येक वस्तु के एक से अधिक उपयोग होते है। परन्तु गृहिणी इनका अधिकतम उपयोग तभी कर सकती है जब उसे उसके बारे में पर्याप्त जानकारी होने के साथ ही कार्य करने के रूचि हो।

4.विकल्पों का साधनों के साथ सन्तुलन - सुखद एवं आनन्दय जीवन व्यय करने के लिए न केवल अधिकाधिक साधनों का रहना अत्यावश्यक है, बल्कि उनमें संतुलन भी होना आवश्यक है। उदाहरणार्थ जिस तरह स्वादिष्ट सब्जी तैयार करने हेतु संतुलित मात्रा में तेल, मसाला एवं नमक डालना पडता है तथा एक निश्चित समय तक विधिपूर्वक पकाना पडता है। यदि इनमें से किसी एक भी चीज की कमी हो जाती है तो सब्जी कदापि स्वादिष्ट नहीं बन सकती। इसी तरह संतुष्ट एवं सुखमय जीवन के लिए साधनों के मध्य संतुलन का होना अनिवार्य है ।

3.8 सारांश

निर्धारित मूल्यों और लक्ष्यों की प्राप्ति के पारिवारिक साधनों के कुशल उपयोग पर निर्भर करती है । मानवीय और (भोतिक)साधनों में उचित प्रयोग से जीवन स्तर बेहतर बनता है ।समय ,स्थान और परिस्थिति के अनुसार प्रयुक्त साधन लक्ष्य प्राप्ति में सहायक होते है । साधनों की उपलब्धता पर नही वरन उसकी उचित उपयोगिता पर ध्यान देना आवश्यक है तभी परिवार उन्नति कर सकता है ।

3.9 प्रश्न

1.साधनों को परिभाषित कीजिये

2. साधनों की विशेषताऐ बताइए ।

3. साधनों के उद्देश्य को समझाइये

4. साधनों को प्रभावित करने वाले उपाय बताइए

3.10 संदर्भ ग्रन्थ

1. गृह व्यवस्था है। गृह सज्जा — बी.के. बख्शी, साहित्य प्रकाशन आगरा
2. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा — डा. वृंदा सिंह, पंचशील प्रकाशन जयपुर
3. गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य — विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, डा. रीना खनुजा

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi
"Managment for Morden Families Sterling"

5- Nickel Dorsey M & Sons New york
"Managment in Family

इकाई -4

ऊर्जा व्यवस्थापन(Energy Management)

4.0 उद्देश्य
4.1 प्रस्तावना
4.2 ऊर्जा व्यवस्थापन अर्थ एवं परिभाषा
4.3 ऊर्जा की माँग
4.4 ऊर्जा व्यवस्थापन की प्रक्रिया
4.5 यांत्रिकी
4.6 परिवर्तन के वर्ग
4.7 कार्य सरलीकरण अर्थ परिभाषा
4.7.1कार्य सरलीकरण को प्रभावित करने वाले कारक

4.7.2कार्य सरलीकरण तकनीक
4.8 थकान कारण, प्रकार, लक्षण एवं थकान दूर करने के उपाय
4.9 सारांश
4.10 अभ्यास प्रश्न
4.11 संदर्भ ग्रंथ

4.0 उद्देश्य Objectives

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- ऊर्जा व्यवस्थापन का अर्थ जान सकेंगे
- ऊर्जा व्यवस्थापन की प्रक्रिया बता सकेंगे।
- शरीर यात्रिंकी को समझ सकेंगे।
- परिवर्तन के वर्ग समझ सकेंगे।
- कार्य सरलीकरण को गहराई से जान सकेंगे।
- थकान के बारे में वैज्ञानिक दृष्टिकोण द्वारा जान सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

आज के व्यस्त दौर में समय, ऊर्जा व धन का बड़ा महत्व है। जो भी महत्वपूर्ण चीज होती है उसका व्यवस्थापन बड़ा ही सोच विचार कर करना पड़ता है। ऊर्जा व्यवस्थापन अत्यंत ही आवश्यक है जिससे कि समय एवं धन की बचत भी हो सकती है। ऊर्जा व्यवस्थापन के अन्तर्गत हम सीखेंगे कि ऊर्जा व्यवस्थापन कैसे करें, शरीर यांत्रिकी को समझते हुए कार्य सरलीकरण कैसे किया जाता है और थकान को नए नजरिए से जान सकेंगे।

4.2 ऊर्जा व्यवस्थापन- अर्थ एवं परिभाषा (Energy Management– Meaning and Definition)

समय का व्यवस्थापन करना जितना आसान है उतना ही कठिन है ऊर्जा का व्यवस्थापन करना। समय के अनुसार कार्य योजना तो बना ली जाती

है। मगर कार्य के सम्पादन में कितनी ऊर्जा ऊर्जा व्यय होगी, इसका आकलन करना आसान नहीं, क्योंकि कोई व्यक्ति यह नहीं जानता कि अमुक कार्य सम्पन्न करने में कितनी ऊर्जा व्यय होगी।

विभिन्न घरेलू क्रियाओं को सम्पन्न करने में विभिन्न व्यक्तियों की कार्यक्षमता भी भिन्न-भिन्न होती है। एक व्यक्ति जिस कार्य को जितनी अधिक सरलता, सहजता, सुगमता एवं तीव्रता से करता है वहीं दूसरा व्यक्ति उसी कार्य को करने में कठिनाई महसूस करता है। कार्य क्षमता व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक सरंचना, भौगोलिक स्थिति, वातावरण आदि बातों पर निर्भर करता है।

दिन या सप्ताह में कुछ समय ऐसा भी आता है जब गृहिणी को एक साथ ही अनेक काम करने पड़ते हैं । उस समय उसका कार्य भार अधिक होता है। इसके ठीक विपरित दिन में कुछ समय ऐसे भी होते हैं, जब गृहिणी को कम काम करने पड़ते हैं तथा उसका कार्य भार कम रहता है। उपर्युक्त विवेचनों से स्पष्ट होता है कि समय व्यवस्थापन की अपेक्षा ऊर्जा व्यवस्थापन करना अधिक कठिन, मुश्किल एवं जटिल कार्य है।

1. **निकेल एवं डॉर्सी के शब्दों में** - "Energy management is more difficult and complex than time management. We can always count on 24 hours a day when making time and activity plans, but we never know how much energy can be counted to carry them out."

यह निश्चित करना कि किसी विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कितनी ऊर्जा व्यय होगी इसकी जानकारी गृहिणी को होनी चाहिए। यदि उद्देश्य की पूर्ति बहुत अधिक ऊर्जा व्यय करके की जाती है तब बुद्धिमानी इसी में है कि उस उद्देश्य को छोड़ दिया जाए तथा अन्य नये उद्देश्य निर्मित किये जाएँ जिसमें कम ऊर्जा व्यय हो तथा परिवार के सदस्यों को अधिक लाभ मिले साथ ही घरेलू क्रियाओं को समय पर सम्पन्न करने के लिए ऊर्जा बची रहे। उदाहरण- यदि लौकी का कोफ्ता एवं गाजर का हलुआ बनाने में अधिक ऊर्जा व्यय होती है तो उसके स्थान पर कोई अन्य

रसेदार सब्जी एवं मिठाई बनाई जा सकती है जैसे आलू- परवल की सब्जी एवं सेवई आदि।

निकेल एवं डॉर्सी ने ऊर्जा व्यवस्थापन एवं लक्ष्य के संबंध में अपने विचार इस तरह से व्यक्त किये हैं-

"Goals are important in energy managment becuase they determine how much and what kind of energy should be mobilized. In making plans two questions should be asked. How much energy should be spent in persuit of a particular goal. How much is its attainment worth."

2. ऊर्जा व्यवस्थापन का अर्थ - ऊर्जा व्यवस्थापन से तात्पर्य है, "सुविधापूर्वक एवं संतोषजनक तरीके से कार्य सम्पन्न करना ताकि थकान उत्पन्न नहीं हो।" साथ ही कार्यकर्त्ता/गृहिणी को मनोरंजन, विश्राम एवं अन्य क्रियाकलापों के लिए भी ऊर्जा बची रहे।

थकावट का अर्थ उस स्थिति से होता है जो व्यक्ति की कार्यक्षमता में कमी ला देता है। अत: क्रियाओं की योजना इस प्रकार से बनानी चाहिए ताकि बिना थके, कम ऊर्जा व्यय किये अधिकतम कार्यों को सम्पन्न किया जा सकें ।

घरेलू क्रियाओं के सम्पादन में कम - से - कम ऊर्जा व्यय हो, इसके लिए गृहिणी को निम्नांकित बातों पर बल देना चाहिए -

- गृह निर्माण सम्बन्धी विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करने में कितनी ऊर्जा की आवश्यकता होती है।
- कौन-कौन से घरेलू कार्य अधिक थकाने वाले हैं?
- पारिवारिक जीवन-चक्र की विभिन्न अवस्थाओं एवं ऊर्जा का आपस में क्या सम्बन्ध है?
- थकान कितने प्रकार के होते है? थकान का व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?

- शारीरिक थकान को दूर करने के लिए विश्राम काल का प्रयोग किस तरह किया जाना चाहिए?
- ऊर्जा व्यवस्थापन में आयोजन, नियंत्रण एवं मूल्यांकन के क्या महत्त्व हैं?

4.3 ऊर्जा की माँग (Energy Demands) -

पारिवारिक जीवन-चक्र की जिस अवस्था में समय की माँग अधिक रहती है। उस अवस्था में ऊर्जा की माँग भी अधिक होती है।

पारिवारिक जीवन चक्र की विभिन्न अवस्थाओं में ऊर्जा माँग निम्नानुसार रहती है-

प्रथम अवस्था - पारिवारिक जीवन-चक्र की प्रथम अवस्था में केवल नव-विवाहित दम्पति होते हैं। उनके पास पर्याप्त समय रहता है। समय की विशेष माँग नहीं होती है। अत: ऊर्जा माँग भी कम ही रहती है। परन्तु यदि पति-पत्नी दोनों ही नौकरी करने जाते हैं तथा घर-बाहर के कार्यों को स्वयं ही निपटाते हैं, तब शारीरिक एवं मानसिक ऊर्जा की अधिक जरूरत होती है-

प्रथम अवस्था = ऊर्जा माँग कम

निकेल एवं डॉर्सी के अनुसार - *Energy demands are lowest during stage I, the beginning family stage. If the home maker works outside the home, however she must learn to divide her energy between the demands of her outside work and her home responsibilities."*

दूसरी एवं तीसरी अवस्था - इन अवस्थाओं में पति-पत्नी के अलावा बच्चों को आगमन हो जाता है। परिवार में सदस्यों की संख्या बढ़ जाती है। जब बालक छोटे रहते हैं, तब उनकी लालन-पालन, देखभाल, खिलाने-पिलाने स्वास्थ्य सुरक्षा आदि में अधिक ऊर्जा व्यय होती है। क्योंकि छोटे बालक पूर्णत: माँ-पिता पर आश्रित रहते हैं। उनका प्रत्येक काम माता-पिता अथवा घर के अन्य सदस्यों को ही करना होता है।

निकेल एवं डॉर्सी के शब्दों में- *"The busiest years for the homemaker occur during stage–II, the period during which the family is expanding."*

दूसरी व तीसरी अवस्था ऊर्जा माँग सर्वाधिक

चौथी अवस्था - चौथी अवस्था में बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु महाविद्यालय जाने लगते हैं। अब वे माता-पिता पर आश्रित न होकर स्वावलम्बी बन जाते हैं। साथ ही वे पारिवारिक एवं घरेलू क्रियाओं को करने में सहयोग भी देते हैं। अत: गृहिणी का कार्य-भार थोड़ा हल्का हो जाता है। परिणामत: ऊर्जा माँग थोड़ी कम हो जाती है। गृहिणियाँ चाहे तो घरेलू क्रियाओं के अतिखुला अन्य क्रियाओं को भी कर सकती हैं, जैसे- धर्म-सभा में भाग लेना, पूजा-पाठ करना, स्कूल में नि:शुल्क पढ़ाना आदि।

चौथी अवस्था = ऊर्जा माँग थोड़ा कम

पाँचवीं अवस्था - पारिवारिक जीवन चक्र की यह संकुचित अवस्था है। इस अवस्था में बच्चे आत्मनिर्भर हो जाते हैं। उनकी शादियाँ हो जाती हैं। अब वे या तो माता-पिता के घर छोड़कर अपना अलग घर बसा लेते हैं अथवा माता पिता के साथ रहते हैं।

गृहिणी भी अब वृद्ध हो जाती है। उसकी शारीरिक ऊर्जा दिन-प्रतिदिन क्षीण होने लगती है। वह चाहकर भी अधिक कार्य नहीं कर पाती। अब उसे अधिक आराम की जरूरत होती है। अत: वह ऊर्जा को संचय करके रखना चाहती है। इस प्रकार सम्पूर्ण पारिवारिक जीवन-चक्र में ऊर्जा की माँग घटते-बढ़ते रहती है।

पाँचवीं अवस्था = कम ऊर्जा माँग की ऊर्जा संचय की आवश्यकता अधिक

4.4 ऊर्जा व्यवस्थापन की प्रक्रिया (Process of Energy Management)

समय व्यवस्थापन की भाँति ऊर्जा व्यवस्थापन की भी निम्न प्रक्रियाएँ हैं-

ऊर्जा के उपयोग की योजना (Planning the use of Energy) - ऊर्जा व्यवस्थापन की योजना, समय व्यवस्थापन की भाँति बनायी जानी चाहिए ताकि कम ऊर्जा व्यय करके अधिकतम कार्य को समय पर पूरा

किया जा सके व पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सके। वैसे भी समय एवं ऊर्जा व्यवस्थापन में गहरा नाता-रिश्ता है। इन्हें एक-दूसरे से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। समय योजना में समय ज्ञात करने हेतु घड़ी का उपयोग किया जाता है तथा यह ज्ञात किया जाता है कि कार्य सम्पन्न होने में कितना समय, (घण्टा, मिनट एवं सैकेण्ड) लगेगा। ऊर्जा योजना में ऊर्जा को मापने हेतु विभिन्न क्रियाओं का ऊर्जा मूल्य, गृहिणी के कार्य करने की क्षमता, योग्यता, कुशलता तथा थकान के प्रभाव का ज्ञान सहायक होता है । अनुभव के द्वारा व्यक्ति यह सीखता है कि कोई भी काम करने में कितनी ऊर्जा व्यय होगी।

ऊर्जा व्यवस्थापन करते समय बातों पर बल दिया जाना चाहिए-

1. प्रात:काल सोकर उठने के बाद (6 बजे से 10 बजे तक) सबसे अधिक घरेलू क्रियाओं को निपटना चाहिए। इस समय मन तरोताजा रहता है। शरीर स्वस्थ, चुस्त एवं फुर्तीला रहता है। अत: क्लिष्ट एवं जटिल कार्यों को पहले निपटाना चाहिए।

2. भारी काम के बाद हल्का काम, शारीरिक काम के बाद मानसिक काम किया जाना चाहिए।

3. कार्य योजना में विश्राम काल को अवश्य ही सम्मिलित करना चाहिए।

4. कार्य, विश्राम एवं मनोरंजन इन तीनों को ही कार्य योजना में महत्व दिया जाना चाहिए।

5. कार्य योजना बनाते समय परिवार के सदस्यों को भी सम्मिलित करना चाहिए तथा उनकी उपस्थिति मालूम की जानी चाहिए। कार्य विभाजन करते समय उनकी कार्यक्षमता, योग्यता, कुशलता, निपुणता एवं शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। उसी के अनुरूप उन्हें काम की जिम्मेदारी सौपनी चाहिए ।

6. लक्ष्य से परिवार के सदस्यों को अवश्य ही अवगत कराना चाहिए, ताकि उन्हें कार्य की पूर्णता पर संतोष, सुख एवं आनन्द की अनुभूति हो।

1. **क्रिया योजनाओं का क्रियान्वयन काऔर उन पर नियंत्रण -** ऊर्जा व्यवस्थापन हेतु मात्र कार्य योजना बना लेना ही पर्याप्त नहीं है क्योंकि इससे पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती। कार्य योजना का क्रियान्वयन किया जाना महत्वपूर्ण है साथ ही इस पर नियंत्रण रखना भी आवश्यक है। क्रिया योजना के क्रियावन्यन में उत्प्रेरणा/प्रेरणा की महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। प्रेरणा जितना अधिक उच्च स्तर का होगा कार्य सम्पन्न करने हेतु उतनी ही अधिक ऊर्जा उपलब्ध होगी तथा थकान कम-से-कम होगी। उत्प्रेरणा में वृद्धि परिवार की रूचियों को जागृत कर कार्य विधियों को रूचिकर बनाकर, नये लक्ष्य निर्धारित कर, नई विधियों की खोज कर एवं परिवार के सदस्यों में कार्य के प्रति उत्साह एवं उचित धारणा का निर्माण कर की जा सकती है ।

कार्य के उचित विभाजन से तथा समय पर व्यवस्थित तरीके से काम करने से कम-से-कम शारीरिक एवं मानसिक ऊर्जा व्यय होती है तथा अधिक उत्पादन होता है। परिवार के सदस्य भी सन्तुष्ट, खुश एवं तृप्त नजर आते हैं तथा पारिवारिक लक्ष्यों की भी पूर्ति होती है। सारांश में, कार्य का सरलीकरण, घरेलू क्रियाओं के सम्पादन में ऊर्जा का प्रभावपूर्ण उपयोग, समय-ऊर्जा बचत के उपकरणों का प्रयोग करके कार्यों का सफलतापूर्वक सम्पादन ही ऊर्जा का उचित व्यवस्थापन है। ऐसा करने से समय एवं ऊर्जा की बचत होती है। गृहिणी इन बचे हुए समय एवं ऊर्जा का उपयोग अन्य क्रियाओं को करने अथवा मनोरंजन में व्यय कर सकती है।

2. **ऊर्जा व्यवस्थापन का मूल्यांकन -** समय व्यवस्थापन के मूल्यांकन की भाँति ऊर्जा व्यवस्थापन का मूल्यांकन भी किया जाना बेहद आवश्यक है ताकि गृहिणी को यह पता चल सके कि ऊर्जा का उचित व्यवस्थापन हो सका है अथवा नहीं। क्या वह काम करने से अधिक

थक जाती है जिसके कारण अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य करने बाकी रह गये हैं? ऊर्जा व्यवस्थापन में कहाँ तथा किन स्तरों पर कमियाँ रह गयी हैं। इनके क्या करण रहे हैं? उन कारणों को ज्ञात करना ताकि भविष्य में उसे सुधारा जा सके। इसके लिए गृहिणी को स्वयं से निम्न प्रश्न पूछना चाहिए-

मैं जिन लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहती हूँ, क्या उन्हीं के संदर्भ में ऊर्जा का उपयोग करने के संबंध में सोचती हूँ।

- क्या मैंने लक्ष्य प्राप्ति हेतु ऊर्जा का उचित प्रयोग किया हैं?
- क्या मैंने गृह-निर्माण क्रियाओं के लिए सन्तुष्टि ऊर्जा -व्यय की योजना बनायी हैं?
- क्या मैंने अपनी ऊर्जा का प्रयोग प्रभावशाली ढंग से किया हैं?
- कौन-सी घरेलू कार्य अधिक थकाने वाला था?
- क्या कोई कार्य ऐसे भी हैं, जिन्हें करने हेतु समय अधिक चाहिए था?
- कौन-सा कार्य मुझे बहुत अधिक पसन्द हैं और क्यों?
- कौन-से कार्य मुझे अधिक अरूचिकर एवं नापसन्द लगते हैं और क्यों? इन कार्यों के प्रति मैं अपना दृष्टिकोण किस तरह बदल सकती हूँ।
- क्या मैं आसानी से व जल्दी थक जाती हूँ।
- क्या मैं थकान को आसानी से पहचान लेती हूँ।
- कौन-से कार्य मुझे अधिक थकाने वाले लगते हैं?
- क्या मुझे थकान के कारण कार्य को बीच में ही छोड़ना पड़ता है?
- मैं थकान किस प्रकार से दूर करती हूँ?
- क्या मैं आराम एवं विश्राम करने के तरीकों को अच्छी तरह से जानती हूँ तथा इनका उपयोग थकान दूर करने में करती हूँ।

4.5 शरीर यांत्रिकी (Body Mechanics)

ऊर्जा व्यवस्थापन की प्रक्रिया में 'क्रियान्वयन के नियंत्रण' के अन्तर्गत 'शरीर यांत्रिकी' का खास महत्व है।

शरीर यांत्रिकी का अर्थ- एक शब्द जो 'शरीर की स्थिति' के बदले में प्रयोग लिया जा सके, जिसमें शरीर की स्थिति खड़े, बैठे या क्रिया की स्थिति में हो। यांत्रिकी को हम शरीर की कार्य पद्धति भी कह सकते हैं। जैसे कि एक लेखक ने अंग्रेजी में कहा है- According to ESTHER CREW BRATTON– "Your own body constitutes your most important item of household equipment. It is well worth the effort it takes to acquire understanding of how the body functions in work and to develop skill in using the body effectively."

शरीर यांत्रिकी में शरीर के आराम व तकलीफ का ध्यान रखा जाता है जो कि हड्डियों व मांसपेशियों से उत्पन्न होते हैं।

शरीर यांत्रिकी के मुख्य सिद्धांत निम्नानुसार हैं-

1. **शरीर के समस्त अंगों को एकरेखित रखना -** शरीर के अंगों को आवश्यकता से अधिक खींचना या झुकाना नहीं चाहिए। शरीर के सभी अंगों का संतुलन बनाकर कार्य करना चाहिए। उदाहरण के लिए हमारे बांयी ओर दूर रखी किसी चीज़ को लेने के लिए हमें अपने हाथ और पैर दोनों बांयी और झुकाने होंगे अन्यथा हम असंतुलित होकर गिर जाएगें व सामान भी नहीं मिलेगा।

2. **मांसपेशियों का प्रभावी प्रयोग-** किसी एक मांसपेशी पर दबाव डालने की बजाय हमें दूसरी मांसपेशी की सहायता से कार्य को सुगमता पूर्वक पूरा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए आंगन पर गिरी चीज को उठाने के लिए कमर मोड़ने की बजाय हम घुटने मोड़कर भी वह चीज़ उठा सकते हैं।

ताल- किसी भी कार्य को करने के लिए एक प्रकार की ताल आवश्यक है। पौछा लगाने के लिए हमारे हाथ एक लय में दाएँ-बाएँ चलते है और बहुत ही कम समय व श्रम में हमारा काम हो जाता है।

इसके विपरित अगर हम आगे-पीछे होकर या घूम-घूम कर पोंछा लगाए तो हमारी ऊर्जा व समय दोनों अधिक खर्च होंगे।

3. गुरुत्वाकर्षण केन्द्र का ध्यान रखना (शरीर व वस्तु दोनों के लिए) - किसी वस्तु को उठाने, सरकाने या लेने में गुरुत्वाकर्षण केन्द्र महत्वपूर्ण है। हम जिस चीज को सरकाना या उठाना चाहते हैं वह हमारे शरीर से एक निश्चित दूरी पर होनी चाहिए। जैसे कि जापान में छोटे बच्चों को माँ की पीठ पर उठाया जाता है ना कि गोद में। पीठ पर उठाना गोद में उठाने से ज्यादा आरामदायक है।

3. गति का लाभ उठाना- एक समान गति से किए गए कार्य कम थकान वाले होते हैं उदाहरण के लिए जूतों पर पॉलिश लगाते समय हम एक रफ्तार से ब्रश को दांये बांये रगड़ते हैं, जिससे कि कम मेहनत में जूते आसानी से बढ़िया चमक उठते हैं।

शरीर यांत्रिकी के इन सिंद्धातों के प्रयोग से हमारा जीवन सुगम बन जाएगा। हर व्यक्ति के लिए अपने शरीर का प्रभावी उपयोग शरीर यांत्रिकी द्वारा संभव है।

4.6 परिवर्तन के वर्ग (Classes of Change)

कार्य सरलीकरण के लिए कार्य में परिवर्तन लाना जरूरी है। यह सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति के कार्य करने के अपने तरीके एवं ढंग होते हैं। कोई व्यक्ति बिना थके कम ही समय में अधिक काम सुगमतापूर्वक सम्पन्न कर लेता है जबकी कुछ व्यक्ति पूरे दिन काम में जुटे रहते हैं, थककर चूर हो जाते हैं परन्तु उनका काम समय पर कभी पूरा नहीं होता। समय पर काम को निपटाने के लिए सर्वप्रथम दिनचर्या को व्यवस्थित करना चाहिए। गृहिणी/कार्यकर्त्ता को स्वयं यह निश्चित निश्चित करना चाहिए कि किस प्रकार वह कार्य करने के तरीके/ढंग में सुधार लाकर कार्य को सरल बना सकती है।

सन् 1940 से पहले तक लोगों को कार्य सरलीकरण के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं था। तब लोग परम्परागत तरीके अथवा अपनी आदत के अनुसार काम करते थे। सर्वप्रथम कार्य सरलीकरण का विचार मार्विन

मन्डेल के मस्तिष्क में उठा और उन्होंने ही कार्य सरलीकरण से सम्बनिधत कई शोध किये तथा इसके पांच सिद्धान्त बताये जिसे मंडेल के परिवर्तन के वर्ग के नाम से जाना जाता है। काफी दिन तक ये पाँचों सिद्धान्त कार्य सरलीकरण हेतु उपयोग में काम आते रहे। परन्तु बाद में ग्रॉस एवं क्रैण्डल ने इन पाँचों सिद्धान्तों का संक्षिप्तीकरण करके इन्हें केवल तीन वर्गों में विभाजित किया जो निम्नानुसार है-

1. हाथ और शरीर की गतियों में परिवर्तन
2. कार्य क्षेत्र, संग्रहीकरण के क्षेत्र एवं उपकरण में परिवर्तन
3. उत्पादन में परिवर्तन

1. हाथ एवं शरीर की गतियों में परिवर्तन - मंडेल ने कार्य सरलीकरण के लिए इसे अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण वर्ग माना है। इसमें कार्यकर्त्ता को हाथ और शरीर की क्रियाओं में ही परिवर्तन होता है, कार्य के स्थान, उपकरण एवं उत्पादन पूर्ववत् रहते हैं। हाँ! कार्य सम्पन्न करते समय चरणों का क्रम परिवर्तित हो सकता है। हाथ और शरीर की गतियों में परिवर्तन होने से समय एवं ऊर्जा की बचत होती है।

कार्य सरलीकरण के इस वर्ग में कार्य को कम प्रयास में सम्पन्न करने का भरपूर प्रयास किया जाता है। उदाहरण- एक हाथ से खाने के बर्तन न उठाकर दोनों हाथों से उठाना, बिस्तर लगाने में अनावश्यक कदमों को समाप्त करना, बर्तन को धोने के उपरान्त पोंछने की अपेक्षा यों ही हवा में सूखने हेतु छोड़ देना तथा व्यवस्थित क्रम में रखना, दो-तीन सब्जियों को मिलाकर मिश्रित सब्जी तैयार करना, झाडू-पोंछा करने में लयपूर्ण गति का उपयोग करना, धुलाई के बाद वस्त्रों को ठीक ढंग से फैलाकर सुखने हेतु डालना ताकि प्रेस करते समय अधिक कठिनाई नहीं हो।

हाथ एवं शरीर की गतियों में परिवर्तन को निम्न प्रकार से समझा जा सकता हैं-

2. बाँये हाथ का उपयोग - कार्य को सरल तरीके एवं शीघ्रता से करने के लिए बाँये हाथ का भी उपयोग किया जाना चाहिए। हाँ! बाँये हाथ से

काम करना आसान नहीं है। परन्तु कठोर परिश्रम, निरन्तर अभ्यास एवं प्रशिक्षण प्राप्त करके कौशल विकसित किया जा सकता है। उदाहरण- दोनों हाथों से आटा गूंथना, आलू- पालक, बथुआ आदि सब्जियों को धोने में दोनों हाथों का उपयोग करना, बर्तन माँजते व पोंछते समय बाँये हाथ से प्लेट घुमाना तथा पोंछना। वस्त्र धोते समय बाँये हाथ से मैल छुड़ाना एवं वस्त्र खंगालना आदि।

3. **दैनिक दिनचर्या में सुधार -** कार्य सरलीकरण के लिए कार्यकर्त्ता को दैनिक दिनचर्या में सुधार लाना बेहद जरूरी है। प्रभावशाली दिनचर्या हेतु दिन के प्रारम्भ से अन्त तक कार्य के चरणों के क्रम की वैधानिक दिशा खोज की जानी चाहिए। कार्यकर्त्ता/गृहिणी को सदैव यह याद रखना चाहिए कि काम निपटाते समय कम-से-कम दूरी तय करना पड़े तथा शारीरिक क्रियाएँ भी कम- से-कम करनी पड़े। किसी भी कार्य को पूरा करने में कई क्रियाएँ करनी पड़ती हैं, जैसे- रोटी के लिए आटा गूँथना पड़ता है, लोई बनानी पड़ती है, रोटी बेलनी होती है तथा गर्म तवे पर उलट- पलटकर सेंकना होता है। अत: एक काम को करने में कई क्रियाएँ होती हैं । क्रियाओं को क्रमबद्ध तरीके से सम्पन्न करने में इनकी संख्या तो घटती ही है साथ ही कार्य भी सरल तरीके से सम्पन्न हो जाता है। एक काम को निपटाते ही दूसरा काम मस्तिष्क में आ जाना चाहिए। जैसे- वस्त्र धोने के उपरानत कहाँ? कैसे? किस तरह सुखाया जाना चाहिए ताकि प्रेस करने एवं वस्त्र संग्रह करते समय अनावश्यक समय व ऊर्जा बर्बाद नहीं हो।

4. **गुरुत्वाकर्षण की सहायता -** गुरुत्वाकर्षण के विरूद्ध काम करने में थकान अधिक होती है तथा कार्य विलम्ब से होता है। कार्य सरलीकरण हेतु शरीर को सदैव ही गुरुत्वाकर्षण की सीध में रखना चाहिए । उदाहरणार्थ- भारी सामान उठाते समय इसे गुरुत्वाकर्षण की सीध में रखना, सब्जियों को हाथ में पकड़कर काटने की अपेक्षा तख्ते पर रखकर काटना आदि।

5. **क्रियाओं को कम करना -** कार्य करते समय कुछ आवश्यक अथवा कम महत्त्वपण्ूाू क्रियाएँ होती हैं जिन्हें हटाया जा सकता है,

जैसे- बर्तन धोने के बाद इन्हें पोंछने की अपेक्षा हवा में सुखाना, धुले वस्त्रों को निचोड़ने की अपेक्षा कुछ देर तक यों ही लटकाकर रखना ताकि पानी टपककर गिर जाए, सब्जियों को काटने के बाद इन्हें सीधे पकाये जाने वाले बर्तनों में डालना, बिस्तर लगाते समय अनावश्यक कदमों को कम करना।

दो-तीन क्रियाओं को एक साथ करना - कार्य करते समय यदि अलग-अलग क्रियाएँ न करके दो-तीन क्रियाएँ एक साथ की जाएँ तो काफी समय एवं ऊर्जा की बचत होती है। कुछ घरेलू क्रियाएँ ऐसी होती हैं जिन्हें करते समय अधिक निगरानी रखने की जरूरत नहीं पड़ती है। उन क्रियाओं के साथ दूसरे कार्य भी किये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ- दाल पकाते समय सब्जी काटना, सब्जी पकाते समय बर्तन माँजना अथवा आटा गूँथना या सलाद काटना आदि।

6. कार्य में गतियों का उपयोग - कार्य सम्पादित करते समय कुछ अनावश्यक गतियों को कम किया जा सकता है। कुछ काम ऐसे होते हैं जिन्हें करने के लिए कार्यकर्त्ता/गृहिणी को कई कदम अनावश्यक चलने पड़ते हैं। उदाहरण- रसोई के सामान को एक-एक करके न ले जाकर एक साथ ही टोकरी या ट्रे में रखकर ले जाना। वस्त्र धोने के उपरान्त एक-एक वस्त्रों को उठाकर धूप में फैलाने की अपेक्षा बाल्टी में भरकर एक साथ ही ले जाना तथा अलगनी पर फैलाना आदि। ऐसा करने से कई कदम चाल की बचत हो जाती है।

7. कार्य का प्रभावशाली अनुक्रम - कार्य को प्रभावशाली क्रम में करने पर समय एवं ऊर्जा की काफी बचत होती है। प्रभावशाली क्रम से काम करने पर अनावश्यक उपकरणों का उपयोग कम किया जा सकता है । उदाहरणार्थ- बर्तन साफ करते समय सिंक के दाएँ ओर बर्तन रखने से गति में कमी होती है। एक ही अनुक्रम में कई चीजों को पकाने से बर्तन को बार-बार धोना, पोंछना एवं सुखाना नहीं पड़ता है आदि।

8. कार्य में निपुणता - गृहिणी कार्य में निपुणता एवं कौशल विकसित करके समय एवं ऊर्जा की बचत कर सकती है। किसी भी काम में निपुणता हासिल करने के लिए गृहिणी को स्वयं ही प्रयासरत रहना

चाहिए। निरन्तर अभ्यास ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें पढ़ने, समूह चर्चा करने, नवीन प्रक्रिया को अपनाने, प्रक्रिया को ध्यानपूर्वक देखने, निरीक्षण, करके सीखने से कौशल में वृद्धि होती है। बौद्धिक ऊर्जा याँ, जैसे- स्मरण ऊर्जा, कल्पना ऊर्जा , ज्ञान, बुद्धि आदि का प्रयोग कर कार्य कुशलता में वृद्धि करके कार्य सरलीकरण किया जा सकता है। कार्यकर्ता को प्रोत्साहित किया जा सकता है। कार्यकर्ता को प्रोत्साहित करने एवं कार्य के प्रति इच्छा जागृत करने में भी कार्यकुशलता एवं निपुणता में वृद्धि होती है।

बालकों में घरेलू क्रियाओं के प्रति ज्ञान एवं जागृति, कुशलता, निरीक्षण एवं कल्पना ऊर्जा द्वारा विकसित किया जा सकता हैं उन्हें सही दिशा निर्देश देकर कार्यकुशल बनाया जा सकता है। बालकों में यह खूबी होती है कि वे किसी भी काम को जल्दी सीख लेते हैं तथा आसानी से नहीं भूलते हैं।

वुडवर्थ के अनुसार, “ कार्यकुशलता का ज्ञान प्राप्त करने की अवधि में प्रत्येक व्यक्ति को निम्नांकित तीन अवस्थाओं से होकर गुजरना पड़ता है।

(1) अन्वेषी अवस्था

(2) अकुशल और व्यय साध्य अवस्था

(3) कुशलतापूर्वक कार्य करने की अवस्था

(1) **अन्वेषी अवस्था -** किसी भी कार्य को सीखने की यह प्रारम्भिक अवस्था है। इसमें गृहिणी/कार्यकर्ता कार्य को सीखने का प्रयास करती है। इसी कारण इसे अन्वेषी अवस्था कहा जाता है।

(2) अकुशल और व्यय साध्य अवस्था - इस अवस्था में पहले की अपेक्षा थोड़ा सुधार होता है। कार्य थोड़ा ठीक से होने लगता है।

(3) कुशलतापूर्वक कार्य करने की अवस्था - इस अवस्था में निरन्तर अभ्यास एवं प्रशिक्षण पाकर गृहिणी अधिक कुशल हो जाती है।

9. करके सीखने - किसी भी नये काम को करके सीखने एवं बार-बार करने से व्यक्ति उस काम में निपुण हो जाता है। यह सही है कि जब

पहली बार कोई भी नया काम किया जाता है तो उसमें कठिनाइयाँ आती हैं। साथ ही उसमें कई कमियाँ रह जाती हैं। भूल/त्रुटि करना मानव स्वभाव है। कार्यों के परिणामों के मूल्यांकन से भूल सुधारने में सहायता मिलती है।

10. कार्य करते समय शारीरिक संस्थिति में बदलाव - शारीरिक थकान कम करने एवं तनाव से बचने के लिए गृहकार्य करते समय शारीरिक संस्थिति को उचित अवस्था में रखना जरूरी है, जैसे- उठने, बैठने, दौड़ने,कूदने, झुकने आदि। उचित शारीरिक संस्थिति अपनाने से कार्य करने में कम ऊर्जा व्यय होती है। उचित प्रकार से बैठने-उठने से शरीर का भार पेशियों पर न पड़ कर अस्थितियों पर पड़ता है। जिससे माँसपेशियाँ एवं नाड़ियाँ शरीर के तनाव से पूर्णत: मुक्त रहती हैं।

परिणामस्वरूप व्यक्ति को शीघ्र थकान नहीं होती है। कुशलतापूर्वक काम करने के लिए कार्यकर्त्ता को उन्हीं माँसपेशियों एवं अस्थियों का उपयोग किया जाना चाहिए जो उस कार्य को करने के लिए आवश्यक है। छोटी पेशियों की अपेक्षा बड़ी पेशियों की सहायता से काम करना चाहिए।

11. लयपूर्ण काम करना - कार्य को सरल, सुगम एवं आसान बनाने के लिए लयपूर्ण काम करना चाहिए। बार-बार अवरोध, रूकावट लाने से कार्य पुन: प्रारम्भ करने में अधिक ऊर्जा व्यय होती है।

कार्य क्षेत्र, संग्रहीकरण क्षेत्र एवं उपकरण में परिवर्तन - मंडेल द्वारा प्रस्तावित कार्य सरलीकरण की यह दूसरी महत्त्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था में कार्य करने के स्थान, संगृहीत क्षेत्र में उपकरणों में परिवर्तन लाकर कार्य सरलीकरण किया जाता है। पुराने उपकरणों के स्थान पर नये उपकरण का प्रयोग, कार्य क्षेत्र की उचित ऊँचाई, चौड़ाई आदि पर अधिक बल दिया जाता है। उदाहरण-रसोईघर में खाने के बर्तनों को ले जाने हेतु ट्रे या टोकरी का उपयोग करना, घर के कोने में दरियों एवं कालीनों पर जमे धूल को साफ करने के लिए वैक्यूम क्लीनर का उपयोग रना, पीतल चाँदी के नक्काशीदार सजावटी वस्तुओं की

सफाई हेतु पीताम्बरी का उपयोग, मसाला पीसने हेतु मिक्सर का उपयोग आदि।

संग्रह स्थान से सम्बन्धित कुछ सिद्धान्त - गृहिणी की अधिकांश ऊर्जा एवं समय रसोई के कामों में व्यय होती है। रसोई के कार्य हेतु उसे अधिक कदम चलने पड़ते हैं। रसोईघर को व्यवस्थित करके समय एवं चलने के कदमों में बचत की जा सकती है। **म्यूज** द्वारा किये गये शोधों से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि यदि बर्तनों को धोने के बाद उसे सिंक के ऊपर ही रखा जाए तो उसे दूसरी जगह ले जाने एवं पोंछकर सुखाने की आवश्यकता नहीं होती हैं बर्तन स्वत: ही हवा में सूख जाते हैं। परिणामस्वरूप समय के साथ ऊर्जा की भी बचत होती है। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि रसोईघर में परिवर्तन से 91 प्रतिशत चलने के कदमों की तथा 45 प्रतिशत समय की बचत होती है।

पास ही व्यवस्थित ढंग से संगृहीत होनी चाहिए। यदि उपकरण विद्युतचालित है तब बिजली के प्लग, प्वाइंट, एवं बोर्ड की व्यवस्था पृथक होनी चाहिए ताकि काम पड़ने पर तुरन्त इसका उपयोग किया जा सके। ऐसा करने से रख-रखाव एवं देखभाल सरल हो जाती है। वे वस्तुएँ जिनका उपयोग कम होता है उन्हें पीछे की ओर रखनी चाहिए। वस्तुएँ इस प्रकार से ऐसे स्थान पर संगृहीत की जानी चाहिए जहाँ से इन्हें देखने, उठाने एवं रखने में सुविधा हो। खाद्य सामग्री हेतु पारदर्शी डिब्बों का उपयोग किया जाना चाहिए। यदि डिब्बें पारदर्शी नहीं है तब इनके ऊपर सामग्री का नाम लिखकर लेबुल लगा देना चाहिए ताकि सामान निकालने हेतु अनावश्यक ही इन्हें नहीं खोलना पड़े।

कार्य सरलीकरण में कार्यक्षेत्र की ऊँचाई एवं शारीरिक सरंचना का भी बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। कार्यकर्त्ता के ऊँचाई के अनुसार ही कार्यक्षेत्र की ऊँचाई होनी चाहिए ताकि कार्य करने में सुविधा हो तथा काम करने हेतु अधिक झुकना, मुड़ना, उठना, बैठना नहीं पड़े। उचित ऊँचाई न होने पर व्यक्ति को झुककर काम करना पड़ता है जिससे कमर की पेशियों पर दबाव पड़ता है। अत: तकलीफ होती है। यदि कार्यक्षेत्र की चौड़ाई, ऊँचाई अधिक होगी तो कार्यकर्त्ता को काम करने के लिए आगे की ओर झुकना

पड़ता है जिससे भुजाओं एवं कंधों पर आवश्यक दबाव पड़ता है । अत: जल्दी थकान होने लगती है।

कुछ कार्य ऐसे होते हैं जिन्हें सम्पन्न करने के लिए कम ऊँचाई की मेज की आवश्यकता होती है जबकी कुछ कार्यों को नीची जगह पर करना पड़ता है, जैसे- आटा गूँथने के लिए कम ऊँची प्लेटफार्म (पत्थर) की जरूरत होती है। इसके विपरीत यदि अधिक ऊँचाई वाले प्लेटफार्म पर रखकर आटा गूँथा जाए तो कंधे की पेशियों पर अधिक दबाव उत्पन्न होता है जिससे पीठ एवं कंधों में पीड़ा होने लगती है। सामग्री मिलाने, बेसन की घोल बनाने, सब्जी काटने, सलाद काटने आदि के लिए ऊँचा पत्थर सरल रहता है।

रसोईघर के भारी सामान नीचे की ओर तथा हल्का सामान ऊपर के खण्डों में व्यवस्थित करना चाहिए। वस्तुओं को वैसे जगहों पर रखना चाहिए जहाँ पर आसानी से पहुँचा जा सके तथा प्रयोग के बाद इन्हें रखने-उठाने में सुविधा हो।

परन्तु इस वर्ग का सबसे बड़ा दोष यह है कि इसमें अधिकतर परिवर्तन मंहगे होते हैं, जैसे- नये उपकरणों को खरीदना, कार्यकर्ता की ऊँचाई के अनुसार सिंक में परिवर्तन करना। परन्तु कुछ परिवर्तन ऐसे भी होते हैं जिनमें बिल्कुल भी खर्च नहीं होता है, जैसे- सिंक पर कार्य करते समय ठीक प्रकार से खड़ा होना, कार्य करने के स्थान पर वस्तुओं को व्यवस्थित ढंग से जमाना।

कार्यकर्त्ता के बैठने की स्टूल या कुर्सी भी उचित ऊँचाई की होनी चाहिए ताकि उस पर बैठकर आसानी से कार्य किया जा सके। आरामदायक स्टूल, कुर्सी जिस पर बैठकर आसानी से कार्य किया जा सके, में निम्नांकित लक्षण होने चाहिए-

1. कुर्सी, स्टूल की चौड़ाई इतनी अवश्य होनी चाहिए जिस पर कार्यकर्ता आसानी से बैठकर काम कर सके।
2. बैठने की स्टूल/कुर्सी इतनी नीची होनी चाहिए कि कार्यकर्त्ता के सामने के भाग पर और घुटने के आस-पास दबाव नहीं पड़े।

3. कुर्सी में थोड़ा पीछे की ओर ढलान होनी चाहिए ताकि कार्यकर्त्ता आगे की ओर फिसले नहीं। पीठ को आराम देने के लिए पीछे की ओर सहारा होना चाहिए।
4. पोंछा देते समय वाइपर की उचित ऊँचाई होनी चाहिए ताकि कम-से-कम थकान हो।
5. कपड़ा पसारते समय बॉस्केट को जमीन से थोड़ा ऊपर रखना चाहिए।
6. विशिष्ट प्रकार की प्रक्रिया में प्रयुक्त समस्त सामग्री एवं उपकरण एक ही स्थान पर संगृहीत किया जाना चाहिए। ऐसा करने से उपकरणों एवं सामग्री को कार्य स्थान पर बार-बार उठाकर लाना एवं उन्हें पूर्ववत् उन्हीं स्थानों पर उठाकर रखना नहीं पड़ता है जिससे काफी समय एवं ऊर्जा की बचत होती है।

संग्रह स्थान से सम्बन्धित सिद्धान्त : मात्र एक नजर में-

1. पुराने उपकरणों के स्थान पर नवीन एवं अधिक प्रभावशाली उपकरणों का प्रयोग करना।
2. कार्यक्षेत्र की चौड़ाई, ऊँचाई, गहराई आदि उचित होना।
3. चीजों को व्यवस्थित तरीके से रखना।
4. काम में आने वाले उपकरणों, बर्तनों को कार्यक्षेत्र के आस-पास रखना।
5. जिन वस्तुओं का उपयोग अधिक होता हो उन्हें आगे की ओर तथा जो कम उपयोग में आते हैं उन्हें पीछे की ओर रखना।
6. वस्तुओं को ऐसे स्थानों पर रखना जहाँ से आसानी से रखा, उठाया जा सके।
7. खाद्य सामग्री को पारदर्शी डिब्बों में रखना।
8. डिब्बों पर सामग्री के नाम का लेबुल लगाकर व्यवस्थित तरीके से रखना।

9. कार्यक्षेत्र (सिंक, प्लेटफार्म) की ऊँचाई कार्यकर्त्ता की लम्बाई के अनुसार होना।

10. रसोई के भारी सामानों को नीचे की ओर तथा हल्के सामानों को ऊपर की ओर रखना।

उत्पादन में परिवर्तन - कार्य सरलीकरण उत्पादन में परिवर्तन लाकर भी किया जा सकता है। आजकल बाजार में अनेक वस्तुएँ/उपकरण उपलब्ध है। जिन्हें प्रयोग में लाकर समय-ऊर्जा की बचत की जा सकती है। उत्पादन में परिवर्तन विभिन्न कच्चे पदार्थों के उपयोग अथवा कच्चे पदार्थों एवं तैयार पदार्थों दोनों में परिवर्तन लाकर किया जाता है, जैसे- सूती वस्त्र की अपेक्षा कृत्रिम वस्त्रों का प्रयोग करना क्योंकि इनकी सफाई, धुलाई, इस्तरी, रख-रखाव, संग्रह आदि आसान होता है। डाइनिंग टेबुल पर नायलॉन या प्लास्टिक का मैट बिछाना, गोल मठरी न बनाकर चौकोर मठरी बनाना या डायमण्ड आकार की मठरी बनाना, दाल-चावल एवं सब्जियों को मिलाकर पौष्टिक खिचड़ी बनाना, सूती मेजपोश के स्थान पर प्लास्टिक के मेजपोश का उपयोग करना, उपयोग के बाद टी.वी., टेलीफोन, टेपरिकार्डर, रेडियो, वायलिन, गिटार आदि को ढँककर रखना। ऐसा करने से समय एवं ऊर्जा की बचत होती है क्योंकि धूल नहीं झाड़ना पड़ता है। परन्तु हाँ! ऐसे परिवर्तन से गृहिणी को कुछ आलोचनाएँ भी सहन करनी पड़ती हैं।

मंडेल के परिवर्तन के वर्ग : मात्र एक नजर में -

1. हाथ और शरीर की गतियों में परिवर्तन।

1) बाँये हाथ का उपयोग।

2) दैनिक दिनचर्या में सुधार।

3) गुरुत्वाकर्षण की सहायता।

4) क्रियाओं को कम करना।

5) दो-तीन क्रियाओं को एक साथ करना।

6) कार्य में गतियों का उपयोग।

7) कार्य का प्रभावशाली अनुक्रम।

8) कार्य में निपुणता ।

अ) अन्वेषी अवस्था

ब) अकुशलता एवं व्यय साध्य अवस्था

स) कुशलतापूर्वक काम करने की अवस्था

9) करके सीखना।

10) कार्य करते समय शारीरिक संस्थिति में बदलाव।

2 कार्यक्षेत्र, संग्रहीकरण के क्षेत्र एवं उपकरण में परिवर्तन।

3 उत्पादन में परिवर्तन।

1) कच्चे माल में परिवर्तन।

2) तैयार माल में परिवर्तन।

3) कच्चे एवं तैयार माल में परिवर्तन।

4.7 कार्य सरलीकरण अर्थ एवं परिभाषा)Work Simplification– Meaning and Definition)

कम ऊर्जा एवं समय व्यय किये बिना अधिक कार्य निष्पादन के लिए काम करने की विधि में सुधार लाना आवश्यक है। परन्तु यह सब तभी संभव है जब व्यक्ति को "कार्य सरलीकरण" का पूरा-पूरा ज्ञान हो।

किसी काम को करने में यदि समय की बचत की जाती है तो इसका अर्थ यह होता है कि ऊर्जा की भी बचत की गई है परन्तु इसके लिए काम की गति समान रहे। कार्य सरलीकरण में समय एवं ऊर्जा दोनों का ही, मिश्रित रूप में, व्यवस्थापन करना होता है। कार्य सरलीकरण का अर्थ ही होता है- काम को सरल तरीके से सम्पन्न करना, कहने का तात्पर्य है कि कार्य को इस तरीके से करना ताकि कम-से-कम समय एवं ऊर्जा व्यय हो एवं अधिक काम सम्पन्न हो। साथ ही कार्य की गुणवत्ता में कमी नहीं आने पाये। दूसरे शब्दों में, "न्यूनतम समय एवं ऊर्जा को व्यय करके अधिकतम

कार्य को सम्पादित करने की विधि का प्रयोग करना ही कार्य सरलीकरण कहलाता है।

कार्य सरलीकरण की परिभाषा -

1 **निकेल एवं डॉर्सी** - ''कार्य को सबसे आसान, सरल एवं शीघ्र विधि की सचेततापूर्वक खोज करना ही कार्य सरलीकरण कहलाता है।''

"Work Simplification is the conscious seeking of the simplest, easiest and quickest method of doing work."

2 **ग्रॉस एवं क्रैन्डल** - ने कार्य सरलीकरण की परिभाषा निम्नानुसार दी है-

''कार्य सरलीकरण में समय एवं ऊर्जा दोनों के व्यवस्थापन को ही मिश्रित कर दिया जाता है। निर्धारित समय एवं ऊर्जा की मात्रा में अधिक काम करना अथवा कार्य की निश्चित मात्रा को सम्पन्न करने के लिए कम-से-कम ऊर्जा एवं समय का उपयोग करना ही कार्य सरलीकरण कहलाता है ।''

"It May be defined as accomplishing more work within a given amount of time and energy or reducing the amount of either or both in accomplishing the given amount of work."

3 **Rajmal P. Devdas** ने कार्य सरलीकरण के संबंध में अपने विचार इस तरह से व्यक्त किये हैं-

''किसी भी कार्य को करने के लिए कम मात्रा में समय एवं ऊर्जा उपयोग के द्वारा करने की तकनीक को कार्य सरलीकरण कहते हैं।''

4 **कांति पांडेय** ने अपनी पुस्तक ''गृह प्रबंध'' में कार्य सरलीकरण को इस प्रकार से परिभाषित किया है-

''एक निर्धारित समय और ऊर्जा की मात्रा के अन्तर्गत अधिक कार्य सम्पादित करना या कार्य की निश्चित मात्रा को सम्पन्न करने के लिए समय, ऊर्जा या दोनों की मात्रा को कम करने की प्रक्रिया को कार्य सरलीकरण कहते हैं।''

कार्य को शीघ्रता, सरलता एवं सुगमता से सम्पन्न करने में निम्नांकित का योगदान रहता है-

1. कार्य विधि
2. कार्य करने वाला व्यक्ति अर्थात् कार्यकर्ता
3. कार्य क्षेत्र

1. कार्य विधि - काम करते समय गृहिणी को हमेशा याद रखना चाहिए कि काम को किस तरीके से किया जाए ताकि कम-से-कम समय एवं ऊर्जा व्यय हो। उदाहरणार्थ- मसाला, दाल अथवा धनिया पत्ती की चटनी पीसने हेतु सील-पाटी (पत्थर) का उपयोग न करके मिक्सर में पीसे जाएँ तो कम ऊर्जा एवं समय व्यय होगा। साबुन से रगड़-रगड़कर वस्त्र धोने की बजाय यदि वस्त्र को सर्फ में भिगोकर एक घण्टा छोड़ देने के उपरान्त रगड़कर धोए अथवा धुलाई कार्य हेतु वाशिंग

मशीन का उपयोग किया जाए तो कम समय व ऊर्जा व्यय किये ही वस्त्र अच्छी तरह से स्वच्छ हो जाते हैं। कार्य को सरल तरीके से तभी किया जा सकते हैं जब शरीर की माँसपेशियाँ एवं मस्तिष्क कार्य में जुटे हों।

कार्य की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए कार्य को निम्न तीन वर्गों में विभाजित किया गया है- हल्का कार्य, मध्यम कार्य एवं भारी कार्य।

2. कार्य करने वाला व्यक्ति अर्थात् कार्यकर्त्ता - कार्य को समय पर सरलता एवं सगुमतापूर्वक करने हेतु कार्यकर्त्ता को काम करने की उचित विधि एवं शरीर संचालन की विधि का समुचित ज्ञान होना चाहिए। उसके साथ ही उसे कार्य में रूचि एवं कार्य के प्रति लगाव भी होने चाहिए। यदि कार्यकर्त्ता को कार्य के प्रति रूचि एवं लगाव नहीं होगा तो वह काम को भार समझकर जैसे-तैसे सम्पन्न करना चाहेगा जिसके फलस्वरूप उसे जल्दी थकान हो जाएगी। साथ ही काम सही समय पर ठीक ढंग से सम्पन्न नहीं हो सकेगा। रूचिकर काम करने से जल्दी थकान नहीं होती तथा कार्य सरलता से सम्पन्न हो जाता है।

हाँ, कार्यकर्त्ता के समक्ष लक्ष्य अवश्य स्पष्ट होने चाहिए तभी वह कार्य को ठीक ढंग से सम्पन्न कर सकेगा । लक्ष्य एवं कार्य के जितने छोटे भाग होते हैं उतनी ही सरलता से काम सम्पन्न होता है। एक लक्ष्य/काम के पूरा होने पर जो संतोष मिलता है, वह दूसरे काम/लक्ष्य को जल्दी करने के लिए प्रेरित करता है। ज्ञान, अनुभव, कौशल प्रशिक्षण आदि का प्रयोग कर व्यक्ति सहजता एवं सुगमता से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

3. कार्य क्षेत्र - कार्य एवं कार्यकर्त्ता के साथ ही कार्य क्षेत्र में आवश्यक परिवर्तन एवं सुधार लाकर समय एवं ऊर्जा की बचत की जा सकती है। कार्य क्षेत्र व्यक्ति की सुविधानुसार होना चाहिए। कार्य करने के क्षेत्र की ऊँचाई व्यक्ति की ऊँचाई (भ्मपहीज) के अनुसार होनी चाहिए। ताकि उसे कार्य सम्पादन हेतु बहुत अधिक शारीरिक श्रम (झुकना, उठना, बैठना, मुड़ना, हिलना-डुलना) नहीं करना पड़े। काम में ली जाने वाली एक तरह की सामग्री एक ही जगह पर संगृहीत करके रखना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर आसानी से उपयोग में लाया जा सके। उदाहरण- भोजन बनाने हेतु बर्तन एवं अन्य सामग्री रसोईघर में एक स्थान में उपलब्ध होना चाहिए, ताकि गृहिणी उसे सुगमतापूर्वक प्रयोग कर सके। जिस स्थान पर सामग्री रखी हो, उसकी ऊँचाई भी

गृहिणी की पहुँच के भीतर हो ताकि रखने-उठाने में अनावश्यक ऊर्जा व्यय नहीं हो। रसोईघर में बड़ा एवं भारी सामान नीचे के रैक या आलमारी में तथा हल्का एवं छोटा सामान ऊपर वाला रैक में क्रमबद्ध तरीके से जमाकर रखना चाहिए तथा उस पर सामग्री के नाम की चिट होनी चाहिए। जहाँ सम्भव हो, सामग्री को पारदर्शक डिब्बे में रखा जाए। घरेलू उपकरण एक जगह पर व्यवस्थित तरीके से जमा होना चाहिए ताकि गृहिणी/कार्यकर्त्ता को कार्य करते समय अनावश्यक रूप से अधिक भागदौड़ नहीं करना पड़े।

जिन सामानों की आवश्यकता बार-बार होती हो उसे उचित ऊँचाई पर पंक्तिबद्ध तरीके से व्यवस्थित होनी चाहिए ताकि आसानी से रखी एवं उठायी जा सके।

रसोईघर के प्लेटफार्म की ऊँचाई बहुत कम होती है तो गृहिणी को झुककर खाना पकाना पड़ता है जिसके कारण पीठ एवं कमर की माँसपेशियों पर बहुत अधिक दबाव एवं तनाव पड़ता है। परिणामस्वरूप कमर एवं पीठ में दर्द होने की सम्भावना बढ़ जाती है। इसी तरह यदि प्लेटफार्म बहुत ऊँचा है तो काम करने के लिए उसे अपनी बाँहों एवं कंधों को ऊँचा करना पड़ता है जिससे कंधों एवं बाँहों की पेशियों पर अधिक दबाव पड़ता है तथा इन अंगों में पीड़ा रहती है। अत: रसोईघर में प्लेटफार्म निश्चित ऊँचाई पर होनी चाहिए ताकि कम-से-कम समय एवं ऊर्जा व्यय हो।

4.7.1 कार्य सरलीकरण के लाभ - कार्य सरलीकरण से निम्नांकित लाभ होते हैं-

1. कार्य सरलीकरण से कुण्ठाजन्य एवं नीरस, थकान उत्पन्न नहीं होती है क्योंकि काम को सरल एवं आसान तरीके से नवीन विधियों को अपना कर किया जाता है जिससे अनावश्यक भागदौड़ नहीं करनी पड़ती है।
2. समय-ऊर्जा बचत के उपकरणों का उपयोग कर शारीरिक थकान को कम किया जा सकता है। साथ ही बचे हुए समय-ऊर्जा का उपयोग गृहिणी अन्य कार्यों के सम्पादन में तथा अपनी रुचि के कार्यों को पूरा करने में कर सकती है।
3. दैनिक दिनचर्या के कार्यों में नवीन परिवर्तन लाकर नये लक्ष्यों का निर्माण किया जा सकता है तथा परिवार के सदस्यों की अधिकतम आवश्यकताओं की सन्तुष्टि की जा सकती है।
4. कार्य करने में शारीरिक गति का मूल्यांकन कर गति एवं वेग में सुधार लाया जा सकता है। वे क्रियाएँ जो अनावश्यक ही आदत में शूमार हैं उन्हें खत्म कर शारीरिक थकान को कम किया जा सकता है।
5. गृहिणी के पास कब, किस समय अधिक कार्यभार है इसकी जानकारी प्राप्त करे कार्यभार को काफी हद तक कम किया जा

सकता हैं कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यों को कुछ समय के लिए छोड़ा जा सकता है तथा खाली समय में उन कार्यों को निपटाया जा सकता है।

6. लम्बे समय तक एक ही प्रकार के काम, एक ही तरीके से करने से उस काम को उसी तरह से सम्पन्न करने की आदत बन जाती है जिसके कारण नीरस, थकान उत्पन्न हो जाती है। काम करने की नई विधियों के अपनाने से नीरस थकान से छुटकारा पाया जा सकता है।
7. कार्य सरलीकरण से कार्य कुशलता एवं निपुणता में वृद्धि होती हैं यदि काम करने की विधि में कोई कमी, दोष, त्रुटि रह जाती है तो काम करने में अधिक समय एवं ऊर्जा व्यय होती है। कार्य करते समय अनुचित शारीरिक मुद्रा स्थिति अपनाने से माँसपेशियों एवं हड्डियों पर अनावश्यक दबाव पड़ता है जिसके कारण कमर, पीठ, जाँघों एवं पैरों में दर्द रहता है। कार्य मूल्यांकन द्वारा इसमें सुधार लाया जा सकता है।
8. कार्य सरलीकरण से कार्यक्षेत्र एवं संगृहीत क्षेत्र को व्यवस्थित किया जा सकता है तथा समय-ऊर्जा की बचत की जा सकती है।

4.7.2 कार्य सरलीकरण की तकनीक

कार्य को सरल, सुगम एवं आसान तरीके से करने के लिए गृहिणी को स्वयं ही प्रयास करना चाहिए। कार्य का अध्ययन करने से किसी भी कार्य का मूल्यांकन करना आसान होता है।

कार्य करने की विधियों में सुधार हेतु प्रयोगशाला में कई अनुसंधान किये गये। कार्य सरलीकरण की मुख्य दो तकनीक हैं जिन्हें अपनाकर समय-ऊर्जा की अपेक्षित बचत की जा सकती है। कार्य सरलीकरण की निम्नांकित तकनीक है-

औपचारिक तकनीक

1) माइक्रोमोशन फिल्म विश्लेषण

2) साइक्लोग्राफ

3) स्टॉप वॉच तकनीक

पेन और पेंन्सिल तकनीक

1) प्रोसेस चार्ट

2) ऑपरेशन चार्ट

3) मल्टीमैन चार्ट

4) पाथवे चार्ट

1. औपचारिक तकनीक - औपचारिक तकनीक प्रयोगशाला में विषय विशेषज्ञों द्वारा की जाती है । इसे करने के लिए कुछ आवश्यक उपकरणों की आवश्यकता होती है। मुख्य औपचारिक तकनीक निम्नानुसार हैं-

1) माइक्रोमोशन फिल्म विश्लेषण - यह प्राथमिक स्तर पर एक शोध तकनीक है। इसमें शोध द्वारा प्राप्त परिमाण को फिल्माया जाता है। इस तकनीक में सामान्य परिस्थितियों में कार्य का गतीय चित्र खींचा जाता है तथा इसका स्थायी रिकार्ड रखा जाता है। कार्य समाप्ति के बाद चार्ट द्वारा इसका विश्लेषण किया जाता है कि कार्य करते समय हाथ एवं शरीर के अन्य भागों की क्रियाएँ किस प्रकार उपयोग में लायी जाती हैं। इस तकनीक में एक "समय उपकरण" का भी उपयोग किया जाता है जिसकी सहायता से कार्यकर्त्ता के प्रत्येक गति का सही समय रिकार्ड किया जाता हैं कार्य सम्पादन करने के तरीके को सरल बनाकर एवं त्रुटियों को सुधार कर पुन: गतीय चित्र फिल्माया जाता है तथा कार्य सरलीकरण को अपनाने का हर सम्भव प्रयास किया जाता है।

प्रसिद्ध विद्वान् *"Nickell and Dorsey "Micromotion film analysis is primarily a reseach technique and applies best to tasks that can be easily filmed. Motion pictures of tasks under normal condition make a permanent record that can be analyzed and changed to show the work of the hands or other parts of the body used in the operation. By means of a time device, the time of each movement of the worker can be accurately recorded.*

2) साइक्लोग्राफ विधि - यह एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावी तकनीक है जिसके द्वारा यह सीखा जा सकता है कि किस प्रकार कार्य को सरल तरीके से किया जाए एवं शारीरिक गतियों में कमी लायी जाए।

इसमें एक फोटोग्राफिक का उपयोग किया जाता है। इस यंत्र की सहायता से किसी भी कार्य को करने में प्रयुक्त की जाने वाली गतियों के प्रकारों का अध्ययन किया जाता है। जब फोटोग्राफिक यंत्र को शरीर के किसी भाग से जोड़ा जाता है तो यह उस भाग की क्रियाओं को विद्युत बल्ब के प्रकाश के रेखीय चित्र बनाता है। किये गये कार्य के परिणामों के रिकार्ड से यह देखा जाता है कि कार्य किस तरह से सम्पन्न किया गया है। क्या कार्य करने का तरीका सरल, सुगम एवं

लयपूर्ण था अथवा क्लिष्ट, जटिल एवं अलयपूर्ण? यदि कार्य सरल तरीकों से नहीं किया गया तो क्यों और इसमें किस तरह आवश्यक सुधार किया जा सकता है।

वर्तमान में साइक्लोग्राफ विधि में ही सुधार लाकर एक और नया यंत्र विकसित किया गया है जिसे क्रोनोसाइकिलग्राफ कहते हैं। इसमें दोनों हाथों के मध्य अँगुली के बीच में एक छोटा बल्ब लगा दिया जाता है जिससे किये जाने वाले कार्य को फोटो ले लिया जाता है तथा फिल्म पर उसका रिकार्ड बनाया जाता है।

3) मेमोमोशन अध्ययन तकनीक - इस तकनीक में विश्लेषण को आसान एवं सरल बनाया जाता है तथा कुल शारीरिक गतियों पर विस्तृत प्रकाश डाला जाता है। फिल्म के विश्लेषण हेतु प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। समय ज्ञात करने हेतु समय यंत्र का उपयोग किया जाता है।

4) स्टॉप वॉच तकनीक - इस तकनीक में कार्य में प्रयुक्त शारीरिक गतियों के तत्वों एवं सेकेण्ड के भागों का रिकार्ड किया जाता है। प्रत्येक तत्व के स्तर को स्थापित किया जाता है। यह तत्व समय मापक इकाई में प्रदर्शित किये जाते हैं। एक समय मापक इकाई एक सेकेण्ड का .036वाँ

भाग होता है अर्थात् एक मिनट का .0006वां भाग। आजकल शारीरिक गतियों के समय में बिल्कुल सही परीक्षण के लिए

इलेक्ट्रॉनिक विधियाँ भी काम में लायी जाने लगी हैं। इसमें मिनट के .0001333 भाग को भी आसानी से मापा जाता है।

2. पेन और पेन्सिल तकनीक - गृहिणियों में उद्योगों द्वारा अपनायी गई विधियों के द्वारा कार्य सरलीकरण के प्रति रूचि उत्पन्न करना आसान नहीं है क्योंकि फिल्म का विस्तृत विश्लेषण करना उनके लिए बेहद जटिल एवं कठिन कार्य है। क्योंकि अधिकांश भारतीय गृहिणियाँ निरक्षर होती हैं तथा उनमें उतनी समझ नहीं होती है । वे गृहिणियाँ जो पढ़ी-लिखी एवं समझदार होती हैं वे भी कार्य सरलीकरण को अपनाने से हिचकिचाती हैं । इसलिए व्यावहारिक तौर पर कुछ ऐसी नवीन विधियाँ विकसित की गई हैं जिन्हें गृहिणी स्वयं अपने द्वारा किये गये कार्यों का विश्लेषण कर सकती है तथा उसमें आवश्यक सुधार लाकर कार्य सरलीकरण को दैनिक जीवन में अपना सकती है। कार्य सरलीकरण की ऐसी ही कुछ सरल विधियाँ निम्नानुसार हैं-

1) प्रोसेस चार्ट - इस विधि में गृहिणी/ कार्यकर्ता के कार्य के प्रत्येक चरण का वर्णन किया जाता है। गृहकार्य करते समय कार्यकर्ता का निरीक्षण किया जाता है। इसलिए इसे ‘‘प्रोसेस चार्ट व्यक्ति विश्लेषण’’ की भी संज्ञा दी गई है।

यथार्थ में यह एक शोध अध्ययन है जिसमें कार्यकर्त्ता उसी काम को पहले मौलिक तरीके से फिर परिवर्तन तरीके से करता है। बाद में इन दोनों क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है तथा अनावश्यक गतियों को रोका जाता है।

Nickell & Dorsey के शब्दों में- *"The process chart is a step–by–step descripition of the method used in doing a task. It shows the flow of movement in the task and is most helpful in calling attention to unnecessary step and motions."*

प्रोसेस चार्ट में विभिन्न क्रियाओं को दर्शाने हेतु प्रतीकों का उपयोग किया जाता है । कुछ प्रतीक निम्नानुसार हैं-

प्रतीक का नाम

0	कार्यकर्त्ता एक स्थान से दूसरे स्थान में गति (Movement of worker from one place to another)
0	खड़े होकर काम करना (Doing work on standing position)
□	कार्यकर्त्ता द्वारा काम की गुणवत्ता/मात्रा का निरीक्षण करना। (Inspection of quality/quantity of work by worker)
Δ	काम में रूकावट, बाधा, अवरोध (Delay)
θ	क्रिया और गति साथ-साथ करना (Movement and operation done simultaneously)

चार्ट में छोटा वृत्त यह दर्शाता है कि गृहिणी/कार्यकर्त्ता गति कर रहा है। बड़ा वृत्त यह दर्शाता है कि कार्यकर्त्ता, गृहिणी एक स्थान पर खड़ा होकर क्रिया कर रहा है। चौकोर का अर्थ है कार्यकर्त्ता काम की गुणवत्ता एवं मात्रा का निरीक्षण कर रहा है। त्रिभुज दर्शाता है कि कार्य करने में कोई बाधा, अवरोध उत्पन्न हो गया है जिसके कारण काम नहीं हो पा रहा है। इसी तरह छिद्रदार गोला यह दर्शाता है कि व्यक्ति गति भी कर रहा है और काम भी।

प्रोसेस चार्ट

क्र. सं.	प्रतीक				कार्य का विवरण
	एक स्थान से दूसरे स्थान जाना.	खड़े होकर क्रिया करना	रूकावट	कार्य का निरीक्षण	
1.	0	0	Δ	□	खाना बनाने हेतु रसोईघर में जाना।
2.	0	0	Δ	□	सब्जी काटने हेतु सबजी, चाकू, बर्तन लाना।
3.	0	0	Δ	□	दुविधा/विलम्ब
4.	0	0	Δ	□	सब्जी काटकर बर्तन में रखना
5.	0	0	Δ	□	सब्जी छौंकने हेतु चूल्हे तक जाना
6.	0	0	Δ	□	चूल्हा जलाना, कड़ाही चढ़ाना व तेल डालना
7.	0	0	Δ	□	विलम्ब
8.	0	0	Δ	□	यह निरीक्षण करना कि तेल गर्म हुआ है या नहीं ताकि छौंक हेतु जीरा, राई डाली जा सके।
9.	0	0	Δ	□	सब्जी छौंकना।

प्रोसेस चार्ट को देखकर यह आसानी से पता लगाया जा सकता है कि कार्य सम्पादन में कौन-सी क्रिया अधिक होती है तथा उनका क्या क्रम हैं? इस आधार पर वे क्रियाएँ जो अनावश्यक ही अनजाने में सम्पादित हो रही हैं उन्हें हटाया जा सकता है। इसके अलावा दो या दो से अधिक क्रियाएँ जो साथ की जा सकती हैं, उन्हें करके कार्य सरलीकरण किया जाता है।

1. परन्तु इस चार्ट की निम्न कमियाँ हैं कि इसमें दो व्यक्तियों की जरूरत होती है-
2. एक व्यक्ति जो कार्य करता हो।

3. वह व्यक्ति जो निरीक्षण करता हो एवं रिकार्ड रखता हो।
4. इसमें समय का कोई महत्व नहीं होता है बल्कि कार्य की गति पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।
5. उद्योगों में इसका उपयोग कार्यकर्त्ता पर ध्यान न देकर उत्पादन ज्ञात करने में किया जाता है।

2) ऑपरेशन चार्ट - प्रोसेस चार्ट की तरह ही ऑपरेशन चार्ट का उपयोग कार्य सरलीकरण में किया जाता है। यह चार्ट प्रोसेस चार्ट के समान ही होता है अन्तर केवल इतना ही होता है कि इसमें पूर्ण क्रिया का अध्ययन न कर केवल एक विशिष्ट चरण का ही अध्ययन किया जाता हैं इसके साथ ही इसमें दोनों हाथों की क्रिया का अध्ययन पृथक-पृथक किया जाता है। इसमें भी वही प्रतीकों का उपयोग किया जाता है जो कि प्रोसेस चार्ट में किया जाता है। केवल इनके नाम भिन्न होते हैं-

प्रतीक	प्रतीक का नाम
o	भुजाओं की गति
0	अँगुलियों की गति
Δ	भुजा एवं अँगुलियों दोनों का आलस्य

ऑपरेशन चार्ट के निरीक्षण में प्रोसेस चार्ट की अपेक्षा अधिक कौशल की आवश्यकता होती है। साथ ही प्रत्येक हाथ की क्रिया के निरीक्षण के लिए अलग-अलग निरीक्षण कर्ता की जरूरत पड़ती है । व्यावहारिक तौर पर ऑपरेशन चार्ट को तैयार करना एवं रिकार्ड रखना बेहद जटिल, मुश्किल एवं दुसाध्य कार्य है इसलिए उसका फिल्म विश्लेषण ही किया जाता है। ऑपरेशन चार्ट की निम्न उदाहरणों से समझाने का प्रयास किया गया है-

ऑपरेशन चार्ट

बायाँ हाथ	दायाँ हाथ

विवरण	प्रतीक			प्रतीक			विवरण
1. पालक धोने के लिए बर्तन निकालना।	0	0	Δ	0	0	Δ	1. पालक धोकर दूसरे बर्तन में रखना।
2. पालक काटने के लिए चाकू, बर्तन आदि उठाना।	0	0	Δ	0	0	Δ	2. हाथ में चाकू पकड़ना एवं पालक काटना।
3. कटे पालक को बर्तन के किनारे रखना	0	0	Δ	0	0	Δ	3. पालक-परांठा हेतु आटा निकालना।
4. आटा गूंथने हेतु जग में पानी निकालना।	0	0	Δ	0	0	Δ	4. आटा, पालक, नमक, अजवायन आदि मिलाना एवं आटा गूंथना।

3) **मल्टीमैन चार्ट -** यह चार्ट भी प्रोसेस चार्ट के समान ही होता है। इसका उपयोग उन स्थानों पर किया जाता है, जहाँ एक समय में दो या दो से अधिक व्यक्ति कार्य कर रहे होते हैं। इसमें भी उन्हीं प्रतीकों का उपयोग किया जाता है जो प्रोसेस चार्ट में किया जाता है। इस चार्ट की खास विशेषता है कि यह इसमें किसी विशिष्ट कार्य हेतु नये प्रतीकों का भी उपयोग किया जाता है विशेषकर रूकावट का।

4) **पाथवे चार्ट -** घरेलू क्रियाओं को सम्पन्न करने में समय एवं शारीरिक गति के अध्ययन के लिए पाथवे चार्ट एक अत्यन्त ही साधारण विधि है। इस विधि का उपयोग सबसे पहले गिलबर्थ द्वारा किया गया। बाद में प्रयोगशाला में इसका उपयोग किया जाने लगा।

इस विधि में सबसे पहले मकान का फ्लोर प्लान मापकर तख्ते पर बना लिया जाता है। पिन एवं धागे की सहायता से ड्राईंग बोर्ड पर

नक्शे में जिस स्थान से दूसरे स्थान को जाती है, वहाँ पिन लगा दिया जाता है। जैसे ही कार्यकर्त्ता/गृहिणी उस स्थान से दूसरे स्थान को जाती है, वहाँ पिन लगा दिया जाता है। इस प्रकार जहाँ-जहाँ कार्यकर्त्ता मुड़ते हैं वहाँ-वहाँ पिन लगा दिया जाता है तथा उसके चारों और धागा लपेट लिया जाता है। कार्य पूरा होने के बाद धागे की कुल लम्बाई नापकर दूरी ज्ञात कर ली जाती है। यह चार्ट दो बार बनाया जाता है- एक मौलिक चार्ट एवं दूसरा संशोधित चार्ट। दोनों चार्टों के तुलनात्मक अध्ययन करके कार्य सरलीकरण किया जाता है।

4.8 थकान (atigue)

ऊर्जा व्यवस्थापन में थकान का अपना महत्त्व है। थकान अनुभव करना जितना आसान है, उतना ही कठिन एवं दु:साध्य कार्य है इसे परिभाषित करना। कुछ घरेलू क्रियाओं के सम्पादन में अधिक थकान उत्पन्न होती हैं तो कुछ क्रियाएँ बिना थके ही सम्पन्न हो जाती हैं। वे कार्य जिसमें व्यक्ति की रूचि होती है तथा जिन्हें करने की आदत होती है उसमें थकान कम अनुभव होती है। कुछ कार्य ऐसे भी होते हैं जिन्हें करने में ऊर्जा तो कम व्यय होती है मगर आसन सम्बन्धी प्रभाव, माँसपेशीय तनाव, एकाग्रता, मानसिक तनाव आदि कारणों से अधिक थकान का अनुभव होता है।

ऊर्जा व्यवस्थापन से सम्बन्धित समस्याओं को सुलझाने के लिए थकान के बारे में जानना आवश्यक है ताकि काम समय पर बिना थके सम्पन्न हो जाए तथा पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति हो।

थकान के कारण - थकान उत्पन्न होने के मुख्यत: दो कारण हैं-

बाहरी कारक - अत्यधिक शोर, भीड़भाड़, अशुद्ध वायु, अनुपयुक्त कार्य क्षेत्र, अपूर्ण प्रकाश, अत्यधिक उत्तेजना, अधिक कार्य-भार आदि कारणों से थकान उत्पन्न हो जाती है।

आन्तरिक कारक - थकान न केवल बाहरी कारकों के कारण होता है बल्कि कई आन्तरिक कारक होते हैं जो थकान उत्पन्न करते हैं, जैसे- शरीर रोगग्रस्त होना, कमजोरी, रक्त अल्पता (।दंमउपं), शरीर में विकार उत्पन्न होना, जैसे- दृष्टि दोष, हृदय रोग, पेट में दर्द एवं पीड़ा, माँसपेशीय ऐंठन

एवं पीड़ा, वृक्क रोग, अल्प रक्तचाप, उच्च रक्तचाप, मधुमेह आदि। ज्ञान, रूचि, कौशल, अनुभव आदि में कमी होने से भी थकान होने लगता है।

थकान के प्रकार - थकान दो प्रकार के होते हैं-

शारीरिक थकान - लगातार घरेलू क्रियाओं को करने से धीरे-धीरे शरीरिक ऊर्जा कम होने लगती है तथा व्यक्ति को कार्य क्षमता घटने लगती है। इसे निम्न शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है।

"शारीरिक थकान वह शारीरिक स्थिति होती है जो पूर्व में किये गये कार्यों के कारण वर्तमान में काम करने की क्षमता को कम कर देती है तथा थकान उत्पन्न हो जाती है।"

काम करने में शरीर की पेशियाँ काम आती हैं। किसी भी पेशी के बार-बार कार्य करने (संकुचन एवं प्रसारण) से ऊष्मा या ताप की उत्पत्ति होती है। यह ऊष्मा ही ऊर्जा के रूप में बदल जाती है जिसे पेशियाँ ऊर्जा के रूप में ग्रहण करती हैं।

कार्य करने की दशा में पेशियाँ निरन्त संकुचित एवं प्रसारित होती रहती हैं। उनके कार्य करने से पेशियों में संचित ऊर्जा समाप्त हो जाती है और उस स्थान पर दुग्धाम्ल (लैक्टिक अम्ल) का निर्माण हो जाता है। इस लैक्टिक अम्ल का पुन: ऑक्सीकरण होना आवश्यक है। यही लैक्टिक अम्ल पेशियों को थका देती हैं। जिस गति से लैक्टिक अम्ल का पेशियों में निर्माण हो रहा है अगर उसी गति से लैक्टिक अम्ल कार्बन डाई ऑक्साइड में नहीं बदल पा रहा है तो पेशियों में लैक्टिक अम्ल एकत्रित होता रहा है तथा पेशियाँ श्रांत, क्लांत हो जाती हैं तथा व्यक्ति थककर चूर हो जाता है। लैक्टिक अम्ल ही पेशीय थकान के मुख्य कारण हैं।

ग्लूकोज (Glucose) + ऑक्सीजन (O_2) $\xrightarrow{\text{ऑक्सीकरण}}$ पायरूविक अम्ल

↓ बाद में

(लैक्टिक अम्ल)

लैक्टिक अम्ल + (O_2) $\xrightarrow{\text{ऑक्सीकरण}}$ $CO_2 \uparrow$ + H_2O + ऊर्जा

(कार्बन डाइ ऑक्साइड + पानी + ऊष्मा)

किसी भी कार्य को करने के बाद पुन: ऊर्जा प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है। ऊर्जा प्राप्त करने के लिए शरीर की पेशियों से संगृहीत लैक्टिक अम्ल को निकालना बेहद आवश्यक है। आराम करने से पेशियों में एकत्रित लैक्टिक अम्ल का ऑक्सीकरण हो जाता है जिसके फलस्वरूप वह उत्सर्जी अंगों द्वारा शरीर से बाहर निकल जाता है तथा थकान दूर हो जाती है।

पेशियों की थकान को **"अरगोमीटर"** नामक यंत्र से मापा जाता है। यथार्थ में थकान पेशियों में नहीं होती है बल्कि जिस जंक्शन पर सुषुम्ना की प्रेरक तंत्रिका से वे पेशियाँ मिलती है तथा जिस स्थान से तंत्रिका आवेगों को ग्रहण करके पेशी को संकुचन के लिए प्रेरित करती हैं, वही पेशियाँ कुछ समय बाद वह श्रांत हो जाती हैं तथा पेशियों में आंकुचन बन्द हो जाता है।

कल-कारखानों एवं उद्योगों में किये गये अध्ययनों से यह पता चला है कि थकान कार्यकर्ता की व्यक्तिगत कार्य क्षमता को कम कर देती है। यदि कार्यकर्ता को समय समय पर थोड़ी देर के लिए विश्राम करने के अवसर उपलब्ध कराये जाएँ तो उनकी थकान दूर की जा सकती है तथा कार्य क्षमता में पुन: वृद्धि की जा सकती है।

मनोवैज्ञानिक थकान - अधिकतर घरेलू क्रियाओं से उत्पन्न होने वाली थकान मनोवैज्ञानिक ही होता है। इस प्रकार के थकान में व्यक्ति को किसी विशेष कार्य के प्रति रूचि एवं घृणा उत्पन्न हो जाती है।

वार्टले के शब्दों में - "थकान या थकावट एक व्यक्ति की उस परिस्थिति के प्रति सम्पूर्ण प्रतिक्रियाओं में से एक है जिसकी वह जाने या अनजाने में व्याख्या एवं मूल्यांकन करता है। व्यक्ति द्वारा स्वीकार की गई आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक प्रकार की अनुपयुक्तता ही थकान है।"

मनोवैज्ञानिक थकान को निम्न प्रकार से भी पारिभाषित किया जा सकता है-

"मनोवैज्ञानिक थकान किसी व्यक्ति की वह मनोवैज्ञानिक स्थिति होती है जिसके कारण उसे किसी खास कार्य के प्रति घृणा एवं अरुचि उत्पन्न हो

जाती है। परिणामत: कार्य क्षमता में कमी आ जाती है। इसे "मानसिक थकान"भी कहते हैं।

मनोवैज्ञानिक थकान मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं-

नीरस थकान

कुण्ठाजन्य थकान

1. नीरस थकान - इस प्रकार की थकान में व्यक्ति की वास्तविक कार्य क्षमता प्रभावित नहीं होती है, बल्कि व्यक्ति को किसी काम के प्रति अनाकर्षण, अरुचि एवं घृणा उत्पन्न हो जाती है। जिन गृहिणियों को घरेलू कार्यों में रुचि नहीं होती वे शीघ्र ही इस प्रकार के थकान से ग्रसित हो जाती है ।

नीरस थकान के निम्न लक्षण हैं-

- विश्रामहीनता का बोध
- कार्य से छुटकारा पाने की प्रबल इच्छा
- असंतोष की भावना
- उबाऊपन
- प्रेरणा का निम्न स्तर
- काम के प्रति अरुचि एवं घृणा
- आलस्य
- उबासी एवं नींद आना

ऐसा प्रतीत होना कि घड़ी की सुई की रफ्तार अत्यन्त धीमी है तथा समय पास करना भारी पड़ रहा है।

2. कुण्ठाजन्य थकान - कुण्ठाजन्य थकान मानसिक थकान है जिसके लिए केवल एक नहीं, बल्कि कई परिस्थितियाँ सामूहिक रूप से जिम्मेदार होती

हैं। इस तरह की थकान तब उत्पन्न होती है, जब व्यक्ति योजनानुसार कार्य नहीं कर पाता है अथवा लक्ष्य की प्राप्ति के बारे में उसे बार-बार असफलता ही हाथ लगती है। लक्ष्य की प्राप्ति न होने के कारण व्यक्ति निराश, उदास, दु:खी एवं कुंठित हो जाता है और इसी का परिणाम होता है कुण्ठाजन्य थकान।

कुण्ठाजन्य थकान निम्न कारणों से उत्पन्न हो जाता है-

- कार्य करने की सफल विधि का ज्ञान न होना।
- अनुभव की कमी ।
- बार-बार लक्ष्य प्राप्ति में असफलता।
- कार्य की अनिश्चितता एवं भ्रमात्मक स्थिति।
- पारिवारिक विवाद एवं लड़ाई-झगड़े।
- परिवार के सदस्यों द्वारा काम नहीं करना तथा असहयोग की भावना।
- कार्य के प्रति उत्साह में कमी ।
- कार्य सम्पन्न करने में अधिक समय लगाना ।

गृहिणी का कामकाजी होना तथा घर-बाहर की दोहरी जिम्मेदारी को कुशलतापूर्वक न निभा पाना।

प्राचीन स्थितियों के अनुरूप काम करने का तरीका और जो कि नई विधियों से मेल नहीं खाता हो।

बार्टले ने कुण्ठाजन्य थकान से सम्बन्धित अनेक अध्ययन किये तथा यह निष्कर्ष निकाला कि "गृहिणी की घर-बाहर की दोहरी जिम्मेदारी भी कुण्ठाजन्य थकान को उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब गृहिणी को सीमित समय में घर के उत्तरदायित्वों के साथ ही कार्यस्थल पर के कार्यों को निपटाना पड़ता है तब कई लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो पाती है। कई लक्ष्य अधूरे रह जाते हैं। परिणामत: कुण्ठाजन्य थकान उत्पन्न हो जाता है।"

थकान के लक्षण -

- व्यक्ति सुस्त, आलसी एवं शिथिल हो जाता है।
- उबासी, नींद एवं जम्हाई आना।
- कार्यक्षमता में कमी।
- काम करने में अधिक समय लगना।
- बार-बार गलतियाँ होना।
- एकाग्रता में कमी।
- काम बिल्कुल नहीं करने की इच्छा।
- पलकें झपकने लगती हैं।

थकान दूर करने के उपाय -

1. **विश्राम काल -** थकान दूर करने का सबसे अच्छा सरल, सुगम एवं प्रभावी उपाय है, "विश्राम करना" । विश्राम करने से शारीरिक एवं मानसिक दोनों ही प्रकार की थकान मिट जाती है। व्यक्ति में फिर से कार्य करने की ऊर्जा, योग्यता एवं क्षमता विकसित हो जाती है। विश्राम के बाद व्यक्ति पूरे मनोयोग से कार्य सम्पन्न करता है। परन्तु हाँ, शरीर को पूर्ण विश्राम सोने से ही मिलता है। दिनभर के काम के बाद रात्रि प्रहर 8 घण्टे सोने से व्यक्ति को पूरा आराम मिलता है।

एक व्यक्ति /गृहिणी के कार्य करने की अवधि में कितनी बार, कितनी देर तक तथा कब विश्राम करना चाहिए, यह कार्य की प्रकृति, आदत, रुचि, परिस्थिति, वातावरण, शारीरिक एवं मानसिक स्थिति आदि बातों पर निर्भर करता है।

बानर्स के अनुसार- "विश्राम काल हल्के एवं भारी काम करने के उपरान्त हुई थकान से छुटकारा पाने के लिए अत्यावश्यक है।"

2. **प्रेरणा की भूमिका -** थकान दूर करने में उत्प्रेरण/प्रेरणा की महत्वपूर्ण भूमिका है जिसे कदापि नकारा नहीं जा सकता। औद्योगिक क्षेत्रों में हुए अध्ययनों, शोधों से यह स्पष्ट ज्ञात हुआ है कि प्रेरणा का सभी प्रकार के थकान से गहरा एवं अटूट सम्बन्ध है। जब प्रेरणा का स्तर निम्न होता है तब व्यक्ति को कार्य के प्रति अरुचि एवं घृणा उत्पन्न हो जाती

है। व्यक्ति काम को ठीक तरीके से सही समय पर नहीं सम्पन्न कर पाता है तथा जल्दी ही थकान हो जाती है। इसके ठीक विपरीत जब प्रेरणा का स्तर उच्च होता है, तब पर्याप्त ऊर्जा व्यय होने पर भी थकान जल्दी दृष्टिगोचर नहीं होता है और व्यक्ति तब तक काम करता रहता है जब तक कि वह वास्तविक रूप में थककर चूर न हो जाए।

मेयर के अनुसार- "किसी कार्य को करने के लिए कितनी ऊर्जा प्राप्त होगी, यह उस बात पर निर्भर करता है कि उत्प्रेरणा/प्रेरणा कितने उच्च स्तर का है। उत्प्रेरणा का स्तर जितना अधिक ऊँचा होगा काम करने हेतु उतनी ही अधिक ऊर्जा प्राप्त होगी। यदि उत्प्रेरणा का स्तर निम्न होगा तो काम करने हेतु ऊर्जा भी कम प्राप्त होगी और जल्दी थकान होगी।"

नवीन विधियाँ, नये लक्ष्यों का निर्माण एवं समय, ऊर्जा बचत के उपकरण की सहायता से प्रेरणा के स्तर में सुधार लाया जाता है। उदाहरणार्थ- यदि गृहिणी को सिलाई कार्य या पाक कला में रूचि नहीं है तब परिवार के सदस्य उसमें उपर्युक्त काम के प्रति रूचि जागृत कर सकते हैं। सिलाई कार्य में मशीन का उपयोग करके तथा सिलाई की विभिन्न विधियाँ सिखाकर उसमें रूचि जागृत की जा सकती है। साथ ही साथ अच्छे कार्य के लिए समय-समय पर प्रोत्साहित भी करना चाहिए।

3. कार्य में परिवर्तन - लगातार एक ही प्रकार के काम करने से व्यक्ति को नीरस थकान हो जाती है। मन उस काम के प्रति ऊब जाता हैं यदि कार्य में परिवर्तन कर दिया जाए तो थकान स्वत: ही कुछ देर में दूर हो जाती है। इसीलिए भारी काम के बाद हल्के काम, शारीरिक काम के बाद मानसिक काम करने की सलाह दी जाती है। उदाहरण- यदि गृहिणी कपड़ा लगातार दो-तीन घण्टे से धो रही है तो उसे थकान होना स्वाभाविक है। वह कप्ड़ा धोना छोड़कर यदि अन्य घरेलू क्रियाएँ करने लगे, जैसे- सब्जी काटना, रोटी पकाना, बिस्तर लगाना, मसाला पीसना तो उसे थकान नहीं होगी क्योंकि काम में परिवर्तन से कार्य की नीरसता दूर हो जाती है। टी.वी. देखने, रेडियो सुनने, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने, कहानी कि किताबें पढ़ने, संगीत सुनने, बच्चों के साथ खेलने आदि से भी थकान दूर हो जाती है तथा मन तरोताजा हो जाता है।

4. उचित शारीरिक संस्थिति व मुद्रा - थकान मिटाने में उचित एवं सही शारीरिक संस्थिति का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। अधिकांश थकान होने का मुख्य कारण ही अनुचित तरीके से बैठना, उठना, चलना, पकड़ना, उठाना आदि है। कहने का तात्पर्य है, ''शरीर की माँसपेशियों एवं हड्डियों के अनुचित प्रयोग से थकान शीघ्रता से उत्पन्न हो जाती है।''

थकान से बचने के लिए मुद्रा एवं स्थिति में थोड़ी-थोड़ी देर बाद परिवर्तन करते रहना चाहिएं यदि बैठकर काम किया गया है तो खड़े होकर या झुककर काम करना चाहिए। इससे शरीर की माँसपेशियों में बदलाव आता है तथा एक ही माँसपेशी पर दबाव एवं तनाव उत्पन्न नहीं होता।

शरीर की बड़ी माँसपेशियों का उपयोग कार्य निष्पादन करते समय करना चाहिए। इससे शीघ्रता से थकान नहीं होती। उचित शारीरिक संस्थिति के निम्नांकित सिद्धान्त हैं, जिनका अनुसरण करने से थकान कम होती है-

- लयपूर्ण तरीके से काम करना।
- शरीर के अंगों का गुरुत्वाकर्षण की सीध में रखकर काम करना।
- शरीर एवं उठाये जाने वाले वजन के मध्य गुरुत्वाकर्षण को ध्यान में रखना।
- सीधे बैठकर काम करना।

शरीर की मुद्रास्थिति में परिवर्तन करते रहना।

5. कार्य के प्रति रूचि जागृत करना - जिन कार्यों में व्यक्ति/गृहिणी की रुचि नहीं होती है अथवा वह जिन कार्यों को करना पसन्द नहीं करती है यदि उसे वही कार्य दे दिये जाएँ तो शीघ्रता से थकान उत्पन्न हो जाती है। अत: ऐसी थकान को दूर करने का सबसे सशक्त एवं प्रभावी माध्यम है- ''कर्य के प्रति रुचि जागृत करना।'' रुचि जागृत करने के लिए गृहिणी को स्वयं अधिक प्रयास करना चाहिए।

किसी कार्य को समूह में अथवा परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर करने से काम में रुचि उत्पन्न हो जाती है तथा थकान दूर हो जाती है। उदाहरण- अकेले बैठकर बुनाई, सिलाई या कढ़ाई करने पर जल्दी थकान हो जाती है। यदि इन्हीं कार्यों को समूह में बैठकर किया जाए तो

जल्दी थकान उत्पन्न नहीं होती तथा कार्य के प्रति रुचि बनी रहती है। कार्य के बाहर के क्षेत्र में रुचि लेने से थकान दूर हो जाती है, जैसे- भोजन बनाते समय संगीत सुनना, रेडियो सुनना आदि।

6. **कार्य में कौशल विकसित करना -** कार्य में कौशल एवं निपुणता विकसित करके भी थकान को आसानी से मिटाया जा सकता है। जब व्यक्ति को कार्य करने का सही तरीका मालूम नहीं रहता है अथवा लक्ष्य स्पष्ट नहीं होते हैं तब शीघ्रता से थकान होने लगती है। अत: कार्य

सम्पादन हेतु नवीन विधियों की खोज एवं कार्य प्रणाली में यथासम्भव सुधार किया जाना चाहिए। कार्य कुशलता एवं निणुणता में वृद्धि की जानी चाहिए। निरन्तर अभ्यास एवं कठोर परिश्रम से कार्य कुशलता में वृद्धि होती है तथा थकान उत्पन्न नहीं होती। साथ ही काम के प्रति रुचि भी जागृत होती है।

कार्य में कौशल विकसित करने हेतु घर के प्रत्येक सामान को व्यवस्थित करके एवं क्रम से उचित जगह पर रखना चाहिए। ताकि उठाने, रखने में सहुलियत हो। उदाहरणार्थ- लिखने-पढ़ने का सामान एक आलमारी या टेबिल पर रखनी चाहिए। ताकि चीजों को ढूँढ़ने में अनावश्यक समय एवं ऊर्जा नष्ट न हो।

7. **समय-ऊर्जा बचत के उपकरणों का प्रयोग करना -** कुछ काम ऐसे होते हैं जिन्हें व्यक्ति स्वयं अपने हाथों से करता है तब जल्दी थकान उत्पन्न हो जाती है। यदि मसाला को मिक्सर में पीसे जाएँ तो गृहिणी को बिल्कुल थकान नहीं होगी। इसी तरह हाथ से कपड़े धोने के बजाय

वाशिंग मशीन का उपयोग किया जाए तो थकान बहुत ही कम होती है।

4.9 सारांश

ऊर्जा व्यवस्थापन आज के युग में हर गृहिणी की आवश्यकता है। ऊर्जा व्यवस्थापन द्वारा ही हम समय व धन का समुचित उपभोग कर सकते है। ऊर्जा व्यवस्थापन के अन्तर्गत हमने जाना कि कैसे हमारे शरीर की स्थिति व गति में परिवर्तन कर हम थकान से बच सकते हैं। उपर्युक्त पाठ में हमने जाना कि किस प्रकार से हम ऊर्जा व्यवस्थापन करते हुए अपने कार्यों को सरलता से पूरा कर सकते हैं। हमने जाना कि जीवन में कब हमें ऊर्जा की कितनी मांग होती है। उपर्युक्त पाठ को पढ़ने के बाद व्यक्ति का सम्पूर्ण दृष्टिकाण ही बदल जाएगा।

4.10 अभ्यास प्रश्न

प्र. 1 ऊर्जा व्यवस्थापन को परिभाषित करें व ऊर्जा की माँग के बारे में बताएँ ।

प्र. 2 शरीर यांत्रिकी से आप क्या समझते हैं?

प्र. 3 मंडेल के परिवर्तन के वर्ग बताएँ।

प्र. 4 कार्य सरलीकरण पर निबन्ध लिखें।

प्र. 5 'थकान' से आपके मस्तिष्क में क्या तस्वीर उभरती है, लिखें?

4.11 संदर्भ सूची

1. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा- डॉ. बृन्दा सिंह।
2. गृह प्रबंध, साधन व्यवस्था एवं आंतरिक सज्जा- श्रीमती रीना खनूजा।
3. Home Management– I.H. Gross and E.W. Crandall

इकाई-5

पारिवारिक आय

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 आय का अर्थ

5.3 आय के स्त्रोत

5.4 परिवारिक आय को प्रभावित करने वाले कारक

5.5 परिवारिक आय वृद्धि के सहायक साधन

5.6 सारांश

5.7 अभ्यास प्रश्न

5.8 संदर्भ ग्रन्थ

5.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत

- आय के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- आय के प्रकार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- आय के विभिन्न स्त्रोतों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

5.1 प्रस्तावना

मानव जीवन में धन का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। हम सभी को ज्ञात है कि धन के अभाव में व्यक्ति का जीवन बेहद कष्टपूर्ण, दयनीय एवं तनावपूर्ण हो जाता है । वह अपनी भोजन, आवास, वस्त्र जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं कर पाता है । परिणामत: जीवन क्षमता

(Life Capacity) एवं कार्य क्षमता प्रभावित होती है। पौष्टिक भोजन के अभाव में वह कुपोषण का शिकार हो जाता है। तमाम तरह की पोषण न्यूवता जनित एवं अन्य गंभीर बीमारियाँ उसे दबोच लेती है। जिसका प्रतिकूल प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर पड़ता है। भूख के कारण अनेक लोग असमय ही तड़प-तड़प कर मर जाते है। सामाचार पत्रों में आये दिन पढ़ने, सुनने को मिलता है।'' अकालग्रस्त इलाकों में भूख के कारण इतने जनों (व्यक्तियों) की मृत्यु हो गई।'' उसका सीधा सम्बन्ध आय (धन) से है। यदि आय होती तो अनाज खरीदगार अपना तथा अपने परिवार का पेट भर सकता है। भूखे मरने की नौबत नहीं आती। मनुष्य की न केवल आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही धन की आवश्यकता है बल्कि आरामदायक एवं विलासात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी धन अत्यावश्यक है। दूसरे शब्दों में, जिस परिवार की आय अधिक होती है। वहीं सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवनयापन करता है। क्योंकि उसका रहन-सहन का स्तर ऊँचा होता है।

5.2 आय का अर्थ (Meaning of Income) –

अर्थशास्त्रियों के अनुसार, " आय एक निश्चित अवधि में अर्जित की गई वह धनराशि हे जो आर्थिक प्रयत्नों के फलस्वरूप प्राप्त होती है तथा जिसमें अन्य सुविधाएँ, जैसे-नि:शुल्क मकान, मुफ्त चिकित्सा मुफ्त शिक्षा, मनोरंजन, यात्रा व्यय आदि भी सम्मिलित होते है।

पारिवारिक आय (Family Income)-एक निश्चित अवधि में परिवार के मुखिया एवं अन्य सदस्यों द्वारा अर्जित आय (धन, मुद्रा) पारिवारिक आय कहलाता है। पारिवारिक आय मुद्रा के अतिखुला वस्तुओं एवं सेवाओं के रूप में भी प्राप्त हो सकती है।

निकेल एवं डॉर्सो ने पारिवारिक आय की परिभाषा निम्नानुसार दी है-'' पारिवारिक आय मुद्रा, वस्तुओं, सेवाओं तथा संतोष का प्रवाह है जो परिवार के अधिकार में उसकी आवश्यकताओं के निर्वाह हेतु आता है।''

वर्तमान में मुद्रा, विनिमय (Exchange) का एक सशक्त माध्यम है। मुद्रा (Money) से सभी तरह की आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है। यद्यपि प्रत्यक्ष रूप में मुद्रा किसी आवश्यकता को संतुष्ट नहीं कर सकती, परन्तु इसके प्रयोग से अनेक वस्तुएँ खरीदी एवं बेची जा सकती हैं सभ्यता के प्रारम्भिक चरण में मुद्रा (Currency) का उतना अधिक महत्व नहीं था क्योंकि तब मनुष्य की आवश्यकताएँ बहुत ही कम थीं। तब लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति सामानों के आदान-प्रदान करके करते थे। परन्तु जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ, वैज्ञानिक अविष्कार हुए वैसे-वैसे लोगों की आवश्यकताएँ बढ़ीं तथा मुद्रा (Currency) विनियम (लेन-देन) का मुख्य माध्यम बना।

यह जरूरी नहीं है कि प्रत्येक परिवार की आय समान ही हो। कुछ परिवार की आय अधिक होती है तो कुछ की कम। अधिक आय अर्जित करने वाले परिवार धनाढ्य वर्ग (High Income Group) के अन्तर्गत आते है। इसी तरह जिनकी आय बहुत ही कम होती है वे निर्धन (Poor) अर्थात् निम्न आय वर्ग की श्रेणी में आते है। प्रत्येक परिवार का वर्ष भर आय प्रवाह भी नहीं रहता। कुछ परिवारों में, विशेषकर नौकरीपेषा वालों को, एक निश्चित आय प्रतिमाह आती रहती है जबकी कृषक एवं व्यवसायी परिवारों में वर्ष के कुछ माह में आय अधिक होती है तो कुछ माह में कम, कुछ माह में बिल्कुल भी आय नहीं होती है।

पारिवारिक आय के प्रकार (Types of family Income)-परिवारिक आय की प्रमुख रूप से तीन भागों में बाँटा जा सकता है-

1. मौद्रिक आय (Money Income)
2. वास्तविक आय (Real Income)
3. मानसिक आय (Psychic Income)

(1) मौद्रिक आय (Money Income) – हम सभी मौद्रिक आय (Money Income) से भली भांति परिचित हैं एक निश्चित समय में, परिवार को मुद्रा (Money) के रूप में जो आय प्राप्त होता है उसे ही मौद्रिक आय कहा जाता है। मौद्रिक आय में क्रयशक्ति (Purchasing

Power) होती है। इससे हम दुनिया की अनेक वस्तु व सेवाएँ प्राप्त कर सकते है। बचत करके बैंक में पैसा जमा कर सकते है। वर्तमान में वह विनिमय (Exchange) का प्रमुख माध्यम है।मौद्रिक आय प्राप्त करने के लिए परिवार को प्रयत्न करने पड़ते है, आर्थिक क्रियाएँ करनी पड़ती है, जैसे - नौकरी, व्यवसाय, कृषि, उद्योग-धन्धे, मजदूरी आदि। हाँ! कुछ अवस्थाओं में परिवार को बिना आर्थिक प्रयत्न किये ही मौद्रिक आय प्राप्त हो जाती है, जैसे- पैतृक सम्पति से प्राप्त आय, मकान किराया, कृषि भूमि से मौद्रिक आय, लगान आदि। पारिवारिक आय वेतन, मजदूरी, ब्याज, मकान किराया, पेंषन, रायॅल्टी, बीमारी-दुर्घटना से प्राप्त आय, (Sick-Accident Benefits), उपहार, बीमा लाभ आदि रूप में प्राप्त होती है। मौद्रिक आय दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक अथवा वार्षिक हो सकती है। वह परिवार के कार्य विशेष पर निर्भर करता है। मौद्रिक आय वस्तुओं एवं सेवाओं में परिवर्तित हो जाती है जिससे परिवार की दैनिक आवश्यकताओं के अलावा आरामदायक एवं विलासात्मक आवश्यकताओं की संतुष्टि की जाती है।

ग्रॉस एवं क्रैन्डल के अनुसार, ''मौद्रिक आय से तात्पर्य क्रयशक्ति से है जो मुद्रा के रूप में एक परिवार को निश्चित समय में प्राप्त होती है।''

निकेल एवं डॉर्सी ने मौद्रिक आय के सम्बन्ध में अपनी पुस्तक " Management in Family Living" में लिखा है-" Money income is converted into goods and services required for daily living and often a part is diverted into savings for delayed use or for invested."

(2) वास्तविक आय (Real Income) – वह आय जो परिवार को एक निश्चित अवधि में वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रवाह से प्राप्त होती है, वास्तविक आय कहलाती है। कुछ सेवायें मुद्रा खर्च किये बगैर ही प्राप्त हो जाती है जबकी कुछ सेवायें, वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए मुद्रा खर्च करनी पड़ती है, जैसे- नि:शुल्क यात्रा, चिकित्सा, मकान, घरेलु बागवानी से प्राप्त सब्जियाँ, फल आदि। परन्तु यदि उपर्युक्त वस्तुएँ नि:शुल्क प्राप्त नहीं होती है तो उन्हें पैसा खर्च करके प्राप्त किया जाता है व परिवार की

आवश्यकताओं की संतुष्टि की जाती है। ये दोनों ही मिलकर वास्तविक आय कहलाती है।

वास्तविक आय ¾ नि:शुल्क सेवाएँ/वस्तुएँ + मौद्रिक आय खर्च करके प्राप्त सेवाएँ एवं वस्तुएँ

ग्रॉस एवं क्रैन्डलने वास्तविक आय को निम्नानुसार परिभाषित किया है- ''वास्तविक आय वस्तुओं और सेवाओं का ऐसा प्रवाह है जो एक निश्चित समय के लिए मानवीय आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की संतुष्टिकरण के लिए उपलब्ध रहती है।''

वास्तविक आय को दो वर्गो में विभाजित किया जा सकता है-

1- प्रत्यक्ष आय (Direct Income)-

2- अप्रत्यक्ष आय (Indirect Income)-

1. प्रत्यक्ष आय (Direct Income)- इसके अन्तर्गत वे वस्तुएँ एवं सेवाएँ आती है जिन्हें परिवार बिना पैसा (Money) खर्च किए ही प्राप्त करता है, प्रत्यक्ष आय कहलाती है। उदाहरण- वेतन के साथ ही M.L.A., M.P., I.A.S., I.P.S., Army Officers आदि को नि: शुल्क मकान, चिकित्सा सुविधा, टेलीफोन सुविधा आदि उपलब्ध होते है, इन्हें वेतन के अतिखुला ये सभी सुविधाएँ नि:शुल्क प्राप्त होती है। इसी प्रकार कृषि कार्य से प्राप्त अनाज, घरेलु बागवानी से प्राप्त साग- सब्जियाँ, फल, पैतृक मकान, दुकान, परिवार के सदस्यों द्वारा की गई सेवाओं,जैसे - घर की साफ-सफाई, बर्तन माँजना, वस्त्र धोना, भोजन बनाना, वस्त्र मिलकर सदस्यों को उपलब्ध कराना, बच्चों को पढ़ाना आदि, प्रत्यक्ष आय के उदाहरण है। सार्वजनिक सेवाओं के उपयोग से जो लाभ होते है वे भी प्रत्यक्ष आय के अन्तर्गत आते है, जैसे- पुस्तकालय, पार्क, पुलिस व्यवस्था, डाकखाना आदि।

2. अप्रत्यक्ष आय (Indirect Income) - अप्रत्यक्ष आय के अन्तर्गत वे वस्तुएँ एवं सेवाएँ आती है जिन्हें प्राप्त करने के लिए परिवार को कुछ मुद्रा (money) खर्च करना पड़ता हैं अर्थात् उन्हें मौद्रिक आय के माध्यम से

प्राप्त किया जाता है। उदाहरण- सस्ते दाम में सुन्दर, आकर्षक, खूबसूरत एवं टिकाऊ वस्त्र खरीदना, सस्ते मूल्य पर पौष्टिक सामग्री क्रय करना, कम राशि खर्च करके बच्चों को अच्छे विद्यालय में प्रवेश दिलाना आदि अप्रत्यक्ष आय के उदाहरण है। यदि कम पैसा खर्च करके सुन्दर, टिकाऊ, मजबूत एवं आकर्षक वस्त्र खरीदे जाते है तो निश्चित ही इनकी सुन्दरता एवं आकर्षण ज्यादा दिन तक अक्षुण्ण बनी रहती है और यही अप्रत्यक्ष आय होती है। इसी तरह सस्ते मूल्य पर पौष्टिक भोजन उपलब्ध होने से स्वास्थ्य उत्तम होता है।

गृहिणी की कुशलता, क्षमता, योग्यता, सूझबूझ, विवेकपूर्ण निर्णय, परिवार के सदस्यों के परस्पर सहयोग आदि पर वास्तविक आय निर्भर करती है।

3.मानसिक आय (Psychic Income)-मानसिक आय का सम्बन्ध मुख्य रूप से मन के संतोष से होता है। परिवार मुद्रा (Money) खर्च करके वस्तुएँ, सेवाएँ प्राप्त करता है । इन वस्तुओं एवं सेवाओं के उपभोग से जो मन की संतुष्टि एवं तृप्ति मिलती है, वहीं मानसिक आय (Mental or Psychic Income) कहलाती है।

ग्रॉस एवं क्रैन्डल के शब्दों में- " मानसिक आय से तात्पर्य एक निश्चित समय में एक परिवार के मौद्रिक एवं वास्तविक आय के उपभोग से प्राप्त सन्तोश से है।"

मानसिक आय व्यक्तिगत होती है जो व्यक्ति की इच्छा, रूचि, ज्ञान मूल्यों आदि पर निर्भर करती है। इसे मापना बेहद कठिन है। उदाहरण- घर में परिवार के सभी सदस्यों को भोजन में दाल,चावल, रोटी, सब्जी उपलब्ध करायी जाती है। परन्तु घर के कुछ सदस्यों को उपर्युक्त भोजन बेहद पसन्द आता है जबकी दूसरे सदस्यों को वहीं भोजन जरा-सा भी पसन्द नहीं आता है। इसी तरह किसी को ठंडा पेय पदार्थ पीने पर अधिक संतुष्टि मिलती हैं जबकी किसी को बिल्कुल भी ठंडे पेय पदार्थ पसन्द नहीं आता।

निकेल एवं डॉर्सी ने मानसिक आय के सम्बन्ध में अपने विचार कुछ इस तरह् से व्यक्त किये है-

मौद्रिक आय परिवार के अर्थोपार्जन क्षमता पर निर्भर करती है परन्तु वास्तविक एवं मानसिक आय दिन- प्रतिदिन के आयोजन, कुशलता, निपुणता एवं विवेकपूर्ण निर्णय पर निर्भर करती है।

5.3 पारिवारिक आय के स्त्रोत (Sources of Family Income)

परिवारिक आय के अनेक स्त्रोत है। इनमें से कुछ स्त्रोतों का संक्षिपत विवरण निम्नानुसार है-

1. वेतन (Salary)- जिन कार्यो को करने में मानसिक श्रम (Mental Labour) अधिक लगता है। उनके प्रतिफल के रूप में मिलने वाली आय को वेतन (Salary) कहते है। व्यक्ति की शिक्षा, कुशलता, क्षमता, योग्यता, पद, निपुणता, कार्य की प्रकृति, अनुभव, परिश्रम आदि पर वेतन निर्भर करता है। वेतन प्रतिमाह मुद्रा के रूप में मिलता है। व्यक्ति के पद योग्यता, श्रम, कार्यक्षमता आदि के अनुसार अन्य सुविधाएँ भी वेतन के साथ दी जाती है, जैसे- नि: शुल्क आवास, चिकित्सा, बच्चों की शिक्षा, वाहन सुविधा, ऋण सुविधा आदि। योग्यता, अनुभव, कुशलता आदि में वृद्धि होने से कई प्रकार के भत्ते भी दिये जाते है, जैसे- यात्रा भत्ता, मँहगाई भत्ता, प्रशिक्षण भत्ता आदि। नियमानुसार वर्ष में एक बार वेतन में वृद्धि की जाती है जिसे वार्षिक वेतन वृद्धि (Annual Increment) कहते है।

2.मजदूरी (Wages)-जिन कार्यो को करने में शारीरिक श्रम अधिक लगता है उसके प्रतिफल में प्राप्त होने वाली आय को मजदूरी (Wages) कहते है। अर्थशास्त्र में मजदूरी का व्यापक अर्थ है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार किसी भी प्रकार के श्रम को, चाहे वे शारीरिक हों या मानसिक, परिश्रम के बदले में जो भुगतान किया जाता है, मजदूरी कहलाता है। सामान्य बोलचाल की भाषा में, दफ्तर में काम करने वाले अधिकारियों,

कर्मचारियों की वेतन, कल-कारखानों, खेतों में काम करने वाले श्रमिकों को मजदूरी, चिकित्सक एवं वकीलों द्वारा ली गई राशि को फीस, लेखकों को प्राप्त होने वाली राशि रॉयल्टी, ऐजन्टों को दी जाने वाली राशि कमीशन कहलाती है। परन्तु अर्थशास्त्र में वेतन, फीस, कमीशन रॉयल्टी, बोनस ये सभी मजदूरी ही कहलाते है।

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने मजदूरी की भिन्न-भिन्न परिभाषा दी है। कुछ अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गई परिभाषा निम्नानुसार है-

मार्षल के शब्दों में-'' श्रम की सेवा के लिए दिया गया मूल्य मजदूरी है।''

बेन्हम के अनुसार -''मजदूरी मुद्रा की वह रकम है जो किसी प्रसंविदा के अन्तर्गत किसी नियोजक द्वारा किसी श्रमिक को उसकी अर्पित सेवाओं के बदले दी जाती है।

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने लगान की परिभाषा निम्नानुसार दी है-

मार्षल के मतानुसार-''वह आय जो भूमि तथा प्रकृति के अन्य नि:शुल्क उपहारों के स्वामित्व से प्राप्त होती है, लगान कहलाते है।''

डेविड रिकार्डो के शब्दों में- '' लगान भूमि की उपज का वह भाग है जो भूमिपति को भूमि की मौलिक तथा अविनाषी शक्तियों के प्रयोग के लिए दिया जाता है।''

थॉमस के अनुसार- ''लगान भूमि तथा अन्य प्रकृति प्रदत्त निश्चित उपहारों के स्वामित्व से प्राप्त होने वाली आय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।''

लगान के रूप में कितनी राशि मिलेगी यह जमीन की उपजाऊ शक्ति पर निर्भर करता है। जनसंख्या में वृद्धि, कृषि सुधार, यातायात के साधन आदि कारक भी लगान निर्धारित करने मे सहायक होते है। लगान का भुगतान मासिक, त्रैमासिक, छ:माही या वार्षिक किया जा सकता है। जब गृहस्वामी अपने मकान या उसके कुछ भाग को किसी दूसरे व्यक्ति को रहने के लिए देता है और वह व्यक्ति रहने के बदले में गृहस्वामी को जो

धनराशी देता है वह किराया कहलाता है। किराये के रूप में एक निश्चित धनराशी मालिक को प्रतिमाह दी जाती है।

3. ब्याज (Intterest)-सामान्य बोलभाषा की भाषा में, एक ऋणी द्वारा उधार ली गई मुद्रा के बदले ऋणदाता के द्वारा किया गया भुगतान " ब्याज कहलाता है और इसे वार्षिक दर के रूप में व्यक्त किया जाता है। परन्तु अर्थशास्त्र में ब्याज का व्यापक अर्थ है। अर्थशास्त्र के अनुसार-" आय का वह भाग जो पूँजी के प्रयोग के लिए पूँजीपूतियो को दिया जाता है, ब्याज कहलाता है।" प्रत्येक परिवार अपनी आय का कुछ हिस्सा भविश्य के लिए बचाता है तथा उसे बैंक, पोस्ट ऑफिस, इन्स्ट्रक्चरबॉण्ड आदि में विनियोग करता है। इसके फलस्वरूप उसे जो राशि मिलती है उसे ब्याज (Interest) कहते है। यथार्थ में ब्याज मूलधन के अतिखुला कुछ प्रतिदान है। यह परिवार की अतिखुला आय होती है।

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने ब्याज की भिन्न परिभाषाएँ दी है, जैसे-

मार्षल के अनुसार- " ब्याज किसी बाजार में पूँजी के प्रयोग की कीमत है।"

विक्सेल के अनुसार- "ब्याज वह भुगतान है, जो पूँजी की उत्पादकता के कारण ऋणों द्वारा पूँजीपति को उसके त्याग के प्रतिफल के रूप में दिया जाता है।" "

ब्याज की दर का निर्धारण पूँजी की माँग एवं पूर्ति पर निर्भर करता है। वर्तमान में ब्याज दर काफी कम हो गई है। ब्याज की दर में परिवर्तन होते रहते है, जिसके निम्नांकित कारण हो सकते है-

1- अभिवृद्धि काल में ब्याज की दर में वृद्धि होती है।
2- अवसाद काल में ब्याज की दर में कमी हो जाती है।
3- अल्पकालीन ऋण में ब्याज की दर कम परन्तु दीर्घकालीन ऋण में ब्याज की दर अधिक होती है।
4- युद्ध, आपातकाल आदि परिस्थितियों में ब्याज दर में वृद्धि होती है।
5- बैंकिग सुविधाएँ अधिक विकसित होने से ब्याज दर में कमी हो जाती है। परन्तु जहाँ बैंकिग सुविधाएँ अधिक विकसित नहीं है वहाँ

ब्याज की दर अपेक्षाकृत अधिक होती है। उदाहरण- ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिग सुविधाएँ नहीं होने से ऋणी साहूकारों व महाजनों से पैसे उधार लेता है। अत: वे ऋणियों से बहुत ऊँची दरों पर ब्याज वसूलते है।

4लाभ एवं लाभांश (Profit and Dividend) - सामान्य बातचीत में, आय के उस अधिकतम को लाभ कहते है जसे उत्पादन के खर्च को छोड़कर उद्यमी को प्राप्त होता है। यह वह मात्रा होती है जो उत्पादन की प्रक्रिया में प्रयोग की गई सब साधन सेवाओं का भुगतान करने के बाद व्यापारी के पास बचती है। उद्यमी या साहसी व्यक्ति किसी वस्तु के उत्पादन के लिए धन/पूँजी का विनियोग करता है। इसमें उसे जोखिम (Risk) उठानी पड़ती है। अत: उत्पादन के विभिन्न साधनों को उनका पुरस्कार चुकाने के बाद जो राशि शेश रह जाती है वह साहसी का पुरस्कार होती है, जिसे 'लाभ' (Profit) कहते है। इस प्रकार लाभ, 'अवषेश' (Residual) राशि होती है जो साहसी/उद्यमी को विभिन्न साधनों के संयोजित करने (Co-ordination) व जोखिम (Risk) उठाने के बदले में प्राप्त होती है।

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने लाभ को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है। इनमें से कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नानुसार है-

प्रो. मार्षल के शब्दों में- " लाभ प्रबन्ध की कमाई है।"

हॉले के अनुसार- " लाभ जोखिम उठाने का पुरस्कार है।" (Profit is rewared for risk taking.)

प्रो. नाईट के अनुसार- " लाभ अनिष्चिताओं के वहन करने का पुरस्कार है।" (Profit is rewared for uncertainty bearing.

विभिन्नउत्पादक कम्पनियों के हिस्सों पर प्राप्त होने वाली आय को लाभांष (Dividend) कहते है। इसमें लाभ दो प्रकार से मिलता है- 1. निश्चित लाभ, जैसे- कुल लाभ का 5%, 10%, 15% अथवा इससे अधिक, 2. कम्पनी को मिलने वाली लाभ की मात्रा के अनुसार कम अथवा अधिक।

5. बोनस (Bonus)-कुछ उद्योगों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों, कपड़ा मिलों, सरकारी कार्यालयों, गैर सरकारी संगठनों में कार्यरत कर्मचारियों को वेतन के अतिखुला एक निश्चित धनराशी वर्ष में एक या दो बाद दी जाती है, उसे बोनस कहते है। यह उनकी अतिखुला आय होती है। बोनस के रूप में कितनी राशि दी जाएगी यह कर्मचारी के वेतन तथा संस्थान के लाभ पर निर्भर करता है। सामान्यत: बोनस एक माह के वेतन के बराबर राशि दी जाती है।

6. रॉयल्टी (Royalty)-लेखक को पुस्तक लिखने के बदले में जो धनराशी प्रकाशक द्वारा दी जाती है। उसे रॉयल्टी कहते है। रॉयल्टी लेखक को पुस्तक की बिक्री के अनुसार दी जाती है। किसी लेखक को कितनी रॉयल्टी प्राप्त होगी, यह लेखक और प्रकाशक के आपसी समझौते एवं अनुबंध पत्र (Agreement Letter) से तय होती है।

7. पेंशन (Pension)-नौकरी से सेवानिवृत्ति के बाद कर्मचारियों की प्रतिमाह एक निश्चित धनराशी दी जाती है, उसे पेंषन कहते है। पेंषन की राशि कर्मचारी को सेवानिवृत्ति के समय मिल रही वेतन एवं कुल सेवा अवधि पर निर्भर करता है। सामान्यतया वेतन का 50% राशि कर्मचारियों को पेंषन के रूप में जीवनपर्यन्त मिलती रहती है। कर्मचारी की मृत्यु होने के बाद भी उसकी पत्नी एवं आश्रितों को भी नियमानुसार एक निश्चित राशि पेंषन के रूप में दी जाती है।

8. ग्रेच्युटी (Gratuity)-सेवानिवृत्ति के पश्चात कर्मचारियों को एक मुष्त राशि दी जाती है जिसे ग्रेच्युटी (Gratuity) कहते है। यह पेंषन की भांति प्रतिमाह नहीं दी जाती है। कर्मचारी के सेवाकाल में उसके वेतन में से प्रतिमाह कुछ राशि काटी जाती है तथा फण्ड में जमा करा दिया जाता है। यहीं राशि ब्याज सहित ग्रेच्युटी के रूप में कर्मचारियों को दी जाती है। गेच्युटी की राशि कर्मचारी के वेतन पर निर्भर करता है। वृद्धावस्था में ग्रेच्युटी एवं पेंषन आय का अच्छा साधन है।

9. उपहार (Gifts)-जन्मदिन, विवाह, मुंडन, त्यौहार आदि खुषी एवं मांगलिक अवसरों पर व्यक्ति को अपने मित्रों, रिष्तेदार, सगे-सम्बन्धियों

से जो वस्तुएँ अथवा धनराशी मिलती है उसे उपहार (Gifts) कहते है। यथार्थ में उपहार नियमित आय नहीं होती है क्योंकि उसे भी दूसरे व्यक्ति को समय-समय पर उपहार देना पड़ता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के नाते उसे सामाजिक नियमों, परम्पराओं, रीति-रिवाजों को निभाना पड़ता है तथा उपहारों का आदान-प्रदान करना पड़ता है।

10. लॉटरी (Lottery)-वर्तमान में लॉटरी भी आय का एक अच्छा साधन है परन्तु अनिश्चितता बहुत अधिक है। लॉटरी खुलने पर दरिद्र व्यक्ति भी धनवान बन जाता हैं आजकल राज्य सरकार एवं गैर-सरकारी संस्थाओं ने लॉटरी की योजना प्रारम्भ की है। परन्तु उसका दुश्प्रभाव समाज में अधिक देखने को मिलता है। लोग भाग्य पर आश्रित हो जाते है तथा कर्म की महत्ता कम हो जाती है। लॉटरी में टिकट बेची जाती है। टिकट बेचने वालों को कमीशन के रूप में राशि दी जाती है। खरीदने वाले व्यक्ति की लॉटरी खुल जाने पर पुरस्कार (Prize) के रूप में आय होती है।

11. बीमारी एवं दुर्घटना से प्राप्त राशि (Medical Aid and Death Relief) -औद्योगिक संस्थानों, फैक्टरियों, सरकारी, अर्द्ध-सरकारी, निजी संस्थानों, मिलों आदि में कार्यरत कर्मचारियों को बीमार पड़ने अथवा दुर्घटना होने पर इलाज हेतु आर्थिक सहायता भी उपलब्ध करवायी जाती है। कई संस्थानों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों, उद्योगों में उन्हीं के द्वारा संचालित निजी चिकित्सालय भी होते है जहाँ कर्मचारियों एवं उसके परिवार को नि: शुल्क चिकित्सा सेवा प्रदान की जाती है। ऐसे लाभों को मेडिकल/ उपचार सहायता कहा जाता है। इतना ही नहींेें, सेवाकाल के दौरान यदि किसी कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है तब उस संस्थान द्वारा उसकी पत्नी, बच्चे एवं आश्रितों को आर्थिक सहायता दी जाती है। पत्नी को पेंषन दिया जाता है। यदि परिवार में कोई दूसरा व्यक्ति नौकरी नहीं करता है तथा नौकरी करना चाहता है तब मृतक के स्थान पर उस व्यक्ति की शिक्षा एवं योग्यता के आधार पर नौकरी भी दी जाती है। बीमा कराने वाले व्यक्ति की मृत्यु अथवा दुर्घटना हो जाने पर आर्थिक सहायता देता है।

12. भत्ता (Allowances)-सरकारी, अर्द्ध-सरकारी, निजी संस्थानों, उद्योगों, फैक्टरियों, मिलों आदि में काम करने वाले कर्मचारियों एवं राजनीतिज्ञों को वेतन के अतिखुला कई प्रकार के भत्ते दिये जाते है जो उनकी अतिखुला आय होती है। जैसे- चिकित्सा भत्ता, आवास भत्ता, यात्रा भत्ता, मँहगाई भत्ता, प्रशिक्षण भत्ता आदि।

13. छात्रवृत्ति (Scholarship)-मेधावी छात्राओं को शिक्षा जारी रखने एवं शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा छात्रवृत्ति दी जातीहै। कई प्रतिश्ठित कम्पनियाँ, औद्योगिक संस्थान, निजी शिक्षा संस्थान भी शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु छात्रवृत्तियाँ देती है। नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार महिला प्रोत्साहन छात्रवृत्ति भी देती है। इसी तरह तकनीकी शिक्षा के विकास एवं प्रोत्साहन हेतु केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करती है।

5.4 परिवारिक आय को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Effecting Family Income)

परिवारिक आय को निर्धारिक करने वाले कारकों में से प्रमुख कारक निम्नानुसार है-

1. मुद्रा की क्रय शक्ति (Purchasing Power of Money)-मुद्रा की क्रय-विक्रय शक्ति पर ही क्रय की जाने वाली वस्तुओं की संख्या एवं मात्रा निर्भर करती है। जिस देश की मुद्रा शक्ति अधिक होती है वहाँ के वासियों का रहन-सहन का स्तर ऊँचा होता है। जब मुद्रा की क्रयशक्ति अधिक होती है तब उतनी ही मुद्रा (Money) में अधिक वस्तुएँ एवं सेवाएँ प्राप्त होगी। उदाहरण- यदि सोना (Gold) की कीमत 5,000 रूपये प्रति तोला है तो 20,000 रूपये में केवल 4 तोला ही सोना (Gold) खरीदा जा सकेगा। परन्तु यदि सोना का भाव 2,500 रूपये प्रति तोला है तब 20,000 रूपये में 8 तोला सोना खरीदा जा सकेगा। भारत में इस कारण वस्तुओं के दाम बढ़े है। मँहगाई का सीधा सम्बन्ध मुद्रा की क्रय-षक्ति से है।

2. वास्तविक आय की मात्रा (Amount of Real Income)- पारिवारिक आय को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक महत्वपूर्ण कारक है, वास्तविक आय की मात्रा। जिस परिवार की वास्तविक आय अधिक होती है, उनका रहन-सहन का स्तर ऊँचा होता है।

3. कुशल गृह प्रबन्ध (Skillful Home Management)-पारिवारिक आवश्यकताओं की अधिकतम संतुष्टि एवं रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए गृहिणी में कुशल प्रबन्धक का गुण होना चाहिए। अक्सर ऐसा देखा गया है कि दो समान आय अर्जित करने वाले परिवारों में एक परिवार का रहन-सहन का स्तर काफी ऊँचा होता है जबकी दूसरे परिवार का सामान्य अथवा सामान्य से भी नीचा रहता है। इसका मुख्य कारण गृहिणी द्वारा की गई घर की सुचारू व्यवस्था से है। कुशल गृहिणी अपने आय को काफी सोच-समझकर विवेकपूर्ण ढंग से खर्च करती है तथा उतने ही आय में परिवार के सदस्यों की अधिकतम आवश्यकताओं की संतुष्टि करती है। जबकी इसके ठीक विपरीत एक अकुशल एवं फुहड़ गृहिणी आय को बिना सोचे-समझे व्यय करती है। परिणामत: परिवार के रहन-सहन का स्तर निम्न रहता है। गृहिणी की कार्यकुशलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह श्रम एवं समय के महत्व को समझे। ।

4. परिवार का स्वरूप (Forms of Family)-संयुक्त परिवार में आय अधिक एवं व्यय कम होता है क्योंकि परिवार के सदस्य एक ही मकान में रहकर, एक ही रसोई का खाना खाकर आपस में मिल-जुलकर रहते है। अत: रसोई में होने वाले खर्च, अखबार, टेलीफोन, बिजली, पानी आदि के बिलों का भुगतान अलग-अलग नहीं करना पड़ता है। परिवार के बड़े-बुजुर्ग छोटे बच्चों की देखरेख कर लेते है। युवा सदस्य घर पर ही पढ़ाते है, अत: बालकों को ट्यूषन के लिए ट्यूटर रखने की जरूरत नहीं होती है। घर के सभी सदस्य मिल-जुलकर काम कर लेते है। परन्तु एकाकी परिवार में खर्चा अधिक आता है जबकी आय उतना ही रहता है।

5. परिवार की कुल आय (Total Income of Family) –परिवार के मुखिया एवं अन्य सदस्यों की आय पर पारिवारिक आय निर्भर करता है।

जिस परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या अधिक होती है। उनका रहन-सहन का स्तर ऊँचा होता है। गृहिणी यदि खाली समय में बागवानी करके सब्जी, फल, आदि उगाती है, घर पर सिलाई करके परिवार के सदस्यों को वस्त्र उपलब्ध कराती है तथा घरेलु कार्यो का सम्पादन स्वयं करती है तो वास्तविक आय में वृद्धि होती है क्योंकि इन्हें प्राप्त करने के लिए मौद्रिक आय में से व्यय नहीं करना पड़ता है तथा गृहिणी एवं परिवार के सदस्यों के श्रम से मौद्रिक आय की प्राप्ति हो जाती है।

6. वस्तुओं और सेवाओं का उचित उपयोग (Proper use of Article and Services)-दैनिक जीवन में प्रयोग आने वाली वस्तुओं, वस्त्रों, मषीनों, उपकरणों, बर्तनों आदि को सँभालकर रखा जाए तो उनकी जीवन क्षमता (Livability) में अतिशय वृद्धि हो जाती है। ये काफी समय तक टिकाऊ एवं उपयोगी बने रहते है तथा परिवार अनेक वर्शो तक इनका उपभोग कर सुख एवं आनन्द की प्राप्ति कर सकता है। वस्तुओं को उचित देखरेख, साज-सँभाल, संरक्षण करने से इनका जीवनकाल लम्बा हो जाता है।

7. सामुदायिक सेवाओं का उपयोग (Use of Community Services)- सामुदायिक सेवाओं का अधिकतम उपयोग कर व्यक्ति पारिवारिक आय में वृद्धि कर सकता है। सरकार जनता की भलाई के लिए कई सेवाएँ उपलब्ध कराती है, जैसे- पुस्तकालय, पार्क, बगीचा, पोस्ट आॅफिस, अस्पताल, विद्यालय, यातायात सुविधा, सड़क आदि। परिवार इन सेवाओं का लाभ उठाकर अपनी मौद्रिक आय को बचत कर सकता है, जैसे-सरकारी अस्पताल में जाकर चिकित्सक से इलाज करवाना, पुस्तकालय से पुस्तकें मँगाकर पढ़ना, बच्चों को सरकारी विद्यालय/महाविद्यालय में शिक्षाग्रहण हेतु भेजना, पत्राचार के लिए पोस्ट ऑफिस का उपयोग करना, मनोरंजन हेतु पार्क बगीचे का उपयोग करना आदि।

8. परिवार की भोगवादी प्रवृत्ति (Materialistic Tendency of Family)-पारिवारिक आय को प्रभावित करने वाले कारकों में से परिवार

की भोगवादी प्रवृत्ति भी एक महत्वपूर्ण कारक है। वह परिवार जो संसार के सभी सुखों, ऐष्वर्यो को भोगने में लगा हुआ है वह एन-केन-प्रकारेण धन जुटाना चाहता है। भले ही उनकी आय अर्जित करने का माध्यम अनुचित हो। परन्तु आध्यात्मिक प्रवृत्ति वाला परिवार कम वस्तुओं/सेवाओं के उपभोग से भी सुख एवं आनन्द की प्राप्ति करता है। वह श्रम द्वारा जो आय अर्जित करता है उससे संतुष्टि रहता है। उनकी आवश्यकताएँ भी कम होती है। अत: उपभोग प्रवृत्ति वाले परिवार की आय आध्यात्मिक परिवार वाले की अपेक्षा अधिक होते हुए भी कम होती है क्योंकि उनकी आवश्यकताएँ अधिक होता है वे उसे पूरा करने में जीवन लगा देते है फिर भी असंतुष्ट ही रहते हैं।

9. उपभोग का ढंग (pattern of Consumption)-पारिवारिक आय उपभोग करने के ढंग पर निर्भर करता है। वह परिवार जो वस्तुओं, उपकरणों, चीजों को सोच-समझकर खरीदता है, अच्छे तरीके से व्यवहार में लाने के उपरान्त धो-पोंछकर, सुखाकर, सँभालकर रखता है तो वे वस्तुएँ/उपकरण ज्यादा दिनों तक टिकाऊ बनी रहती है तथा परिवार उसका उपभोग लम्बे समय तक करता है। अत: वास्तविक आय में वृद्धि होती है।

10. परिवार के सदस्यों का योगदान (Contribution of Family Members)-परिवार के सदस्यों का योगदान भी पारिवारिक आय को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक प्रमुख कारक है। जिस परिवार में पति, पत्नी, बच्चे एवं अन्य सदस्य श्रम के महत्व को समझते है तथा घरेलु कार्यो में मदद करते है उनकी वास्तविक आय अधिक होती है। उदाहरण- पत्नी यदि घरेलु कार्यो को स्वयं करती है, जैसे- पोंछे लगाना, बर्तन धोना, कपड़े धोना एवं इस्तरी करना, भोजन पकाना आदि तो नौकरों पर होने वाले व्यय को रोका जा सकता है। इसी तरह पति या पत्नी के कामों में हाथ बँटाता है,

5.5 पारिवारिक आय में वृद्धि के सहायक साधन (Ways of pplementing Family Income)

आज का युग भौतिकवादी हैं। वहीं राश्ट्र सुखी, सम्पन्न, समृद्ध एवं शक्तिशाली कहलाता है जिसकी आर्थिक आय सुदृढ़ होती है। आर्थिक सम्पन्नता के लिए प्रयत्न करने पड़ते है। यह सर्वविदित है कि मनुष्य की इच्छाएँ एवं आवश्यकताएँ असीमित एवं अनन्त है जबकी आय सीमित होती है। सीमित आय मे ही पारिवारिक आवश्यकताओं की संतुष्टि करनी पड़ती है। रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए परिवार को आर्थिक रूप से सम्पन्न रहना आवश्यक हैं। इसके लिए अतिखुला आय की व्यवस्था गृहस्वामी को करनी पड़ती हैं। परिवार की आय को न्यूनता पूर्ति के निम्न साधन होते है-

1. गृह एवं लघु उद्योग धन्धे (Household and Small Scale Industries)-परिवार के वे सदस्य जो नौकरी नहीं करते है वे गृह एवं लघु उद्योग धन्धों को विकसित कर पारिवारिक आय में वृद्धि कर सकते है। ग्रामीण क्षेत्र में कुटीर एवं लघु उद्योग धन्धों का सर्वाधिक महत्व है। कृषक परिवार सुगमता से कुटीर एवं लघु उद्योग धन्धे स्थापित कर सकता है क्योंकि सालों भर कृषि का कार्य नहीं किया जाता। भारतीय कृषक वर्ष के 6 माह ही खेतों का काम करते है और शेश 6 माह बेकार बैठे रहते हैं। इस अवधि में वे कुटीर उद्योग-धन्धे विकसित कर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं

2. समय का मितव्ययितापूर्ण उपयोग (Economic Use of Time)- पारिवारिक आय में वृद्धि के लिए समय का मितव्ययितापूर्ण उपयोग एवं उचित विभाजन आवश्यक है। हम सभी जानते है “ समय ही धन है (Time is money) । समय बेषकीमती एवं मूल्यमान है, जो समय बीत जाता है वह कदापि लौटकर नहीं आता। जैसा कि एक अंग्रेजी कहावत है- “Time and Tides waits for none.” कामकाजी महिलाओं के लिए समय का उचित विभाजन एवं मितव्ययितापूर्ण उपयोग करना बेहद जरूरी है। उन्हें घर एवं बाहर दोनों ही जगहों के कार्यो में सामंजस्य स्थापित करना आवश्यक है तभी वे सफलतापूर्वक बिना थके कार्यो को सम्पन्न कर सकती हैं तथा स्वयं के विश्राम एवं मनोरंजन के लिए समय बचा सकती है।

3. धन का मितव्यय (Economy of money)-आर्थिक सुदृढ़ता एवं रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए जितना महत्व आय की वृद्धि का है उससे कहीं बहुत अधिक महत्व धन का मितव्ययितापूर्ण व्यय से है। सोच-समझकर विवेकपूर्ण ढंग से खर्च करने से परिवार की अधिकतम आवश्यकताओं की संतुष्टि की जा सकती है। अक्सर ऐसा देखा गया है कि दो समान आय वाले परिवार में रहन-सहन के स्तर में काफी भिन्नता है। एक परिवार जो सोच-समझकर विवेकपूर्ण निर्णय लेकर, बजट बनाकर नियोजित तरीके से खर्च करता है उसका रहन-सहन का स्तर ऊँचा होता है।

4. खाद्य पदार्थो का संरक्षण एवं भण्डारण (Preservation and Storage of Food)- मौसम में, फसल उत्पादन के समय खाद्य पदार्थ सस्ते रहते है। ये बाजार में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहते है। कुशल गृहिणी फसल उत्पादन के समय ही खाद्य पदार्थो का क्रय कर वर्ष भर के लिए संरक्षित कर लेती है। इससे काफी बचत होती है तथा परिवार की वास्तविक आय में वृद्धि होती है, जैसे- अनाजों, दालों, मसालों, तेल आदि का भण्डारण करना। अप्रेल-मई में गेहूँ, जौ, दलहन एवं तिलहन सस्ते होते है। इनका भण्डारण ग्रीश्म ऋतु में किया जाना चाहिए। इस तरह शीत ऋतु में चावल सस्ता मिलता है। सर्दियों में टमाटर सस्ता मिलता है।

5. धन का उचित विनियोग (proper Investment of money) – प्रत्येक परिवार अपनी आय का कुछ हिस्सा भविश्य के लिए (दुर्घटना, मकान, दुकान, शादी) अवश्य ही बचाकर रखता है। इस बचत की गई राशि का उचित विनियोग (Investment) करने से आय में वृद्धि होती है। बचत की गई राशि को बैंक/पोस्टऑफिस/ जीवन बीमा/इन्स्ट्रक्चर बॉण्ड आदि में लगा सकता है। किसान विकास पत्र (K.V.P.), राष्ट्रिय बचत पत्र, (NSC) , इन्दिरा विकास पत्र (I.V.P.) आदि में नियोजित कर सकता है। इससे ब्याज या लाभांष के रूप में अतिखुला धन प्राप्त हो जाता है। धन के विनियोग का विस्तृत विवरण “ बचत एवं विनियोग” वाले इकाई में किया गया है।

6. श्रम एवं समय बचत के साधनों का प्रयोग (Use of Labour & time Saving Devices)-

श्रम एवं समय बचत के उपकरणों , साधनों का उपयोग कर गृहिणी अपनी आय में वृद्धि कर सकती है। इन उपकरणों की सहायता से कार्य जल्दी निपट जाता है। आधुनिक समय में, वैज्ञानिकों ने अपने अथक प्रयासों से ऐसे-ऐसे उपकरण बनाये है जिनके प्रयोग से काम सरलता से सम्पन्न हो जाता है, जैसे- गैस चूल्हा, स्टोव, वैक्यूम क्लीनर, प्रेशर कुकर, मिक्सर, गीजर, बीज, वाशिंग मशीन, विद्युत प्रेस आदि। महिलाएँ इन उपकरणों की सहायता से गृहकार्यो को समय से निपटाकर अतिखुला आय अर्जित करने में समय का सदुपयोग कर सकती है।

7. बागवानी करना (Kitchen Gardening)-घर के पास, पिछवाड़े में अथवा आँगन आदि में खाली पड़ी कच्ची भूमि का उपयोग कर अतिखुला आय में वृद्धि की जा सकती है। शहरी मकानों में तो कच्ची जमीन की कमी होती है परन्तु गाँवों में घर के आस-पास खाली जमीन यों ही बेकार पड़ी रहती है। इनमें बैंगन, फूलगोभी, पालक, बथुआ, मिर्च, पत्तागोभी, मेथी, चौलाई, लॉकी, तरोई, सेम, कद्दू आदि सब्जियाँ उगायी जा सकती है।

8. गृहिणी का कुशल प्रबन्धन (Skillfull Management of Housewife)-गृहिणी यदि सोच-समझकर विवेकपूर्ण ढंग से व्यय करती है तथा गृहकार्यो का कुशलतापूर्वक संचालन करती है तब पारिवारिक आय में वृद्धि होती है। गृहिणी को सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आय अर्जित करने से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण उनका उचित व्यय से है। आय से ज्यादा व्यय नहीं हो। क्योंकि व्यय अधिक होने से ऋण लेना पड़ता है तथा ऋण को ब्याज सहित चुकाना पड़ता है। जब कोई परिवार ऋण के चंगुल में फँस जाता है तो उससे आसानी से छूट भी नहीं सकता। कारण स्पष्ट है परिवार की आय सीमित होती है। ऋण लेने के बाद परिवार की वास्तविक आय में कमी होती जाती है जबकी आवश्यकताएँ पहले की ही भाँति होती है। ऐसी दषा में परिवार आर्थिक संकट से घिर जाता है जिसके कारण उसकी दिन-रात की सुख-चैन छिन जाती है।

9. बजट बनाना (Budgeting)-गृहिणी को पारिवारिक बजट तैयार करने का पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए ताकि आय के अनुसार ही व्यय किया जा सके। बिना बजट बनाये आय-व्यय (Income-Expenditure) का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता है। इसके विपरीत कभी- कभी आय से ज्यादा व्यय हो जाता है। यदि किसी कारणवष किसी माह व्यय अधिक होता है तो दूसरे माह में बजट को नियंत्रित करके आय-व्यय में सन्तुलन बैठा लेना चाहिए ताकि परिवार ऋण के चुंगल में नहीं फँसे।

10. रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठाने का प्रयत्न करना (Try to Increase Stanmdard of Living)-कुशल गृहिणी कम आय में भी परिवार के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा बनाये रख सकती है क्योंकि आय अर्जित करने से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण सोच-समझकर उन्हें व्यय करने से है। सामान्यत: लोगों में यह भ्रम है कि अधिक आय अर्जित करने वाले परिवार का ही रहन-सहन का स्तर ऊँचा होता है। परन्तु यह मिथ्यापूर्ण धारणाएँ है। सत्य यह है कि धन के समुचित व्यय से परिवार का जीवन एवं रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठाये जा सकता है। ।

पारिवारिक आय : मात्र एक नजर में
(Family Income : At a Glance)

विशेषताएँ
- राष्ट्रीय आय
- परिवार के सदस्यों की शिक्षा, योग्यता, श्रमशीलता
- शिक्षा
- व्यवसाय
- पारिवारिक जीवन चक्र
- तकनीकी एवं औद्योगिक विकास
- अनुकूल प्राकृतिक परिस्थितियाँ
- राष्ट्रीय आय का असमान वितरण

प्रकार
- *मौद्रिक*
- *वास्तविक*
  - *प्रत्यक्ष*
  - *अप्रत्यक्ष*
- *मानसिक*

स्रोत
- छात्रवृत्ति
- वेतन
- मजदूरी
  - कार्यानुसार
  - समयानुसार
- लगान एवं किराया
- ब्याज
- भत्ता
- लाभ एवं लाभांश
- बोनस
- रॉयल्टी
- पेंशन
- ग्रेच्युटी
- उपहार
- लॉटरी

प्रभावित करने वाले कारक
- मुद्रा की क्रय शक्ति
- कुशल गृह प्रबन्ध
- परिवार की कुल आय
- सामुदायिक सेवाओं का उपयोग
- उपयोग का ढंग
- परिवार का स्वरूप
- वास्तविक आय की मात्रा
- वस्तुओं और सेवाओं का उचित उपयोग
- परिवार की भोगवादी प्रकृति
- परिवार के सदस्यों का योगदान

वृद्धि के सहायक साधन
- गृह एवं लघु उद्योग धंधे
- समय का मितव्ययितापूर्ण उपयोग
- धन का मितव्यय
- खाद्य पदार्थों का संरक्षण एवं भण्डारण
- धन का उचित विनियोग
- श्रम एवं बचत के साधनों का प्रयोग
- बागवानी करना
- गृहिणी का कुशल प्रबन्धन
- बजट बनाना
- रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयत्न

5.6 सारांश

रहन सहन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए आय का प्रबंध करना अत्यंत जरूरी है क्योंकि परिवार का स्थर ऊँचा उठाने के लिए आय की जरूरत होती है घरेलू वस्तुओ से लेकर घर में सभी वस्तुए को खरीदना आय बिना सम्भव नहीं है आय परिवार की ऐसी स्रोत है जिसके माध्यम से परिवार के सभी आवश्यक वस्तुओ को प्रबंध कर सकते है

5.7 अभ्यास प्रश्न

1.आय के अर्थ को समझाइये ?

2.आय को परिभाषित कीजिये ?

3.आय के विभिन्न स्त्रोतों के बारे में जानकारी दीजिए ?

4.आय को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का वर्णन कीजिये ?

5.7 संदर्भ ग्रन्थ

1. गृह व्यवस्था है। गृह सज्जा बी.के. बख्शी साहित्य प्रकाशन आगरा

2. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा डा. वृंदा सिंह पंचशील प्रकाशन जयपुर

3. गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा डा. रीना खनुजा

4. Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"

5. Nickel Dorsey M & Sons New york "Managment in Family

इकाई - 6

घरेलू उपकरण
(Household Equipments)

6.0 उद्देश्य
6.1 प्रस्तावना
6.2 उपकरणों की उपयोगिता
6.3 प्रेशर कूकर
6.4 गैस स्टोव
6.5 तेल का स्टोव
6.6 विद्युत हीटर
6.7 विद्युत टोस्टर
6.8 विद्युत ओवन
6.9 रेफ्रिजरेटर
6.10 कुकिंग रेंज
6.11 सोलर कुकर
6.12 एग बिटर
6.13 ज्यूसर मिक्सर
6.14 कूलर
6.15 पानी गर्म करने का संयत्र
6.16 वैक्यूम क्लीनर
6.17 माइक्रोवेव
6.18 सारांश
6.19 अभ्यास प्रश्न
6.20 संदर्भ ग्रंथ

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी-

- घरेलू उपकरणों की उपयोगिता के बारे में जानकारी प्राप्त कर पाएंगे।
- घरेलू उपकरणों की क्रिया विधि के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- घरेलू उपकरणों के रखरखाव के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

घरेलू कार्यों को सरल, सुगम व आसान बनाने में समय-शक्ति बचत के उपकरणों का अमूल्य योगदान है। इन उपकरणों में अद्‌भुत शक्ति एवं विलक्षण क्षमता होती है जो कठिन-से-कठिन एवं जटिल कार्यों को भी कुछ ही मिनटों में सम्पन्न कर देते है। रेफ्रजरेटर, वाशिंग मशीन, मिक्सर, विद्युत इस्तरी, टोस्टर, गैस चूल्हा, प्रेशर कूकर आदि ऐसे ही समय शक्ति बचत के उपकरण है। इन उपकरणों के कारण गृहिणी का काम आज काफी आसान हो गया है। ये उपकरण गृहिणी के संग एक कर्मठ सहयोगी की तरह कार्य करते है। अत: गृहणी घरेलू कार्यों को सम्पन्न करने के साथ ही बाहर के कार्यों को भी बिना थके, प्रसन्नतापूर्वक सम्पन्न कर लेती है। यथार्थ में, समय-शक्ति बचत के उपकरण गृहिणी के अभिन्न अंग बन चुके है। यदि रसोईघर में गैस चूल्हा, प्रेशर कूकर, मिक्सर-ग्राइन्डर नहीं हो तो भोजन पकाना एक सजा की तरह महसूस होता है। गृहिणी थक कर चूर हो जाती है। इसका अनुभव वे गृहिणियाँ सहजता से कर सकती हैं जिनका प्रेशर कूकर, गैस चूल्हा या मिक्सर एक-दो दिनों के लिए खराब हो गया हो। अत: आज “समय-शक्ति बचत के उपकरण विलासिता की वस्तु नहीं मानी जाती बल्कि सुविधाजनक अनिवार्य आवश्यक आवश्यकता बन चुकी है। क्योंकि ये काम को आसान बनाती है तथा गृहिणी को थकने से बचाती हैं।”

समय-शक्ति बचत के उपकरणों की लोकप्रियता एवं बढ़ती मांग का कारण है, “आज का बदलता परिवेष व महिलाओं का घर-बाहर दोनों ही क्षेत्रों में बढ़-चढ़कर भाग लेना।” आज महिलाओं का कार्य क्षेत्र केवल घरेलू कार्यों

एवं रसोईघर तक ही सीमित नहीं रह गया है बल्कि इनका कार्य क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया है। वे हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है तथा अपनी क्षमता, निपुणता एवं कौशल का उत्कृश्ट परिचय दे रही है। चाहे वे क्षेत्र राजनैतिक हों या सामाजिक, आर्थिक हों या वैज्ञानिक, कला हो या धार्मिक। पुलिस जैसे चुनौतीपूर्ण कार्यों में भी वे आगे बढ़कर उत्तरदायित्वों को सँभाल रही है। मगर नारीत्व स्वभाव के कारण व परिवार कल्याण की भावनाओं को मन में लिए वे आज भी रसोईघर से उसी आत्मीयता से जुडी हुई हैं। खाना पकाने का काम स्वयं अपने हाथों से करना चाहती हैं। ऐसी स्थिति में, स्वयं शक्ति बचत के उपकरणों ने कार्यों को अत्यन्त ही सुविधाजनक एवं आसान बना दिया है। अब वे कम-से-कम समय-शक्ति व्यय किये गृह कार्यों को सम्पन्न कर बाहरी कार्यों को भी पूर्ण क्षमता से निपटाती है। गृहकार्य अब नीरस, उबाऊ थकाने वाला तथा वस्त्रों को अस्त-व्यस्त करने वाला नहीं रह गया है। अपितु कई कार्य तो ऐसे है जिन्हे करने में आनन्द की अनुभूति होती है, जैसे - मिक्सर से दाल, चावल, मसाला, चटनी आदि पीसना, वाशिंग मशीन से वस्त्र धोना आदि।

पाश्चात्य देशों में तो समय-शक्ति उपकरणों का उपयोग काफी समय से हो रहा है। परन्तु भारत जैसे विकासशील देशों में, अभी इनकी माँग उतनी नहीं बढ़ी है जिसका मुख्य कारण है-

(1) उपकरणों का महँगा होना,

(2) गृहिणी को समय-शक्ति बचत के उपकरणों के बारें में पर्याप्त जानकारी का अभाव,

(3) अशिक्षा,

6.2 उपकरणों की उपयोगिता (Utility of Equipments)

(1) कार्य क्षमता में वृद्धि करना (To Increase in Work Efficiency) -समय-शक्ति बचत के उपकरणों से न केवल गृहिणी का समय एवं ऊर्जा की बचत होती है बल्कि ये उनकी कार्य क्षमता एवं कौशल में भी अतिशय वृद्धि कर देते है। विशेषकर रसोई का कार्य तो बेहद

सुविधाजनक एवं आसान हो जाता है। गृहिणी को थकान का अनुभव नहीं होता। वह बचे हुए समय एवं शक्ति का उपयोग अन्य कार्यों को करने में कर सकती है। उदाहरण सील-'पार्टी पर मसाला पीसने में काफी समय एवं शक्ति व्यय होता है। मसाला भी उतना महीन नहीं पीस पाता है। साथ ही वस्त्र पर दाग-धब्बे भी लग जाते है। जबकी इसी कार्य को मिक्सर मात्र कुछ ही मिनटों में सम्पन्न कर देता है तथा मसाला भी काफी महीन पीसता है।

(2) गुणवत्ता में सुधार (Improve in Quality) -समय-शक्ति बचत के उपकरण कार्य की गुणवत्ता में गुणात्मक रूप से सुधार लाते है। उदाहरणार्थ - प्रेशर कूकर में पका हुआ भोजन पौष्टिक एवं स्वादिष्ट होता है। इसमें पोषक तत्त्वों का कम-से-कम नाश होता है जबकी भगोना या कड़ाही मे पका हुआ भोजन उतना अधिक पौष्टिक नहीं होता है। इसी तरह वैक्यूम क्लीनर घर के कोने कोने की सफाई कर देता है। दरी, कालीन से धूल झाड़कर चमका, साफ कर देता है जबकी हाथों से सफाई करना बेहद कष्टप्रद कार्य है।

(3) समय एवं शक्ति की बचत करना (Saving of Time and Energy) -समय-शक्ति बचत के उपकरणों के प्रयोग से काफी समय एवं ऊर्जा की बचत होती है। ये उपकरण तो कामकाजी महिलाओं के लिए तो वरदान सिद्ध हुए है। कामकाजी महिलाओं के पास सदैव ही समयाभाव होता है।ऐसी स्थिति में, इन उपकरणों की सहासता से वे अपने घरेलू कार्यों की पूरी कुशलता व दक्षता से सम्पन्न कर लेती है। गैस चूल्हा, प्रेशर कूकर, टोस्टर, सैंडविच मेकर, रेफ्रीजरेटर, विद्युत इस्तरी, ओवन, कुकिंग रेंज, वाशिंग मशीन ऐसे ही आदि समय-शक्ति बचत के उपकरण है।

भगौने में दाल अथवा माँस पकाने में काफी समय एवं ईंधन व्यय होता है जबकी प्रेशर कूकर कम समय एवं ईंधन में इसे अच्छी तरह से पका देता है। इसी तरह हाथ से वस्त्र धोने पर गृहिणी का बहुत अधिक समय एवं ऊर्जा व्यय होती है। गृहिणी जल्दी थक जाती है। परन्तु वाशिंग मशीन से वस्त्र धोना अत्यन्त ही सहज एवं सरल कार्य है। गृहिणी को कोई थकान नहीं होती है। फलत: गृहिणी अपनी ऊर्जा एवं समय को घर के अन्य कार्यों को सम्पन्न करने अथवा मनोरजंन करने में व्यय कर सकती है।

(4) कार्य सरल बनाना (To Simplify Work) - घर में अनेक ऐसे कार्य है जिन्हे सम्पादन करने में काफी झंझटों का सामना करना पड़ता है। घरेलू उपकरण इन कार्यों को सरल, सुगम व आसान बना देते है। उदाहरण - अँगीठी पर या लकड़ी का चूल्हा जलाकर, दाल रोटी पकाना एक झंझटपूर्ण कार्य है जबकी गैस चूल्हा एवं प्रेशर कूकर की सहायता से इसे आसानी से किया जा सकता है।

(5) उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति (To Obtain Good Health) - जैसा कि हम सभी इस बात से अवगत है कि लकड़ी, अँगीठी, कोयला, कंडा अथवा कुनी-भूसी पर खाना बनाना कितना कष्टसाध्य कार्य है। खाना बनाते समय इनसे काफी मात्रा में धुँआ निकलता है जो गृहिणी के फेफड़े, आँखें आदि पर बुरा एवं हानिकारक प्रभाव डालता है। धुँए के कारण जल्दी ही उनकी आँखें खराब हो जाती है। खाँसी, अस्थमा, क्षयरोग एवं साँस की अन्य बीमारी हो जाती है। 30-35 वर्ष की युवती 50-55 वर्ष की वृद्धा की तरह दिखने लगती है। इतना ही नहीं, सील-पाटी पर चटनी, मसाला, दाल आदि पीसना भी काफी थकाने वाला व उबाऊ कार्य है। इसमें सबसे अधिक समय व शक्ति व्यय होता है। परिणामत: गृहिणी थककर चूर हो जाती है। समय-शक्ति के बचत के उपकरणों ने इन्हे थकाने से बचाया है। साथ ही परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य भी सुधरा है।

(6) पारिवारिक वातावरण में खुशी का माहौल (Happy Family Environment) - पहले जिन कार्यों को केवल महिलाएँ ही कर पाती थीं, आज उन्ही कार्यों को पुरुष भी कर लेते है और उनके इस कार्य में योगदान दिया है- समय-शक्ति बचत के उपकरणों ने। उदाहरणार्थ- गैस चूल्हा पर दूध उबालना, चाय बनाना, प्रेशर कूकर में आलू उबालना, मिक्सर में चटनी व दाल आदि पीसना। इनके कार्यों कों पुरुष द्वारा सम्पादित कर लेने से गृहिणी का कार्य भार थोड़ा हल्का हो जाता है तथा उसे सुख, आनन्द एवं संतोष की अनुभूति होती है। इन्ही कार्यों को लकड़ी के चूल्हों पर किया जाना सम्भव नहीं है।

यह सर्वविदित है कि परिवार की सुख, शान्ति गृहिणी पर निर्भर करती है। वही पारिवारिक वातावरण में शहद जैसा मिठास घोलकर घर को आनन्दमयी बना सकती है। परन्तु जब वही थकी-हारी रहेगी, निराश-

उदास रहेगी, बीमार-अशांत रहेगी, क्रोधी-चिड़चिड़ी रहेगी तब पारिवारिक वातावरण में उल्लास एवं प्रसन्नता का प्रश्न ही नहीं उठता।

(7) अधिक समय की बचत (More Time Saving) - समय-शक्ति बचत के उपकरण की सहायता से कार्यों को कम-से-कम समय में निपटाया जाता है जिससे काफी समय की बचत होती है। गृहिणी इस बचे हुए समय का उपयोग पढ़ने-लिखने, बच्चों को पढ़ाने-लिखाने, उनकी बेहतर परवरिश करने अथवा घर के अन्य कार्यों को सम्पन्न करने में कर सकती है। वे घर से बाहर जाकर अर्थोपार्जन का भी काम कर सकती है। यदि महिला की रूचि सामाजिक/धार्मिक कार्यों में है तो वे उन गोष्ठियों में भाग ले सकती है।

समय-शक्ति बचत के मुख्य उपकरण है - प्रेशर कूकर, रेफ्रीजरेटर, गैस चूल्हा, मिक्सर, ओवन, ग्राइन्डर, सोलर इस्तरी, टोस्टर, ओवन, वाशिंग मशीन, माइक्रोवेव, वाटर हीटर, वैक्यूम क्लीनर आदि ।

6.3 प्रेशर कूकर (Pressure Cooker)

प्रेशर कूकर ने रसोई के कार्यो को बहुत ही आसान एवं सुविधाजनक बना दिया है। खुले बर्तन (भगीनाए तसला, कड़ाही, सॉस पैन) में पकाने की तुलना में प्रेशर कूकर में भोजन पकाने से औसतन *53%*कम समय व्यय होता है तथा 55% ईंधन की बचत होती है। प्रेशर कूकर में भोजन उच्च दबाव एवं उच्च तापक्रम (121˚C) पर पकता है। अत: कम समय, शक्ति एवं ईंधन व्यय होता है।

प्रेशर कूकर विभिन्न प्रकार के होते है, जैसे - हॉकिन्स, प्रेस्टीज, यूनाइटेड आदि। सभी कूकरों में भोजन भाप द्वारा ही पकता है।

सिद्धान्त (Principle) - प्रेशर कूकर का क्रियात्मक सिद्धान्त अत्यन्त ही सरल है। इसमें भोजन भाप के दबाव से पकता है। जब ताप द्वारा भाप उत्पन्न की जाती है तो उसे (भाप की) कूकर के अन्दर भली प्रकार से बन्द कर दी जाती है जिसके फलस्वरूप् कूकर के अन्दर का दबाव वायुमण्डलीय दबाव से अधिक हो जाता है। कूकर को ढक्कन एवं रबर गैस्केट की सहायता से कसकर बन्द कर दिया जाता है जिससे भाप बाहर नहीं निकल पाती है। कूकर के अन्दर का दबाव जैसे-जैसे बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे पकाने के

तापक्रम में भी वृद्धि होती जाती है। सामान्य तौर पर पानी *100˚C*तापक्रम में खोलने लगता है परन्तु प्रेशर कूकर में पानी का तापक्रम *121˚ C* तापक्रम पर खैलता है। इस कारण भोजन पकने की क्रिया शीघ्रता से सम्पन्न होने लगती है। परिणामत: भोजन कम समय में पककर तैयार हो जाता है।

सरल शब्दों में, "उच्च दबाव एवं उच्च तापक्रम पर भोजन पकाना ही प्रेशर कूकर का मुख्य सिद्धान्त है।"

बनावट (Structure) - प्रेशर कूकर के मुख्य भाग निम्नांकित है-

(1) मुख्य भाग या बॉडी (Main Part or Body) - कूकर का मुख्य भाग भगौनेनुमा होता है। यह एल्युमिनियम, स्टील अथवा मिश्रित धातु का बना होता है। कई कूकर के पेंदे में ताँबे की तली लगा होता है। कूकर के ऊपर वाले हिस्से में विद्युत रोधी वस्तु सामान्यत: बैकेलाइट (Bakelite) का हैंडिल (Handle) लगा होता है। इसी के साथ एल्युमिनियम या स्टील का सहायक हत्था भी लगा होता है जो कूकर को पकड़कर उतारने-चढ़ाने में सहयोग करता है।

(2) ढक्कन (Lid) - कूकर का मुख्य भाग **(Body)** जिस धातु का बना होता है, ढक्कन भी उसी धातु का होता है। यह प्रेशर कूकर का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण भाग होता है। ढक्कन में भी बैकेलाइट का हैंडिल लगा रहता है। ढक्कन एवं भगौने के हैंडिल को एक सीध में मिलाकर ढक्कन को हैंडिल में लगे लोहे/स्टील के क्लीप की सहायता से फँसा दिया जाता है जिससे ढक्कन कूकर में भली-भाँति फिट हो जाता है।

ढक्कन की बनावट इस भाँति होती है कि कूकर को अच्छी तरह से भीतर से अथवा बाहर से कसकर बन्द कर देती है। ढक्कन के अन्दर या बाहर रबर का एक गोल छल्लाजिसे गैस्केट कहते है, की लगाने की भी व्यवस्था रहती है।

ढक्कन में ही ऊपर की ओर एक सुरक्षा वॉल्व (Saftey Valve) लगा होता है जिससे भाप नियंत्रित होता है। ढक्कन के मध्य में एक वेन्ट ट्यूब (Vent Tube) होती है। इसी के ऊपर वेन्ट वेट (Vent Weight) रखा जाता है।

(3) वेन्ट ट्यूब (Vent Tube) - इसे निकास नली कहते है। यह कूकर के ढक्कन के मध्य भाग में स्थित होता है। इसका मुख्य कार्य कूकर के भीतर

निश्चित मात्रा से अधिक बनी हुई भाप को बिना दबाव कम किये बाहर निकालना होता है।

जब कूकर में भोजन पकने हेतु चढ़ाया जाता है तब बॉडी में भाप बनना आरम्भ हो जाता है। धीरे-धीरे भाप का दबाव बढ़ता जाता है और अपने जब निश्चित परिणाम से अधिक हो जाता है तब वेन्ट वेट स्वत: ही ऊपर की ओर उठ जाता है तथा अतिखुला भाप वेट ट्यूब से बाहर की ओर निकल जाती है। जब कूकर के अन्दर भाप का दबाव अपने निश्चित तल पर लौट आता है तब वेट वेट पुन: अपनी पूर्वास्थिति में लौट आता है। इस प्रकार भोजन पकाते समय अन्दर का दबाव नियत बना रहता है।

(4) सुरक्षा वॉल्व (Saftey Valve) - सुरक्षा वॉल्व कूकर का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण भाग है। यह ढक्कन के ऊपर की ओर एक ऐसा धातु के मिश्रण से बना होता है जो एक पूर्व निर्धारित तापक्रम पर स्वत: ही पिघल जाता है तथा कूकर को फटने से रोकता है व एक बड़ी दुर्घटना को टालता है। ऐसा तब होता है जब वेन्ट ट्यूब में अन्न कण या विम पाउडर के फँस जाने से इसका मार्ग अवरूद्ध हो जाता है। जब कूकर में खाना पकाने हेतु बहुत ही कम मात्रा में पानी का प्रयोग किया जाता है तब भी वे पिघलकर नष्ट हो जाते है । इस प्रकार यह कूकर फटने जैसी दुर्घटना से सुरक्षा करता है।

(5) रबर गैस्केट (Rubber Gasket) - प्रेशर ककूर को भली-भाँति बन्द करने के लिए इसके ढक्कन के अन्दर या बाहर रबर गैस्केट लगाने की व्यवस्था होती है। यह गैस्केट एक विशेष प्रकार के रबर का बना होता है जो उच्च तापक्रम पर भी नहीं गलता है और न ही विकृत ही होता है। गैस्केट लगाने से प्रेशर कूकर में दबाव शीघ्र बनने लगता है तथा भाप बाहर की ओर नहीं निकल पाता है।

यूनाइटेड एवं हॉकिन्स प्रेशर कूकर में रबर गैस्केट बाहर की ओर तथा प्रेस्टीज में अन्दर की ओर लगता है।

(6) वेट वेट (Vent Weight) -वेन्ट ट्यूब के ऊपर दबाव को नियंत्रित करने के लिए वेट वेट रखा जाता है। यह वाष्प को 5, 10, 15 पौण्ड दबाव पर नियंत्रित कर सकता है।

(7) जाली (Grid) - प्रेशर कूकर में अन्दर रखने के लिए तश्तरी के आकार के जैसी एक धातु की पतली गोल जाली होती है। इसमें कई बड़े-बड़े छिद्र

होते है जिनसे होकर वाश्प गुजरता है और भोजन के पात्र को गर्म करता है। कूकर के अन्दर भोजन के डिब्बे (Food Container) रखने से पूर्व इस जाली को उलटकर रख देते है तथा आवश्यकतानुसार पानी डाल देते है ताकि भाप आसानी से बन सके। इसका उपयोग तब तक किया जाता है जब कूकर में एक साथ ही एक से अधिक व्यंजन बनाने होते है।

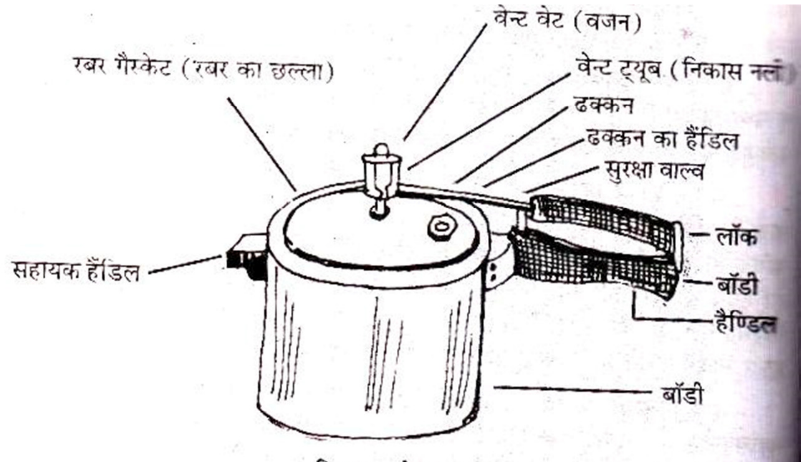

चित्र-A : प्रेशर कूकर

चित्र-B : रबर गैस्केट

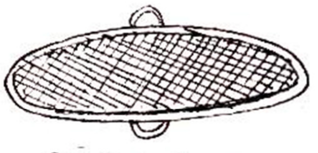

चित्र-C : जालीदार ढक्कन

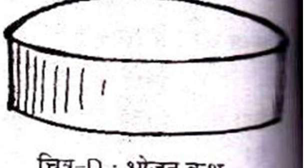

चित्र-D : भोजन कक्ष

(8) भोजन पकाने के डिब्बे (Food Container) - एक बड़े कूकर में एक साथ दो-तीन व्यंजन बनाये जा सकते है। इसके लिए भोजन पकाने के डिब्बों का इस्तेमाल किया जाता है। डिब्बे एल्युमिनियम अथवा स्टेनलेंस स्टील के बने होते है। इनकी बनावट एवं रचना इस तरह की होती है कि कूकर में ये भली-भाँति फिट हो जायें।

भोजन पकाने के डिब्बे विभिन्न आकार एवं माप के होते है, जैसे- गोल, अर्द्धचन्द्राकार, आयताकार आदि।

(9) हैंडिल (Handle) - कूकर में हैंडिल बेकेलाइट के बने होते है। पेंचदार छडों की सहायता से इस हैंडिल का एक भाग कूकर के ढक्कन से तथा दूसरा भाग भगौने के ऊपर की ओर इस तरह से लगा रहता है कि ढक्कन को बन्द करने के बाद ये दोनों एक-दूसरे पर आकर भली-भाँति टिक जाते है तथा एक ही हैंडिल होने का आभास कराते है।

कूकर को उपयोग में लेते समय बरते जानी वाली सावधानियाँ (Precautions to be Taken while

(Using Pressure Cooker) -प्रेशर कूकर से काम करते समय कुछ विशेष सावधानियों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है ताकि कूकर फटने व जलने जैसी दुर्घटना नहीं हो। साथ ही कूकर अपनी सेवायें उपभोक्ता को लम्बे समय तक देकर उसकी संतुष्टि कर सके। ये सावधानियाँ हैं-

(1) कूकर में कभी भी 2/3 भाग से अधिक भोजन पकाने हेतु नहीं रखें।

(2) गर्म कूकर को हैंडिल की सहायता से सावधानीपूर्वक उठायें अन्यथा जलने का डर रहता है।

(3) कूकर में इतना पानी जरूर डालें ताकि भोजन पककर नरम हो जायें। कम पानी होने पर सुंरक्षा वॉल्व के गलकर फट जाने का डर रहता है। साथ ही भोजन भी कूकर की तली में जल जाता है।

(4) बिना पानी के भोजन साम्रगी पकने हेतु नहीं चढ़ायें।

(5) जब कूकर में 2-3 भोजन साम्रगी एक साथ ही पकायी जानी हो तब यह ध्यान अवश्य रखें कि इन सभी पकने का समय लगभग समान हों यदि एक भोज्य साम्रगी जल्दी पकता है तथा दूसरा बहुत देर से, तब इसे अलग-अलग पकायें। क्योंकि एक भोजन तो पककर गल जायेगा जबकी दूसरा सही ढ़ग से पक भी नहीं सकेगा। अत: भोजन अरूचिकर एवं स्वादहीन हो जायेगा।

(6) कूकर में ढक्कन लगाते समय यह जरूर देख लें कि उसमें रबर गैस्केट ठीक प्रकार से लगा है या नहीं। यदि नहीं तो ठीक ये लगा लें। अन्यथा भाप बाहर निकलने लगेगा व भोजन देर से पकेगा।

(7) वेन्ट ट्यूब को सदैव स्वच्छ रखें।
(8) वेट ट्यूब (Vent Tube) के ऊपर वेट वेट जरूर रखें। अन्यथा वेट ट्यूब से भाप निकलता रहेगा और कूकर के अन्दर उच्च दबाव नहीं बन सकेगा।
(9) यदि कूकर में दाल, चावल, सब्जी तीनों ही एक साथ भोजन पकाने के कक्ष में रखकर पकानी है तब दाल नीचे वाले बर्तन में, सब्जी बीच वाले में तथा चावल सबसे ऊपर वाले बर्तन में पकायी जानी चाहिए।
(10) भोजन पकाये जाने का समय समाप्त होते ही कूकर को आँच पर से उतारकर ठंडा होने के लिए छोड दे।
(11) कभी भी कूकर के ढक्कन को जल्दीबाजी में नहीं खोलें। क्योंकि तीव्र भाप निकलती है जो मुँह की त्वचा को जला सकती है। यदि खोलने की जल्दी हो तब इसे ठंडे पानी में रखें इससे इसके भीतर का भाप का दबाव कम हो जायेगा और कूकर का ढक्कन खुल जायेगा। ठंडे पानी का धार बना कर भी ढक्कन के ऊपर डाला जा सकता है। ऐसा करने से भी ढक्कन ज्लदी खुल जाता है।
(12) सेफ्टी वॉल्व फट जाने/गल जाने पर तुरन्त बदलें।
(13) रबर गैस्केट यदि ढीला हो गया हो तो उसी कम्पनी का रबर गैस्केट लगायें।

6.4 गैस स्टोव (Gas Stove)

वैज्ञानिक अविष्कारों का चमत्कार है 'गैस स्टोव'। यह सरलता, कम खर्चीला, आसानी एवं सुगमता से प्रयुक्त होने वाला एक अति महत्वपूर्ण समय-शक्ति बचत का उपकरण है। अब तक जितने भी चूल्हे है उनमें से श्रेष्ट है 'गैस का चूल्हा' या 'गैस स्टोव'। इसमें अत्यन्त ही कम ईंधन खपत होता है। गैस सिलिन्डर से गैस रबर की नली के माध्यम से बर्नर में पहुँचता है और गैस नीली लौ के साथ जलने लगती है। इस चूल्हे में ताप (Heat) को इच्छानुसार कम-अधिक-मध्यम कर सकते है। चूल्हे में ही ताप नियंत्रक (Heat Regulator) का नॉब (Knob) लगा रहता है। गैस स्टोव को जलाना एवं बुझाना अत्यन्त ही सरल कार्य है। इस चूल्हे की सबसे बड़ी विशेषता है कि कालिख नहीं निकलता है। अत: पकाये जाने वाले बर्तन

काले नहीं होते और सदैव चमकते हुए नये जैसे दिखते है। साथ ही बर्तन को माँजना-धोना, साफ-सफाई करना भी आसान है

सिद्धान्त(Princple) - गैस चूल्हे में उपयोग किये जाने वाले ईंधन 'द्रवीभूत पेट्रोलियम गैस' (Liquified Petroleum Gas, LPG) होता है। रासायनिक दृष्टिकोण से LPG संतृप्त हाइड्रोकार्बन होता है। ये हाइड्रोकार्बन चार प्रकार के होते है- (1) मिथेन, (2) इथेन, (3) प्रोपेन, तथा (4) ब्यूटेन।

ये सभी गैस रूप में होते है तथा रंगहीन, गंधहीन एवं तीव्र ज्वलनषील वाले होते है। ये वायु में मिलकर जलते है और ऊष्मा (Heat) देते है। इन गैसों को अत्यधिक उच्च दबाव पर ठंडा किया जाता है। जिसके कारण ये द्रवीभूत हो जाते है। इन द्रवीभूत गैस को लाहे/इस्पात के मोटे चदरों वाले सिलिन्डरों में भर दिया जाता है। सिलिन्डर में रेगुलेटर फिट होता है। इस रेगुलेटर में स्वीच होता है। सिलिन्डर में रबर की नली लगाने की व्यवस्था रहती है। जिसका एक छोटा रेगुलेटर से तथा दूसरा छोर गैस स्टोव के गैस मेनीफोल्ड से जुडा रहता है। जब रेगुलेटर के स्वीच को खोला जाता है तब दबाव कम हो जाता है तथा यह द्रवीभूत पेट्रोलियम गैस वाष्प में बदल जाता है और रबर की नली के माध्यम से चूल्हे के बर्नर तक पहुँचता है और माचिस जलाने पर जल उठता है।

प्राकृतिक गैस पेट्रोलियम उद्योग से प्राप्त होती है तथा इसका मुख्य घटक मीथेन गैस होता है। यह गैस खदानों (Mines) से भी प्राप्त किया जाता है। कभी-कभी खदानों में अधिक मात्रा में मीथेन गैस निकलती है जिसके कारण आग लग जाती है। ऐसी दुर्घटनाएँ अक्सर खदानों में होती रहती है।

गैस स्टोव के भाग (Parts of Gas Stove) - गैस स्टोव का वर्णन यदि सम्पूर्ण इकाई को ध्यान में रखकर करें तो इसके मुख्य तीन भाग होते है-

(1) गैस चूल्हा (Gas Chulha) -गैस स्टोव को गैस चूल्हा भी कहते है। यह इसका लोकप्रिय नाम है।

(2) गैस सिलिन्डर (Gas Cylinder) - यह लोहे का बना हुआ बोतल नुमा सिलिन्डर होता है। इसी में द्रवीभूत पेट्रोलियम गैस भरा रहता है। यही गैस चूल्हे में जलता है।

(3) गैस रेगुलेटर (Gas Regulator) -यह अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह सिलिन्डर से निकलने वाले गैस को नियंत्रित करता है।

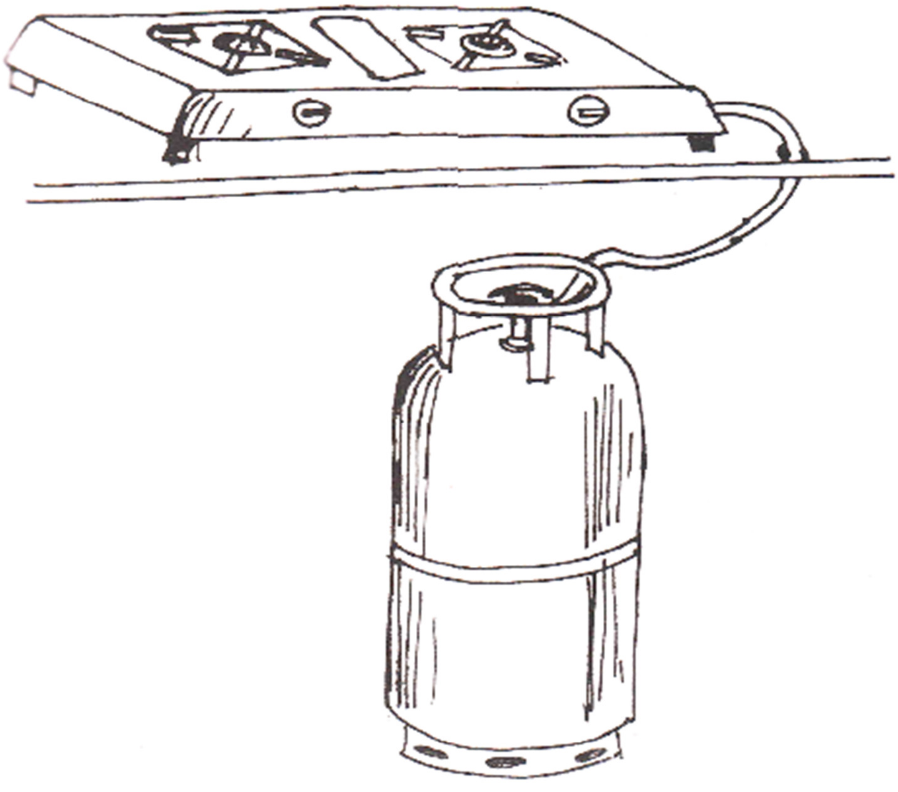

चित्र : गैस स्टोव

अब हम गैस स्टोव का विस्तार से वर्णन करेंगे।

(1) गैस चूल्हा (Gas Chula) - गैस चूल्हा के मुख्य भाग है-

(i) ढाँचा या बॉडी (Frame or Body) -यह इस्पात की चादर की बनी एक आधारीय सरंचना होती है जिसे ढाँचा या बॉडी कहते है। इसके बाहरी सतह पर एनामेल पेन्ट अथवा क्रोमियम पॉलिश की बनी होती है। इसी कारण यह देखने में स्टेनलेस स्टील की भाँति सुन्दर, चमकदार व चिकना लगता है। इसकी साफ-सफाई करना आसान होता है। गैस चूल्हे में ही ऊपर की ओर बर्नर लगे होते है जिनकी संख्या चूल्हे के आकार पर निर्भर करता है। सामान्यत: दैनिक प्रयोग में दो बर्नर वाले गैस चूल्हे अधिक लोकप्रिय है। गैस चूल्हे के नीचे की ओर गैस नियंत्रक घुंडी (Knob) लगी होती है। इससे बर्नर में आँच (Flame) को कम/अधिक/मध्यम किया

जाता है। गैस चूल्हे के एक बगल से लोहे की खोखली नली जैसी संरचना होती है जिससे रबर की मोटी नली सिलिन्डर से आकर जुड़ती है ।

(ii) गैस नियंत्रक नॉब या घुंडी (Gas Regulator or Knob) -बर्नर में गैस नियंत्रित मात्रा में प्रवाहित हो सके इसके लिए बर्नर के नीचे घुंडी/नॉब (Knob) लगे होते है जिसे गैस नियंत्रक घुंडी कहते है।यह एक छोटे से हैंडिल एवं स्विच से जुड़ा होता है। नॉब कठोर प्लास्टिक का बना होता होता है।इसे दबाते हुए घुमाकर खोला जाता है जिससे गैस बर्नर तक पहुँचता है। नॉब के पास ही Low, Medium तथा High अंकित रहता है जो यह दर्शाता है कि नॉब को किस स्थिति में रखने पर कितनी मात्रा में गैस बर्नर में पहुँचेगा, जैसे-

(a) ऑफ स्थिति में बर्नर में गैस प्रवाह बन्द हो जाएगा।
(b) ऑन/हाई (High) स्थिति में सबसे अधिक गैस बर्नर में पहुँचेगा।
(c) Low स्थिति में सबसे कम गैस बर्नर में पहुँचेगा।
इस प्रकार नॉब को घुमाकर ताप को आसानी से नियंत्रित किया जा सकेगा।

(iii) बर्नर (Burner) -इसे 'ज्वालक' भी कहते है। गैस स्टोव के जिस अंग में गैस जलती है उसे बर्नर कहते है। गैस चूल्हा में एक, दो, तीन या चार बर्न्नर भी हो सकते है। जिस बर्नर को जलाना चाहते है उसी बर्नर के नीचे की नॉब को दबाकर, घुमाकर खोलना पड़ता है। अलग-अलग बर्नर में अलग-अलग नॉब होते है। बर्नर ढलवा लोहे का बना होता है। इसकी संरचना निम्नानुसार है-

(a) बर्नर हैड (Burner Head) - बर्नर के सबसे ऊपरी भाग का चौड़ा हिस्सा बर्नर हैड कहलाता है। यहीं पर गैस जलता है। बर्नर हैड में अनेक छोटे-छोटे छिद्र होते है जिसे पोटर्स कहतें है। इन्हीं से होकर गैस निकलती है। छिद्र बर्नर हैड में भीतरी एवं बाहरी दोनों ओर एक गोलाकार आकार में बने होते है।

(b) मिक्सर ट्यूब (Mixer Tube) - बर्नर हैड के नीचे वाले चौड़े भाग को मिक्सर ट्यूब कहते है। इसी हिस्से में गैस जलने से पूर्व वह अच्छी तरह

हवा के साथ मिश्रित हो जाती है और गैस नीली लौ के साथ जलने लगती है। सदि इस हिस्से में गैस हवा के साथ ठीक प्रकार से मिश्रित नहीं हो पाती है तब वह विस्फोट के साथ फड़-फड़ करके जलती है और थोड़ी ही देर में बुझ जाती है।

(c) गैस ओरोफिस (Gas Orific) -गैस वॉल्व से जुड़ी नली में एक छोटा सा छिद्र होता है जिससे होकर गैस बर्नर में पहुँचती है। इस छिद्र को ही गैस ओरीफिस (Gas Orific) कहते है।

(iv) एयर शटर (Air Shutter) - यह गैस ओरीफिस के ऊपर की ओर स्थित एक छोटा-सा खुला भाग होता है। इस खुले भाग को ढँकने के लिए ढक्कन या शटर का उपयोग किया जाता है। यहाँ से हवा अन्दर पहुँचती है और गैस के साथ मिश्रित होकर उसे बर्नर हैड में जलने में मदद करती है।

(v) गैस मैनीफोल्ड (Gas Manifold) - गैस स्टोव की बॉडी के सामने के पैनल पर पीछे की ओर लोहे की बनी एक खोखली मजबूत नली होती है। इस नली से रबर की नली (Supply Tube) का एक सिरा जुड़ा रहता है। दूसरा सिरा सिलिन्ड़र के रेगुलेटर से जुड़ा रहता है। इसी नली से गैस बर्नरों में पहुँचता है।

(2) गैस सिलिन्डर (Gas Cylinder) -यह इस्पात की मोटी चादरों से बनी हुई काफी मजबूत एवं भारी टंकी होती है। इसका आकार एक बोतल से मिलता जुलता है। इसमें पेट्रोलियम गैस (LPG) भरा रहता है। इसलिए इसे 'गैस सिलिन्डर' (Gas Cylinder) कहते है। इसके मुँह पर एक छोटा व पतला सा पीतल का बना हुआ वॉल्व जैसी रचना होती है। इस वॉल्व में एक पिन होता है। इसी वॉल्व पर रेगुलेटर फिट किया जाता है। रेगुलेटर के कठोर प्लास्टिक के स्विच को घुमाने से वॉल्व की पिन दबती है और सिलिन्डर से गैस निकलकर ट्यूब से होते हुए बर्नरों तक पहुँचता है।

(3) गैस रेगुलेटर (Gas Regulator) - गैस रेगुलेटर गैस सिलिन्डर का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं प्रमुख भाग है। इसी से गैस नियंत्रित मात्रा में धीरे-धीरे गैस सिलिन्डर से निकलता है।

गैस सिलिन्डर धातु का बना हुआ होता है। इसमें कठोर रबर का एक स्विच होता है। जिसे खोलकर (ON) या बंद कर (OFF) सिलिन्डर द्वारा निकलने वाली गैस को नियंत्रित किया जाता है। जब रेगुलेटर के स्विच को ऑन किया जाता है तो रेगुलेटर से गैस प्रवाहित होकर रबर की नली से होते हुए बर्नर में पहुँचती है। रेगुलेटर ऑफ होने से सिलिन्डर से गैस नहीं निकलती है। रेगुलेटर खराब होने पर अथवा इसके ठीक प्रकार से काम नहीं करने पर तुरन्त बदलवा देना चाहिए। अन्यथा विस्फोट के साथ आग लगने एवं सिलिन्डर फटने का ड़र रहता है।

6.5 तेल का स्टोव (Oil Stove)

जिन स्थानों पर गैस की आपूर्ति सम्भव नहीं है, वहाँ पर तेल स्टोव खाना पकाने हेतु उत्तम स्थान है। ये स्टोव सस्ते एवं हल्के होते है। इन्हे एक स्थान से दूसरे स्थान तक सुगमता से लाये-ले-जायें जा सकता है। इसलिए इसका उपयोग कही पर भी किया जा सकता है।

6.6 विद्युत हीटर (Electric Heater)

इसे 'विद्युत सिगड़ी' भी कहते है। भोजन पकाने का यह सबसे सरल, स्वच्छ एवं सुविधाजनक उपकरण है। परन्तु इसका उपयोग वहीं किया जा सकता है जहाँ विद्युत उपलब्ध हों। साथ ही आज की बढ़ती महँगाई में, बिजली काफी महँगी हो गई है। इसलिए विद्युत हीटर से खाना पकाना बुद्धिमानी नहीं है। अत: इसका उपयोग रसोईघर में भोजन पकाने हेतु नहीं किया जाना चाहिए। थोड़ी सी लापरवाही से 'बिजली का झटका' (Current) लगने का भी भय रहता है।

बनावट - विद्युत हीटर में निम्न भाग होते है-

(1) बॉडी (Body) - यह टिन प्लेट का बना होता है व विभिन्न आकारों/आकृतियों में मिलता है।

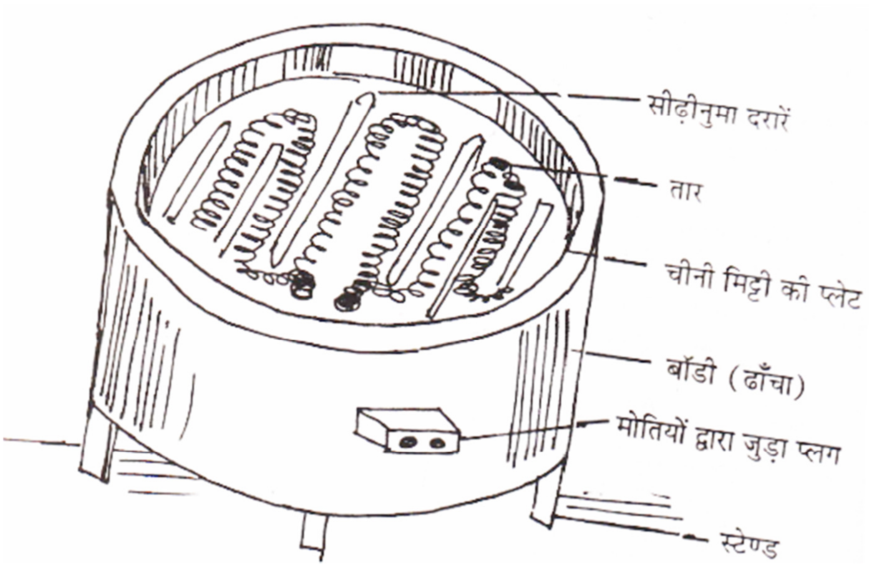

चित्र : विद्युत हीटर

(2) चीनी मिट्टी की प्लेट (China Clay Plate) - चीनी मिट्टी की बनी यह प्लेट विद्युत का कुचालक होती है। इसी के ऊपरी भाग में स्प्रिंगदार तार लगाने हेतु घुमावदार सीढ़ीनुमा दरारें बनी रहती है जिसमें धातु का तार (Metal's Wire) को फिर किया जाता है।

(3) धातु का तार/एलीमेन्ट (Metal's Wire or Element) - यह मिश्रित धातु का बना हुआ एक स्प्रिंगदार तार होता है। निकल, क्रोमियम, लोहे एवं मैगनीज के विभिन्न अनुपातों में मिलाकर इस तार को बनाया जातर है। इनकी ताप क्षमता (Heating Capacity) बहुत अधिक होती है। उच्च तापक्रम पर भी इनका ऑक्सीकरण नहीं होता। इसे चीनी मिट्टी की प्लेट में बनी घुमावदार नालीनुमा दरारों में अच्छी तरह से फँसाकर बैठा दिया जाता है। जितना अधिक ताप चाहिए उसी के अनुसार ताप की मोटाई रखी जाती है।

(4) इन्सुलेटर (Insulator) - धातु के तार के सिरों को प्लग पिन से जोड़ दिया जाता है। प्लग पिन हीटर के ही ढाँचे में ही लगा रहता है। इसे दो अलग-अलग तारों द्वारा विद्युत कुचालक के मध्य जोड़ा जाता है।

(5) जालीदार प्लेट - यह प्लेट हीटर के ढाँचे के ठीक ऊपर रहती है तथा बर्तन के तार के सीधे सम्पर्क में आने से रोकती है। इस प्रकार यह कंरट लगने से रोकता है।

(6) स्टैण्ड/पाँव (Stand/Leg) - हीटर जमीन से थोड़ी ऊपर रहें, इसलिए लोहे के तीन स्टैण्ड बने रहते है।

प्रयोग करने की विधि (Methods to Use) - हीटर के डोरीनुमे में तीन पिन (Connecting Plug) का सम्बन्ध Main Current से Socket में डालकर करवा देते है। तत्पश्चात स्विच ऑन कर देते हैं। विद्युत प्रवाहित होते ही धातु का तार गर्म होकर ऊष्मा देने लगता है।

6.7 विद्युत टोस्टर (Electric Toaster)

समय-शक्ति बचत के उपकरणों में विद्युत टोस्टर का विशिष्ट स्थान है। यह रसोईघर की शान व जान है। इसका उपयोग *डबल रोटी* (Bread) के स्लाइसों को सेंकने में किया जाता है। कई परिवारों में सुबह का नाश्ता सिंका हुआ ब्रेड, जैम या मक्खन के साथ लिया जाता है। अत: यह रसोईघर का एक आवश्यक उपकरण है। इससे काफी समय एवंशक्ति की बचत होती है।

सिद्धान्त (Principle) -जैसा कि हम जानते है, विद्युत का एक कार्य 'ऊष्मा उत्पादन' (Heat Production) करना भी है। ऊष्मा उत्पन्न करने वाले उपकरणों में (टोस्टर) बिजली के तार से प्रवाहित की गई अधिकांश विद्युत शक्ति में परिवर्तित हो जाती है। इसी ऊष्मा शक्ति के कारण ब्रेड का स्लाइस सेंका जाता है। गर्म होने वाला तार अभ्रक (Mica) की पन्नी पर लगा होता है। यह विद्युत प्रवाह द्वारा गर्म होता है। टोस्टर के बीच में और दोनों दीवारों पर यह तार अच्छी तरह से व्यवस्थित होते है ताकि एक साथ ही ब्रेड के स्लाइस सेंके जा सकें।

टोस्टर के प्रकार (Types of Toaster) - टोस्टर मुख्यत: दो प्रकार के होते है-

(1) स्वचालित टोस्टर (Automatic Toaster)

(2) अस्वचालित टोस्टर (Non-Automatic Toaster)

(1) स्वचालित टोस्टर(Automatic Toaster) - इस प्रकार के टोस्टर में सामान्य पुर्जे के अतिखुला समय सूचना स्विच तथा समय चक्र को नियंत्रित करने वाला रंग रेगुलेटर (Colour Regulator) लगा होता है। इसमें डबल रोटी को कितनी देर तक सेंकना हैं, इस पर नियत्रंण हेतु

ताप एवं समय के आधार पर बने रेगुलेटर होते है। इसमें एक थर्मोस्टेट लगा होता है जिस पर 1,2,3 लिखा रहता है। ब्रेड को इन्ही आधारों पर सेंका जाता है। ब्रेड के स्लाइस सेंक जाने के बाद विद्युत प्रवाह रूक जाता है तथा ब्रेड के स्लाइस स्वत: ही बाहर आ जाते है।
स्वचालित टोस्टरों को भी इनके आकार के आधार पर इन्हें तीन प्रकारों में बाँटा जा सकता है-

(1) कूप के आकार का टोस्टर - ब्रेड सेंकने का यह सबसे लोकप्रिय एवं प्रचलित टोस्टर है। इसमें स्लाइस वाहक ऊष्मा वाले तत्त्वों के सम्पर्क में आने से सुरक्षा करने वाले तार लगे होते है। साथ ही इसमें खोल, आधार एवं ब्रेड के बुरादे की ट्रे (Tray) भी सम्मिलित होती है।

(2) भट्टी के आकार का टोस्टर -से सस्ते उपकरण है। इनका उपयोग ब्रेड के हल्के सेंक के लिए किया जाता है। इसमें बन्स (Buns) एवं रोल्स (Rolls) भी गर्म किये जा सकते है। इसमें बाहर निकलने वाली ट्रे भी होती है।

(3) कूप तथा भभट्टी के आकार का टोस्टर - इस प्रकार के टोस्टर में निम्न तान का विभाग होता है। इस विभाग में बनस्, केक, रोल्स आदि सेंके जा सकते है। इसका ऊपरी भाग ब्रेड सेंकने के लिए होता है। जब ब्रेड सिक जाता है तब यह स्वत: ही निम्न विभाग में स्थानान्तरित हो जाता है जहाँ वह काफी समय तक गर्म रहता है। जब स्लाइस खूब अच्छी तरह से सिक जाती है तब टोस्टर का दरवाजा स्वत: ही खुल जाता है और सींका हुआ ब्रेड स्लाइस के साथ ट्रे से बाहर आ जाता है।

प्रयोग की विधि (Methods to Use) -स्वचालित टोस्टर में ब्रेड के स्लाइसों को अनेक विधियों से रखा जा सकता हैं। फिर डोरीनुमा तीन पिन प्लग सॉकेट में लगाकर बटन ऑन कर दिया जाता है।

थर्मोस्टेट (Thermostate) द्वारा ताप नियंत्रित किया जाता है। ब्रेड सिक जाने के बाद प्रकाश एवं घंटी के संकेत के साथ ही बाहर निकल आता है और बिना किसी ध्वनि के संकेत के नीचे चला जाता है और फिर दूसरी ओर अच्छी तरह से सिकने के बाद बाहर आ जाता है।

(2) अस्वचालित टोस्टर (Non-Automatic Toaster) - अस्वचालित टोस्टर भी बिजली के द्वारा संचालित होता है। परन्तु इसमें ब्रेड सेंकने के पश्चात हाथ से बाहर निकालने का काम किया जाता है। इसमें समय संकेतक स्विच, रंग नियंत्रक एवं थर्मोस्टेट नहीं लगे रहते है। अत: गृहिणी को स्वत: ही ध्यान रखना पड़ता है कि स्लाइस सिका है या नहीं। एक तरफ स्लाइस सिक जाने के बाद दूसरी तरफ उसे सेंकना पड़ता है।

प्रयोग की विधि (Methods to Use) - टोस्टर को खोलकर उसमें ब्रेड अन्दर रखी जाती है फिर उसे बन्द कर दिया जाता है। जब ब्रेड एक तरफ से सिक जाता है, तो उसे हाथ से निकालकर दूसरी तरफ सेंकने हेतु रखा जाता है। दोनों तरफ से सिक जाने के पश्चात हाथ से ही बाहर निकाल लिया जाता है।

(3) अर्द्ध-स्वचालित टोस्टर (Semi-Automatic Toaster) - यह टोस्टर स्वचालित एवं अस्वचालित इन दोनों के बीच का होता है। यद्यपि इसमें स्लाइस के रंग को नियंत्रित करने वाले रंग नियंत्रक नहीं होता है। इस कारण ब्रेड सिकने के उपरान्त यह स्वत: ही बाहर नहीं आ पाता है। इसे निकालने के लिए बटन दबाना होता है फिर स्लाइस को दूसरी तरफ पलटकर सेंका जाता है।

टोस्टर के भाग (Parts of Toaster)

1. बॉडी (Body) - यह टोस्टर का मुख्य भाग होता है। यह लोहे एवं जस्ते का बना होता है।

इस पर क्रोमियम एवं जंगरहित इस्पात की परत चढ़ी होती है। एक बार में कितनी ब्रेड की स्लाइस सेंकी जायेंगी यह इसके आकार पर निर्भर करता है।

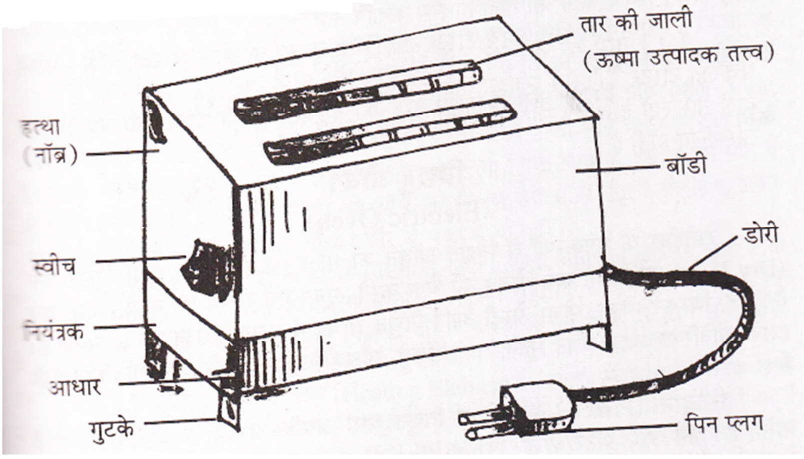

चित्र : विद्युत टोस्टर

(2) आधार (Base) -टोस्टर का निचला भाग आधार कहलाता हैं। यह विद्युत कुचालक पदार्थ का बना होता है। टोस्टर को प्रयोग में लेने के बाद इसी भाग को खोलकर सफाई की जाती है।

(3) नॉब (Knob) -नॉब विद्युत अवरोधक पदार्थ के बने होते है। इसका उपयोग टोस्टर खोलने के लिए किया जाता है।

(4) ऊष्मा उत्पादक तत्त्व (Heat Element) -ऊष्मा उत्पादक तत्त्व में अभ्रक (Mica) तथा एस्बेस्टर की चद्दर लगी रहती है जिसके चारों तरफ जस्ते/नाइक्रोम का तार लिपटा रहता है। माइका एवं एस्बेस्टर की चद्दर ऊष्मा एवं विद्युत का कुचालक होता है।

(5) विद्युत का तार एवं प्लग (Electric Wire and Plug) - टोस्टर में डोरीनुमा विद्युत का तार लगा होता है तथा इसी तार से तीन पिन प्लग (Three Pin Plug) जुडा रहता है।

(6) नियंत्रक (Regulator) -स्वचालित टोस्टर में रंग नियंत्रक होता है जो टोस्टर के सिक जाने पर इसकी सूचना दे देता है। फलत: विद्युत स्वत: ही बन्द हो जाता है।

(7) स्विच (Switch) - इनके दबाने से टोस्टर बन्द होता एवं खुलता है। ब्रेड का सिका हुआ स्लाइस बाहर निकलता है। अन्य स्वचालित कार्य होते है।

6.8 विद्युत ओवन (Electric Oven)

रसोईघर के उपकरणों में विद्युत ओवन का भी प्रमुख स्थान है। इसमें 'सूखे ताप' (Dry Heat) का प्रयोग कर भोजन को बेक करने, भूनने अथवा सेंकने का कार्य किया जाता है। ब्रेड, बिस्कुट, केक, पिजा, पेस्ट्री आदि विद्युत ओवन में आसानी से बनायें जा सकते है। इसके अतिखुला आलू, बैंगन भूनने, बाटी सेंकने, माँस रोस्ट करने आदि कार्य भी किया जाता है।

सिद्धान्त (Principle) -ओवन विद्युत धारा उष्मीय प्रभाव के आधार पर कार्य करता है। जब उच्च प्रतिरोध तार (High Resistant Wire) से विद्युत धारा प्रवाहित की जाती है तो ऊष्मा (Heat) उत्पन्न होती है। यही ऊष्मा भोज्य पदार्थों को भूनने, बेक करने, सेंकने आदि के काम आता है। इस प्रकार ओवन में, उत्पन्न होने वाली ऊष्मा चालक की लम्बाई व विद्युत धारा की मात्रा के समानुपाती होती है जबकी चालक अनुप्रस्थ काट के क्षेत्रफल के व्युत्क्रमानुपाती होती है।

इसी सिद्धान्त पर विद्युत ओवन काम करता है। ऊष्मा उत्पन्न करने के लिए नाइक्रोम (Nichrome) के बहुत लम्बे एवं पतले तार को कुंडलीनुमा रूप में लगाया जाता है। जब इसमें विद्युत धारा (Current) प्रवाहित किया जाता है तो उच्च प्रतिरोध के कारण बहुत अधिक मात्रा में ऊष्मा निकलता है जिससे भोजन भूनता, सिकता या बेक होता है।

6.9 रेफ्रीजरेटर (Refrigerator)

रेफ्रीजरेटर समय शक्ति बचत का एक अति महत्वपूर्ण उपकरण है। यह वैज्ञानिक अविष्कारों एवं उनके अथक परिश्रम की अनूठी देन है जिससे गृहिणी के कार्यों को अत्यन्त ही सुगम एवं आसान बना दिया है। वर्तमान में रेफ्रीजरेटर रसोईघर का एक अत्यावश्यक उपकरण बन गया है तथा प्रत्येक परिवार की जान। ठंडा पानी की जरूरत हो या आइसक्रीम खाने की, रेफ्रीजरेटर उसमें मददगार साबित होता है। गृहिणी के लिए यह वरदान सिद्ध हुआ है। रेफ्रीजरेटर का छोटा, संक्षिप्त एवं लोकप्रिय नाम *'फ्रीज'* (Fridge) है। इसमें खाद्य पदार्थों, दवाईयों को लम्बे समय तक सुरक्षित रूप से संगृहीत करके रखा जाता है। सब्जी, फल, अण्डा, दूध, ठंडा पानी, पका हुआ भोजन, दही गूँथा हुआ आटा आदि को सुरक्षित रूप से संगृहीत करने के लिए रेफ्रीजरेटर क उपयोग किया जाता है। रेफ्रीजरेटर

में तापमान को वातावरण के तापमान से अत्यन्त कम कर दिया जाता है जिसके फलस्वरूप खाद्य पदार्थ सड़ने नहीं पाते है।

सिद्धान्त (Principle) - रेफ्रीजरेटर का अन्दर का तापमान विद्युत यंत्र द्वारा काफी निम्न कर दिया जाता है। रेफ्रीजरेटर में *शीत* (Cold) उत्पन्न करने के लिए जिस सिद्धान्त का उपयोग किया जाता है, वह है - “वाष्पीकरण से ठंडक उत्पन्न करना।” इसके लिए ऊष्मा का स्थानान्तरण, गुप्त ऊष्मा एवं विशिष्ट ऊष्मा को जानना जरूरी है। जब भी कोई द्रव वाष्पीकृत होता है तब गुप्त ऊष्मा के रूप में ऊष्मा ग्रहण करता है। ऊष्मा सदैव गर्म वस्तु से ठण्डी वस्तु की ओर जाती है। यह ऊष्मा का एक आवश्यक गुण है। ऊष्मा का स्थानान्तरण मुख्यत: तीन विधियों द्वारा होता है- (1) संवाहन (Convection), (2) संचालन (Conduction), (3) विकिरण (Radiation)।

खाद्य पदार्थों से गर्म हवा विकिरण द्वारा हल्की होने के कारण ऊपर की ओर उठती है। बर्फ से टकराकर यह हवा भारी हो जाती है और ठंडी होने पर नीचे की ओर आती है। इस चक्र को चालन चक्र (Convection Cycle) कहते है। परन्तु यदि फ्रीज का दरवाजा बार-बार खोला जाता है तब अन्दर की ठण्डी हवा बाहर निकल जाती है और गर्म हवा अन्दर प्रवेश कर जाती है। इससे रेफ्रीजरेटर को फिर से कार्य करना पड़ता है। इसलिए रेफ्रीजरेटर के दरवाजे को बार-बार नहीं खोलना चाहिए।

रेफ्रीजरेटर की क्रियाविधि (Mechanism of Refrigerator) - रेफ्रीजरेटर में एक बन्द धातु की नली में एक ऐसा पदार्थ, विशेषकर फ्रियॉन-12 गैस (Freon-12) भरा रहता है। इसका क्वथनांक (Boiling Point) अत्यन्त ही कम 27-7F होता है। इसे ‘प्रशीतक’ (Refrigerant) भी कहते है। फ्रियॉन गैस अत्यन्त ही कम ताप पर वाष्पीकृत होता है और इसके लिए वह फ्रीज में रखे खाद्य पदार्थों से ऊष्मा को अवशोषित' कर लेता है। इस प्रकार फ्रियॉन गैस के वाष्पीकरण होने से खाद्य पदार्थों का तापक्रम अत्यन्त ही न्यून हो जाता है। अब इस गैसीय प्रशीतक को ठंडा करके द्रव में बदल दिया जाता है। इस प्रकार यह क्रिया बार-बार स्वत: ही होती रहती है और फ्रीज में रखा हुआ भोज्य पदार्थ ठंडा रहता है।

बनावट (Structure) - रेफ्रीजरेटर एक अलमारीनुमा उपकरण है। इसमें निम्न भाग होते है'-

(1) कैबीनेट (Cabinet) -यह इस्पात की मजबूत पतली चद्दर की बनी होती है। इस्पात के आन्तरिक एवं बाहरी खोल के बीच में एक खोखला स्थान होता है। जो *तापरोधन* (Heat Resistant) का काम करता है। इस कारण ना तो बाहर का तापक्रम से भीतर का तापक्रम प्रभावित होता है और न ही अन्दर का तापक्रम बाहर आ पाता है।

(2) दरवाजा (Door) -कैबिनेट की भाँति ही फ्रीज का दरवाजा इस्पात की चद्दरों से बना होता है। इसके बीच में भी खोखला स्थान होता है जो तापरोधन का काम करता है। दरवाजे पर एक हैंडिल व ताला लगा होता है। परन्तु आजकल बिना हैंडिल के दरवाजे भी बनने लगे है। फ्रीज को खोलने के लिए इसके ऊपरी भाग की बनावट इस तरह की होती है, जिसे पकड़कर दरवाजे को आसानी से खोला जा सकता है।

दरवाजे में बाहरी किनारों के चारों तरफ रबर गैस्केट लगा होता है जो सील (Seal) करने का काम करता है ।

(3) फ्रीजर (Freezer) - यह कैबिनेट में सबसे ऊपर एल्युमिनियम धातु का बना हुआ एक छोटा-सा डिब्बा जैसा होता है। फ्रीजर का तापमान सबसे कम 0°F होता है। बर्फ एवं आइसक्रीम जमाने का काम फ्रीजर में ही किया जाता है। **(4) चिल ट्रे (Chill Tray) -** फ्रीजर के नीचे प्लास्टिक की एक ट्रे लगी होती है जिसे 'चिल ट्रे' कहते है। इसका तापमान 1°F से थोड़ा अधिक रहता है। इसका उपयोग फ्रीज का डीफ्रोस्टींग करते समय जल को एकत्रित करने के लिए किया जाता है। भोज्य पदार्थों को जिन्हे लम्बे समय तक सड़ने से बचाना होता है उसे चिल ट्रे में ही रखते है।

(5) शेल्फ (Shelves) -शेल्फ एक विशेष प्रकार की धातु की छड़ की बनी होती है। इन पर जंग नहीं लगता। ये छड़ बिल्कुल पास-पास होती है ताकि इन पर कटोरियाँ, प्लेटें, छोटा भगौने आदि को रखें जा सकें। साथ ही वायु संचरण के लिए भी पर्याप्त स्थान बची रहें। यह फ्रीज में स्थायी रूप से नहीं लगी रहती है बल्कि इन्हें निकालकर भोज्य चैम्बर को आवश्यकतानुसार छोटा-बड़ा किया जा सकता है। बड़ा भगौना रखते समय शेल्फ को हटा दिया जाता है।

चित्र-A : रेफ्रिजरेटर

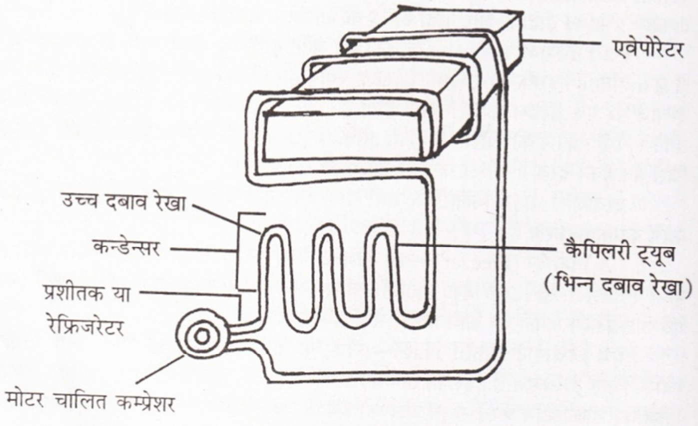

चित्र-B : रेफ्रिजरेशन यंत्र

(6) क्रिस्पेटर (Crispator) - यह फ्रीज का सबसे नीचे का भाग डोलची जैसा आसताकार होता है। इसके ऊपर मोटे एवं पारदर्शी शीशे का एक ढक्कन लगा होता है। ढक्कन पूर्णत: क्रिस्पेटर से अलग रहता है। यहाँ का तापक्रम अन्य स्थानों की अपेक्षा सबसे अधिक होता है।

(7) अण्डा रखने का स्थान (Egg's Place) - यह स्थान दरवाजे के अन्दर की ओर होता है जिसमें अण्ड़े को रखने की व्यवस्था होती है। अण्डा रखने हेतु प्लास्टिक का एक साँचा बना होता है जिस पर अण्ड़े को खड़ा करके रखा जाता है।

(8) मक्खन रखने की व्यवस्था (Butter's Place) -इसकी व्यवस्था भी दरवाजे के अन्दर की ओर होती है।

(9) बोतल रखने की व्यवस्था (Bottle's Place) - दरवाजें में नीचे के भाग में बोतल रखने का स्थान बना होता है। बोतल में ठंडा पेय पदार्थ पानी आदि भरकर रखा जाता है।

(10) बल्ब (Bulb) - कैबिनेट में पर्याप्त प्रकाश हो इसके लिए एक बल्ब लगी होती है। यह फ्रीजर के ठीक नीचे और दराज के ठीक ऊपर रहता है। इसका सम्बन्ध एक स्वचालित बटन से होता है। यह बटन दरवाजे में इस तरह से व्यवस्थित होता है कि दरवाजा खोलने पर बल्ब जलने लगता है और बन्द करते ही स्वत: ही बुझ जाता है।

(11) रेगुलेटर (Regulator) - फ्रीज में ताप को नियंत्रित करने के लिए फ्रीजर के बायीं ओर एक रेगुलेटर लगा रहता है। हाँ! किसी-किसी फ्रीज में यह फ्रीजर के नीचे कैबिनेट के पीछे लगा रहता है। सर्वाधिक गर्म एवं न्यूपतम ताप का अन्तर $0^\circ F$से $25^\circ F$तक के मध्य रहता है।

(12) मोटर (Motor) -मोटर कैबिनेट के ठीक नीचे लगा रहता है। जो या तो पूर्णत: खुला हुआ अथवा किसी-किसी फ्रीज में बन्द मशीन के रूप में होता है।

6.10 खाना पकाने का रेंज (Cooking Range)

वर्तमान में, वैज्ञानिक अविष्कारों ने रसोई के कामों को अत्यन्त ही आसान बना दिया है। उन्होने अनेक रसोई के उपकरण तैयार किये है उनमें से एक है- "कूकिंग रेंज" (Cooking Range) । इसमें भोजन को विभिन्न विधियों से पकाया जाता है, जैसे- बेक करके, भूनकर, सेंक कर आदि। इसमें केक, पेस्ट्री, नॉन खटाई, बिस्कुट आदि अत्यन्त आसानी एवं सुगमता से बन जाते है। आलू, बैंगन, शकरकंद, टमाटर, अरबी आदि सब्जियों आदि को भी भूना जाता है। माँस को रोस्ट किया जाता है। अत: आज के समय में कूकिंग रेंज गृहिणी के लिए एक वरदान साबित हुआ है। इसमें गृहिणी की काफी समय-शक्ति की बचत होती है।

कूकिंग रेंज मुख्यत: दो प्रकार का होता है-

(1) विद्युत संचालित कूकिंग रेंज

(2) गैस से चलने वाली कूकिंग रेंज

सिद्धान्त (Principle) - कूकिंग रेंज में भोजन आंशिक रूप से संचालन द्वारा, आंशिक रूप से संवहन द्वारा तथा आंशिक रूप से विकिरण (Radiation) द्वारा पकाया जाता है।

कूकिंग रेंज की बनावट - कूकिंग रेंज विद्युत चालित हो अथवा गैस से चलने वाली, इनका कार्य एवं बनावट एक जैसा ही है। अन्तर केवल ईंधन के प्रयोग में होता है।

कूकिंग रेंज के मुख्य भाग है-

(1) बॉडी (Body) -इसे 'ढाँचा', 'चौखटा' या 'बॉडी' भी कहते है। यह मजबूत इस्पात का अथवा जंगरोधक धातु का बना होता है। रेंज की बाहरी परत पोर्सलीन, एनामेल अथवा स्टेनलेस स्टील का बना होता है । रेंज के ऊपर वाले भाग पर टाइटेनियम एनामेल की परत चढ़ी होती है जिससे इसके ऊपर पानी का असर नहीं पड़ता है।

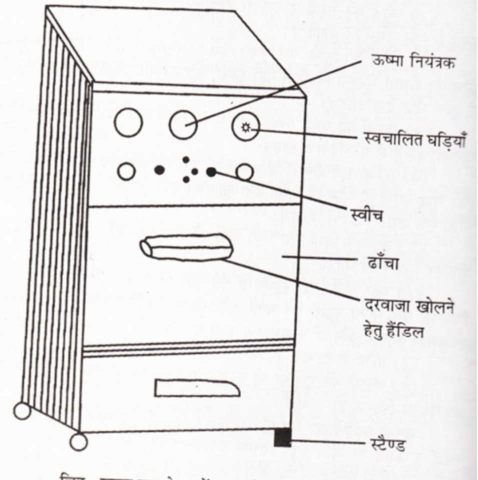

चित्र : खाना पकाने का रेंज (कूकिंग रेंज)

(2) बर्नर्स (Burners) - रेंज में बर्नरों की संख्या तीन होती है। बर्नर भोजन को पकाने, भूनने एवे सेंकने हेतु प्रयोग में लायें जाते है। धरातलीय बर्नर रेंज के ऊपरी भाग में स्थित होता है। धरातलीय बर्नर एक या दो हो सकते है। बर्नर विभिन्न आकार के होते है। जैसे- गोल, चौकोर, आयताकार, अण्डाकार आदि।

(3) भट्टी (Oven) - भट्टी जंग रहित इस्पात आथवा पोर्सलीन युक्त इस्पात की बनी होती है। चूल्हे में स्थित शेल्फ जंग रहित धातु की छड़ से बना रहता है। यह चूल्हे में स्थायी रूप से जुड़ा नहीं होता है बल्कि इसे

आवश्यकतानुसार व इच्छानुसार समायोजित करके हटाया/लगाया जा सकता है। शेल्फ पकाने हेतु बर्तनो को थामें रखने का कार्य करता है।

(4) दरवाजा (Door) - चूल्हे में एक दरवाजा होता है जो उसी धातु का बना होता है जिसमें धातु का बॉडी रहता है। दरवाजे में दोहरी पैनल का पारदर्शी शीषा लगा रहता है जिससे बाहर से ही निरीक्षण किया जसा सकता है कि भोज्य पदार्थ पका है या नहीं।

(5) विद्युत लैम्प (Electric Lamp) - चूल्हे में स्वचालित विद्युत लैम्प लगा रहता है जो दरवाजा ,खुलते ही स्वत: ही जलने लगता है।

(6) ऊष्मा नियंत्रक (Heat Regulator) -रेंज में ऊष्मा नियंत्रक लगा होता है जिसकी सहायता से ताप नियंत्रित किया जाता है। भोजन पकाने के लिए कितना ताप चाहिए यह ऊष्मा नियंत्रक द्वारा ही नियंत्रित किया जाता है।

(7) गैस पाइप (Gas Pipe) - जब कूकिंग रेंज में ऊष्मा गैस से उत्पन्न किया जाता है, तब ताप उत्पन्न करने के लिए गैस के पीछे से रेंज में एक नली लगी रहती है जिससे गैस सिलिन्डर में से रेंज में जाती है। यह व्यवस्था केवल गैस से चलने वाली रेंज में ही होती है।

(8) अन्य व्यवस्था (Other Arrangement) - कूकिंग रेंज में एक स्वचालित घड़ी, आन्तरिक समय सूचक (Internal Time Indicator) , सुविधापूर्ण निकास, बल्ब (रोशनी) आदि की व्यवस्था रहती है जिससे ये आसानी से ज्ञात हो जाता है कि बर्नर्स चालू है या नहीं।

6.11सोलर कूकर (Solar Cooker)

आधुनिक वैज्ञानिक अविष्कारों का अद्भूत देन है- 'सोलर कूकर'। इसमें समय, शक्ति एवं ईंधन इन तीनों की ही काफी बचत होती है। भोजन पकाने हेतु पारम्परिक ईंधन या विद्युत का उपयोग नहीं किया जाता है बल्कि खाना सूरज की ताप 'धूप' से पकता है। धूप से भोजन पकने के कारण ईंधन पूर्णत: मुफ्त रहता है क्योंकि सूर्य की रोशनी एवं धूप के लिए हमें कोई पैसा नहीं चुकाना पड़ता है।

भारत एक ऊष्ण प्रधान देश है। यहाँ गर्मी बहुत अधिक पड़ती है। अत: सोलर कूकर से साल भर में कम-से-कम आठ माह तक तो भोजन आसानी

से पकाया जा सकता है। इसलिए यदि चाहें तो गृहिणियाँ सोलर कूकर से खाना पकाकर ईंधन पर होने वाले व्यय को पूर्णत: बचा सकती है।

सोलर कूकर की बनावट (Structure of Solar Cooker) - सोलर कूकर की बनावट अत्यन्त ही सरल है। यह बक्सेनुमा उपकरण है जो एल्युमिनियम का बना होता है। इसी बक्से में भोजन पकाने हेतु 4 डिब्बे रहते है, जो एल्युमिनियम के बने होते है। इसी डिब्बे में भोजन को रखकर पकाया जाता है। बक्से की अन्दर की दीवारें, काला रंग से पेन्ट की हुई होती है। भोजन के डिब्बे को भी ऊपर एवं बाहर से काले रंग से पेन्ट किया हुआ होता है। इस ढक्कन के अन्दर की तरफ एक साधारण दर्पण (Simple Mirror) लगा होता है। इस ढक्कन को क्लिप की सहायता से विभिन्न पर रखकर स्थिर कर सकते है। ढक्कन को खोलकर इस प्रकार से रखा जाता है ताकि सूरज की किरणें इस पर सीधे ही पड़े। अन्दर का ढक्कन पारदर्शी काँच का बना होता है। सोलर कूकर के सबसे नीचे गोलाकार में चार पहिये लगे होते है, ताकि चूल्हे को आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जा सके।

सोलर कूकर के बक्से एवं भोजन के बक्से को कालें रंग से पेन्ट किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य ताप की अवशोषण क्षमता को बढ़ाना है। काले रंग में ताप को अवशोषित' करने की सबसे अधिक क्षमता होती है। अत: भोजन पकाने हेतु पर्याप्त मात्रा में ताप मिल जाता है।

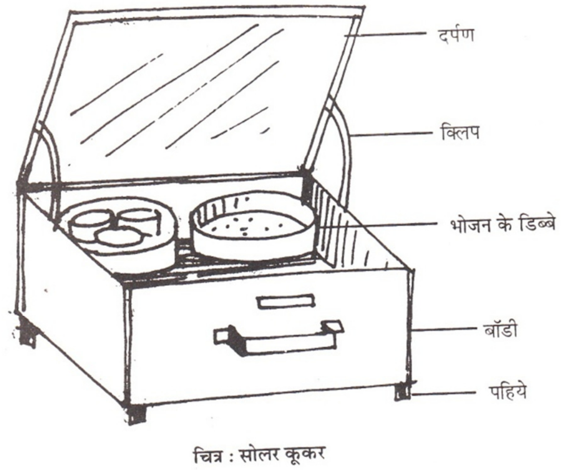

चित्र : सोलर कूकर

6.12अण्डा ताड़ित (Egg Beater)

समय-शक्ति बचत के उपकरणों में अण्डा ताड़ित का अति महत्वपूर्ण स्थान है। इससे अण्डे को फेंटा जाता है। हाथ से अण्डा फेंटना अत्यन्त ही श्रमसाध्य एवं कठिन काम है। अण्डा ताड़ित से केक बनाने हेतु तैयार मिश्रण को भी फेंटा जाता है।

बाजार में मुख्यत: दो प्रकार के अण्डा ताड़ित मिलते है-

(1) रोटरी बीटर (Rotary Beater), तथा

(2) विसक (Whisk)

(1) रोटरी बीटर (Rotary Beater) - रोटरी बीटर स्टेनलेस स्टील का बना हुआ होता है। इसमें एक हैंडिल लगा होता है। हैंडिल की सहायता से बीटर को चलाया जाता है। इसका उपयोग अण्डा फेंटने, केक बनाने हेतु डफ (Dough) तैयार करने, (मिश्रण को फेंटने) अर्थात् बैटर बनाने में किया जाता है। इसके अतिखुला आइसक्रीम बनाने हेतु मावा, दूध आदि को फेंटने एवं दही से मक्खन निकालने में भी किया जाता है।

एक अच्छा रोटरी बीटर मजबूत एवं पतली धारी वाले पत्तियों (Blades) का बना होता है। पत्तियाँ कटोरे के नीचे वाले भाग में फिट रहती है। इसमें 4 से 8 ब्लेड्स तक लगे होते है। परन्तु 8 ब्लेड्स वाले बीटर अधिक अच्छे एवं प्रभावी होते है। इनकी कार्यक्षमता अधिक होती है।

रोटरी बीटर भी दो प्रकार का होता है-

(i) हाथ से चलने वाला (Hand Operated Rotary Beater)

(ii) बिजली से चलने वाला (Electric Operated Rotary Beater)

(i) हाथ से चलने वाला (Hand Operated Rotary Beater) - यह एग बीटर हाथ से चलाया जाता है। इसमें बीटर को गति प्रदान करने के लिए हैंडिल के पास मध्य में एक दाँतों वाला पहिया जिसे 'पिनियन व्हील' (Pinion Wheel) कहते है, लगा रहता है। यह पहिया नीचे वाले ब्लेड्स को घुमाने एवं गति प्रदान करने में मदद करता है। एक बार हैंडिल घुमाने पर ब्लेड्स 4-5 गतियाँ करती है। इसे प्रयोग में लाते समय जिस पात्र में अण्डे को फेंटना हो उसे बायें हाथ से पकड़े/दाएँ हाथ से अण्डा ताड़ित को बलपूर्वक ऊपर-नीचे चलायें ताकि अण्डे में प्र्याप्त वायु संचरण हो सके।

चित्र : अंडा तड़ित (Egg beater)

(ii) बिजली से चलने वाला (Electric Operated Rotary Beater) -इस प्रकार रोटरी बीटर में एक पैडस्टल स्टैण्ड होता है जिसमें बिजली की मोटर फिट की गई होती है। एक पात्र/कटोरा में अण्डा फेंटने हेतु रखा जाता है। विद्युत स्विच ऑन करने पर मशीन स्वत: घूमने लगती है तथा अण्डा में पर्याप्त वायु संचरण होने लगता है। अत: अण्डा कुछ ही मिनटों में अच्छी तरह से फेंटा जाता है।

(2) व्हिस्क (Whisk) -इसका उपयोग अण्डे के सफेद भाग को फेंटने हेतु किया जाता है। इससे अण्डे के सफेद भाग में बहुत अधिक वायु संचरण होता है। अण्डे में वायु के अधिकतम प्रवेश से इसका आयतन (Volume) बहुत अधिक बढ़ जाता है।

सामान्यत: व्हिस्क लम्बे-लम्बे तारों द्वारा बनाये जाते है। नीचे की ओर ये सभी तार अण्डाकार आकृति में सजे होते है तथा ऊपर की ओर जाकर एक हैंडिल का निर्माण करते है। इसमें अण्डें को फेंटने हेतु शक्ति का प्रयोग अतिशीघ्रता से करना पड़ता है। हैंडिल में लगे तारों को जंगरहित धातु से ढँक दिया जाता है।

व्हिस्क की क्षमता एवं त्रीवता तारों की महीनता, सूक्ष्मता एवं संख्या पर निर्भर करती है। अण्डा फेंटने हेतु पात्र/कटोरा में अण्डे को रखकर, व्हिस्क एग बीटर से जल्दी-जल्दी हाथ द्वारा गति करना पड़ता है। अत: व्हिस्क का हैंडिल लम्बा एवं आरामदायक होना चाहिए। परन्तु इससे अण्डा फेंटने में बहुत अधिक समय लगता है।

अण्डा ताड़ित को उपयोग करने की विधि (Methods to Use Egg Beater) - केक हेतु मिश्रण तैयार करना हो, अण्डा फेंटना हो आइसक्रीम हेतु मिश्रण फेंटना हो या दही से मक्खन निकालना हो, ये सभी कार्य अण्डा ताड़ित से हो जाते है। जिस किसी भी साम्रगी को फेंटना हो उसे किसी साफ सुथरे बर्तन में रखकर एग बीटर में यथास्थान रखकर विद्युत धारा से उसका कनेक्षन कर दिया जाता है। स्विच ऑन करने पर विद्युत धारा प्रवाहित होने लगता है तथा इसमें लगे ब्लेड्स त्रीव गति से घूमने लगते है। इस कारण वायु का संचरण फेंटी जाने वाली साम्रगी में होने लगता है।

6.13 ज्यूसर, मिक्सर व ग्राइन्डर

ग्रहिणी का अधिकांश समय रसोईघर में व्यतीत होता है। इसमें भी भोजन पकाने में सर्वाधिक समय व्यतीत होता है। मसाला पीसने, दाल पीसने, चटनी पीसने आदि कार्यो में तो बहुत ही अधिक समय एवं शक्ति खर्च होता है। तीज-त्यौहार, मेहमानों के आगमन, जन्मदिन, पार्टी आदि विशेष अवसरों पर कूटने-पीसने का काम बढ़ जाता है। पहले गृहिणी इन सभी को कूटने-पीसने के कामों को हमाम दस्ता या सील पाटी पर करती थी। परिणामत: वह थककर चूर हो जाती थी और पर्व-त्यौहार, जन्मदिन, पार्टी एक शुभ अवसर न होकर गृहिणी के लिए बोझिल दिन हो जाता था। वह शाम के समय इतना अधिक थक जाती थी कि खाना खाने में भी आलस्य सताने लगता था। इसी काम को आसान किया है- ‘मिक्सर ग्राइन्डर’ ने। मिक्सर ग्राइन्डर का संक्षिप्त व लोकप्रिय नाम है ‘मिक्सी’ (Mixi)। आज दाल पीसना हो या मसाला, कद्दूकस करना हो या बड़े-बड़े टुकड़े, रस निकालना हो या सूखा मसाला पीसना, दही से मक्खन निकालना हो या चटनी पीसना ये सभी काम पल भर में ही सम्पन्न हो जाते है। साथ ही मिक्सी से मसाला, दाल, चावल आदि पीसना, दही फेंटना आदि कार्य बड़ा ही मनोरंजक एवं आनन्दमयी लगता है। मिक्सी से परिवारका कोई भी सदस्य पीसने-कूटने का काम कर सकता है। पुरुष हो या बच्चे वे भी मिक्सी से चटनी, मसाला आदि पीस लेते है। पकौडे, पेस्ट्री, केक आदि के लिए मिक्सर इसके द्वारा आसानी से फेंटे जा सकते है।

सिद्धान्त (Principle) - मिक्सर एक विद्युत चालित उपकरण है। यह विद्युत के द्वारा यांत्रिक कार्य करता है। मोटर विद्युत ऊर्जा को यांत्रिक ऊर्जा (Electric Energy to Mechanical Energy) में परिवर्तित कर देता है। मिक्सर के मोटर में एक शक्तिशाली क्षेत्र चुम्बक होता है जिसके बीच आमेंचर रहता है । विद्युत धारा (Current) प्रवाहित होने पर आर्मेचर घूमने लगता है। आर्मेचर के साथ ही मिक्सर ग्राइन्डर के ब्लेड्स भी जुड़े रहते है। इस कारण वे भी घूमने लगते है। अत: जार में रखी सामग्री भी महीन पीस जाती है। मोटर के आर्मेचर के साथ विभिन्न प्रकार के ब्लेड्स या अटेचमेन्ट लगाकर कूटने, पीसने, अण्डा फेंटने, मक्खन निकालने, रस निकालने आदि का काम इसी एक उपकरण से किया सकता हैमिक्सर ग्राइन्डर में लगी मोटर की गति 1/30 अश्व शक्ति (Horse Power) होती है तथा यह A.C. एवं D.C. (Alternate Current and Direct Current) विद्युत धारा पर चलती है।

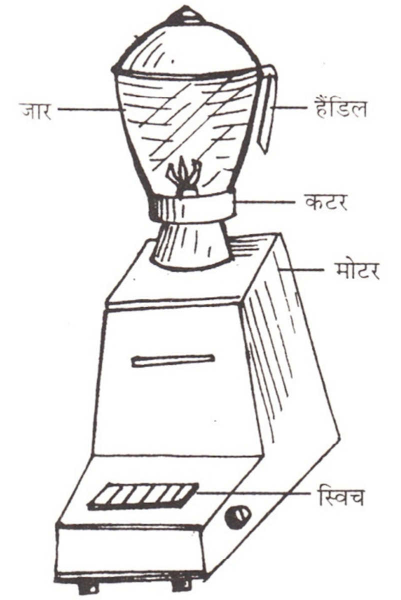

मिक्सर

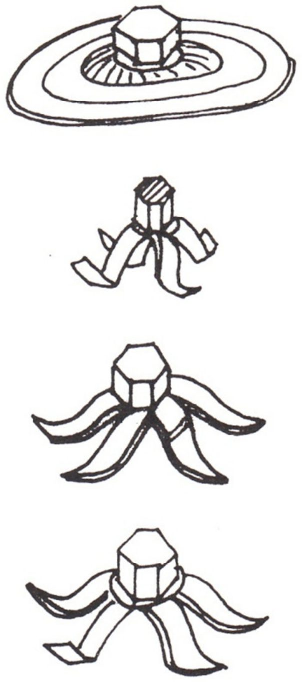

विभिन्न प्रकार के ब्लेड

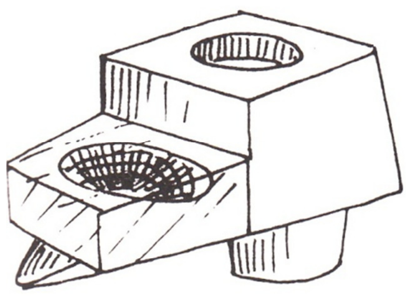

ज्यूसर

चटनी पिसने का जार

6.14 कूलर (Cooler)

गर्मी के मौसम में जब वातावरण का तापमान बहुत अधिक बढ़ जाता है तब झुलसाने वाली गर्मी का अहसास होता है। तेज गर्मी के कारण दिन का चैन और रात की नींद खराब हो जाती है। मक्खी, मच्छर और भी अधिक परेशान करने लग जाते है। शरीर पसीने से तर-बतर हो जाता है। उस समय व्याकुलता एवं व्यग्रता अनुभव होने लगती है। सारे कामकाज ठप्प हो जाते है। पंखा भी गर्म हवा उगलने लगता है। ऐसी स्थिति में भयंकर गर्मी से राहत दिलाने का काम करता है- 'कूलर'। वास्तव में कूलर गर्मी के दिनों का 'वरदान' है। यह बहुत अधिक मँहगा उपकरण नहीं है। अत:

इसका उपयोग निम्न मध्यम वर्ग भी कर सकता है। परन्तु यह उपकरण वहीं के लिए उपयोगी है जहाँ विद्युत सुविधा है।कूलर घर के तापक्रम को बाहर के तापक्रम की अपेक्षा काफी कम कर देता है। फलत: कमरा ठंडा एवं शीतल हो जाता है। अत: व्यक्ति को कमरे में शीतलता, शान्ति एवं ठंडेपन का अहसास होता है। व्यक्ति अपने कामकाज को पूरे मनोयोग से कर सकता है।

वस्तुत: कूलर एक प्रकार का पंखा है। यह एक टिन, इस्पात या कठोर प्लास्टिक का बना हुआ एक चौकोर डिब्बे की भाँति होता है। इसकी एक दीवार पर छेद करके एक छोटा पंखा (Exhaust Fan) लगा दिया जाता है जिसकी पंखुड़ियाँ/पत्तियाँ छोटी एवं चौड़ी होती है जिससे यह अधिक मात्रा में बाहर से हवा को फेंक सके। कुलर की शेष तीन दीवारों में टिन/इस्पात/प्लास्टिक के जालीदार दरवाजे लगे होते है। इन दीवारों की जाली पर अन्दर की तरफ घास या खसखस लगी रहती है। कूलर के नीचे वाले भाग में, बीच में, लोहे का एक मोटर लगा होता है। यह मोटर कूलर को चलाने में मदद करता है। मोटर के पास ही पम्प लगा होता है जिसमें रबर की तीन छोटी नली लगी होती है जो कूलर के तीनों दीवारों से जुड़कर पानी फेंकती है। इसी नली से होकर पानी कूलर के तीनों दीवारों पर आता है और घास/खसखस को गीला करता है जिसके कारण कमरें में हवा के साथ आर्द्रता (Moisture) भी आ जाती है और कमरा ठंडा हो जाता है।

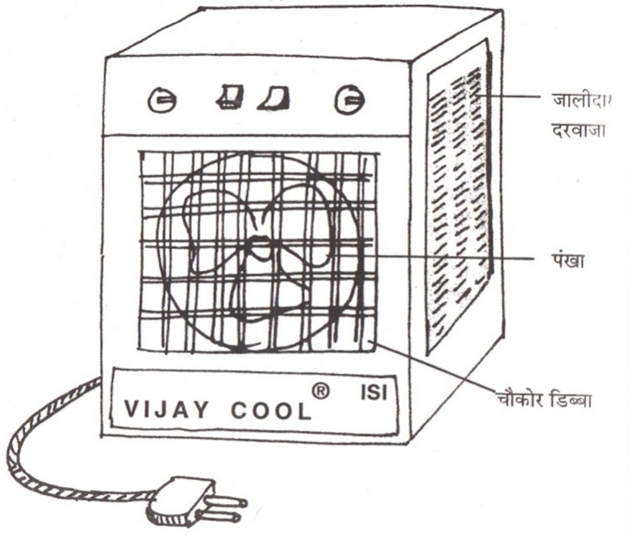

चित्र : कूलर

6.15 पानी गर्म करने का संयंत्र (Water Heater or Geyser)

सर्दी के मौसम में पानी बहुत ही ठंडा बर्फ के समान हो जाता है। ठंडे पानी से स्नान करना एक दुसाध्य काम है। ठंडा पानी शरीर के रोम-रोम को कंपकंपा देता है। ऐसी स्थिति में **'गीजर एवं इमरसन रॉड' (Geyser and Immersion Rod)** पानी को गर्म करने में उपयोग किये जाते है। गीजर द्वारा कुछ ही देर में पानी गर्म हो जाता है। पानी गर्म करने हेतु उपयोग में आने वाले उपकरण, गीजर एवं इमरसन रॉड, इन दोनों की संरचना एवं सिद्धान्त लगभग एक जैसे ही होते है। इनमें गर्म होने के तार लगे होते है। ये तार मिश्रित धातु के बने होते है जिसमें 60% निकेल, 25% लोहा तथा 15% क्रोमियम होता है। इन तारों में से होकर जब विद्युत धारा प्रवाहित की जाती है तब यह उच्च तापक्रम में गर्म हो जाता है और अपने चारों ओर स्थित पानी को भी गर्म कर देता है।

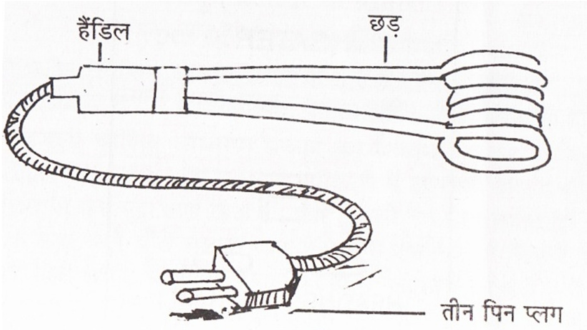

चित्र : इमरसन रॉड

पानी गर्म करने का संयंत्र मुख्यत: दो प्रकार का होता है-

(1) इमरसन रॉड (Immersion Rod) - यह स्टेनलेस का बना हुआ एक छड़ की भाँति होता है। इसमें तार एक धातु की पाइप या केसिंग में बन्द होते है। रॉड के ऊपरी भाग में कठोर प्लास्टिक अथवा बेकेलाइट का हैंडिल लगा होता है। इसी में विद्युत तार एवं तीन पिन प्लग लगा रहता है। जब प्लग को सॉकेट में डालकर स्विच ऑन किया जाता है तो विद्युत धारा प्रवाहित होने लगती है तथा तार गर्म हो जाता है। पानी तार के सम्पर्क में रहता है अत: यह भी गर्म हो जाता है।

सवधानियाँ -

(1) रॉड को पानी से भरे ड्रम/बाल्टी में डालने के उपरान्त ही स्विच ऑन करना चाहिए।

(2) पानी में हाथ डालने से पूर्व स्विच को ऑफ कर देना चाहिए तथा तीन पिन प्लग को सॉकेट से बाहर निकाल देना चाहिए।

(2) गीजर (Geyser) - गीजर को दीवार में टाँगकर पाइप लाइन से जोड़ दिया जाता है। यह गोलाकार एवं लम्बाकार ड्रम की तरह का एक उपकरण है जिसके ऊपरी परत पर एनामल का पेंट किया होता है। यह विभिन्न वॉट एवं क्षमता का आता है। इसकी दीवारों के बीच में लगभग 3 ईंच मोटा निरोधक तत्त्व भरा होता है। गीजर के बीच में गर्म करने की रॉड लगी रहती है जो गर्म होकर पानी को गर्म करती है। गीजर के नीचे की ओर वॉल्व (Valve) लगे होते है। इनमें से एक वॉल्व को जल की पाइप से जोड़ा जाता है तथा दूसरे से गर्म पानी निकाला जाता है। बड़े शहरों एवं महानगरों में, जहाँ छोटे आवास होते है तथा स्थान की काफी कमी होती है, वहाँ पर गीजर अत्यन्त ही उपयोगी एवं लाभदायीं सिद्ध

हुआ है। इसका सबसे बडा फायदा यह होता है कि धरातलीय स्थान नहीं घेरता है। इसे दीवारों पर टाँग दिया जाता है।

6.16 वैक्यूम क्लीनर (Vacuum Cleaner)

समय-शक्ति बचत के उपकरणों में वैक्यूम क्लीनर का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। इस यंत्र की सहायता से घर के कोने-कोने की सफाई अत्यन्त सुगमता एवं सरलतापूर्वक हो जाती है। इतना ही नहीं, फर्श, दरी, कालीन, सोफा आदि की भी सफाई कुछ ही मिनटों में हो जाती हैं। दरवाजे, खिड़कियों, आलमारी के पीछे, छतों पर लगे जाले एवं धूलकण साफ हो जाते है। इससे कमरे का पोंछा भी होता है। शीत प्रधान देशों में, जहाँ पूरे घर में ही दरी, कालीन बिछा रहता है, उनकी सफाई के लिए तो वरदान साबित हुआ है- 'वैक्यूम क्लीनर'। इससे घर की सफाई कम-से-कम समय एवं शक्ति में सम्पन्न हो जाती है। साथ ही, यह भी आवश्यक नहीं है कि घर की सफाई गृहिणी ही करें। घर का कोई भी सदस्य इसकी सहायता से सफाई का काम सरलतापूर्वक कर सकता है। पाचँ सितारा, तीन सितारों एवं इसी तरह के बड़े-बड़े होटलों में कमरे की सफाई तो वैक्यूम क्लीनर से ही की जाती है।

वैक्यूम क्लीनर काफी मँहगे होते है। अत: यह उपकरण अभी भारत में उतना अधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय नहीं हो सका है। कुछ गिने-चुने धनी वर्ग के लोग ही इसका उपयोग अपने घर की सफाई हेतु कर पाते है।

वैक्यूम क्लीनर विभिन्न आकार-प्रकार के होते है। इसे बिजली द्वारा अथवा बिना बिजली के भी चलाया जा सकता है। सामान्यत: वैक्यूम क्लीनर निम्न प्रकार के होते है-(1) बिजली चालित साधारण प्रकार का वैक्यूम क्लीनर (Simple Type Electric Vacuum Cleaner) - इस प्रकार के उपकरण में ऊपर की ओर एक लम्बा डंडा लगा होता है जिस पर एक मुट्टा लगा रहता है। इसी मुठ्ठी को पकड़कर मशीन को फर्श, दरी, कालीन आदि के ऊपर आगे-पीछे चलाया जाता है। इसके एक सिरे पर बिजली के तार एवं प्लग लगे होते है जिसे सॉकेट में लगाया जाता है। इसी में प्लास्टिक का बना हुआ एक थैला होता है जिसमें धूलकण, मिट्टी, गंदगी आदि संगृहीत होती जाती है। थैला भर जाने पर उसे साफ कर दिया जाता

है।(2) स्वचालित वैक्यूम क्लीनर (Automatic Vacuum Cleaner) - स्वचालित वैक्यूम क्लीनर में, डंडे के आगे एक ब्रश लगा होता है जिसकी सहायता से कमरे के कोने एवं तंग जगहो से भी धूलकण एवं जाले को साफ किये जा सकते है। धूलकण एवं गंदगी से जब थैला भर जाता है तब स्वत: ही क्लीनर से सीटी बजने लगती है। तत्पश्चात थैली में से धूलकण एवं गंदगी को निकालकर साफ करना पड़ता है और फिर उसे उसी स्थान पर लगाना पड़ता है।थैली कहाँ पर, किस स्थान पर स्थित है, इसके आधार पर भी वैक्यूम क्लीनर को मुख्य दो भागों में बाँटा जा सकता है-

(1) बाहरी थैली वाली वैक्यूम क्लीनर

(2) बंद थैली वाली वैक्यूम क्लीनर

(1) बाहरी थैली वाला वैक्यूम क्लीनर - इसे 'हूवर' (Hoover) भी कहा जाता है। यह दरी, कालीन, गद्दा, सोफा आदि से धूलकण को पीटकर, हिलाकर, ब्रशकर तथा चूर्ण बनाकर साफ करता है।

बनावट (Structure)

(1) मुख्य भाग (Main Part, Body)- वैक्यूम क्लीनर का मुख्य भाग जिसे बॉडी कहते है, क्रोमियम का बना होता है। इसके चारों तरफ अच्छी किस्म एवं गुणवत्ता की रबर लगी होती है। बॉडी के नीचे की ओर पहिए लगे होते है। पहिये से क्लीनर को एक स्थान से दूसरे स्थान तक सुगमतापूर्वक ले जाया जा सकता है।

(2) थैली (Bag) - धूलकण एवं गंदगी को एकत्रित करने हेतु एक अति सूक्ष्म छिद्रों वाली थैली होती है जिससे केवल हवा निकल सकती है मगर धूलकण एवं गंदगी नहीं निकल सकती है। इसी थैली में धूलकण एवं गंदगी एकत्रित होती रहती है।

(3) पंखा (Fan)- मोटर के ठीक पीछे निर्वात उत्पन्न करने के लिए एक पंखा लगा होता है।

(4) हत्था (Handle)-हत्था धातु का बना होता है। इस पर रबर या कठोर प्लास्टिक की मुठ होती है। इसी मुठ को पकड़कर चलाया जाता है।

(5) टोंटी (Nozzle)- टोंटी क्लीनर से जुडा रहता है। क्लीनर की मोटाई के अनुरूप ही इसका आकार होता है।

(6) बिजली के तार एवं प्लग (Electric Wire and Plug)- क्लीनर को विद्युत धारा से सम्बन्धित करने के लिए इसमें एक बिजली का तार लगा होता है जिसके ऊपर के मुख्य भाग पर रबर का खोल चढ़ा होता है। इसका एक सिरा क्लीनर से तथा दूसरा सिरा तीन पिन प्लग से जुड़ा रहता है। प्लग को सॉकट में डालकर स्विच ऑन करने पर क्लीनर में विद्युत धारा प्रवाहित होने लगती है ।

(7) स्विच (Switch) - क्लीनर के नीचे की ओर एक स्विच की व्यवरूथा रहती है। इसका नियंत्रण पैर द्वारा होता है।

(2) बंद थैली वाली वैक्यूम क्लीनर (Closed Bag Vacuum Cleaner)- इस प्रकार के वैक्यूम क्लीनर में थैली यंत्र के मुख्य अंग के भीतर ही व्यवस्थित रहती है।

6.17 माइक्रोवेव (Microwave)

विद्युत ओवन की भाँति ही माइक्रोवेव भी समय-शक्ति बचत का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इसमें भोजन पकाने, बेक करने, भूनने, दूध पानी आदि उबालने के साथ ही भोजन को लम्बे समय तक गर्म करके रखने की शक्ति एवं विलक्षण गुण होता है। इसमें भोजन अत्यन्त शीघ्रता से कम-से-कम समय में पककर तैयार हो जाता है। यह ऊष्मा रेडियेशन (Heat Radiation) द्वारा इलेक्ट्रॉन की सहायता से भोजन को गर्म करता है इसमें हरेक भोजन पकाने का समय निर्धारित रहता है। अत: भोजन की प्रकृति के अनुसार समय (Time) पहले से सेट करना पड़ता है।

माइक्रोवेव में भोजन पकाते समय यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि भोज्य पदार्थ को धातु के बर्तन में रखकर नहीं पकाया जायें क्योंकि विद्युत धारा के प्रवाहित होते ही धातु के बर्तन के साथ ही माइक्रोवेव का मोटर भी जल जाता है तथा यह अपना कार्य बन्द कर देता है। इसलिए माइक्रोवेव में भोजन पकाते समय चीनी मिट्टी, पोर्सेलीन, नॉनब्रेकेबल, नॉन हीटिंग, प्लास्टिक या काँच का बर्तन ही प्रयोग में लाना चाहिए। माइक्रोवेव को खरीदने के उपरान्त इसके साथ संलग्न 'बुकलेट' में लिखे गये सावधानियों को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए तथा इसी के अनुसार भोजन

पकाने का कार्य एवं साफ-सफाई, सुरक्षा, देखभाल आदि की जानी चाहिए।

6.18 सारांश

दैनिक जीवन में घर के कामकाज को सुगमन सरल आसान बनाने में घरेलू उपकरण अत्यन्त उपयोगी है यह समय शक्ति दोनों की बचत करते है प्रस्तुत इकाई में आवश्यक घरेलू उपकरण जैसे प्रेशर कुकर, गैस स्टोव, विद्युत हीटर, मिक्सी, टोस्टर, ओवन,फ्रिज, कूकिंग रेंज, सोलर कुकर, कूलर, आदि का परिचय, कार्य पद्धति और उपयोगिता का उल्लेख किया है । यह घरेलू उपकरण गृहणी के समय शक्ति की बचत कर कार्यक्षमता में वृद्धि करते है, कार्य को सरल बनाते है । जिससे पारिवारिक वातावरण में खुशी का माहोल रहता है । ये उपकरण उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति में भी सहायक है ।

6.19 अभ्यास प्रश्न

1. उपकरणों की उपयोगिता के बारे में विस्तारपूर्वक
2 प्रेशर कूकर की क्रियाविधि समझाइये
3. विद्युत हीटर के बारे में बताइए
4. विद्युत टोस्टर के बारे में बताइए
5. रेफ्रिजरेटर के बारे में बताइए

6.20 संदर्भ ग्रन्थ

1. गृह व्यवस्था है। गृह सज्जा — बी.के. बख्शी, साहित्य प्रकाशन आगरा
2. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा — डा. वृंदा सिंह, पंचशील प्रकाशन जयपुर
3. गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य — विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, डा. रीना खनुजा

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi
"Managment for Morden Families Sterling"
5- Nickel Dorsey M & Sons New york
"Managment in Family"

इकाई-7

आवासीय डिजाइनिंग -Housing designing

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 आवास का अर्थ

7.3 घर और मकान में अंतर

7.4 परिवार के लिए आवास की आवश्यकता

7.5 गृह निर्माण के उद्देश्य

7.6 सारांश

7.7 अभ्यास प्रश्न

7.8 संदर्भ ग्रन्थ

7.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- घर और मकान में अंतर को समझेंगे
- परिवार के लिए आवास की आवश्यकता को समझेंगे
- गृह निर्माण के उद्देश्य को समझेंगे

7.1 प्रस्तावना

मानव की मूलभूत भौतिक आवश्यकताओं में से आवास एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण आवश्यकता है। प्रकृति में न केवल मानव बल्कि सभी प्राणी अपने-अपने तरीके से आवास बनाकर रहते है तथा वर्षा, धूप, आँधी, तूफान, ठंड, ओले, भयावह जंगली-जानवर, शत्रुओं आदि से स्वयं को सुरक्षित रखते है। जंगल का राजा कहा जाने वाला शेर भी गुफा (Den) में रहता है। साँप व चूहे जमीन के अन्दर बिल बनाकर रहते है। गायों को रहने के लिए गौशाला निर्मित कियें जाते है तो पक्षी नीड़ बनाकर रहते है। मनुष्य ईश्वर की श्रेष्ट रचना है। उसके पास विकसित मस्तिष्क है। एक सामाजिक प्राणी होने के नाते वह समाज में रहना पसंद करता है। आदिकाल में मानव पर्वत की कंदराओं, गुफाओं, वृक्ष की खोह आदि में रहकर धूप, वर्षा, ठंड, शीत, भयानक जंगली जानवरों आदि से अपने आपको सुरक्षित रखते थे। धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ-साथ मानव ने झोपड़ियाँ, मिट्टी के कच्चे मकान, ईंट व पत्थर के मकान बनाना सीख लिया तथा उसमें आराम से परिवार सहित रहने लगे। वर्तमान में, विज्ञान एवं सभ्सता के विकास के साथ ही गृह निर्माण कला में भी उत्तरोतर वृद्धि होती गयीं। आज बड़े-बड़े भवन, बहुमंजिली इमारतें, कॉम्पलेक्स, गगनचुम्बी अट्टालिकाएं देखने को मिलती है।

प्राचीन समय में मकान बनवाना एक व्यक्तिगत समस्या थी। परन्तु आज यह सामाजिक एवं राष्ट्रिय समस्या बन गई है। आज के बदलते परिवेष में, गृह निर्माण सम्बन्धी दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन हुआ है। आज मानव न केवल सुरक्षा की भावना को दृष्टिगत रखते हुए मकान बनवाता है बल्कि उसका दूसरा उद्देश्य रहता है कि मकान इस प्रकार के हों जिसमें परिवार के सभी सदस्यों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, संवेगात्मक, खेल आदि का समुचित विकास हो। सारांष में यह कहना उचित होगा कि मकान में रहने वाले सभी लोगों का सर्वांगीण एवं चहुँमुखी विकास हो। अंग्रेजी की एक कहावत है- *"East or West home is best."* (पूरब हो या पश्चिम घर ही श्रेष्ट है।) में व्यापक गूढ़

रहस्य छिपा हुआ है। घर में हम सुख-दु:ख, चिन्ता, भय आदि से मुक्त रह पाते हैं तथा अपने आपको सुरक्षित महसूस करते है। घर में ही व्यक्ति परिवार से प्रेम, दया, करूणा, सहयोग, त्याग, मित्रता आदि का पाठ सीखता है और इनका विकास करता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि, वह निवास स्थान जो हमें संरक्षण दें सके, सुरक्षा दें सके, स्वास्थ्य एवं शान्तिप्रिय वातावरण उपलब्ध करवा सके उसे घर(आवास) कहते हैं।

7.2 आवास का अर्थ (Meaning of Housing)

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार- वह भवन संरचना जिसमें निवास किया जाए, आवास' कहलाता है।

आर-एस-देशपांडे के शब्दों में- आवास मानव समूह के लिए एक शरण स्थल है जिसमें दीवारें, फर्श, दरवाजे, खिड़कियाँ, छत आदि होते है।

"A House is a shelter consisting of walls, floors, doors, windows, roofs etc. in which human being live."

डमा बरनर्ड सेट के शब्दो में- वास्तव में जिस स्थान में पारिवारिक जीवन का वातावरण पाया जाता है, उसे घर कहते है जिसका सार रूप् पारिवारिक जीवन में व्यक्तिगत सम्बन्ध है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि, आवास का एक निश्चित स्वरूप (संरचना), दरवाजे, फर्श आदि होते है तथा उसमें व्यक्ति अपने परिवार सहित निवास करता है एवं अपना व अपने परिवार का सर्वांगीण विकास करता है, आवास कहलाता है।

सामान्यत: घर, निवास, आवास, मकरन, गृह आदि शब्दों का प्रयोग समाना के रूप में किया जाता है परन्तु गृह विज्ञान में *घर* अथवा *गृह* एवं *मकान* में व्यापक अन्तर है। यथार्थ में मकान (House) एक स्वरूप है, एक ऐसी संरचना, जो निर्जीव वस्तुओं, जैसे ईंट, चूना, मिट्टी, गारा, पत्थर, स्टील, लकड़ी, सीमेन्ट आदि से बनता है। कहने का तात्पर्य है, मकान वह इमारत है जिसमें मनुष्य निवास करता है परन्तु इसमें रहने वाले लोगो के बीच कोई भावनात्मक सम्बन्ध नहीं होता है। एक होटल, छात्रावास, धर्मशाला, अस्पताल, अनाथालय, प्रतीक्षालय आदि को हम

घर नहीं कह सकते है। क्योंकि इसमें रहने वाले लोगों का आपस में कोई भावनात्मक सम्बन्ध अथवा लगाव नहीं होता है।

घर (Home) - घर अथवा गृह एक सचेतन एवं भावनात्मक इकाई है जिसका निर्माण उसमें निवास करने वाले व्यक्तियों के परस्पर सम्बन्ध, प्यार, स्नेह, त्याग, दया, सहयोग, सहानुभूति एवं मित्रता की भावना से बनता है। यह वह वजह होती है जहाँ मानवीय गुणों के विकास के लिए उचित वातावरण एवं परिस्थियाँ उत्पन्न की जाती है। संक्षेप में- घर मकान रूपी संरचना में निवास करने वाली आत्मा हैं।

7.3 घर एवं मकान में अन्तर (Difference Between Home and House)

घर एवं मकान में वहीं अन्तर होता है जो चेतन एवं जड़ में देखने को मिलता है। एक सजीव एवं जीवन्त होता है तो दूसरा निर्जीव। निम्न तालिका में घर एवं मकान के अन्तर को दर्शाने का प्रयास किया गया है-

क्र.सं.	घर (Home)	मकान (House)
1- 2- 3- 4- 5- 6- 7- 8- 9-	एक सजीव एवं सचेतक स्वरूप है। घर व्यक्ति एवं परिवार की मानसिक एवं भावनात्मक आवश्यकता है। इसमें निवास करने वाले लोगों के बीच परस्पर भावनात्मक सम्बन्ध होता हैं। सामान्यत: घर विवाह के बाद बनता है। घर में व्यक्ति अपने परिवार सहित भय, चिन्ता_आदि से मुक्त	मकान निर्जीव संरचना है। यह व्यक्ति एवं परिवार की भौतिक आवश्यकता है। कोई भावनात्मक एवं संवेगात्मक लगाव नहीं होता। यह ईंट, चूना, मिट्टी, पत्थर, कंकड़, स्टील, लकड़ी आदि से बना एक संरचना है। मकान कभी भी कहीं भी लिया जा सकता है तथा परिस्थिति अनुसार बदला जा सकता है। मानव में ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं होता है। यह केवल आश्रय

10-	रहकर निवास करता है तथा सुख-दु:ख बाँटता है। वह अपने लक्ष्यों के निर्माण एवं प्राप्ति करता है।	स्थल होता है। जहाँ व्यक्ति रहता है। होटल, छात्रावास, धर्मशाला आदि मकान के अन्तर्गत आते है।
11-	म्कान में रहकर व्यक्ति घर का निर्माण करता है।	इसमें छत, दीवारें, फर्श, खिड़कियाँ, दरवाजे आदि होते है।
	प्रत्येक घर के लिए मकान का होना जरूरी है। बिना मकान के घर की कल्पना नहीं की जा सकती।	प्रत्येक मकान घर ही हो, यह आवश्यक नहीं है। यह छात्रावास, होटल, अस्पताल, धर्मशाला, लॉज, दुकान एवं अन्य व्यावसायिक केन्द्र भी हो सकता है।
12-	घर को बदलना आसान नहीं है ।	परिस्थिति एवं आवश्यकतानुसार मकान को बदला जा सकता है।
13-	घर दो या दो से अधिक व्यक्तियों के आपसी प्रेम, सौहाद्र, सहयोग, प्यार, मित्रता, करूणा आदि की भावना से बनता है।	मकान में अकेला व्यक्ति निवास कर सकता है।
	घर में पारिवारिक जीवन का वातावरण पाया जाता है।	किसी भी सुरक्षित स्थान को मकान कहा जाता है।
	गृह के अन्तर्गत मकान का प्रयोग मात्र आवास हेतु किया जाता है।	मकान के भवन का प्रयोग आवास के साथ ही होटल, छात्रावास बैंक, स्कूल व अन्य व्यावसायिक केन्द्रों के रूप में किया जा सकता है।
	घर को छोड़ने अथवा सम्बन्ध विच्छेद होने पर दु:ख, शोक, चिन्ता, भय का अनुभव होता है।	मकान को छोड़ने पर कोई दु:ख शोक का अनुभव नहीं होता। इसके ठीक विपरीत कभी-कभी खुषी भी होती है। मकान में इस
	घर में प्रत्येक व्यक्ति, ममता, प्यार, दुलार व स्नेह से बँधा रहता है तथा अपने कर्त्तव्यों, अधिकारों एवं उत्तरदायित्वों का	

	निर्वहन करते हुए आत्म तुष्टि एवं आनन्द का अनुभव करता है। घर अखण्ड एवं चिरन्तर है। एक घर से कई घरों की उत्पत्ति होती है।	तरह का कोई लगाव नहीं होता। मकान में इस तरह का कोई लगाव नहीं होता। मकान स्थायित्व की कालावधि सीमित होती है।

7.4 परिवार के लिए आवास की आवश्यकता (Need of Housing for Family)

आवास मनुष्य की मूलभूत भौतिक आवश्यकता है । प्रारम्भ में लोग मकान केवल अपने व परिवार की सुरक्षा की दृष्टि से बनवाते थे। परन्तु आज इसका उद्देश्य न केवल सुरक्षा प्राप्त करना है बल्कि इसका उद्देश्य वृहद हो गया है। इन सभी का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है-

(1) सुरक्षा (Protection) - सदियों से मानव अपने व अपने परिवार को आँधी, तूफान, ठंड, शीत, लू, ओले, वर्षा, चोर, डकैत, बदमाश, भयावह जीव-जन्तु व अन्य प्राकृतिक प्रकोप से सुरक्षा पाने के लिए मकान का निर्माण करते आया है। मकान में व्यक्ति अपने आपको सुरक्षित महसूस करता है। यह कहावत शत-प्रतिशत सत्य है- “East or West, home is best.” आवास व्यक्ति को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करता है। श्रम एवं कठिन परिश्रम से अर्जित की गई सम्पति को व्यक्ति मकान में ही रखकर सुरक्षित अनुभव करता है।

(2) स्थायित्व (Stability) - आदि मानव घुमक्कड़ प्रकृति के थे। सभ्यता के विकास के साथ ही इनका ये घुमक्कड़पन समाप्त होता चला गया तथा स्थायित्व की भावना ने जन्म लिया। इसी स्थायित्व की भावना ने उन्हे घर बनाकर रहने की प्रेरणा प्रदान की। स्थायित्व का अर्थ है- ‘‘भटकने से रोकना, ठहराव, रूक जाना, जड़े जमाना, बस जाना आदि। आवास व्यक्ति को एक जगह से दूसरे जगह पर भटकने से रोकता है। इसमें व्यक्ति को

परस्पर एक-दूसरे के स्नेह एवं प्यार के बन्धन में बाँधे रखनी की क्षमता है। अत: लोगो का घर से जुड़ाव-लगाव हो जाता है। व्यक्ति इसी भावना के वषीभूत होकर अपना एवं बालकों का सर्वांगीण विकास करता है तथा जीवन में विकास के पथ पर अग्रसर होता है।

(3) अनुकूल वातावरण प्रदान करना (To provide favourable atmosphere) - व्यक्ति तथा परिवार के बहुमुखी विकास के लिए अनुकूल वातावरण का होना अत्यन्त आवश्यक है और इस आवश्यकता की पूर्ति में आवास का महत्वपूर्ण योगदान है। घर में ही व्यक्ति, परिवार से प्रेम, दया, त्याग, विश्वाश, सहयोग, करूणा, सोहाद्र, बलिदान, मित्रता आदि की भावना को सीखता है तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित करता है। अनुशासन का व्यक्तित्व में समाहित होना भी इसी आवास की देन है। घर में ही बालक परस्पर सहयोग एवं अनुकूल वातावरण पाकर पुष्पित-पल्लवित होता है तथा शारीरिक एवं मानसिक विकास करता हुआ देश का सुयोग्य, कर्मठ, जिम्मेदार एवं ईमानदार नागरिक बनता है।

(4) क्रियाशीलता (Activity) - आवास व्यक्ति को क्रियाशील रहने के लिए उपयुक्त स्थान प्रदान करता है। भोजन पकाने, नहाने, वस्त्र धोने, पढने-लिखने आदि अनेकानेक क्रियाएँ घर में ही की जाती है। व्यक्ति घर में ही विश्राम करता है तथा रात्रि में चैन की नींद सोता है। सन्तानोत्पत्ति क्रिया भी घर में ही की जाती है। अत: आवास व्यक्ति की क्रियाशीलता में वृद्धि करता है।

(5) सामाजिक प्रतिष्ठा (Social Prestige) - स्वयं के निजी आवास से व्यक्ति को प्रतिष्ठा मिलती है। अक्सर यह देखने में आता है कि जिनके पास जितना ही अधिक सुन्दर, भव्य, सुविधापूर्ण एवं सुसज्जित स्वयं के निजी मकान होते है उनको समाज में उतना ही अधिक मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा मिलती है। स्वयं के मकान में रहने से जो प्रतिष्ठा मिलती है वह किराये के मकान में रहने से कतई नहीं मिलती।

(6) अभिव्यक्ति (Expression) - आत्म अभिव्यक्ति (Self Expression) मनुष्य की एक स्वाभाविक मनोवैज्ञानिक आवश्यकता है जिसकी पूर्ति वह आवास के माध्यम से करता है। आवास को देखकर इस बात का आसानी से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि उसमें निवास करने वाले लोगो की रूचि एवं व्यक्तित्व किस प्रकार का है? इससे लोगो की सादगी अथवा फैषनपरस्त होने का बोध होता है।

(7) मनोरंजन (Entertainment) - यद्यपि आज के आधुनिक युग में, मनोरंजन के साधनों की कोई कमी नहीं है। परन्तु सही अर्थो में, व्यक्ति को मनोरंजन घर में ही मिलता है। दिनभर के थके-हारे व्यक्ति को बच्चों की खिलखिलाती हँसी, पत्नी का प्यार भरी मुस्कान, क्षण भर में उसके थकान को चकनाचूर कर देती है। सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ मनोरंजन का कोई साधन नहीं है, वहाँ लोग घर में ही अपने परिवार के साथ हँसी-मजाक कर स्वस्थ मनोरंजन करते है। शहरों में भी जहाँ मनोरंजन के सभी साधन उपलब्ध है, सिनेमाघर, थियेटर, पार्क, चिड़ियाघर, सर्कस आदि विद्यमान है, परन्तु वहाँ भी अधिकांश लोग अपने घर में ही मनोरंजन की व्यवस्था करते है। क्योंकि आज की भागदौड भरी जिन्दगी में रोज-रोज सिनेमाघर जाना या बाहर की सैर करना सम्भव नहीं है। अत: व्यक्ति को आवास में ही मनोरंजन की व्यवस्था करनी पड़ती है। घर में रेडियो सुनकर, टी-वी-देखकर, कैरम, लूडो आदि खेलकर व्यक्ति मनोरंजन करता है।

(8) विश्राम (Rest) - आज की भागदौड व तनाव भरी जिन्दगी में व्यक्ति को सुस्ताने एवं आराम की सख्त आवश्यकता होती है। इसके अभाव में जीवन नीरस, कुंठित एवं व्यथापूर्ण हो जाता है। दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु व्यक्ति को घर से बाहर जाकर नौकरी, धंधा, मजदूरी, व्यवसाय आदि करना पड़ता है। दिनभर के थके हारे व्यक्ति को पूर्ण विश्राम घर में ही मिलता है। अपने घर में वह मन पसन्द इच्छानुकूल जीवन व्यतीत करता है तथा सुख व शान्ति का अनुभव करता है।

(9) सामाजिक गुणों का विकास (Development of Social Qualities) - सामाजिक गुणों का विकास (यथा- प्रेम, दया, त्याग,

करूणा, सौहार्द, सहयोग, विनम्रता आदि) घर में ही होता है। घर में बालक अपने माता से ही इन गुणों को सीखता है तथा जीवन में अपनाता है।

(10) संग्रह (Storage) - वस्तुओं का संग्रह करना मानव की सहज स्वाभाविक आदत है। जीवन रक्षक, आरामदायक एवं विलासितापूर्ण वस्तुओं का संग्रहण व्यक्ति अपने आवास में ही करता है। अनाज, दाल, तेल, मसालें, बर्तन, बिस्तर, कूलर, उपकरण, टेलीविजन, रेडियो, साज-सज्जा की वस्तुएँ आदि का सुरक्षापूर्वक संग्रहण घर में ही किया जाता है।

(11) सांस्कृतिक सुरक्षा (Cultural Protection) - प्रत्येक जाति की अपनी सांस्कृतिक मान्यताएँ (Beliefs), परम्पराएँ (Traditions), मूल्य (Values) एवं अभिवृतियाँ (Attitudes) होते है। इनकी सुरक्षा एवं विकास आवास के माध्सम से ही होती है। परिवार इन मूल्यों, परम्पराओं, मान्यताओं, धरोहरों को सहेज-सँभालकर रखता है तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी इनका हस्तान्तरण करता रहता है। घर में संस्कार पुष्पित-पल्लिवत होते है तथा वर्शों तक सुरक्षित रहते है। भले ही व्यक्ति अपने देश को छोड़कर विदेषों में बस जाएँ परन्तु वह अपने संस्कार एवं मूल्यों को वहाँ भी स्थापित करता है और उसी के अनुसार आचरण एवं व्यवहार करता है। इन्ही कारणों से संस्कार, मूल्य, मान्यताएँ आदि जीवित रहते है।

पारिवारिक जीवन चक्र (Family Life Cycle) - भवन निर्माण करते समय पारिवारिक जीवन चक्र (Family Life Cycle)को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। प्रत्येक परिवार पारिवारिक जीवन चक्र की इन अवस्थाओं से होकर गुजरता है-

(1) आरम्भिक अवस्था (Beginning Stage),

(2) विस्तार अवस्था (Expanding Stage),

(3) संकुचित अवस्था (Contracting Stage)

प्रथम एवं तृतीय अवस्था में बड़े आवास की जरूरत नहीं पड़ती। परन्तु द्वितीय अवस्था में जब परिवार का आकार बड़ा होने लगता है, परिवार में

दो-तीन बच्चे हो जाते है, वे बच्चे बड़े होकर स्कूल, कॉलेजों में अध्ययन करने लगते है। उनके मित्र घर आने लगते है, विवाह हेतु रिष्तेदार आने लगते है, कुटुम्ब बढ़ता है तब बड़े आवास की जरूरत पड़ती है।

7.5 गृह निर्माण के उद्देश्य (Objectives of House Construction)

प्रत्येक व्यक्ति एक सुन्दर, सुसज्जित, भव्य एवं आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त मकान में रहने की इच्छा रखता है। गृह निर्माण के मुख्य उद्देश्य निम्नानुयार है-

(1) आवास में हमें सुरक्षा मिलती है। यह हमें वर्षा, आँधी, तूफान, धूप, लू, ठंड, ओले आदि से सुरक्षा करता है।

(2) आवास में सामाजिक, मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक, संवेगात्मक, ज्ञान, खेल आदि का विकास होता है।

(3) आवास आकस्मिक दुर्घटनाओं से हमारी रक्षा करता है।

(4) निजी आवास से व्यक्ति को मानसिक संतुष्टि मिलती है।

(5) यह बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए स्थान प्रदान करता है।

(6) आवास में हमें एकान्तता एवं गोपनीयता मिलती है।

(7) यह विभिन्न प्रकार के जंगली-जानवरों, कीड़े-मकोड़े, साँप-बिच्छू, चोर-डकैत आदि से सुरक्षा प्रदान करता है।

(8) मकान में हमें धूल-धुँआ आदि से होने वाली बीमारियों से सुरक्षा मिलती है।

(9) आवश्यकता की सभी वस्तुओं के संग्रहण के लिए उपयुक्त स्थान मिलता है।

(10) व्यक्ति अपने बच्चों एवं परिवार के साथ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए विकास के कार्य में गतिशील रहता है।

7.6 सारांश

परिवार के लिए आवास की आवश्यकता : मात्र एक नजर में

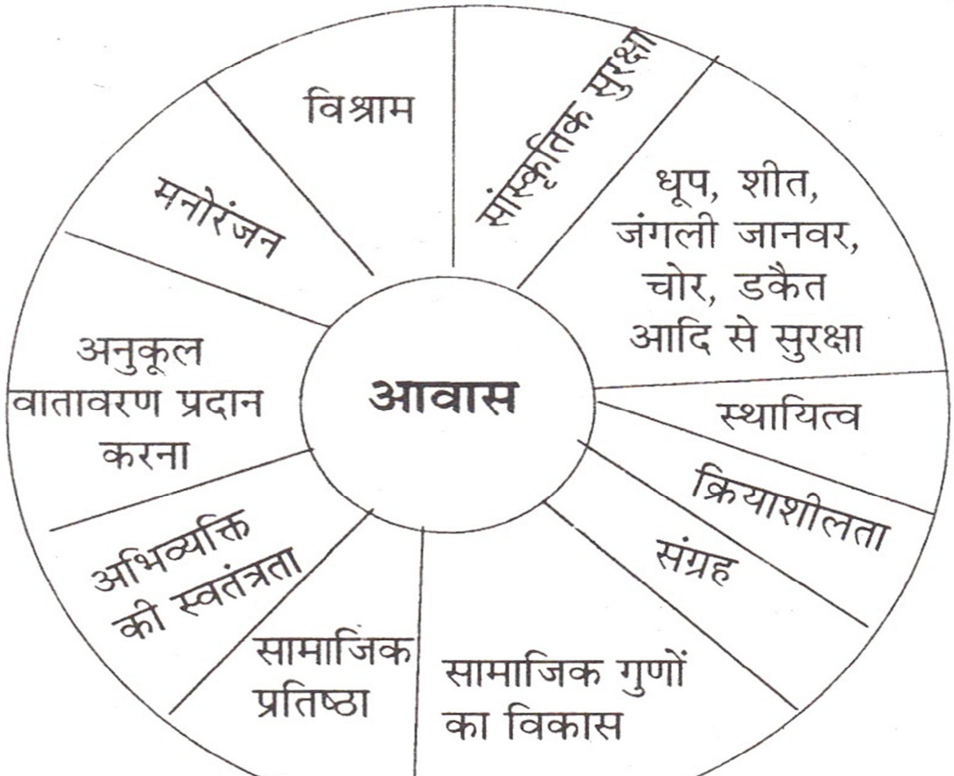

गृह निर्माण योजना के सिद्धान्त एवं कारक : मात्र एक नजर में

(Principles and Factors of House Planning : At a Glance)

सिद्धान्त (Principle)	कारक (Factor)
-लागत/आर्थिक व्यय अभिव्यंजकता- -कार्यात्मकता सुन्दरता- -एकान्तता/गोपनीयता परिवर्तनशीलता- -वृहदता कमरों का समूहीकरण- -फर्नीचर व्यवस्था आने-जाने का रास्ता- -भवन का बाह्य रूप	परिवार की आर्थिक स्थिति- व्यवसाय- परिवार के सदस्यों की संख्या- परिवार का प्रकार- परिवार में कमाने वाले- सदस्यों की संख्या- कार्यस्थल से दूरी- पारिवारिक आवश्यकता- पारिवारिक जीवन-चक्र-

7.7 अभ्यास प्रश्न

1. आवास का अर्थ बताइए ?

2.घर और मकान में अंतर समझाओ ?

3.परिवार के लिए आवास की आवश्यकता को विस्तारपूर्वक समझाओ ?

4.गृह निर्माण के उद्देश्य को समझाओ ?

7.8 संदर्भ ग्रन्थ

1. गृह व्यवस्था है। गृह सज्जा — बी.के. बख्शी, साहित्य प्रकाशन आगरा
2. गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा — डा. वृंदा सिंह, पंचशील प्रकाशन जयपुर
3. गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य — विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, डा. रीना खनुजा

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi
"Managment for Morden Families Sterling"
5- Nickel Dorsey M & Sons New york
"Managment in Family

इकाई 8

डिजाइन

8.0 उद्देश्य
8.1 प्रस्तावना
8.2 डिजाइन के प्रकार
8.2.1 रचनात्मक डिजाइन
8.2.2 सजावटी डिजाइन
8.3 रचनात्मक व सजावटी डिजाइन में अंतर
8.4 अच्छे डिजाइन की पहचान
8.5 डिजाइन के गुण
8.6 सारांश
8.7 अभ्यास प्रश्न
8.8 संदर्भ ग्रन्थ

8.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत

- छात्र डिजाइन के प्रकार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- छात्र रचनात्मक व सजावटी डिजाइन में अंतर के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- छात्र अच्छे डिजाइन की पहचान के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- छात्र डिजाइन के गुण के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

8.1 प्रस्तावना

कला चाहे कोई भी हो, जैसे - मूर्तिकला, चित्रकला, ललित कला, हस्तशिल्प कला भवन निर्माण कला, स्थापत्य कला अथवा गृह सज्जा कला सभी को सुन्दर, आकर्षण जीवन्त सम्मोहक एवं अद्वितीय बनाने के लिए डिजाइन का उपयोग किया जाता है। डिजाइन के अभाव में तो कलात्मक वस्तुओं का निर्माण संभव ही नहीं है। डिजाइन कलाकार के मस्तिष्क का उपज होती है। जिसे वह अपनी कला के माध्यम से पुष्पित पल्लिवित एवं विकसित करता है।

डिजाइन अंग्रेजी भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ होता है - नमूना । डिजाइन शब्द का प्रयोग प्रारूप, विन्यास अथवा आलेखन में भी किया जाता है। यदि इस शब्द के अर्थ का गहराई पर विचार करें तो स्पष्ट ज्ञात होता है कि - डिजाइन वह है जिससे व्यक्ति की विभिन्न वस्तुओं के चुनाव तथा व्यवस्थापन को क्रमबद्ध एवं सुन्दर तरीके से करना सीखता है। सरल शब्दों में, रेखाओं, आकार, आकृति, खुला स्थान, रंग एवं बनावट को व्यवस्थित, सुन्दर एवं कलात्मक रूप प्रदान करना ही डिजाइन कहलाता है।

स्टेला सुन्दराज के शब्दों में Design is defined as any arrangement of line, form, colour, space, value and texture. It involeves the proper choice of forms and colurs and arranging them aesthetically and tastefully.

कला के तत्वों एवं सिद्धान्तों की भांति ही सुन्दर नमूना बनाने के लिए अनुपात, संतुलन, लय, अनुरूपता एवं बल पर ध्यान दिया जाता है। कला के डिजाइन की बारीकियों का आलेखन सिखाया जात है। एक उत्कृष्ट एवं श्रेष्ठ डिजाइन वही होता है - जो देखने में सुन्दर लगे, आंखों को सुख व

शान्ति पहुंचाए तथा मन को प्रसन्नता व उल्लास के साथ शीतलता एवं संतोष प्रदान करें। कलात्मक अपनी कलाकृति में नित्य ही नये नये डिजाइनों का प्रयोग करता है तथा उसे सुन्दर, अलौकिक, अद्वितीय, अनोखा, एवं अनूठा रूप प्रदान करता है।सुन्दर डिजाइनो से बनी वस्तुएं सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं तथा व्यक्ति उस कलाकृति की प्रशंसा किये बगैर नहीं रहता। चित्रकला, मूर्तिकला, हस्तशिल्प कला एवं अन्य कलाओं की भांति गृह सज्जा भी एक उच्च कोटि की कला हैं। इस कला को निखारने व आकर्षक बनाने के लिए डिजाइन की विशेष महत्ता है। घर की सजावट में डिजाइन कैसी होनी चाहिए ताकि सजावट सुन्दर एवं आकर्षक दिखे, इसके लिए डिजाइन के संबंध में गृहिणी को पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। एक सुन्दर डिजाइन को बनाने में जिन आधार वस्तुओंकी जरूरत होती है, वे है - रेखाएं, आकार, रंग, बनावट एवं विचार। इन पांचों तत्वों के अनूठे मेल से सुन्दरडिजाइन का निर्माण होता है। यद्यपि न सभी के बारे में कला के तत्वों में विस्तार से बनाया गया है, फिर भी यहां इसका संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है -

1. **रेखाएं -**डिजाइन के निर्माझा में रेखाओं की महत्ती भूमिका है। इसके बिना तो किसी भी तरह का डिजाइन का निर्माण संभव नहीं। रेखाएं विभिन्न प्रकार की होती है। तथा आडी, खडी, संमान्तर, विषम वक्र, तिरछी आदि। इन रेखाओं में आवश्यकता व इच्छानुसार परिवर्तन करके सामंजस्य बिठाकर एक से एक सुन्दर एवं अद्‌भूत नमूने का निर्माण किया जाता है। वस्तुत: डिजाइन कलाकार की दिमाग एवं बुद्धि की उपज है।
2. **रंग -**एक सुन्दर एवं आकर्षक डिजाइन के निर्माण में रंगों का अमूल्य योगदान होता है। कोई भी नमूना तब तक सुन्दर नहीं लगता जब तक कि उसमें उपयुक्त रंग नहीं भरा जाए। डिजाइन के अनुसार ही रंगों का प्रयोग किया जाना चाहिए। परन्तु यह भी सच है कि अधिक रंगों के प्रयोग से भी डिजाइन बहुत अधिक सुन्दर एवं आकर्षक नहीं लगता बल्कि घिचपिच हो जाने के कारण आंखों की क्षोभ एवं कष्ट पहुंचाता है। क्योंकि इसमें क्लिष्टता एवं जटिलता उत्पन्न हो जाती है। इसी तरह डिजाइन में प्रयुक्त किये जाने वाले

सभी रंग चटक एवं गर्म ही नहीं होने चाहिए। गर्म रंगों के साथ शीतल रंगों के प्रयोग से डिजाइन सुन्दर एवं आकर्षण दिखते है। रंगों के शेड का भी प्रयोग किया जाना उपयुक्त रहता है।सुन्दर एवं मनोहारी डिजाइन बनाने के लिए 3-4 रंगों से अधिक रंगों का प्रयोग निषिद्ध समझना चाहिए। कम से कम रंगों वाला डिजाइन ज्यादा सुन्दर एवं आकर्षक दिखते है।

3. **आकार -**रेखाओं की भांति ही डिजाइन के निर्माण में आकार का अमूल्य योगदान है। डिजाइन विभिन्न आकार के बनाये जाते है। कुछनमूने बड़े होते है तो वर्गाकार या त्रिभुजाकार । किस वस्तु पर किस आकार के नमूने ज्यादा शोभेंगे वह कलाकार की बुद्धि, कल्पनाशक्ति एवं सृजनशीलता पर निर्भर करता है।
4. **बनावट -**एक सुन्दर एवं कलात्मक डिजाइन के निर्माण में बनावट का अति महत्वपूर्ण स्थान है। डिजाइन की बनावट कैसी होनी चाहिए। यह कलाकार की रूचि, ज्ञान, कल्पनाशील योग्यता एवं सृजनशीलता पर निर्भर करता है। बनावट विभिन्न प्रकार के होते है जैसे - चिकना, खुदरापन, कोमल, रोएदांए, दानेदार, चट्टानी आदि।
5. **विचार -** किसी भी नमूने के निर्माण से पहले उसकी एक योग्यता, एक रूपरेखा मस्तिष्क से बना लेनी चाहिए। फिर उसी के अनुरूप डिजाइन बनाना चाहिए। यदि बिना योजना बनाये ही डिजाइन बनाये जायं तो वैसी डिजाइन नहीं बन पाएगी जैसा कि चाहते हैं। अत: डिजाइन बनाने से पूर्व गूढ़ चिन्तन आवश्यक है।

8.2 डिजाइन के प्रकार (Types of Drsire)

डिजाइन विभिन्न प्रकार के होते है। परन्तु गृह सज्जा में मुख्यत: दो ही प्रकार के नमूनों का उपयोग किया जाता है और वे दोनों प्रकार है - रचनात्मक एवं सजावटी।

डिजाइन के कुछ प्रमुख प्रकार निम्नानुसा है -

- **प्राकृतिक डिजाइन -** जब कलात्मक प्राकृतिक दृश्यों को देखकर ठीक उसी की तरह डिजाइन बनाने का प्रयास करता है तो उसे प्राकृतिक

डिजाइन कहते हैं, जैसे पक्षियों, पशुओं, पेड पौधे, वन, फूल , पहा, नदियां झरने आदि।

- **ज्यामितीय डिजाइन -** विभिन्न रेखाओं को मदद में जब डिजाइन बनाया जाता है, तो उसे ज्यामितीय डिजाइन कहते हैं, जैसे गोल, चौकोर, आयताकार, तिरछी, बूंदे, खडी रेखाएं, आडी रेखाएं आदि। वस्तुएं ज्यामितीय डिजाइन कलाकार की बुद्धि उपज है जिसे वह अपनी कला के माध्यम से उकेरता है। इस प्रकार के डिजाइन के निर्माण के लिए विभिन्न पैमानों की सहायता लेनी पडती है। अल्पना के निर्माण में ज्यामितीय नमूने ही प्रयुक्त किये जाते है।
- **सूक्ष्म निर्माण -** इस डिजान के निर्माण में कलात्मक अपनी मर्जी व इच्छा से जैसा चाहता है, वैसा डिजाइन बनाना है। इन्हें बनाने के लिए किसी प्रकार के विचार विमर्श की जरूरत नहीं होती। कलात्मक किसी विशेष नियमों, अथवा ब्राह्य निर्देशों से बंधा नहीं होता है। इस प्रकार के डिजाइन का अपना कोई अर्थ या अभिप्राय नहीं होता। हरेक देखने वाला व्क्ति इन्हें देखकर अपनी अपनी दृष्टि से इसका अर्थ निकालता है। आजकल इस प्रकार के डिजाइन का गृह सज्जा में काफी उपयोग होने लगा है।
- **रचनात्मक डिजाइन -** विभिन्न रेखाओं, आकारों, आकृतियों, रंगों एवं बनावट का प्रयोग कर जो डिजाइन बनाये जाते हैं वे रचनात्मक कहलाते है। ये डिजाइन किसी वस्तु, कागज, स्थान, वस्त्र, लकडी आदि कहीं पर भी बनाये जा सकते हैं। यह डिजाइन पेपर पर बना पेंसिल में एक साधारण सा ड्राईंग भी हो सकता है
- **सजावटी, सौन्दर्यात्मक डिजाइन -** वस्तु को अत्यन्त सुन्दर, आकर्षक एवं अद्वितीय बनाने के लिए इस प्रकार के डिजाइन का उपयोग किया जाता है। सजावटी डिजाइन का आधार रचनात्मक डिजाइन ही होता है। रंगों एवं रेखाओं की मदद में सजावटी डिजाइन बनाया जाता है।

यद्यपि उपर्युक्त वर्णित इस प्रकार के डिजाइनों का उपयोग गृहसज्जा में किया जाता है। परन्तु अधिकांशत: रचनात्मक एवं सजावटी नमूने ही

गृहसज्जा में उपयोग आते है। अत: विस्तारपूर्वक हम इन्हीं डिजाइनों का अध्ययन करेंगे।

8.2.1 रचनात्मक डिजाइन

रचनात्मक डिजाइन वह डिजाइन है जिसमें रेखाओं, आकार, रंगों बनावअ एवं विचारों का प्रयोग करके व उन्हें व्यवस्थित रूप प्रदान करके बनाया जाता है। वह डिजाइन मुख्यत: उपयोगिता की दृष्टि से बनायी जाती है। सुन्दरता को गौण ही रखा जात है। गोल्डस्टीन के शब्दों में - वे डिजाइन जो आकार, रूप, रंग, एवं बनावट के माध्यम से बनाये जाते है, चाहे वे खुले स्थान में बनाये रखे हो अथवा कागज पर बनाये गये हो रचनात्मक डिजाइन कहलाते है।

Structural design is he design made by the size from colour and texture of an object itself in space or in a drawing of that object worked out on paper.

रचनात्मक नमूने सजावटी नमूनों के आधार होते है। उपयोगिता की दृष्टि से इनका महत्वपूर्ण स्थान होता है। उदाहरणार्थ - मान लिजिए एक पलंग देखने में बहुत ही सुन्दर व आकर्षक है परन्तु उसकी उंचाई 3.5 फीट, चौडाई 4 फीट एवं लम्बाई 5 फीट है जिसके कारण सोने में तफलीफ होती है तो वैसा डिजाइन किसी काम का नहीं होता क्योंकि इसकी उपयोगिता ही नहीं है। दूसरा उदाहरण - गैस स्टोव को ही ही लें। एक गैस स्टोव भी किसी काम का नहीं होता। कारण स्पष्ट है - इन वस्तुओं की उपयोगिता का ह्रास है। अर्थात् उपयोगिता शून्य के बराबर है। इसलिए रचनात्मक डिजाइन बगैर उपयोगिता के सुन्दरता का कोई महत्व नहीं होता। इसके विपरीत यह कचरे के समान ही होता है जिसे कबाडियों को ही देना उपयुक्त रहता है।

रचनात्मक डिजाइन बनाने के मुख्य चार आधार होते है, वे निम्नानुसार हैं -

- डिजाइन सादा एवं सरल होना चाहिए।

- डिजाइन सुन्दर होने के साथ ही उद्देश्यपूर्ण भी होना चाहिए।
- डिजाइन की बनावट में उचित अनुपात होना चाहिए।
- डिजाइन जिस चीज से बनायी गयी उसके लिए उपयुक्त होना चाहिए।

उपर वर्णित बातों को ध्यान में रखकर रचनात्मक डिजाइन बनाने में वे सुन्दर आकर्षक एवं मोहक तो दिखते ही हैं साथ ही उनकी उपयोगिता में वृद्धि भी होती है।

रचनात्मक डिजाइन की विशेषताएं

- डिजाइन सादा व सरल होना चाहिए - रचनात्मक डिजाइन की बनावट से संबंध नहीं होता है। यह जितना अधिक सादा व सरल होगा, इसकी उपयोगिता उतनी ही अधिक होगी। वर्तमान समय में सादगी पर अधिक बल दिया जाने लगा है, क्योंकि सजावटी सामग्रियों की देखरेख, साफ सफाई, रख रखाव अत्यन्त ही कठिन एवं साध्य कार्य है। आज की भागदौड एवं संघर्ष भरी व्यस्ततम जिन्दगी में, किसी के पास इतनी फुर्सत नहीं है कि नक्काशीदार वस्तुओं की साफ सफाई देखभाल में अपना अमूल्य समय नष्ट, करें। बर्तन की खरीददारी करनी हो या तो सोफा की पलंग बनवाना या मेज फूलदान खरीदना हो अथवा अन्य कोई चीज लोगों की पहली मांग यही होती है कि डिजाइन देखने में सादा परन्तु सुन्दर एवं आकर्षक हो ताकि इनकी देखभाल साफ सफाई करना आसान हो। अधिक कटावदार व नक्काशीदार वस्तुओं में धूल गंदगी, मिट्टी जल्दी जम जाती है तथा मुश्किल से साफ होती है। एक नक्काशीदार कटोरी को ही लें। इसकी साफ सफाई करना कठिन है साथ ही जूठन लगे रहने की संभावना भी बनी रहती है। इसीलिए रसोई के बर्तन भी सादी डिजाइन के ही होने चाहिए।
- डिजाइन उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए - यही रचनात्मक डिजाइन सुन्दर कहलाता है जो जिस काम के लिए बनाये गये हैं, उसकी पूर्ति करता हो। उद्देश्यहीन डिजाइन व्यर्थ साबित होते है। इतना ही नहीं ये घर

से अनावश्यक स्थान घेरते है। इनका महत्व शून्य होता है। उदाहरणार्थ - यदि कोई पलंग सोने में आरामदेह नहीं हो तो उसका डिजाइन उद्देश्यहीन समझा जाता है। इसी तरह यदि कोई सुन्दर कलम या कलम यदि अच्छी लिखावट करने में असमर्थ है त बवह किसी मतलब का नहीं होता क्योंकि कलम का उद्देश्य ही है लिखना। इसी तरह यदि कुर्सी की टांग छोटी बडी हो, जिससे बैठने में तफतीफ हो तो वैसी कुर्सी किसी काम की नहीं होती क्योंकि उससे उद्देश्य पूर्ति नहीं होती। रचनात्मक डिजाइन का गलत प्रयोग करने से भी उद्देश्यों की पूर्ति नहीं होती। उदाहरणार्थ - शयनकक्ष के डबल बेड को यदि बैठक कक्ष में रख दिया जाए तो वह उद्देश्यहीन हो जाता है अथवा बैठक कक्ष के सोफा सेट व कुर्सी मेज का भण्डार कक्ष में रखा जाए तो वह उपयोगी नहीं होता। अत: गलत स्थान में उपयोग करने से रचनात्मक डिजाइन उद्देश्यहीन हो जाते हैफ। इसे इस तरह से समझें कि आंखों के काजल को यदि होंठ पर होंठों के लिपस्टिक को आंखों में लगाया जाए तो काजल एवं लिपिस्टिक का उद्देश्य क्या कभी पूरा होगा। युवती क्या श्रृंगार करके सुन्दर दिखेगी। उत्तर मिलता है नहीं। अत: डिजाइन सदैव उद्देश्यपूर्ण होने चाहिए।

- डिजाइन की रचना में उचित अनुपात हो - रचनात्मक डिजाइन की रचना, डिजाइन की रचना, बनावट, रंग रूप, आकार, रेखा सभी कुछ में उचित अनुपात एवं संतुलन होना चाहिए। डिजाइन में अनुपात के लिए समानुपात के नियम का प्रयोग किया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ - एक डबल बेड की लम्बाई एवं चौडाई 6x 6 फीट होनी इसका सही अनुपात दर्शाता है । अब यदि इसकी लम्बाई एवं चौडाई 6x4 फीट या 6x2 फीट रखा जाए तो वह डबल बेड न होकर तख्त, चौकी अथवा बेंच दिखेगा न कि डबल बेड । कारण स्पष्ट है - इनके आकार में सही अनुपात नहीं है।
- प्रकृति स्वयं इस नियम की पालना करके ही सृष्टि की रचना की है। प्रकृति की प्रत्येक चीज में अनुपात देखने को मिलता है। इसीलिए प्राकृतिक चीजें हमें अपनी ओर लुभाती है आकर्षित करती है।

- डिजाइन उपयोगी होनी चाहिए - रचनात्मक डिजाइन का निर्माण करते समय उसकी उपयोगिता पर भी ध्यान दिया जाना अत्यावश्यक है। यदि डिजाइन उपयोगी नहीं होगी तो वह व्यर्थ साबित होगी। उदाहरणार्थ - यदि रसोईघर के लिए एक सिंक बनायी जाए परन्तु उसका आकार इतना छोटा हो कि भोजन की तैयारी में बर्तनों की मांजने धोने में परेशानी हो तो वह सिंक उपयोगी नहीं है। केवल देखने के लिए है। इसी तरह यदि अध्ययन हेतु मेज, कुर्सी बनानी है तो उसकी लम्बाई चौडाई एवं उंचाई उपयुक्त होनी चाहिए ताकि उस पर बैठकर पढने लिखने, मनन करने, चिन्तन करने का काम सुविधापूर्वक किया जा सके। इसी तरह बालकों के कक्ष में आलमारी या केश बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वे बालकों की पहुंचे के भीतर हो। वहां से बच्चे अपना सामान आसानी से निकाल सकते हों, तभी शो केश या आलमारी की उपयोगिता है अन्यथा नहीं।
- डिजाइन सुन्दर हो - डिजाइन सादा, सरल, उपयोगी होने के साथ ही सुन्दर भी होना चाहिए। सुन्दर वस्तुएं सभी को अच्छी लगती है। एक वस्तु भले ही उपयोगी हो परन्तु यदि वह सुन्दर नहीं हो, वह देखने में भद्दा अनाकर्षक बेजान एवं प्राणहीन लगता हो तो उसका उपयोग सज्जा में नहीं किया जाता। सादेपन में ही उचित रंग, आकार, बनावट रेखा आदि का उपयोग कर वस्तु को सुन्दर बनाया जाए तो वह डिजाइन अत्यन्त ही सुन्दर होगा तथा सोने पर सुहागा वाली कहावत को चरितार्थ करेगा।
- डिजाइन सामग्री के अनुकूल हो - रचनात्मक डिजाइन सामग्री के अनुकूल होनी चाहिए। अर्थात् जिस सामग्री से जिन वस्तुओं का निर्माण होना उपयोगी एवं उद्देश्यपूर्ण होता है, वही बनाना चाहिए। यदि वस्तु उसी सामग्री अनुकूल नहीं बनाये जाएंगे तो वे ही अनुपयोगी होगे जैसे पलंग बनाने कके लिए लोहा अथवा लकडी इस्तेमाल किया जाता है। अब यदि लोहा, लकडी के स्थान पर कांच या मिट्टी के पलंग बनाये जएं तो वह उपयोगी नहीं होगा। वैसा पलंग केवल मोडेल अथवा प्रदर्शनी लगाने के लिए ही होगा। अत:

वस्तु जिस चीज की बनायी जानी है उसी चीज का प्रयोग किया जाना चाहिए।

- डिजाइन व्यक्ति की रूचि के अनुकूल हो - रचनात्मक डिजाइन बनाते समय व्यक्ति को रूचि एवं पसन्द को भी ध्यान रखना आवश्यक है तभी उस वस्तु का सही और पूरा पूरा नहीं है। यदि उसे शर्ट, पैंट ही सिलवाकर पहनने को दे दिया जाए तो वह उसके लिए अनुपयोगी हो जाएगा। भले ही उसे शर्ट, पैंट के चुनाव एवं निर्माण में उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखा गया हो। इसीलिए रचनात्मक डिजाइन का निर्माण करते समय व्यक्तिगत रूचि एवं पसन्द को भी स्थान दिया जाना चाहिए।

एक सुन्दर एवं श्रेष्ठ रचनात्मक डिजाइन को बनाने हेतु उपर्युक्त विशेषताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है तभी एक सुन्दर, आकर्षक, मोहक एवं सरल डिजाइन का निर्माण हो सकेगा

8.2.2 सजावटी डिजाइन

गृहसज्जा मे सजावटी जिसे आलंकारिक या सौन्दर्यपरक डिजाइन भी कहते है, का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह डिजाइन कला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसका उपयोग रचनात्मक डिजाइन का सजाने में किया जाता है। इसकी सहायता में एक अति साधारण से रचनात्मक डिजाइन को भी अत्यधिक सुन्दर, आकर्षक एवं अलौकिक बना दिया जाता है। दीवारों पर टांगे जाने वाले चित्र, मेज पर बिछाये जाने वाले मेजपोश टीवी कवर शो केश में रखे जाने वाले कलमदान, कलात्मक मूर्ति आदि में सजावटी डिजाइन का उपयोग किया जाता है।

सजावटी डिजाइन में सुन्दरता, कलात्मकत्ता एवं आकर्षण पर बहुत अधिक बल दिया जाता है। इसकी उपयोगिता वाले पक्ष को गौण ही रखा जाता है। सजावटी डिजाइन के आधार रचनात्मक डिजाइन होता है। इसके अभाव में सजावटी डिजाइन का कोई अस्तित्व नहीं होता क्योंकि जब आणार ही नहीं होगा तो सज्जा कहीं किस पर की जाएगी।

सजावटी डिजाइन को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है - रचनात्मक डिजाइन की खूबसूरती, सौन्दर्यता एवं आकर्षण बढ़ाने के लिए जिन रेखाओं, आकृतियों, रंगों, आकार, विचारों, बनावटी एवं अन्य सजावटी सामग्रियों का उपयोग किया जाता है तथा वे सभी मिलकर रचनात्मक डिजाइन को सुन्दर एवं अलौकिक, अद्वितीय एवं नैसर्गिक बनाते हैं, तो यह डिजाइन सजावटी कहलाता है।

गोल्डस्टीन के शब्दों में - जिन रेखा, रंग या सजावटी के अन्य उपकरणों का प्रयोग रचनात्मक डिजाइन को उच्च स्तर प्रदान करने के लिए किया जाता है तथा वे सभी मिलकर डिजाइन को उच्च स्तर प्रदान करते है, तो वह सजावटी डिजाइन कहलाता है।

Any lines colour or materials that have been applied to a structural design for the purpose of adding a richer quality to its constitute is called decorative designs.

सजावटी डिजाइन का मुख्य उद्देश्य ही सौन्दर्य, आकर्षण एवं अलौकिंक उत्पन्न करना होता है। सुन्दर वस्तुएं सभी को सम्मोहित करती है। सुन्दरता का पान हम सभी करना चाहते है। ये हमारे मन को आनन्दित कर उल्लसित करती है। आंखों को सुख, शान्ति एवं शीतलता पहुंचाती है। व्यक्ति कुछ क्षण के लिए अपने समस्त दुखों, तफलीफों, कष्टों को भूलकर असीम आनन्द के सागर के गौते लगाने लगता है। इसीलिए सजावटी डिजाइन का उपयोग गृहसज्जा में किया जाता है ताकि घर के सभी सदस्य खुश एवं प्रसन्न रहें। एक साधारण सी शक्ल सूरत की स्त्री भी सुन्दर वस्त्रों एवं आभूषणों को धारण कर अत्यन्त सुन्दर दिखने लगती है। सौन्दर्य प्रसाधनों के प्रयोग से सांवला चेहरा भी खिल उठता है। यदि शारीरिक बनावट में कोई दोष भी होता है तो वह सजावटी डिजाइन से अलंकृत होकर छिप जाता है। अत: सौन्दर्य की दृष्टि से सजावटी डिजाइन का अति महत्वपूर्ण एवं अमूल्य स्थान है। सजावटी डिजाइन का प्रयोग सौन्दर्य वृद्धि वृद्धि के लिए किया जाता है। अत: इसका निर्माण करते समय कुछ महत्वपूर्ण बातों को मस्तिष्क में रखना आवश्यक है -

- सजावटी एक सीमा में की जानी चाहिए - सजावटी एक सीमा में की जानी चाहिए। आवश्यकता से अधिक सजावट करने से

वस्तु की मौलिकता सुन्दरता एवं आकर्षण भी नष्ट हो जाता है। साथ ही भद्दा अनाकर्षक, धारणहीन एवं बनावटी दिखने लगता है। अति सर्वत्र वर्जयते की सिद्धान्त की पालना करते हु ही बनावट की जानी चाहिए। आवश्यकता से अधिक सजावटी चीजें आखों को चूभती है मन में व्यग्रता उत्पन्न करती है।

प्रकृति की प्रत्येक रचना मे सजावट है, परन्तु वह एक सीमा में ही है। तभी प्राकृतिक दृश्य, मनोरम सुहावने एवं लुभावने लगते है। अत्यधिक सजावटी से वस्तु की सुन्दरता में वृद्धि तो कतई नहीं होती परन्तु उपयोगिता अवश्य नष्ट हो जाती है और वह केवल विलासिता की ववस्तु बनकर रह जाती है। अत: आवश्यकता से अधिक सजावट मात्र धन, समय एवं ऊर्जा की बर्बादी हैं

- सजावट के पुनरावृति नहीं की जानी चाहिए - सजावट करते समय यह ध्यान रखना भी जरूरी है कि सजावट में पुनरावर्ती हीं हो। कोई भी सुन्दर कलात्मक एवं सजी हई वस्तु की फिर से सजाने से मौलिक सुन्दरता, आकर्षण एवं सम्मोहक शक्ति नष्ट हो जाती है। इतना ही नहीं। वस्तु अपनी मौलिक सुन्दरता खो देता है। डिजाइन घिनपिच अस्पष्ट दिखने लगता है। अत: सजावटी से पुनरावृत्ति पूर्णत: निषेध समझना चाहिए। उादारणार्थ - यदि किसी फ्रॉक को सुन्दर लेस एवं रेशमी धागे से कढाई करके सजाया गया है तो फिर उसकी सजावट पेन्टिग अथवा छपाई करके नहीं की जानी चाहिए क्योंकि इससे फ्रॉक सुन्दर नहीं दिखेगा। इसकी मौलिक सुन्दरता भी नष्ट हो जाएगी इसी प्रकार प्रिन्टेड मेजपोश से कढाई नहीं शोभता।
- सजावटी पृष्ठभूमि के अनुसार होनी चाहिए - सजावट करते समय उसकी पृष्ठभूमि पर अध्यान देना अत्यावश्यक है। पृष्ठभूमि के अनुसार सजावट करने से ही डिजावनी शोभती है तथा उसकी आकर्षण एवं सौन्दर्यता से चार चांद लग जाते है। हम जानते हैं, सजावटी डिजाइन का आधार रचनात्मक डिजाइन की है। रचनात्मक डिजाइल के अभाव में तो सजावटी डिजाइन की

कल्पना भी की जा सकती । इसके बिना सजावटी डिजाइन नहीं बन सकता। क्योंकि जब आधार ही नहीं होगा, तो सजावट किस पर की जाएगी। इसलिए सजावटी डिजाइन में रचनात्मक पृष्ठभूमि किस पर की है। यदि पृष्ठभूमि हल्के रंग की है तो सजावटी गहरे रंग में की जानी चाहिए जैसे हल्के रंग की साडी को सुन्दर बनाने के लिए गहरे रंगों से कढाई, छपाई, या पेन्टिग की जा सकती है। गहरे रंगों के पृष्ठभूमि पर हल्के रंग के डिजाइन खिलते है।

- डिजाइन में परिवर्तन (फेर बदल)करते रहना चाहिए - किसी भी वस्तु की सज्जा करते समय डिजाइन में फेर बदल, स्थानान्तरण एवं परिवर्तन करते रहने से उसकी सुन्दरता एवं आकर्षक में चार चांद लग जाते है। वस्तु का नया आयाम मिलता है। हृदय प्रफुल्लित एवं प्रसन्न रहता है। साथ ही वस्तु के प्रति रूचि एवं आकर्षण बना रहता है। उदाहरणार्थ - यदि कोई व्यक्ति दो ही ड्रेस की लम्बे समय तक बदल बइल की पहले तो वह उस ड्रेस से जल्दी ही उब जाता है। कुछ ही दिनों में उसे वह ड्रेस सुन्दर नहीं दिखता है। क्योंकि उसकी रूचि उससे हट जाती है। जबकी उसी ड्रेस की 2-3 माह के अन्तरान पर पहने और फिर कुछ दिनों के लिए संभालकर रख दे और फिर पहने तो उसकी इच्छा ड्रेस को पहनने के प्रति बनी रहती है। उससे उसे एकरसता या नीरसता उत्पन्न नहीं होती। क्योंकि वहां उसका समय समय पर परिवर्तन होता रहता है। गृहसज्जा में भी परिवर्तन आवश्यक है। वे चित्र जो एक दीवार पर काफी लम्बे समय से टंगे है यदि उसे हटाकर दूसरी दीवार पर टांगा जाए तो वे ज्यादा अच्छे एवं रूचिकर दिखते है क्योंकि वहां स्थान परिवर्तन हुआ है।
- वस्तु के ढांचे के अनुरूप ही सजावट की जानी चाहिए - जिस वस्तु का ढांचा, खाका जिस तरह का है, उसी के अनुरूप सज्जा की जाए तो वे ज्यादा सुन्दर लगते है और खिलते है। अन्यथा वस्तु बेढंगा, भद्दा, जीवनहींन एवं प्राणहीन दिखता है। उदाहरणार्थ - एक उंची छत वाली लम्बे दरवाजे पर लम्बी

धारियों वाले पर्दे लगाये जाएं तो वे जरा भी नहीं शोचते। बल्कि इससे कमरे एवं दरवाजे की लम्बाई और अधिक दिखने लगती है। इसी तरह एक दुबली पतली स्त्री को बिल्कुल चुस्त, शरीर से सटे हुए वस्त्र पहनाये जाएं तो वे जरा भी नहीं शोभते बल्कि उसमें उसका कंकाल नजर आता है। एक मोटी एवं नाटी स्त्री को बहु बडे बडे फूलों वाले डिजाइन के परिधान नहीं शोभते। इससे उसका मोटापा एवं नाटापन और अधिक दिखता है। जिससे उसका व्यक्तित्व आकर्षण नहीं दिखता । एक काले रंग के व्यक्ति पर काले अथवा गहरे रंग के परिधान नहीं खिलते। गोरे रंग के व्यक्ति पर गहरे रंग के परिधान शोभते है। ये परिधान उसके व्यक्तित्व को निखारते है। अत: उपर वर्णित उदाहरणों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि सौन्दर्य बढाने में ढांचा का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसे कदापि नकारा नहीं जा सकता। सौन्दर्य में वृद्धि तभी होगी जब व्यक्ति अपने रंग, रूप, एवं शारीरिक रचना के अनुकूल वस्त्रों को धारण करेगा।

- सजावट वस्तु, स्थान तथा पदार्थ के अनुसार की जानी चाहिए - किसी भी सजावट करने से पहले उसके प्रकार एवं किस्म पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। वस्तु किस चीज की बनी है। (यथा लकडी, लोहा, मिट्टी पत्थर, स्टील, सोना, चांदी, एल्यूमिनियम, पीतल आदि) इसे ध्यान में रखकर उसी के अनुरूप डिजाइन बनाना चाहिए। मिट्टी के बने वस्तु पर शोभता है वह लकडी पर शोभा नहीं पाता। उदाहरणार्थ - जिस रंग व डिजाइन का उपयोग मिट्टी के फूलदान पर सज्जा के लिए किया जाता है। उसी का उपयोग जेज पर नहीं शोभता। यदि मेज को भी ऐसे ही रंग, आकार, डिजाइन रेखाओं से सजाये जाएं कुशन, कालीन बैठक कक्ष में ही शोभा पाते हैं। यदि उन्हं यहां से उठाकर रसोईघर अथवा भण्डार घर में रखा जाए तो वे जरा भी नहीं शोभते । इसी तरह रसोईघर वे बर्तन रसोइघर में ही शोभा पाते हैं न कि बैठक कक्ष या शयन कक्ष में? ड्रेसिंग टेबुल को यदि बैठक कक्ष में रखा जाए तो वे भद्दे दिखते हैं तथा गृहिणी की

फुहडता तथा सज्जा के प्रति अज्ञानता का बोध कराते हैं। ये वस्तु तो शयन कक्ष में ही अच्छे लगते हैं।

रचनात्मक एवं सजावटी डिजाइनों में प्रमुख भिन्नता निम्नानुसार है जिसे इस तालिका में दर्शाने का प्रयास किया गया है -

8.3 रचनात्मक एवं सजावटी डिजाइन में अन्तर

क्र.सं.	रचनात्मक	सजावटी
1	वस्तु की उपयोगिता पर अधिक बल दिया जाता है।	वस्तु को सौन्दर्य के एवं आकर्षण पर अधिक बल दिया जाता है।
2	डिजाइन सादा, सरल एवं कम आकर्षक होता है।	डिजाइन आलंकारिक एवं सोंदर्यात्मक होता है।
3	सदगी के साथ ही मौलिक एवं वास्तविक होते है।	आवश्यकता से अधिक सजावट मौलिकता एवं वास्तविकता को नष्ट कर देती है।
4	रचनात्मक डिजाइन सजावटी डिजाइन के आधार होते हैं।	सजावटी डिजाइन रचनात्मक के आधार हीं नहीं होते है बल्कि इसी पर इनका अस्तित्व टिका रहता है।
5	रचनात्मक डिजाइन पर पुन: सजावट की जा सकती है।	पुन: सजावट करने से वस्तु भट्टा बेजान, अनाकर्षक एवं प्राणहीन दिखने लगता है।
6	इस डिजाइन को बनाने से कम खर्चा आता है।	डिजाइन निर्माण में अधिक खर्चा आता है।
7	डिजाइन बनाने में कम धन, समय व शक्ति नष्ट होती है।	डिजाइन निर्माण में अधिक समय, शक्ति पर धन व्यय होता है।
8	डिजाइन बनाने हेतु वस्तु,	सजावट से पूर्व वस्तु के

	स्थान व पदार्थ पर बहुत अधिक ध्यान देना जरूरी है।	किस्म, प्रकार, पदार्थ एवंस्थान पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।
9	वस्तु के पदार्थ किस्म आदि पर ध्यान नहीं देने से आकर्षण एवं सुन्दरता नष्ट नहीं होती है । हां, उपयोगिता अवश्य घट जाती है।	वस्तु के प्रकार, किस्म, उपलब्ध स्थान आदि पर ध्यान नहीं देने से मौलिक सुन्दरता एवं आकर्षण भी नष्ट हो जाता है।
10	यह डिजाइन स्वयं एक ढांचे का निर्माण करता है।	डिजाइन ढांचे के अनुरूप होनी चाहिए।
11	यह पृष्ठभूमि तैयार करता है।	यह पृष्ठभूमि के बाह्य धरातल की सज्जा करता है।

8.4अच्छे डिजाइन की पहचान

किसी भी वस्तु को कलात्मक रूप प्रदान करने के लिए उसकी सुन्दरता एवं आकर्षण में वृद्धि के लिए डिजाइन का श्रेष्ठ होना जरूरी है। एक अच्छा डिजाइन सभी को अच्छा लगता है, सुहाता है। सभी लोग उसकी प्रशंसा करते है। यद्यपि कौन सा डिजाइन सुन्दर है और कौन सा खराब इसके बारे में निश्चित रूप में कुछ कहना बेमानी है। क्योंकि एक डिजाइन जो एक व्यक्ति को बहुत ही सुन्दर लगती है वही डिजाइन दूसरे बहुत खराब तो तीसरे व्यक्ति को ठीक ठाक। अत: सुन्दरता देखने वालों की आखों में बसती है। यह व्यक्ति के रूचि, संस्कृति, पसन्द, शिक्षा आदि बातों पर निर्भर करता है। एक ग्रामीण स्त्री को जिस डिजाइन की साडी बहुत अच्छा लगती है वहीं साडी शहरी महिला को बहुत ही खराबे। परन्तु कुछ सुन्दरता का। वे डिजाइन जो कला के तत्वों एवं सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर बनाये जाती है। वे निश्चित रूप से सभी को सुन्दर लगते है। सभी का मन मोहते है। तो आइये जाने कि एक अच्छे डिजाइन को क्या पहचान है।

8.5 डिजाइन के गुण

- डिजाइन सादा व सरल होनी चाहिए
- डिजाइन उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए ।
- डिजाइन उपयोगी होनी चाहिए।
- डिजाइन सुन्दर होनी चाहिए।
- डिजाइन आंखों की गति प्रदान करने वाली होनी चाहिए
- डिजाइन में उचित अनुपात, संतुलन एवं लय होना चाहिए।
- डिजाइन आरामदायक होना चाहिए।
- डिजाइन मौलिकता होनी चाहिए।
- डिजाइन में रंगों का उचित मेल होना चाहिए।

8.6 सारांश

सारांश में यह कहा जा सकता है कि एक अच्छा नमूना वही कहलायेगा जो साधारण, सुन्दर, उद्देश्यपूर्ण, उपयोगी, आरामदायक एवं टिकाऊ होने के साथ ही मौलिक होना चाहिए। इनके प्रयोग से वस्तु के आकर्षण एवं सुन्दरता में वृद्धि के साथ ही उपयोगिता एवं प्रभावोत्पादन में भी वृद्धि होनी चाहिए।

8.7 अभ्यास प्रश्न

1. डिजाइन के प्रकार को बताइए ?
2. रचनात्मक व सजावटी डिजाइन में अंतर बताइए?
3. डिजाइन की पहचान को बताइए?
4. डिजाइन के गुण बताइए?

8.8 संदर्भ ग्रन्थ

1. बी.के. बख्शी, गृह व्यवस्था है गृह सज्जा, साहित्य प्रकाशन आगरा

2. डा. वृंदा सिंह, गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा, पंचशील प्रकाशन जयपुर

3. डा. रीना खनुजा, गृह प्रबंध साधन व्यवस्था विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा एवं आन्तिरक सौजन्य

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi

"Managment for Morden Families Sterling"
5- Nickel Dorsey M & Sons New york
"Managment in Family

इकाई -9

कला के सिद्धान्त (Principles of Arts)

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 कला के सिद्धान्त

9.3 अनुपात

9.4 संतुलन

9.5 लय

9.6 अनुरूपता

9.7 दबाव /बल

9.8 सारांश

9.9 अभ्यास प्रश्न

9.10 संदर्भ ग्रन्थ

9.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी-

- कला के सिद्धान्त की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- अनुपातकी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- संतुलन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- लय की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- अनुरूपता की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- दबाव /बल की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

कला जीवन के उत्कर्ष एवं आनन्द की अभिव्यक्ति होती है। कला के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की छिपी हुई भावनाओं एवं विचारों को अभिव्यक्त करता है। कला चाहे कोई भी हो, चित्रकला हो या मूर्तिकला, वस्त्र कला हो या हस्तशिल्प कला, गृह निर्माण कला हो अथवा गृह सज्जा कला, उन्हें सुन्दर, आकर्षक, मोहक एवं अलौकिक बनाने के लिए कला के सिद्धान्तों का उपयोग किया जाता है। कला मर्मज्ञों ने कलात्मक वस्तुओं के

अनूठे एवं अनोखे निर्माण के लिए कुछ सिद्धान्तों का निर्धारण किया है। जिसके उपयोग से सस्ती-से-सस्ती, साधारण-सी चीजें भी खिल उठती है। पत्थर/मिट्टी की बनी मूर्तियाँ जीवन्त हो उठती है। व्यर्थ की पड़ी वस्तुएँ उपयोगी सिद्ध हो जाती है। कला के सिद्धान्तों का उपयोग कलात्मक वस्तु की परख में भी कीया जाता है कि वे कलात्मकता की दृष्टि से उत्तम हैं या नहीं। इन सिद्धान्तों पर जितना अधिक बल दिया जाता है कलात्मकता में, गृह सज्जा में उतना हो अधिक सौन्दर्यबोध एवं आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। कलात्मक वस्तुओं के गुणात्मक मूल्यांकन के लिए भी कला के सिद्धान्तों का उपयोग किया जाता है।

9.2 कला के सिद्धान्त

1. अनुपात (Propoirton)
2. संतुलन (Balance)
3. लय (Rhythm)
4. अनुरूपता (Harmony)
5. दबाव /बल (Emphasis)

9.3 अनुपात (Propoirtin)

अनुपात कला का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। इसे सम्बन्धों का नियम" (Laws of Rules) भी कहते है। क्योंकि यह कला के तत्वों (आकार, आकृति, रंग, बनावट, प्रकाश एवं नमूनों) से सम्बन्धित है। गृह सज्जा में इसका तात्पर्य कमरे की विभिन्न वस्तुओं तथा उनके उचित आकार से है।

गृह सज्जा करते समय रेखा, आकार, स्थान, रंग, प्रकाश तथा बनावट में अनुपात होना चाहिए, तभी वह सुन्दर एवं आकर्षक दिखती है। प्रकृति स्वयं ने भी कला के सिद्धान्तों का अनुसरण करके सुन्दर एवं विस्मयकारी चीजों का निर्माण किया है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, फूल, फल, नदी, तालाब, पर्वत सभी कुछ में एक अनुपात दिखायी देता है तभी वे मनोहारी, रौचक एवं आकर्षक दिखते है। यदि कहीं भी आकार, आकृति, रंग, बनावट आदि में अनुपात भंग होता है अर्थात् वे छोटे-बड़े हो जाते है तब वस्तु सुन्दर

दिखाई नहीं देता। इतना ही नहीं वे भद्दे, अनाकर्षक एवं बदसूरत दिखते है। अत: गृह सज्जा को आकर्षक, जीवन्त, लुभावनी, सुन्दर एवं सरस बनाने के लिए अनुपात पर ध्यान दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

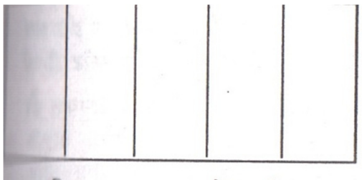

चित्र-A : अनुपात में (सही)

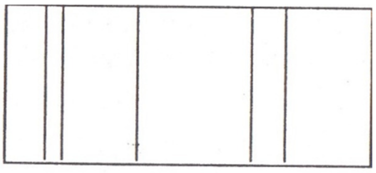

चित्र-B : अनुपात में नहीं है। (गलत)

स्टेला सुन्दरराज के “शब्दों में- ‘‘ Proportion means the relationdhip of sizes or areas to one another or to a hole”

अनुपात से आशय है-’’ मापों एवं क्षेत्रों का एक-दूसरे से या सम्पूर्ण रूप से सम्बन्ध।’’

यदि कमरा छोटा हो तथा उसे भारी व बड़े आकार के सोफा सेट, ऊँची पलंग अथवा बड़ी आलमारी से सजा दिये जाएँ तो वे जरा भी नहीं “शोभते। इसी तरह छोटे कमरे में छोटी वस्तुएँ ही पाते है क्योंकि कक्ष के आकार के अनुपात में वस्तुओं का आकार सही अनुपात में होता है। बड़े कक्ष की सज्जा हेतुभारी सोफा सेट, बड़े-बड़े नमूने वाले पर्दे, चटक रंगों के कालीन का उपयोग करने से वे सुन्दर एवं आकर्षक दिखते है। यदि इनमें छोटा एवं हल्का सोफासेट बहुत ही कम ऊँचाई के पलंग अथवा अन्य छोटी-छोटी वस्तुएँ रखकर सजायी जाएँ तो वे आकर्षक नहीं दिखते है। क्योंकि फर्नीचर पलंग एवं वस्तुओं में उचित अनुपात नहीं होता। फर्नीचर कमरे के नाप व आकार के अनुपात में हों तभी कक्ष की आकर्षक एवं मनोहारी सज्जा हो पाती है। भवन निर्माण करते समय भी खिडकियाँ एव कमरों की लम्बाई-चौड़ाईमें अनुपात होना चाहिए। वर्गाकार कमरा जरा भी नहीं “शोभते। इसी तरह बहुत अधिक लम्बाई वाला कक्ष भी सुन्दर एवं आकर्षक प्रतीत नहीं होता। साथ ही इनकी साज-सज्जा करना भी मुश्किल एवं जटिल काम है।

प्राचीन समय में यूनानियों ने भवन-निर्माण एवं कक्ष के सजावट हेतु एक निश्चित अनुपात निर्धारित किये थे। वे अनुपात आज भी प्रचलित है।

चपटी आयताकार वस्तु में सौन्दर्य व आकर्षण उत्पन्न करने के लिए लम्बाई एवं चौड़ाई में अनुपात 3 : 2, 5 : 3 तथा 8 : 5 का होना चाहिए। अर्थात् किसी वस्तु की लम्बाई यदि 3 फीट है तो चौड़ाई 2 फीट होनी चाहिए। इसी तरह त्रिविमीतिय (Three Dimension) वस्तुओं जिसमें, चौड़ाई एवं ऊँचाई हो, की सजावट के लिए चौड़ाई, लम्बाई एवं ऊँचाई में 5 : 7 : 11 का अनुपात होना चाहिए। उदाहरणार्थ- यदि किसी वस्तु की चौड़ाई 5 इंच है तो लम्बाई 7 फीट है तो ऊँचाई 11 इंच होनी चाहिए। तभी वे "शोभते है।

यदि खिड़की की चौड़ाई 3 फीट है तो ऊँचाई $4\frac{1}{2}$होनी चाहिए। इसी तरह कक्ष की चौड़ाई, लम्बाई एवं ऊँचाई में सही अनुपात हो तो आकर्षक प्रतीत होते है।

कुछ लोगों में गृह सज्जा का यह अनूठा गुण ईश्वरीय देन होता है।वह चाहे जिस तरह से भी घर को सजाएँ देखने वाला उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। उनकी हर सज्जा भली, सुहावनी एवं रोचक प्रतीत होती है। परन्तु अधिकांश लोगो को यह गुण स्वयं के प्रयास से, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़कर, दूसरों से सीखकर अर्जित करना पड़ता है। अनुपात की भली-भांति समझने के लिए कला के इन तत्वों को समझना आवश्यक है।

1. अनुपात में रेखाएँ (Proportions in Lines)
2. अनुपात में दूरी (proportion in Distance)
3. अनुपात में माप (Proportions in Measurement)

1.अनुपात में रेखाएँ (Proportions in Lines) - गृह सज्जा को आकर्षक, सजीव, सरस, सुन्दर एवं मोहक बनाने के लिए रेखाओं में अनुपात होना जररूी है। जब तक रेखाओं में सही, समानुपातिक व संतुलित अनुपात नहीं होगा तब तक कोई भी वस्तु सही आकार/आकृति ग्रहण नहीं कर सकेगा। रेखा द्वारा किसी वस्तु को बड़ा या छोटा करके दिखाया जा सकता है। जैसे खड़ी रेखा (Vertical Line) से वस्तु बड़ी दिखाई देती है जबकी आड़ी रेखा (Horizontal Lines) से वस्तु की चौड़ाई अधिक प्रतीत होती है। इसे निम्न चित्र से समझा जा सकता है।

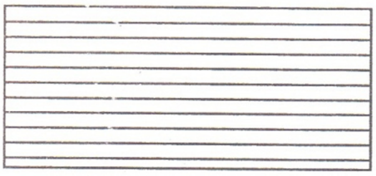

चित्र-A : लम्बवत् रेखाएँ

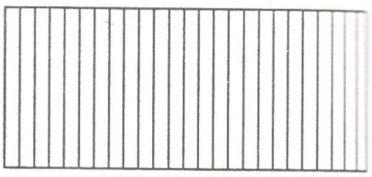

चित्र-B : समतल रेखाएँ

चित्र A व B दोनों एक ही लम्बाई चौड़ाई के है, परन्तु चित्र A में खड़ी रेखा होने से यह अधिक बड़ा एवं लम्बा प्रतीत हो रहा है जबकी B चौड़ाई में अधिकता का अहसास दिला रही है। यदि कमरे की ऊँचाई अधिक है तो आड़ी रेखा वाले नमूने युक्त पर्दे दरियाँ, कालीन एवं अन्य सजावटी कक्ष की सुन्दरता में आकर्षण उत्पन्न किया जा सकता है। इसके विपरीत यदि कक्ष की ऊँचाई कम है, छत नीची है तब खड़ी रेखा वाले पर्दे लगाकर कक्ष की सुन्दरता में चार चाँद लगाया जा सकता है। छोटे कमरे में छोटे-छोटे नमूने युक्त पर्दे, कालीन, सोफा कवर आदि अधिक फबते है।

2.अनुपात में दूरी (Proportion in Distance)-आकर्षक एवं मनोहारी गृह सज्जा के लिए ''अनुपात में दूरी'' (Proportion in Distances) पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। सजावट में उपयोग किये जाने वाले वस्तुओं को कितनी दूरी पर रखा जाए ताकि वे कक्ष को नवीन एवं आकर्षक रूप प्रदान कर सकें। कक्ष में फर्नीचर, दीवारों पर चित्र, पेंटिंग सजाते समय दूरी पर ध्यान देना जररूी है। बहुत छोटे कमरे में ढेर सारे चित्र पास-पास लगा देने पर जरा-सा भी नहीं "शोभते। इसी तरह यदि बहुत छोटी पेंटिंग्स या चित्र की दीवार पर बहुत अधिक ऊँचाई पर लगा दिये जाएँ तो वे सुन्दर नहीं लगते।

3. अनुपात में माप (Proportions in Measurement)-कोई भी सज्जा तभी सुन्दर एवं आकर्षक लगती है जब उनका माप भी अनुपात में हो। माप से आशय' वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई एवं ऊँचाई'' से है। उदाहरणार्थ- यदि किसी दीवान की लम्बाई, चौड़ाई एवं ऊँचाई माप में नहीं होगा तो वे सुन्दर नहीं दिखेंगे। एक उचित माप का दीवान 4'X 6' अर्थात् चौड़ाई 4 फीट तथा लम्बाई 6 फीट उपयुक्त माप है। यदि इसकी

चौड़ाई 5 फीट अथवा लम्बाई $6\frac{1}{2}-7$ फीट कर दी जाए ता दीवान जरा भी नहीं "शोभते।

भवन निर्माण करते समय भी माप में अनुपात होना आवश्यक है। यदि कमरे की चौड़ाई लम्बाई से बहुत अधिक है अथवा कमरे की लम्बाई चौड़ाई से $2-2\frac{1}{2}$ फीट अधिक है तो वह देखने मे जरा भी सुन्दर नहीं लगेगा बल्कि रेलगाड़ी के डिब्बे की भांति दिखेगा। इसी तरह यदि एक कमरे की छत ऊँची एवं दूसरे की नीची होगी तो भी वे सुन्दर नहीं लगेंगे। यहीं बात सज्जा में भी दृष्टिगोचर होती है। बड़े कमरे में छोटे एवं हल्के फर्नीचर रखने से कक्ष को आकर्षक नहीं हो पाती। यदि उन्हें एक साथ सजाकर समूह में रखे जाएँ तब तो वे जरूर सुन्दर एवं आकर्षक लगते है क्योंकि देखने वालों की दृष्टि एक-एक फर्नीचर पर नहीं पूरे समूह पर पड़ती है।

9.4 संतुलन (Balance)

आन्तरिक सज्जा में संतुलन का भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। यह संतुलित भाव को जागृत करता है। सृष्टि की प्रत्येक रचना एव क्रियाकलाप में संतुलन दिखाई पड़ता है। नदी, पेड़-पौधे, सागर, पर्वत, फूल फल सभी में संतुलन है। तभी वे मोहक, आकर्षक, लुभावनी एवं सुन्दर दिखते है। एक वृक्ष का ही उदाहरण लें। इसकी जड़ से लेकर तना, फूल, फल, बीज सभी में संतुलन रहता है। दिन-रात, सर्दी-गर्मी, धूप-छाँव ये सभी संतुलन के ही उदाहरण है। हमारे जीवन में यदि काम-आराम, सुख-दुख के बीच संतुलन नहीं हो और केवल दुख ही दुख अथवा सुख ही सुख हो तो जीवन नीरस हो जाएगा। मानव उन्नति एवं विकास नहीं कर सकेगा। अत: जीवन में संतुलन आवश्यक है। हमारे व्यावहारिक जीवन में भी संतुलन आवश्यक है। यदि व्यावहारिक जीवन में संतुलन नहीं होगा तो हमारा सामंजस्य (Adjustment) दूसरे लोगों के साथ नहीं बैठेगा। असंतुलित व्यवहार लोगों में खिन्नता दुख उत्पन्न करता है। संतुलन का ज्ञान हम सभी को होता

ही है। यदि जाने-अनजाने कहीं भी, किसी भी पक्ष में असंतुलन होता है। तब व्यक्ति को इसका पता चल जाता है।

“ Balance is creating a feeling of repose of rest by arranging or grouping shapes and colours around its central point in such a way that the arrangement results into equalization of weights or attraction on each side of the central poin”.-Goldstein.

क्रेग एवं रष के अनुसार-'' संतुलन डिजाइन का वह सिद्धान्त है जो “शान्ति एवं संतोष का भाव देता है।''

अत: संतुलन से तात्पर्य आराम विश्राम एवं “शान्तिमय स्थिति से होता है। इसके प्रयोग से सज्जा आकर्षक, जीवन्त एवं मनोहारी प्रतीत होती है तथा दर्शको को सुख, आनन्द, हर्ष, उल्लास एवं उत्साह की अनुभूति कराती है।

आकर्षक गृह सज्जा के लिए फर्नीचर, दरी, कालीन, कुशनकवर, बेडशीट, फूलदान आदि के रंग, रूप, आकार, भार, माप, बनावट, दूरी, अनुपात, प्रकाश आदि में संतुलन रखना अनिवार्य है। कक्ष में एक वस्तु बहुत ही सुन्दर हो तथा उसी के बगल में दूसरा खराब, अनाकर्षक एवं सौन्दर्यहीन वस्तु रख दिये जाएँ तो संतुलन बिगड़ जाएगा। परिणामत: सज्जा अनाकर्षक हो जाएगी। इतना ही नहीं, गृहिणी को क्रोध, बैचेनी, चिड़चिड़ापन एवं अशांति का अनुभव होने लगेगा।

संतुलन के प्रकार (Typesof Balance)

गृह सज्जा मे संतुलन मुख्यत: दो प्रकार से लाये जाते है-

1. औपचारिक संतुलन (Formal Balance)
2. अनौपचारिक संतुलन (Informal Balance)

1.**औपचारिक संतुलन (Formal Balance)-**इसे ''सम संतुलन'' या ''व्यवस्थित संतुलन'' भी कहते है। यह वह संतुलन है जिसमें किसी वस्तु को केन्द्र मानकर या काल्पनिक मध्य-रेखा मानकर उसके चारों ओर समान दूरी पर समान माप, बनावट, भार, आकार-प्रकार, रंग-रूप एवं

आकृति की वस्तुएँ सजाकर रखी जाती है। अत: केन्द्र के दोनों ओर एक-सा आकर्षण बना रहता है। यह संतुलन अत्यन्त प्रभावी एवं वास्तविकता लिए हुए होता है। अत: देखने वाले की दृष्टि स्वत: ही उस ओर चली जाती है। ऐसी संतुलन युक्त सज्जा आकर्षक लगती है।

औपचारिक संतुलन भी दो प्रकार के होते है-

(क) द्विसुडौल संतुलन (Bisymmetrical Balance)-वह औपचारिक संतुलन जिसमें केन्द्र के दोनों ओर सज्जा एक-सी की जाती है, द्विसुडौल संतुलन कहलाता है।" किसी सुन्दर वस्तु को केन्द्र मानकर उसके दोनों ओर समान भार, माप, आकार, आकृति एवं रंग-रूप की वस्तुएँ सजायी जाती है। उदाहरणार्थ- एक "शो-केस में भगवान शिव की मूर्ति के दोनों ओर दो फूलदान रखना।

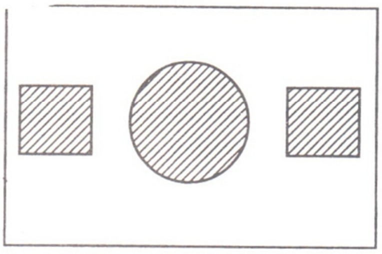

चित्र-A : औपचारिक संतुलन (द्विसुडौल)

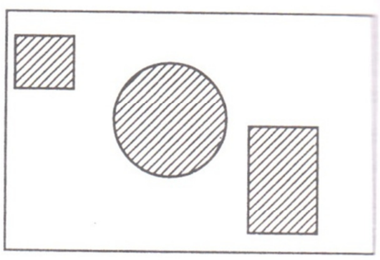

चित्र-B : अनौपचारिक संतुलन

अब यदि इनमें से एक बच्चे का वजन अधिक तथा दूसरे का कम होता है तो खेल रूक जाता है क्योंकि भार/वजन असमान होने से असंतुलन उत्पन्न हो गया है। खेल "शुरू करने के लिए भारी वजन वाले बालक को केन्द्र के पास थोड़ा सरककर बैठना पड़ता है तथा कम वजन वाला बच्चा पहले से ही भांति किनारे पर बैठता है और फिर से सी-सॉ का खेल प्रारम्भ हो जाता है। यह स्थिति अनौपचारिक संतुलन (Informal Balance) को दर्षाते है।

(ख) प्रत्यक्ष या स्पष्ट संतुलन (Obvious Balance)-यह वह औपचारिक संतुलन होता है जिसमें केन्द्र के दोनो ओर समान वस्तुएँ नहीं रखी जाती है, फिर भी दर्शको का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है। इसे निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है। एक मेज पर मध्य में गौतम बुद्ध की मूर्ति रखी जाए तथा उसके एक ओर "शेर की मूर्ति तथा दूसरी

ओर रंगीन सजावटी मोमबत्ती को इस तरह से सजाकर रखा जाए कि समान मात्रा में ध्यान आकर्षित हो।

2. अनौपचारिक संतुलन (Informal Balance)-इसे ''असममितीय या अव्यवस्थित'' संतुलन भी कहते है। यह सन्तुलन औपचारिक संतुलन की अपेक्षाकृत अधिक जटिल है। अनौपचारिक संतुलन प्राप्त करने के लिए '' केन्द्र के पास भारी एवं बड़ी वस्तुएँ रखकर तथा उसके बाद छोटी एवं हल्की वस्तुएँ इस प्रकार से सजाकर रखी जाती है कि उनमें सुन्दरता, सरसता, जीवतंता एवं आकर्षण उत्पन्न हो जाए। ऐसा तब किया जाता है जब वस्तुएँ समान रूप से ध्यान केन्द्रित करने में सक्षम नहीं हो। ऐसी स्थिति में, इन्हें केन्द्र से विभिन्न दूरी पर इधर-उधर रखकर सुन्दरता एवं आकर्षण लाने का प्रयास किया जाता है। इसे ही '' अनौपचारिक संतुलन'' (Informal Balance) कहते है।

अनौपचारिक संतुलन को समझने के लिए सी-सॉ का खेल सबसे अच्छा उदाहरण है। सी-सॉ के खेल में लकड़ी के पोट पर दो बराबर भार के बच्चे बैठते है और ऊपर-नीचे होकर झुलते है। इस खेल मे यदि एक बच्चे का भार अधिक तथा दूसरे का कम होता है तब अधिक भारवाला बच्चा केन्द्र के पास बैठता है दूसरा कम वजन वाला बच्चा केन्द्र से दूर किनारे पर बैठता है और इस तरह भार/वजन में संतुलन उत्पन्न हो जाता है और बच्चा खेल खेलता है। यहाँ कम वजन तथा अधिक वजन तथा अधिक वजन का सम्बन्ध केन्द्र से निकटता एवं दूरी की है। इसी तरह गृह सज्जा में भी अनौपचारिक संतुलन के लिए केन्द्र के पास भारी वस्तु तथा केन्द्र से दूर हल्की वस्तु रखकर सज्जा की जाती है।

गृह सज्जा में नवीनता, सरसता, सुन्दरता, जीवन्तता, अनोखापन एवं आकर्षण उत्पन्न करने के लिए दोनों ही प्रकार के संतुलन (औपचारिक व अनौपचारिक) का उपयोग किया जाता है। एक ही प्रकार के संतुलन से नीरसता, एकरसता (Monotony) एवं बोरियत (Boredom) आ जाता है। इसीलिए कमरे की सज्जा में यदि बाहरी सजावट औपचारिक है तो फर्नीचर अनौपचारिक रीति से, "शो-केस को औपचारिक रीति से, फिर

आलमारी को अनौपचारिक रीति से और उपसाधनों (Accessories) को अनौपचारिक रीति से सजाया जाता है। ऐसा करने से कक्ष की सुन्दरता एवं आकर्षण में अतिशय वृद्धि हो जाती है।

ऊपर वर्णित दोनों संतुलन के अलावा भी एक और संतुलन है जिसे विकिरणीय (Radial) संतुलन कहते है। आजकल इस संतुलन का उपयोग भी गृह सज्जा में बहुतायत से होने लगा है। विकिरणीय संतुलन वृत्तीय (Circular) होता है। यह सूरज की किरणों की भांति समान रूप से स्थापित होने वाला होता है। इस प्रकार का संतुलन मध्य से संतुलित दूरी पर संतुलित तत्वों के संयोजन से उत्पन्न किया जाता है। उदाहरणार्थ- गोल मेज के चारों ओर गोल आकृतियों में कुर्सियों की व्यवस्था करना। इस संतुलन का उपयोग मुख्यत: उद्यानों, फूल-पौधे लगाने एवं क्यारियाँ बनाने में किया जाता है। इस संतुलित से युक्त सज्जा अत्यन्त मनोहारी, आकर्षक एवं अद्‌भूत छटा बिखेरनी वाली होती है।

9.5 लय (Rhythm)

कला के सिद्धान्तों में लय का भी अति महत्वपूर्ण स्थान हैं। इसका सम्बन्ध “ एक सुसंगठित निरन्तर एवं नियमित रूप से बढ़ने वाली गति से होता है।” गृह सज्जा में हमारी आँखें सजावट के प्रत्येक भाग में घूमती है। सज्जा में प्रयुक्त को गई वस्तुओं के रंग, रूप, आकार, रेखा, बनावट, आकृति के मेल जब सही अनुपात एवं संतुलन में होते है, तब लय उत्पन्न होता है और लय आँखों को गति प्रदान करता है तथा सज्जा आकर्षक, मनोहारी, लुभावनी एवं अद्‌भूत छटा बिखरने लगती है।

सामान्य अर्थो में, लय से तात्पर्य- “ रेखाओं, आकारों, आकृतियों, एवं रंगों की आवृत्ति से निर्मित उस पथ/मार्ग से है जिस पर हमारी आँखें स्वत: ही यात्रा करने लग जाती है।”

विभिन्न विद्वानों ने लय की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ दी है। गोल्डस्टीन के अनुसार- कला में लय का अर्थ एक सरल व सम्बन्धित रास्ता है जिस पर हमारी आँखें रेखाओं, आकार व रंगों की व्यवस्था में यात्रा करती है।

क्रेग एवं रश के "शब्दों में- " लय डिजाइन का वह सिद्धान्त है जो परस्पर सम्बन्धित गतियों को बताता है।

प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त सुन्दर एवं मनोरम होते है क्योंकि प्रकृति की प्रत्येक रचना एवं क्रियाकलाप में एक लय होता है। प्राकृतिक दृष्यों पर यदि हम ध्यानपूर्वक दृष्टिपात करें तो सूरज की प्रात:कालीन किरणें, झरनों से कल-कल करते बहता पानी, सागर की लहरें, कोयल की कूक, भौंरों की गूँज, हवा का सर-सर करते बहना, मोर की पीऊँ-पीऊँ, चिड़ियों का चीं-चीं करना, तितलियों का इतराना, डूबते सूरज की किरणों की छटा इन सभी में एक लय है, एक गति है, एक संतुलन है, जो अलौकिक सुन्दरता एवं मनोरम दृश्य उत्पन्न करते है तथा उन्हें देखकर हमारी आँखें सुख एवं तृप्ति का अनुभव करती है और हमारा मन प्रसन्नता, खुशी, आनन्द एवं हर्ष से झूम उठता है।

लय के प्रकार (Types of Rhythm) - लय के मुख्य दो प्रकार है-

1- नियमानुसार लय (Regular Rhythm)
2- स्वच्छन्द लय (Free Rhythm)

1. नियमानुसार लय (Regular Rhythm)-इसे नियमित लय भी कहते हैं। लय प्राप्त करने की यह सबसे पुरानी, सरल एवं प्रभावी विधि है। अति प्राचीन समय से इस लय का उपयोग गृह सज्जा में किया जाता है। इस प्रकार के लय को प्राप्त करने के लिए एक ही प्रकार की इकाई अथवा इकाई समूहों को बार-बार नियमित रूप से निश्चित दूरी पर दोहराया/प्रयोग किया जाता है। इकाइयों के नियमित प्रयोग से उनमें आपसी सम्बन्ध स्थापित हो जाता है जिसके कारण कलात्मक वस्तुएँ अत्यन्त ही सुन्दर, आकर्षक एवं मनमोहक लगती है। साड़ी के किनारों (Border), पल्लू, ब्लोक के चुन्नट आदि में इसी तरह के लय उत्पन्न कर आकर्षण लाया जाता है।

2. स्वच्छन्द लय (Free Rhythm)-जब नमूने अथवा इकाइयों को अनियमित अन्तरों/दूरी में प्रयोग किया जाता है, तब इससे उत्पन्न लय स्वच्छन्द लय कहलाता है। इस प्रकार के लय में आँखों की गति निश्चित एवं नियमित नहीं रह पाती। आँखें एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर ऐर्च्छिक संवेगात्मक प्रभाव भेजने के लिए विवश हो जाती है।

रेखाओं, रंगों, आकारों एवं आकृतियों को विभिन्न रूपों में प्रयुक्त कर स्वच्छन्द लय की प्राप्ति की जाती है।

लय प्राप्ति के तरीके (Ways to obtain Rhythm)

लय पूर्ण गति प्राप्त करने के मुख्य पाँच तरीके है-

1- आकार की पुनरावृत्ति द्वारा (Through the Repetitioln of Shapes)
2- आकार में नियमानुसार वृद्धि द्वारा (Through the Progression of Size)
3- रेखाओं की सरल, संयुक्त एवं निरन्तर गति द्वारा (Through an Easily Connected and Continous Line Movement)
4- रेखाओं तथा नमूनों की स्थानान्तरता द्वारा (Transfers of Lines and Designs)
5- रेखाओं की विपक्षता द्वारा (Oppositions of Lines)

1. आकार की पुनरावृत्ति द्वारा (Through the Repetitioln of Shapes)-आकार की पुनरावृत्ति द्वारा लय की प्राप्ति की जा सकती है। जब एक ही आकार के नमूने/इकाइयों का प्रयोग एक निश्चित दूरी पर नियमित रूप से बार-बार किया जाता है तो एक प्रकार की गति या लय उत्पन्न हो जाता है। हमारी आँखें एक नमूने से दूसरे नमूने पर इस तरह से गति करते हुए आगे की ओर बढ़ती है कि सभी नमूने एक जैसे दिखते है। इन नमूनों को अलग करके देखना आसान नहीं होता है। सभी नमूने/इकाइयाँ एक-दूसे से सम्बन्धित एवं घुली-मिली होती है जो आँखों को सुख पहुँचाती है

गृह सज्जा में भी आकार की पुनरावृत्ति द्वारा सौन्दर्य एवं आकर्षण उत्पन्न किया जाता है। जैसे- सोफासेट पर रखे जाने वाले पांचों कुशन का आकार एक जैसा होना, कुर्सियों का एक जैसे आकार का होना, कुशन कवर मे एक ही रंग एवं एक ही प्रकार के नमूने का होना आदि।

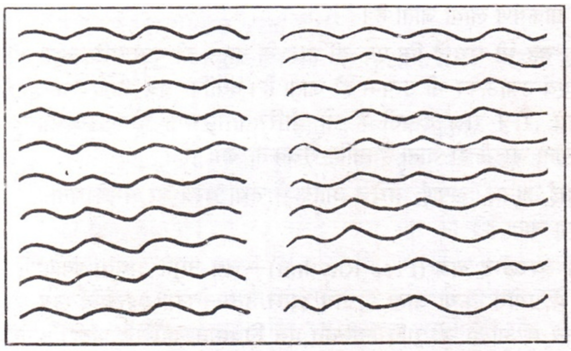

चित्र : आकार की पुनरावृत्ति द्वारा लय

2. आकार में नियमानुसार वृद्धि द्वारा (Through the Progression of Size)-जब किसी वस्तु के आकार में नियमानुसार कमी/बढ़ोतरी की जाती है तो इस कमी-बेसी, उतार-चढ़ाव से एक प्रकार का लय उत्पन्न हो जाता है क्योंकि हमारी आँखें इस उतार-चढाव को देखने के लिए अनायास ही गति करने लग जाती है। इसे निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है। क्योंकि यह व्यवस्था आँखों की गति प्रदान नहीं करता है तथा आँखों को गति करने में बाधा पहुँचती है। इसका आभास देखने वाले को तुरन्त ही लग जाता है। ऐसी व्यवस्था आँखों को सुख, “शान्ति में राहत नहीं पहुँचाता है। बल्कि व्यग्रता, खिन्नता एवं बैचेनी होने लगती है। यदि घर में वस्तुएँ अस्त-व्यस्त यत्र-तत्र फैला, बिखरा हुआ पड़ा मिलता है तो गृहिणी को बेचैनी होने लगती है। अत: सज्जा करते समय समस्त वस्तुओं को आकार के माप के अनुसार व्यवस्थित करते हुए कक्ष को सजाया जाय तो कक्ष अधिक सुन्दर, आकर्षक, रोचक, लुभावनी एवं मोहक लगेगा।

3. रेखाओं की सरल, संयुक्त एवं निरन्तर गति द्वारा (Through an Easily Connected and Continous Line Movement)- अविराम रेखा गतिशील होती है। वक्र रेखाएँ (Curved Lines)

निरन्तरता व अनवरतता का भाव उत्पन्न करती है। इसके प्रयोग से एक लय, एक गति उत्पन्न होती है जो सज्जा को सुन्दर, आकर्षक, मोहक एवं जीवन्त बना देती है। मेजपोश, कुशनकवर, बेडकवर आदि में गोल डिजाइन इन्हें आकर्षक एवं मनोहारी रूप पदान करती है। भवन निर्माण करते समय भी इनका प्रयोग किया जाता है। घर के बाहरी भाग एलेवेषन (Elevation) यदि गोलाई लिए हुए हों तो मकान की सुन्दरता एवं आकर्षण में अतिशय वृद्धि हो जाती है। इसी तरह गोल खिड़कियाँ, गोल दरवाजे भी मकान को भव्य एवं सुन्दर रूप प्रदान करते है।

4. रेखाओं तथा नमूनों की स्थानान्तरता द्वारा (Transfers of Lines and Designs)- रेखाओं व नमूनों की स्थानान्तरता से भी एक प्रकार का लय उत्पन्न होता है जो दृष्टि को निर्बाध गति प्रदान करता है। अत: आँखें स्वत: ही उस ओर देखने लग जाती है व सुख का अनुभव करती है, जैसे- जब वक्र रेखाएँ आड़ी तथा खड़ी रेखाओं (Horizontal and Vertical) को जोड़ती है तो यह सीधी रेखाओं से बनी नमूने की अपेक्षा अधिक खूबसूरत व मनमोहक लगती है। घर में महराबदार दरवाजे (Arched Doors) एवं खिड़कियाँ चौकोर खिड़कियाँ दरवाजों से अधिक सुन्दर लगती है तथा भवन/कक्ष की भव्यता (Expressivenessa) प्रदान करती है।

5. रेखाओं की विपक्षता द्वारा (Oppositions of Lines) -जब खड़ी/लम्बवत् रेखाएँ (Vertical) तथा समतल/ आड़ी रेखाएँ (Horizontal Lines) समकोण पर आकार मिलती है, तब एक प्रकार की लय की उत्पत्ति होती है जो कि रेखाओं के विपक्षता होने के कारण होती है। गृह निर्माण में वर्गाकार/आयताकार फर्नीचर पर्दो के लटकाव की रेखाएँ, मुंडेर आदि में रेखाओं की विपक्षता द्वारा सुन्दरता एवं आकर्षण उत्पन्न किया जाता है।

9.6 अनुरूपता (Harmony)

कला के सिद्धान्तों में अनुरूपता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। इसे " एकता का सिद्धान्त" अथवा " एकरूपता का सिद्धान्त" भी कहते है। कलात्मक वस्तुओं के निर्माण एवं सज्जा में इसका अमूल्य योगदान होता है। " अनुरूपता से तात्पर्य है" एकता का भाव उत्पन्न करना" (To Produce Unity) इससे वस्तुओं एवं भावों या विचारों में एकता (Unity) का भाव उत्पन्न किया जाता है। इससे सुसंगत (समान) वस्तुओं के चयन एवं व्यवस्थापन में सहायता मिलती है।

अनुरूपता को निम्न प्रकार से पारिभाषित किया जा सकता है-" वस्तुत: अनुरूपता कला का वह सिद्धान्त है जिससे वस्तुओं व भावों के चयन एवं उनके उचित व्यवस्थापन के माध्यम से " एकता का भाव" उत्पन्न किया जाता है और यही एकता का भाव अनुरूपता कहलाता है।"

अनुरूपता का सम्बन्ध कला के तत्वों-रंग, रूप, रेखा, आकार, बनावट एवं आकृति से भी होता है। जब किसी वस्तु में ये सभी तत्व आपस में उचित अनुपात एवं संतुलन में मिलते है तो उनमें अनुरूपता का भाव प्रकट हो जाता है और वह वस्तु कलात्मकता की दृष्टि से अत्यन्त ही सुन्दर, मनोहारी, अद्भूत छटा बिखरने वाली एवं आकर्षक प्रतीत होती है। इसे निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है- एक कलाकार एक अत्यन्त साधारण-सा पत्थर को उठाकर उसकी गढ़ाई करके, उससे सुन्दर मूर्ति बना देता है जिसके रंग, रूप, बनावट, आकार, सभी में समानता होती है, संतुलन होता है, अनुपात होता है तो वह निर्जीव पत्थर की मूर्ति भी जीवन्त हो जाती है। ऐसा लगता है उसमें ज्ञान आ गयी है और अब कुछ ही क्षणों में वह मूर्ति बोल उठेगी। इसी तरह मिट्टी का बना मोर जिसे निर्जीव पदार्थ भूसा, घास, लकड़ी डठंल तथा मिट्टी की सहायता से बनाया जाता है। उसका रंग-रोगन करके जब उसकी सज्जा की जाती है तब ऐसा प्रतीत होता है यह मोर मिट्टी का नहीं, अपितु सजीव मोर है जो अभी आसमान में छाये काले-काले मेघों को देखकर नाच उठेगा, उपर्युक्त उदाहरण अनुरूपता के ही है जो सजीवता, रोचकता, मनमोहकता में वृद्धि करके कलात्मक वस्तुओं को सुन्दर एवं आकर्षक बना देते है

अनुरूपता के तत्व (Elements of Harmony)- गृह सज्जा को आकर्षक, जीवन्त एवं मोहक बनाने के लिए अनुरूपता के इन पाँचों तत्वों पर बल दिया जाना चाहिए।

इन तत्वों के सहयोग से अनुरूपता प्राप्त की जाती है। ये पाँचों तत्व है-

1- रेखा एवं रूप में अनुरूपता (Harmony in Lines and Shapes)
2- आकार में अनुरूपता (Harmony in Size)
3- बनावट में अनुरूपता (Harmony in Texture)
4- रंग में अनुरूपता (Harmony in Colour)
5- विचारों में अनुरूपता (Harmony in Ideas)

1. रेखा एवं रूप में अनुरूपता (Harmony in Lines and Shapes) –किसी भी कलात्मक वस्तु के निर्माण में रेखाओं एवं रूप का अमूल्य योगदान होता है। इनके अभाव में किसी भी कला का निर्माण सम्भव नहीं है। रेखाएँ विभिन्न प्रकार की होती है- सम, असम, तिरछी, वक्र, समतल, लम्बवत् आदि। इन रेखाओं के विभिन्न संयोजन से विभिन्न प्रकार के सुन्दर एवं कलात्मक वस्तुओं का निर्माण होता है। एक-सी रेखाएँ एकता का भाव प्रकट करती है जबकी विपरीत रेखाओं का प्रयोग विरोध उत्पन्न करता है। उदाहरणार्थ- बड़े आयत में छोटे आयत, बड़े त्रिभुज में छोटे त्रिभुज तथा बड़े गोला में छोटे गोला का होना एकता का भाव प्रकट करता है तथा अनुरूपता लाता है जबकी बड़े आयत में एक त्रिभुज अथवा गोला का होना विरोध उत्पन्न करता है जिसके फलस्वरूप इनसे अनुरूपता नहीं है।

2. आकार व माप में अनुरूपता (Harmony in Size and Measurement Size)- रेखाओं की भांति ही आकार एवं माप में अनुरूपतागृह सज्जा का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अभाव में सज्जा अनाकर्षक, बेढंगा, भद्दा एवं प्राणहीन तो दिखती है साथ ही सज्जा मे प्रयुक्त किये जाने वाले समस्त समय, ऊर्जा एवं धन भी व्यर्थ हो जाता है। सुन्दर से सुन्दर रंगों, रूपों व बनावट वाली वस्तु भी व्यर्थ हो जाती है।

इसे निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है-एक 10 वर्ष की छोटी लड़की को बहुत ही सुन्दर, आकर्षक एवं बहुमूल्य ब्लोक पहना दिये जाएँ परन्तु उस ब्लोक की लम्बाई इतनी अधिक हो कि वह लड़की के घुटने की छूती हो अथवा इतना छोटा हो कि कमर से थोड़ा ही नीचे लटका हो तो क्या लड़की सुन्दर दिखेगी। यद्यपि लड़की ने अपनी सुन्दरता को निखारने के लिए सौन्दर्य प्रसाधनों एवं गहनों का उपयोग भी किया है। फिर भी वह लड़की सुन्दर एवं आकर्षक नहीं दिखेगी और इसका साधारण-सा सरल उत्तर मिलता है- लड़की सुन्दर नहीं दिखेगी। क्योंकि उसके आकार एवं फ्रॉके के आकार में अनुरूपता नहीं है। अत: सौन्दर्यता एवं आकर्षण का प्रश्न ही नहीं उठता। हाँ! वह मजाक व उपहास का पात्र अवश्य बन जाती है। लोग उल्टे-सीधे व्यंग्य (Comment) करने लग जाते है। अत: सज्जा में आकार एवं माप में अनुरूपता होना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। इसके अनुपयुक्त होने पर समस्त सज्जा ही बेकार सिद्ध हो जाती है।

एक अच्छे आकार की मुख्य दो विशेषताएँ होती है-

1- वस्तु का आकार उसके कार्य के अनुरूप हो ताकि कार्य सरलता एवं सुगमतापूर्वक से हो सके।
2- जिस चीज (धातु, अधातु) से वह वस्तु निर्मित की गई है, वह प्रभावषाली हो।

3. **बनावट में अनुरूपता (Harmony in Texture)-** बनावट कस विस्तारपूर्वक अध्ययन कला के तत्वों में किया गया है। किसी भी कलात्मक वस्तु में अनुरूपता उत्पन्न करने के लिए आकार, आकृति एवं रेखा की भांति ही बनावट पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है। किसी वस्तु की बनावट कैसी है? किस तरह की है? इसका ज्ञान हमें छूने एवं देखने से हो जाता है।

सामान्य बोलचाल की भाषा में, बनावट “शब्द किसी वस्तु के बाह्य रूप में स्पर्ष सम्बन्धी गुण को कहते है। अर्थात् किसी वस्तु के छूने (स्पर्ष करने) से जो संवेदना प्राप्त होती है। उसे ही बनावट कहते है। हाँ! कभी-कभी बनावट का अर्थ किसी वस्तु को रचना या “शेली से भी लगाया जाता है।

अनुभवी व्यक्ति किसी वस्तु की रचना कैसी है, इसका पता बिना स्पर्ष किये, केवल देखकर ही लगा लेते है। बनावट विभिन्न प्रकार के होते है, जैसे- कोमल, कठोर, रोएँदार, कड़े, भुरभुरे, समतल, छिद्रदार, स्पंजी, रवादार, खुरदरी, बाल सदृश आदि।

गृह सज्जा करते समय पर्दे किस तरह के लगाये जाएँ, खुरदरी सतह वाले हों या चिकनी चमकदार सतह वाले, इस पर गौर करना आवश्यक हे। इसी तरह फर्नीचर की बनावट कठोर हो या कोमल, कालीन रोएँदार हो या साधारण बुनाई की, दीवार पर टाँगें जाने वाले पेन्टिंग्स एवं चित्रों की बनावट किस तरह की हो उस पर विचार-विमर्श करके, गूढ़ चिन्तन करके फिर सज्जा करनी चाहिए। फर्नीचर की बनावट के साथ ही दरी, मेजपोश, फूलदान आदि की बनावट पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए तभी सज्जा आकर्षक, जीवन्त, मोहक एवं अद्वितीय (Second to none) दिखती है।

4. रंग में अनुरूपता (Harmony in Colour)- सज्जा में रंग का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है जिसे किसी भी कीमत में नकारा नहीं जा सकता है। अत: गृह सज्जा में अनुरूपता लाने के लिए रंगों का उचित मेल पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। रंगो के अभाव में अथवा अनुपयुक्त रंग संयोजन के कारण अच्छी-से-अच्छी सज्जा व सुन्दर-से-सुन्दर कलाकृति भी बेजान एवं अनाकर्षक हो जाती है। उचित रंग संयोजन कलाकार वस्तुओं में प्राण फूँक देता है। रंगों की अनुरूपता से सजावट आकर्षक, मोहक एवं जीवन्त लगती है तथा मन को हर्षित, उल्लासित एवं आनन्दित करने वाली होती है। इसलिए रंगों का चयन अनुरूपता को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए न कि फैषन।

रंगों का प्रयोग मौसम एवं जलवायु को भी ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। गर्मी में हल्के रंग के तथा सर्दी में गर्म रंगों का उपयोग कर सज्जा की जातनी चाहिए। छोटे कमरे में हल्के रंग तथा बड़े कमरों को गहरे रंग से पुताना चाहिए। ऐसा न करने से न तो छोटा कमरा बहुत छोटा और न ही बड़ा कमरा बहुत बड़ा दिखता है।

परिधान के वस्त्रों का चयन करते समय भी रंगों पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। काले/सांवले रंग के व्यक्तियों को हल्के रंग के कपड़े पहनने चाहिए इससे उनका व्यक्तित्व निखरता है। हल्के रंग के परिधान उन पर “शोभते है। इसी तरह गोरे रंग के व्यक्तियों पर गहरे रंग के परिधान खूब फबते है तथा उनकी सुन्दरता एवं व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देते है। दुबले-पतले व्यक्ति को हल्के रंगों वाले परिधान पहनने चाहिए जबकी मोटे लोगों को गहरे रंगों के परिधान।

5. विचारों में अनुरूपता (Harmony in Ideas)- आकार, आकृति, रंग, रेखा व बनावट की अनुरूपता की भांति ही विचारों में अनुरूपता होना आवश्यक है। विचारों के अनुरूपता के अभाव में कला के अन्य सभी तत्व निरर्थक एवं बेकार सिद्ध हो जाते है।

गृह सज्जा बाह्य हो या आन्तरिक, सज्जा करने से पूर्व गृहिणी को उसकी एक निश्चित रूप रेखा, एक योजना अपने मस्तिष्क में बना लेनी चाहिए। इसके लिए उसे गूढ़ चिन्तन एवं तर्क-विर्तक करने की भी जरूरत पड़ती है। अपनी कल्पनाशक्ति एवं सृजनशीलता का उपयोग विचारों मे अनुरूपता लाने के लिए किया जाना चाहिए। तत्पश्चात उसी के अनुरूप उपलब्ध सामग्री में अनुरूपता स्थापित कर लेना चाहिए। किस कमरे में कौन-सी वस्तुएँ ज्यादा “शोभेगे और उपयोगी होगें, इसका सदैव ध्यान रखा जाना चाहिए। बैठक कक्ष में किस तरह का फर्नीचर होना चाहिए जो उसे अधिक आकर्षण एवं सुन्दरता प्रदान कर सकता है। पर्दे, कालीन, दरी, बेडशीट, दीवान, मेजपोश आदि रंग, बनावट, आकार किस तरह का होना चाहिए, इन सभी बातों पर गौर करके सज्जा करने से वे आकर्षक दिखती है। इसके अतिखुला घर की आर्थिक स्थिति पर भी विचार करना जरूरी है क्योंकि सारा खेल पैसों का होता है। बिना पैसों के सामग्री खरीदना सम्भव नहीं हैं और बिना सामग्री के सज्जा सम्भव नहीं।

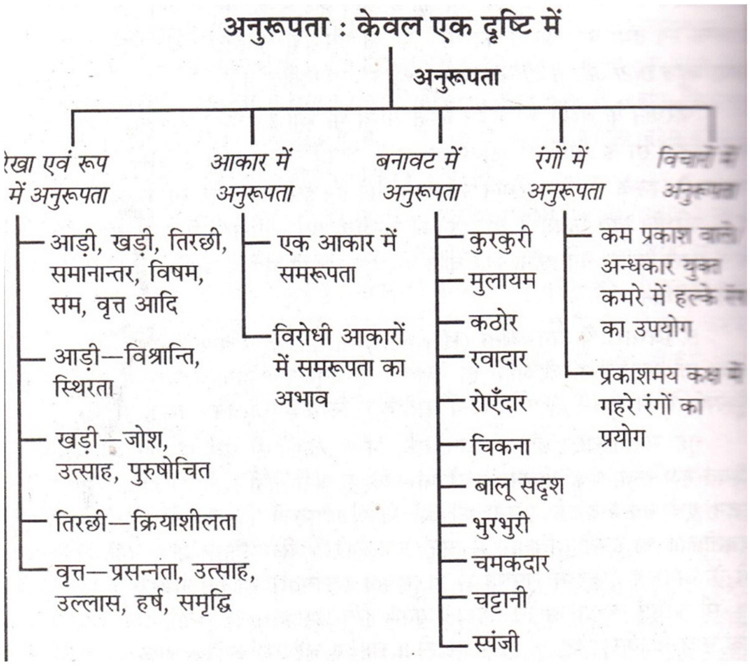

9.7 दबाव/बल (Emphasis)

कला के सिद्धान्तों में बल अर्थात् दबाव का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अभाव में सुन्दर-से-सुन्दर सज्जा भी जिसमें संतुलन, अनुपात, अनुरूपता तथा लय का पूर्ण ध्यान रखा गया हो, व्यक्ति का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर पाता है। अत: सज्जा अधूरी रह जाती है। इस कारण सज्जा आकर्षक, मोहक एवं अलौकिक नहीं दिखती। इसका कारण है-" वस्तु में आकर्षण बिन्दु का अभाव होना" (Lack of Attraction Point in the Object)। आकर्षण बिन्दु अर्थात् बल के अभाव में व्यक्ति का ध्यान उस ओर आकृष्ट नहीं हो पाता।

बल/दबाव को निम्न प्रकार से पारिभाषित किया जा सकता है-

"दबाव कला का वह सिद्धान्त है जिसके अनुसार गृह सज्जा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तुओं को केन्द्र में रखकर व उसके आस-पास कम महत्वपूर्ण वस्तुओं को रखकर सज्जा की जाती है ताकि वह केन्द्र की वस्तु ही आकर्षण का केन्द्र रहे व देखने वालों का ध्यान उस आकर्षक वस्तु की ओर स्वत: ही चला जाए?

(“Principle of emphasis enables us to create a centre of interest in any arrangement by emphasizing special features in order of their importance.”)

स्टेला सुन्दरराज के “शब्दों में-” बल का अर्थ है रूचि का एक विशेष केन्द्र रखना तथा अन्य वस्तुओं को उसके अधीनस्थ बनाना।”

रट के अनुसार- “ बल एक सिद्धान्त है जो विचारों, स्वरूपों तथा रंगों के किसी भी संयोजन में ध्यान किसी विशिष्ट बिन्दु पर केन्द्रित करता है।”

गृह सज्जा को आकर्षक, सुन्दर, अलौकिक एवं अद्वितीय बनाने के लिए सबसे

कमरे के आकार, उपयोगिता, प्रकाश, फर्नीचर, जलवायु, मौसम आदि को ध्यान में रखकर समय-समय पर आकर्षण बिन्दु (मुख्य आकर्षण केन्द्र) को बदलते रहना चाहिए ताकि सज्जा में नवीनता एवं रोचकता बनी रहे। एक ही प्रकार के सज्जा से नीरसता एवं उबाऊपन उत्पन्न हो जाता है, भले ही सज्जा कितनी ही आकर्षक क्यों नहीं हो तथा कलात्मक वस्तु क्यों नहीं अत्यधिक सुन्दर हो।

घर की सजावट में बल को प्रधानता देने के लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

1- दबाव किस वस्तु पर डाला जाए (What to Emphasize)
2- दबाव किस तरह/ कैसे डाला जाए (How to Emphasize)
3- दबाव कितना डाला जाए (How much to Emphasize)
4- दबाव कहाँ पर डाला जाए (Where to Emphasize)

1. दबाव किस वस्तु पर डाला जाए (What to Emphasize)- किसी भी सज्जा को करने से पहले सज्जाकर्त्ता/गृहिणी को उसकी ओर एक योजना मस्तिष्क में बना लेनी चाहिए। उसी योजना व रूपरेखा के अनुसार सज्जा में प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं की व्यवस्था करनी चाहिए। जिस वस्तु पर दबाव दिया जाना है उसे छाँटकर अलग करना चाहिए। मगर ध्यान रह, जिस वस्तु पर दबाव दिया जाना है वह सबसे

सुन्दर, कलात्मक, महत्वपूर्ण एवं आकर्षक हो। सजावट के प्रत्येक क्षेत्र में थोड़ी भिन्नता हो सकती है परन्तु बल को किस प्रकार बढ़ाया जाए अथवा कम किया जाए यह लगभग सभी में समान ही रहती है। किसी विशेष वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए तथा उस पर दबाव बढ़ाने के लिए उसकी पृष्टिभूमि को सादा, सरल, एवं कम आकर्षक रखना चाहिए ताकि केन्द्र को वहीं वस्तु ही सबसे महत्वपूर्ण, आकर्षक एवं लुभावनी दिखे। देखने वालों की दृष्टि उस महत्वपूर्ण वस्तु पर सबसे पहले जाए और फिर सभी सजावटी वस्तुओं का अवलोकन करते हुए पुन: दृष्टि उसी वस्तु पर जाकर टिक जाए। पृष्टिभूमि को सादा रखने से कलाकृति खिल जाती है।

2. दबाव किस तरह/ कैसे डाला जाए (How to Emphasize)- गृह सज्जा करते समय दबाव किस प्रकार डाला जाए इस पर भी गौर किया जाना आवश्यक है। दबाव डालने के विभिन्न तरीके है, जैसे-

1. पृष्टिभूमि को सादा रखकर (By Keeping Background Plain)
2. वस्तुओं को समूहबद्ध करके (By Grouping the Objects)
3. विपरीत रंगों का प्रयोग करके (By Using Contrast Colours)
4. वस्तुओं के चारों ओर खुला स्थान छोड़कर (By Leaving Sufficient Plain Background Space Around the objects)
5. विरोधी रेखाओं, रूप व आकार द्वारा (Contrasting Unusual Lines, Shapes or Sizes)
6. सजावटी नमूनों का उपयोग करके (By Using Decorative Designs)

1. पृष्ठभूमि को सादा रखकर (By Keeping Background Plain)- किसी वस्तु के सौन्दर्य को उभारने के लिए तथा उसकी ओर ध्यानाकर्शण के लिए उसकी पृष्टिभूमि को जिस पर रखकर सज्जा की जानी है, सरल, सादा, एवं कम आकर्षक रखना चाहिए। ऐसा करने से उस विशेष वस्तु पर ध्यान स्वत: ही आकृष्ट हो जाता है। यदि पृष्टिभूमि रंगीन, बहुत अधिक आकर्षक, मनोहारी एवं अलौकिक सुन्दरता लिए हुए है, तब उस पर

कलात्मक वस्तु, जिसकी सुन्दरता भी अद्वितीय मनोहरी छटा बिखेरने वाली एवं अलौकिक है, तब भी वह दर्शक का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर पाती है क्योंकि पृष्टिभूमि एवं कलात्मक वस्तु दोनों ही एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी (Competitive) हो जाते है। इस कारण दर्शक का ध्यान अपनी ओर नहीं खींच पाते। फलत: सज्जा अधूरी रह जाती है। इसलिए पृष्टिभूमि की सुन्दरता को गौण रखकर ही मूख्य केन्द्र की व्यवस्था करनी चाहिए।

2. वस्तुओं को समूहबद्ध करके (By Grouping the Objects)- एक समान वस्तु को समूह में रखकर दबाव उत्पन्न किया जाता है। इससे एकता का भाव दृष्टिगोचर होने लगता है तथा सज्जा आकर्षक एवं मोहक दिखने लगती है। "शो-केस में एक रंग, रूप, आकार की छोटी-छोटी वस्तुओं को समूह में रखकर सजायी जाए तो वे अधिक सुन्दर दिखते है। इसी तरह बड़े कमरे मे, फर्नीचर को एक समूह में रखकर सजाने से दर्शक की दृष्टि हो उस समूह पर पड़ जाती है। इस तरह एक आकार, एक मोटाई की पुस्तकों को आलमारी में व्यवस्थित करके सजाया जाए तो वे सुन्दर, आकर्षक, मोहक एवं जीवन्त दिखते है। विद्यालयी बालकों को एक ही रंग के ड्रेस पहनकर स्कूल में आने से एकता का भाव प्रकट होता है तथा वे देखने में सुन्दर लगते है। इसी तरह यदि एक कॉलोनी में एक ही तरह के, रंग के, आकार के, नमूने के मकान बनाये जाएँ तो वह कॉलोनी अत्यन्त ही भव्य एवं आकर्षक दिखती है। जयपुर के गुलाबी रंग से बने मकान इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। जयपुर मे पुरानी "शहर में सभी मकानों के रंग गुलाबी ही है जिसके कारण जयपुर हो" गुलाबी "शहर" (Pink City) को संज्ञा दी गई है।

1. **विपरीत रंगों का प्रयोग करके (By Using Contrast Colours)-** विपरीत रंगों के प्रयोग द्वारा भी बल उत्पन्न किया जा सकता है। सज्जा में अथवा परिधान के वस्त्रों में विपरीत रंगों का प्रयोग करने से आँखें स्वत: ही उस ओर गति करने लग जाती है और दर्शक का ध्यान आकृष्ट हो जाता है। हल्के रंगों के साथ गहरे रंगों का प्रयोग अथवा रंगों के "कोड के प्रयोग से भी आकर्षण उत्पन्न होता है जो दर्शक को अपनी ओर खींचता है।

उदाहरणार्थ- सफेद दुपट्टे पर यदि काली रंग के बोर्डर बना दिये जाएँ तो वे ज्यादा "शोभते है। इसी तरह लाल फ्रॉके पर सफेद या काले रंग के धागे से कढ़ाई की जाए तो वे ज्यादा फबेंगें। क्योंकि इनमें विरोध उत्पन्न होता है जिसके कारण हमारी आँखें तीव्रता से गति करने लग जाती है।

2. वस्तुओं के चारों ओर खुला स्थान छोड़कर (By Leaving Sufficient Plain Background Space Around the objects)- कोई भी कलात्मक वस्तु के सृजन करते समय यदि उसके चारों ओर पर्याप्त खुला स्थान छोड़ दिये जाएँ तो वह वस्तु, आकर्षक, सुन्दर एवं लुभावनी दिखने लगती है। मनोवैज्ञानिक सच है कि हमारी दृष्टि एक बार में कम ही वस्तुओं का अवलोकन कर पाती है तथा नेत्रों को सुख, "शान्ति एवं आनन्द का अनुभव होता है। इसलिए यह आवश्यक है कि केन्द्र में सुन्दर, महत्वपूर्ण एवं आकर्षक वस्तु के द्वारा बल उत्पन्न कर दिया जाए तथा उसके चारों ओर खाली स्थान छोड़ दिये जाएँ जिससे कि सज्जा, आकर्षक, मोहक एवं सरस दिखे।

3. विरोधी रेखाओं, रूप व आकार द्वारा (Contrasting Unusual Lines, Shapes or Sizes)-विपरीत रंगों की भांति विरोधी रेखाओं, रूप व आकार के द्वारा भी बल/दबाव उत्पन्न करके सज्जा को आकर्षक, अलौकिक एवं अद्वितीय सुन्दर बनाया जा सकता है। उदाहरणार्थ- एक आयताकार सोफे पर तिकोने कुशन रखने ये या चौकोर कुशन को ही कोने से घुमाकर रखने से सुन्दरता एवं आकर्षण में वृद्धि हो जाती है। इसका कारण है- यहाँ विरोधी रेखाओं एवं रूप में विरोधाभास उत्पन्न हो जाता है।" इसी तरह यदि मेजपोश सादा है तथा यदि उस पर कलात्मक सुन्दरता लिए एक बहुत ही आकर्षक फूलदान सजा कर दिये जाएँ तो फूलदान अत्यन्त सुन्दर एवं अलौकिक दिखेगा क्योंकि मेजपोश सादा है तथा दबाव फूलदान पर पड़ रहा है। इसके ठीक विपरीत यदि मेजपोश भी कलात्मक हो, सुन्दर हो तथा कढ़ाई करके बनाये गई हो और फिर इस पर सुन्दर फूलदान भी रखा गया हो तो ध्यान किसी एक वस्तु पर आकृष्ट नहीं हो पाता क्योंकि दोनों ही वस्तुएँ बहुत ही सुन्दर है, उनमें एकता है, समानता है। अत: विरोध उत्पन्न नहीं

हो रहा है। दोनों ही वस्तुओं की सुन्दरता एवं आकर्षण में है (Competiton) जिसके फलस्वरूप बल (दबाव) उत्पन्न नहीं हो रहा है। बल उत्पन्न करने का सबसे सीधा, सरल व आसान तरीका है, "विरोधी आकार, रेखाओं, एवं रंगों का प्रयोग करना।" यदि सफेद वस्त्र पर काली लेस लगा दी जाए अथवा काले रंग के धागों से कढ़ाई कर दी जाए तो फ्रॉक अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक दिखेगी क्योंकि रंगों में विरोध है और विरोधाभास उत्पन्न होते ही हमारी आँखें तीव्रता से गति करने लग जाती है।

6. सजावटी नमूनों का उपयोग करके (By Using Decorative Designs)- यदि कलाकार अपनी कलाकृति को बहुत अधिक सुन्दर एवं आकर्षक बनाना चाहता है तब वह उसकी अत्यधिक सजावट कर देता है जिसके कारण दबाव उत्पन्न हो जाता है तथा वस्तु अत्यन्त सुन्दर, नैसर्गिक एवं आकर्षक दिखने लगती है। अधिक सजावटी वस्तु बरबस ही सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। उदाहरणार्थ- किसी साड़ी को बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक बनाना हो तो उस पर सलमा सितारा जड़ दिये जाएँ। रूपहले सुनहले तारों से बोर्डर एवं पल्लू बनाये जाएँ। बीच-बीच में भी जो नमूने बनाये जाएँ वे भी अत्यन्त सुन्दर हों तथा रूपहले, सुनहले सोने-चाँदी के तारों से जड़कर बनाये गय हों, तो साड़ी, अलौकिक एवं अद्वितीय दिखने लगती है। सोने-चाँदी के तारों से जड़े लहँगा-चुन्नी, बनारसी साड़ियाँ इसके अच्छे उदाहरण है। इसी तरह यदि सफेद मेजपोश को सुन्दर एवं आकर्षक बनाना है तो उस पर विपरीत रंगों, आकारों, व रेखाओं की मदद से पेंटिंग्स या कढ़ाई कर दी जाए।

गृह सज्जा को भी आकर्षक, मोहक एवं सुन्दर बनाने के लिए बैठक कक्ष को खूब सजा दी जाए। परन्तु यह भी ध्यान रहे " अति सर्वत्र वर्जयते।"अर्थात् अधिकता कभी-कभी नुकसान देह भी होता है तथा सज्जा को भद्दा, बेजान एवं अनाकर्षक बना सकती है जिससे दर्शक को ऊब, बेचैनी, व्यग्रता एवं चिड़चिड़ापन होने लगता है।

3. दबाव कितना डाला जाए (How much to Emphasixe)- सज्जा करते समय न केवल किस वस्तु पर, किस तरह डाला जाए इस पर ही ध्यान देना आवश्यक है बल्कि दबाव कितना डाला जाए इस पर गौर किया जाना अनिवार्य है। आवश्यकता से बहुत अधिक दबाव डालने से वस्तु सुन्दर नहीं दिखाई देती बल्कि आँखों को क्षोभ एवं कश्ट भी पहुँचाती है। साथ ही सज्जा को भद्दा, बेजान एवं अनाकर्षक बना देती है। इसी तरह बहुत कम दबाव डालने से आँखों को गति नहीं हो पाती है। दबाव कितना डाला जाए इसका कोई निश्चित मापदंड नहीं है। यह गृहिणी की सोच, समझ, विवेक, ज्ञान, अभ्यास, कल्पनाशक्ति एवं सृजनशीलता पर निर्भर करता है। गृह सज्जा करने से पूर्व गृहिणी को अपने मस्तिष्क में एक काल्पनिक माप तैयार कर लेना चाहिए । जिस वस्तु पर दबाव सबसे अधिक रखना हो वहाँ पर सबसे सुन्दर एवं आकर्षक वस्तु रखनी चाहिए तथा पृष्टिभूमि को सादा एवं कम आकर्षक रखना चाहिए। अर्थात् काल्पनिक माप में पृष्टिभूमि में दबाव शून्य (Zero) रखना चाहिए। मुख्य वस्तु के आस-पास एवं उसके चारों ओर भी कम सुन्दर, आकर्षक एवं गौण वस्तुएँ रखनी चाहिए। जिस कमरे में परिवार के सदस्य अधिक समय व्यतीत करते हों, जहाँ कार्य क्षेत्र अधिक हो वहाँ की सज्जा कम-से-कम की जानी चाहिए ।

4. दबाव कहाँ पर डाला जाए(Where to Emphasize)- गृह सज्जा करते समय दबाव कहाँ पर डाला जाए, यह निश्चित करना भी आवश्यक है। इसके लिए उचित यह है कि महत्वपूर्ण कलात्मक वस्तु को ऐसे स्थान पर रखा जाए जहाँ पर हर दिशा से उस पर दबाव पड़े तथा लोगों की दृष्टि स्वत: ही सबसे पहले उस ओर चली जाए। वह कलात्मक वस्तु कक्ष को सुन्दर एवं आकर्षक बनाने में सक्षम हो। उदाहरणार्थ- फूलदान को मेजपोश पर इस तरह से रखना चाहिए कि वह प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर सके। इसी तरह दीवार पर चित्र या तस्वीर ऐसी जगह पर टाँगना चाहिए जिससे कि दर्शक की दृष्टि अनायास ही उस पर चली जाए तथा नजर टिकी रहे।

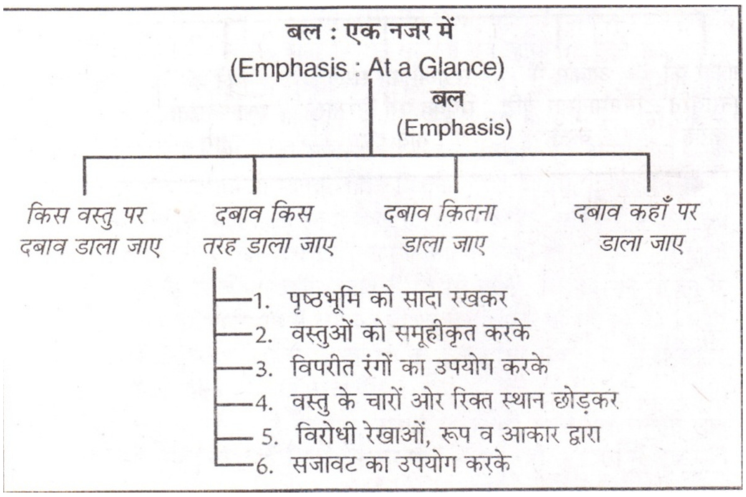

9.8 सारांश

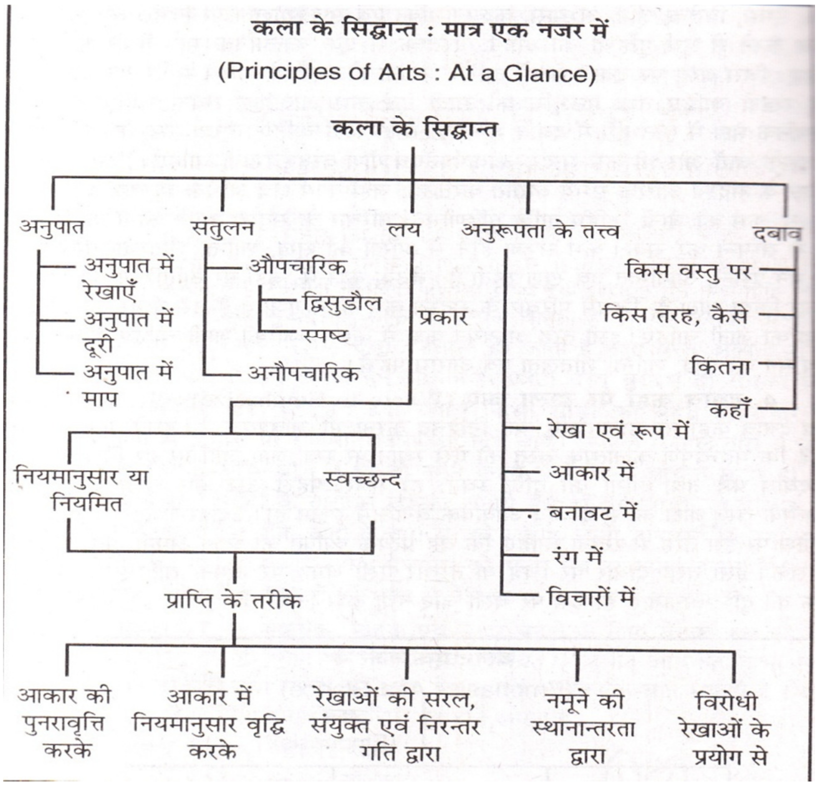

9.9 अभ्यास प्रश्न

1.कला के सिदान्त बताइए ?

2. अनुपात के बारे में में समझाइये?

3. संतुलन के बारे में में समझाइये ?

4. लय के बारे में में समझाइये ?

5. अनुरूपता के बारे में में समझाइये?

6. दबाव /बल के बारे में में समझाइये?

9.10 संदर्भ ग्रन्थ

1. बी.के. बख्शी, गृह व्यवस्था है, गृह सज्जा साहित्य प्रकाशन आगरा

2. डा. वृंदा सिंह, गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा ,पंचशील प्रकाशन जयपुर

3. डा. रीना खनुजा, गृह प्रबंध साधन व्यवस्था, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
एवं आन्तिरक सौजन्य

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi
"Managment for Morden Families Sterling"

5- Nickel Dorsey M & Sons New york
"Managment in Family

इकाई -10

कला के तत्व (Elements of Arts)

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 कला का अर्थ

10.3 कला के तत्व

10.4 आकार की विशेषता

10.5 सारांश

10.6 अभ्यास प्रश्न

10.7 संदर्भ ग्रन्थ

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- कला के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- कला का अर्थ समझ सकेंगे ।
- कला के तत्वों की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- कला की विशेषताएँ समझ सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

कला मनुष्य के भावाभिव्यक्ति का एक सुन्दर, श्रेष्ट एवं सशक्त माध्यम हैं कला के बिना तो मानव जीवन की प्रगति एवं विकास की सम्भावना ही शून्य हो जाती है। कला ही व्यक्ति के जीवन में वह ऊर्जा, ऊष्मा का संचार भरता है जिससे पुष्पित पल्लिवत होकर व्यक्ति प्रगति के पथ पर अग्रसर होते हुए अपने लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्ति करता है। प्रकृति जिससे मानव की उत्पत्ति मानी जाती है, स्वयं में कला का एक अनूठा उदाहरण है। प्रकृति की प्रत्येक रचना में, क्रियाकलाप में एक कला छुपी जाती है चाहे वे

झरने से झर-झरकर बहता पानी हो, सागर की लहरें हों, कोयल की कूक हो, आसमान में छाये काले-काले बादल हों, फल-फलों से लदे हुए पेड़-पौधे हों, अथवा बागों में चहकती चिड़ियाँ हों। इस सभी में कला का अनूठा संगम है। तभी प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मनोहारी एवं आकर्षक प्रतीत होते है।

10.2 कला का अर्थ

" मानव के भावों की सहज अभिव्यक्ति का नाम कला है।" वस्तुत' "कला व्यक्ति के विचारों और भावों का इस ढंग से अभिव्यक्तिकरण है कि यह उसे सुख, आनन्द, हर्ष, उल्लास एवं संतुष्टि प्रदान करता है।" यह जीवन के उत्कर्ष एवं आनन्द की अभिव्यक्ति करती है। कोई भी कला चाहे वह चित्रकला हो, नृत्यकला हो, मूर्तिकला हो, संगीतकला हो, हस्तशिल्प कला हो, भवन निर्माण कला हो अथवा गृह सज्जा कला हो, यह कलाकार के अन्तरतम की भावनाओं को प्रकट कला है। कला के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की भावनाओं को, कलात्मक विचारों को अभिव्यक्त करता है जिससे उसे मानसिक संतुष्टि एवं तृप्ति मिलती है। ह्रदय' गदगद् एवं मन प्रसन्न रहता है। सामान्य बोलचाल की भाषा मे कला को निम्न प्रकार से पारिभाषित किया जा सकता है-

"जब किसी भी दक्षता (Skill) का उपयोग सौन्दर्य एवं आकर्षण उत्पन्न करने के लिए किया जाता है तो उसे कला कहते है।"

संक्षेप में, " कोई भी कार्य जिसमें सुन्दरता का भाव जागृत हो तथा जिसके सम्पन्न होने मे दक्षता एवं सृजनात्मक की आवश्यकता हो तो वह कला कहलाती है ।"

कला व्यक्ति को अनुपम सुख एवं नैसर्गिक आनन्द की अनुभूति कराता है। प्रत्येक व्यक्ति सुन्दर वस्तुओं को देखकर हर्ष, आनन्द एवं सुख का आनन्द करता है। वह सुन्दर वस्तु पाने के लिए भरसक प्रयास भी करता है। यह सच है कि जिस किसी भी व्यक्ति में सौन्दर्य बोध है, किसी वस्तु की रसानुभूति करने की कला है, वह वास्तव में कला-मर्मज्ञ है और उसे कला का ज्ञान है। वह सुन्दर वस्तुओं की प्रशंस उन्मुक्त हृदय से करता है।

आज की भागदौड़, व्यस्त एवं संघर्ष भरी जिन्दगी में कला का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। कला थके दिमाग एवं शरीर को ताजगी एवं स्फूर्ति प्रदान करता है। यह मस्तिष्क को थकान को क्षणभर में मिटाकर उसमें नई चेतना, शक्ति एवं स्फूर्ति का संचार करता है। सुखमय एवं आनन्दमय जीवन जीने के लिए गृह सुसज्जा एवं व्यवस्था आवश्यक है । व्यक्ति जहाँ कहीं से भी थका-हारा आता है, वह विश्राम घर में ही करता है। घर में ही वह दुनिया के दु:ख -दर्द भूलकर चैन के क्षण गुजारता है। इसके लिए आवश्यक है कक्षों की उत्तम सज्जा हो। वस्तुएँ व्यवस्थित हों तथा क्रम से सजी हों। गृह सज्जा में कला के तत्वों एवं सिद्धान्तों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। एक गृहिणी अपने घर की सज्जा तभी उत्तम तरीके से कर सकती है जब उसे कला को तत्वों का ज्ञान हो।

10.3 कला के तत्व (Elements of Arts)

कला के प्रमुख तत्व निम्नानुसार है-

1. रेखा (Line)
2. आकार (Shape)
3. नमूना (Pattern)
4. बनावट (Texture)
5. रंग (Colour)
6. प्रकाश (Light)
7. खुला स्थान (Open Space)

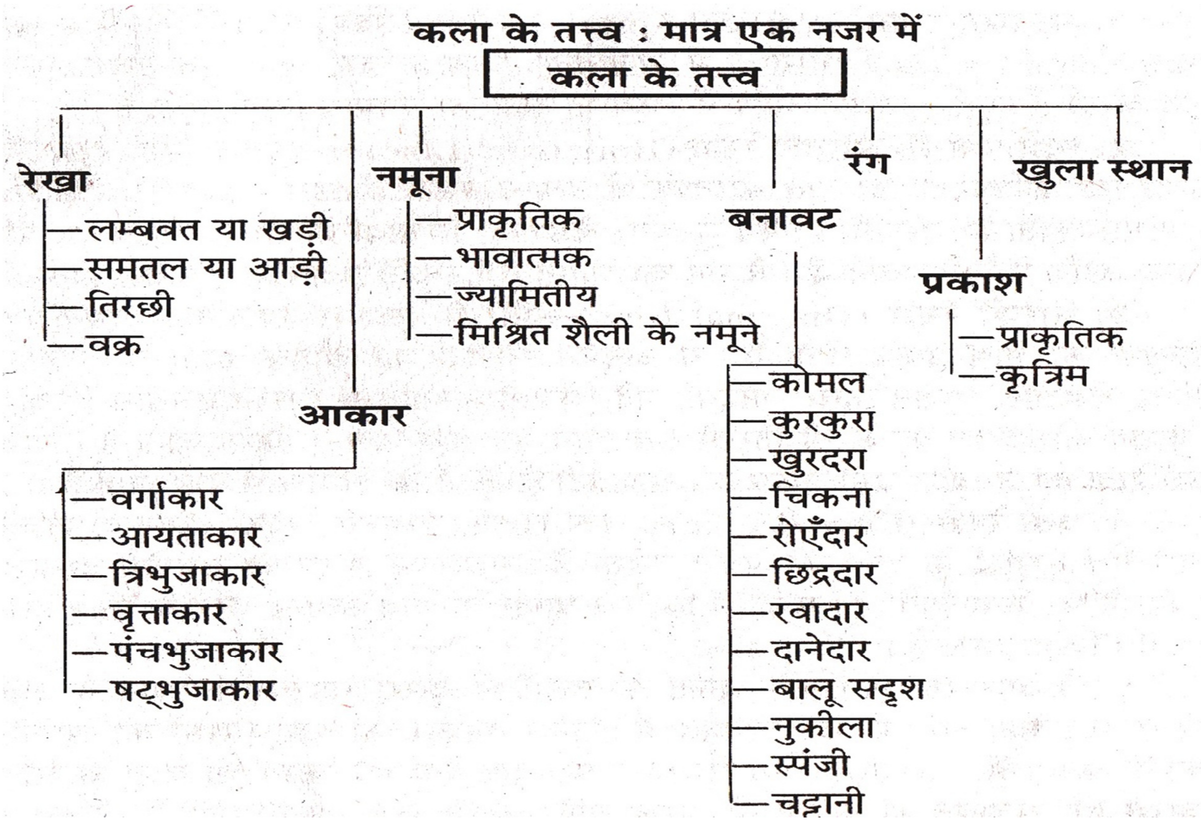

उपर्युक्त सभी तत्व यद्यपि अलग-अलग है, परन्तु ये एक-दूसरे से परस्पर सम्बन्धित है और इनमें आपस में गहरा एवं घनिष्ठ सम्बन्ध है। इनके सन्तुलित समन्वय से ही सुन्दर एवं चित्ताकर्षक कला का सृजन किया जा सकता है।

कला के तत्वों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है-

(1) रेखा (Line)-गृहसज्जा में रेखा का अमूल्य योगदान होता है। यह किसी भी कलात्मक सृजनशीलता की पहली महत्वपूर्ण एवं आवश्यक इकाई है। यह किसी भी कला का आधार है-चाहे वह चित्रकला हो, मूर्तिकला हो, हस्तशिल्प कला हो, भवन निर्माण कला हो अथवा वस्त्र कला। इसके बिना कलात्मक वस्तुओं का निर्माण हो नहीं सकता।

रेखा का अर्थ है-दो बिन्दुओं के मध्य का बहाव।

दो बिन्दुओं के मध्य जिस प्रकार का बहाव होगा उसी प्रकार की रेखा का निर्माण होगा, जैसे- गोल तिरछा, खड़ा, आड़ा, वक्र आदि। आकार एवं डिजाइन का निर्माण रेखाओं के जोड़ से ही होता है। गृहसज्जा में रेखाओं से तात्पर्य यह नहीं कि कमरों में, दीवारों पर या फर्श पर खड़ी, आड़ी, तिरछी, गोल या वक्र रेखाएँ खींच दी जाएँ । अपितु इसका अर्थ यह होता है कि वस्तुओं को कक्ष में इस तरह से खड़ी, आड़ी, वक्र, तिरछी या सममतल रूप में रखें जाएँ जिससे ये देखने में सुन्दर लगे तथा दर्शक के मन को आनंदित एवं आह्लादित कर सके। रेखाओं का मन पर संवेगात्मक प्रभाव पड़ता है। जैसे- सजीवता, क्रियाशीलता, नीरसता, बेचैनी, व्यग्रता आदि। रेखाएँ मुख्यत: चार प्रकार की होती है जिनका उपयोग गृहसज्जा में किया जाता है। ये चारों प्रकार निम्नानुसार है-

- **लम्बवत् रेखाएँ (Vertical Lines)-** ये रेखाएँ खड़ी होती है। इनसे लम्बाई का आभास होता है। ये रेखाएँ मस्तिष्क में सजीवता, क्रियाशीलता, जोष एवं उत्साह का भाव जागृत करती है। पर्दे, बेडशीट आदि में लम्बवत् रेखा का उपयोग किया जाता है।
- **पड़ी/आड़ी/समतल रेखा (Horizontal Line)-** समतल, पड़ी रेखा विश्राम, स्थिरता एवं निश्क्रियता का भाव मस्तिष्क में उत्पन्न करती है। इस रेखा से चौड़ाई में वृद्धि का आभास होता है। इसका उपयोग मुख्यत: बेडशीट, किताबों के शेल्फ, बेडकवर, परिधान के वस्त्र आदि में किया जाता है। ये मन को शान्ति एवं स्फूर्ति प्रदान करने वाली होती है।
- **तिरछी रेखा (Diagonal Line)-** तिरछी रेखा से शालीनता, नमनीयता एवं सहिश्णुता का भाव प्रकट होता है। ये अनुपम सौन्दर्य की द्योतक होती है। तकिया के गिलाफ, बेडशीट, कुशन कवर, गद्दियाँ , पर्दे, मेजपोश आदि में इसका उपयोग किया जाता है। कुशन को तिरछा करके भी तिरछी रेखा होने का भाव उत्पन्न किया जाता है। आजकल तिरछी रेखा का उपयोग सभी प्रकार की सजावटी वस्तुओं के निर्माण में होने लगा है।

- **वक्र रेखा (Curved Line)-** वक्र रेखाएँ, प्रसन्नता, खुशी, आनन्द, शीलनता, सौन्दर्य एवं समृद्धि के भाव को प्रकट करती है। गृह सज्जा में इसका उपयोग दरवाजे एवं खिड़कियों में किया जाता है। सज्जा में विभिन्न प्रकार के भाव उत्पन्न करने के लिए इस रेखा का प्रयोग किया जाता है।

2. आकार (Form)- कला के तत्वों में दूसरा महत्वपूर्ण स्थान है आकार। गृहसज्जा में इसका अमूल्य योगदान होता है। सुन्दर आकार की वस्तुएँ सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है, लुभाती है तथा चित्त को प्रसन्नता देती है। किसी भी वस्तु के रंग बहुत ही अच्छे हों, सजावट भी अच्छी हो, परन्तु यदि उसका आकार सही नहीं है तो वह सुन्दर वस्तु भी देखने में खराब लगने लगती है। कल्पना कीजिए- एक लड़की बहुत ही सुन्दर है, गोरा रंग है, नीली आँखे है, काले-काले लम्बे बाल है परन्तु यदि इसकी लम्बाई (Height) 9 फीट है। क्या वह सुन्दर लगेगी। नहीं, क्योंकि उसका आकार अनुपात से बहुत अधिक है। इस कारण वह लड़की सुन्दर होते हुए भी दैत्य (Giant) की तरह दिखेगी। आकार का निर्माण रेखाओं के आपसी संयोजन से होता है। भिन्न-भिन्न रेखाओं के परस्पर संयोजन से भिन्न-भिन्न आकार बनते है, जैसे-वर्गाकार, आयताकार, द्विभुजाकार, पंचभुजाकार, शटभुजाकार, वृत्ताकार आदि। एक रेखा को प्रधान मानकर इसी के अनुरूप कमरे में सुसज्जा की जाती है। अनुरूपता एवं सन्तुलन पर आधारित आकार सुसंगत लगते है। अत: आकार में अनुरूपता (Hormony) लाने के लिए समानुपात का उपयोग किया जाना आवश्यक है। गृहसज्जा में भी यदि बहुत अधिक ऊँचे अथवा चौड़े सोफासेट का उपयोग किया जाए तो वे सुन्दर नहीं दिखेंगे। यद्यपि सोफासेट का रंग बहुत सुन्दर है, बनावट आकर्षक है, मजबूत एवं टिकाऊ लकड़ी का बना है तो भी वह आकर्षक नहीं दिखेगा क्योंकि उसका आकार सही नहीं है। अत: आकार सज्जा का एक आवश्यक तत्व है।

आकार के प्रमुख स्वरूप निम्नानुसार है-

1- **वर्गाकार (Square)-** दो खड़ी (Vertical) एवं दो आड़ी रेखाओं

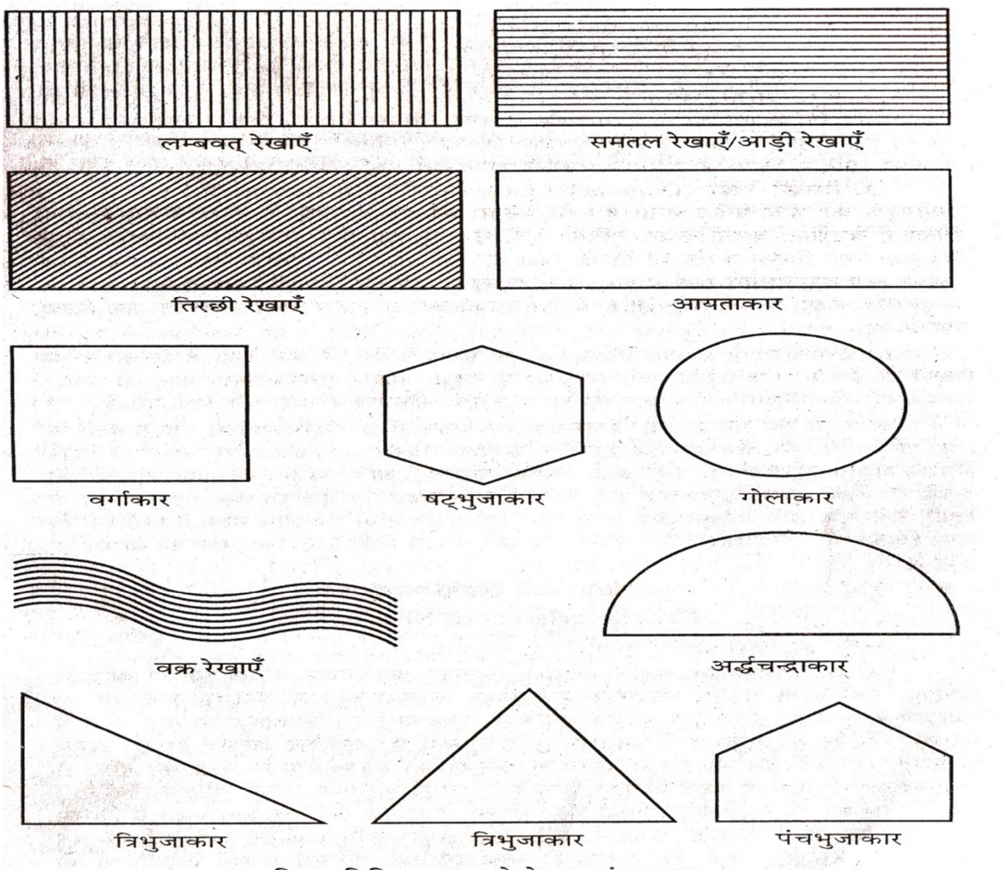

चित्र : विभिन्न प्रकार के रेखा एवं आकार

के संयोजन से वर्ग बनता है। दोनों ही खड़ी एवं आड़ी रेखाएँ समान माप की होती है।

2- **आयताकार (Rectangle)-** दो खड़ी एवं दो आड़ी रेखाओं के मिलने से आयत बनता है। परन्तु खड़ी एवं आड़ी रेखाएँ असमान माप की होती है। अर्थात् खड़ी रेखाएँ समान माप एवं आड़ी रेखाएँ असमान माप की होती है अथवा इन दोनों मे से कोई भी दो रेखाएँ असमान माप की होती है।

3- **त्रिभुजाकार (Triangular Shaped)-** एक आड़ी रेखा तथा दो तिरछी रेखा के मिलने से त्रिभुज का निर्माण होता है। अथवा

एक खाड़ी, एक खड़ी तथा एक तिरछी रेखा के मिलने से भी त्रिभुज बनता है।

4- **पंचत्रिभुजाकार (Pentagonal Shaped) -** पाँच रेखाओं के संयोजन से यह स्वरूप बनता है। इसमें एक रेखा आड़ी (समतल) दो रेखा तथा दो रेखा तिरछी होती है।

5- **षट्भुजाकार (Hexagonal)-** दो खड़ी एवं चार तिरछी रेखाओं के मिलने से जो आकृति बनती है उसे षट्भुजाकार कहते है। इसका उपयोग गृहसज्जा में बहुत ही कम किया जाता है।

6- **वृत्ताकार (Circular Shaped)-** इसका निर्माण दो वक्र रेखाओं के आपस में मिलने से होता है। इस रेखा का गृहसज्जा में बहुत अधिक प्रयोग किया जाता है। गोल दरवाजे एवं गोल खिड़कियाँ मकान की सुन्दरता एवं आकर्षण में चार-चाँद लगा देते है।

आकारों का मन के भावों पर प्रभाव- आकारों की विभिन्नता से देखने वालों के चित्त पर भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ते है, जैसे-पड़ी/आड़ी/समतल आयताकार स्थल को देखने से स्थिरता एवं दृढ़ता का बोध होता है जबकी विपरीत दिशा में खड़ी आयताकार दीवारों को देखने से प्रगति, उत्थान, उन्नति एवं विकास का बोध होता है। वृत्ताकार स्थल देखने से खुशही, प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास, एवं अनवरता (Contincity) का बोध होता है। मन्दिरों के ऊपर त्रिकोण अथवा त्रिशूल देखने से मन में धर्म के प्रति आस्था एवं अध्यात्म का बोध होता है।

10.4 आकार की विशेषताएँ (Characteristics of Shapes)

आकार की मुख्य दो विशेषताएँ हैं-

(A) कार्यात्मकता (Functionalism)- वस्तु का आकार केवल सौन्दर्य वृद्धि के लिए ही नहीं होना चाहिए अपितु इसका उद्देश्य कार्यात्मकता में वृद्धि होने से भी है। उदाहरणार्थ- यदि रसोईघर में भोजन बनाने के प्लेटफार्म की ऊँचाई 4 या 4.5 फीट है जिससे रसोईघर की सुन्दरता में

अतिशय वृद्धि हो रही है। रसोईघर अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक लग रहा है। परन्तु यह प्लेटफार्म गृहिणी की कार्यक्षमता में वृद्धि की दृष्टि से उपयुक्त नहीं है क्योंकि इतनी ऊँची प्लेटफार्म पर रसोई का काम करना सुविधाजनक नहीं है। रोटी पकाना हो या सब्जी गृहिणी को बार-बार हाथ एवं कंधे उचकाने पड़ते है जिससे जल्दी थकान हो जाती है। इतना ही नहीं, यदि लम्बे समय तक इतनी ऊँचाई पर बने प्लेटफार्म पर रसोई का काम किया जाए तो कमर दर्द, पीठ दर्द एवं कंधे में विकृति भी आ सकती है। अत: इतनी ऊँचाई की प्लेटफार्म कार्यात्मकता की दृष्टि से सही नहीं है। इसी तरह यदि अध्ययन करने वाली मेज, कुर्सी को ऊँचाई सही नहीं है, या तो वह बहुत नीची है अथवा बहुत ऊँची तो भी उस पर रखकर लिखना, अध्ययन करना कठिन है। अत: ऐसी सुन्दर वस्तुएँ भी किसी काम को नहीं, यदि उससे कार्यक्षमता में वृद्धि नहीं होने पाये। अत: वस्तु सुन्दर होने के साथ ही कार्यात्मकता में वृद्धि कर सके, ऐसा होना चाहिए।

(B) वस्तु का उपयोग (Use of Materials) - वस्तु चाहे जिस किसी भी पदार्थ का बना हो वह उपयोगी होनी चाहिए, जैसे- यदि प्लास्टिक के चकले-बेलन है, तो उसे ऐसा होना चाहिए जिससे कि रोटी बेलन में परेषानी नहीं हो। बनावट विभिन्न प्रकार के होते है-

1. कोमल, 2. रूखड़ा, 3. कठोर, 4. खुरदरा, 5. चिकना, 6. रोएँदार, 7. छिद्रयुक्त, 8. दानेदार, 9. रवादार, 10. रबड़ के सदृश, 11. धातुकीय, 12. चटटानों, 13. कुरकुरा, 14. लचीला, 15. नुकीला, 16. स्पंजी आदि।

यद्यपि बनावट का उपयोग अति प्राचीन काल से ही घर को सजाने मे किया जाता रहा है। परन्तु वर्तमान समय में इसका प्रचलन काफी बढ़ा है। कला के सौन्दर्य हेतु विभिन्न प्रकार के बनावट वाली वस्तुओं का उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ- मार्बल एवं लकड़ी पर दर्पण का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए इस पर खूब घिसाई की जाती है। लकड़ी में चमक लाने के लिए पॉलिश किया जाता है। मकान एवं भव्यता को सुन्दरता प्रदान करने के लिए पत्थर पर गढ़ाई का काम किया जाता है। कक्ष की अनुपम सुन्दरता हेतु विभिन्न प्रकार की बनावट में भी संयोजन होना

आवश्यक है अन्यथा कक्ष सुन्दर एवं आकर्षक नहीं लगेगा, जैसे- एक रोएँदार अथवा खुरदरी बनावट वाली वस्तु का मेज चिकनी बनावट वाली वस्तु से नहीं होता। इसे निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है- महोगनी की लकड़ी से बना फर्नीचर चिकना होता है। इससे सुन्दरता, एश्वर्यता एवं कोमलता का भाव जाग्रत होता है। इस पर रेशमी वस्त्रों पर रेशमी धागों से कढ़ाई की हुई कुशन कवर खूब फबते है। यदि इन पर खादी के कपड़े या कोई भी रूक्ष एवं मोटे कपड़े के कुशन कवर बनाकर रखें जाएँ तो वे जरा भी नहीं शोभते है क्योंकि कोमलता का मेल रूक्षता अथवा रूखड़ापन से नहीं है। ये दोनों ही विपरीत गुण लिए हुए है। हाँ! यदि कक्ष में विरोधाभास उत्पन्न करना हो तो महोगनी की लकड़ी के साथ ओक, सागवान की लकड़ी का उपयोग फर्नीचर निर्माण में किया जा सकता है। परन्तु इस तरह की सजावट करना बेहद मुश्किल एवं कठिन काम है। इसे हर कोई नहीं कर सकता। कल्पनाशील, सृजनशील, कला में विशारद हासिल करने वाला व्यक्ति ही इस तरह की सज्जा करके कक्ष में सुन्दरता एवं आकर्षण उत्पन्न कर सकता है।

(C) नमूना (Design)- गृह सज्जा में नमूना डिजाइन का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। सामान्य बोलचाल की भाषा में नमूने से तात्पर्य है" रेखाओं, आकारों, स्वरूपों, बनावट एवं रंगों का अनोखा एवं अनूठा मिश्रण" जो चित्त को प्रसन्नता, प्रफुल्लता, उल्लास एवं उत्साह से भर दे। उत्कृष्ट नमूने से कक्ष की सुन्दरता, रोचकता, सजीवता एवं आकर्षण में वृद्धि होती हैं। यह कक्ष की नीरसता एवं उदासीनता को नष्ट कर सुन्दर बनाता है। रेखाओं के संयोजन से नमूने का निर्माण होता है। परन्तु ध्यान रहे? अधिक नमूनेयुक्त कक्ष भी नहीं शोभते। वे चित्रशीलता की तरह दिखने लगते है। इस बात का सदैव स्मरण रहे, "घर घर होता है न कि अजायबघर अथवा चित्रशाला।" इससे देखने वाले को बेचैनी, व्यग्रता, घबराहट एवं कष्ट होने लगता है। अत: कक्ष के सजावट में उतने ही नमूने का उपयोग किया जाए जितना कि आवश्यक है।

गोल्डस्टीन के शब्दों में- "A design refers to any arrangement of lines, forms, colours and textures."

नमूने के आकार, स्वरूप, रेखा, बनावट, आकृति, रंग आदि में सन्तुलन होना चाहिए। रेखाओं में भी आपस में एकरूपता एवं प्रभावोत्पादकता होनी चाहिए। इससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि नमूने का जिस वस्तु पर प्रयोग किया जाए वह वस्तु के अनुरूप एवं अनुपात में होना चाहिए। उदाहरणार्थ- छोटे कमरे में हल्के रंग के छोटे-छोटे नमूने वाले पर्दे, कुशन कवर, गद्दियों के कवर आदि कक्ष के सौन्दर्य में वृद्धि करते है जबकी बड़े कमरे में चटक रंग के बड़े-बड़े नमूनों एवं फलों वाली डिजाइन से निर्मित पर्दे शोभते है। कक्ष की सज्जा करते समय जलवायु का भी ध्यान रखना आवश्यक है। हाँ! बहुत सारे नमूने एक स्थान पर पास-पास नहीं रखने चाहिए। इससे भी सुन्दरता में कमी आ जाती है। यदि कमरे का फर्श एवं दीवार सादा है तो नमूने वाले पर्दे, कालीन, कुशन कवर, मेजमोश आदि लगाकर कक्ष को सुन्दर एवं आकर्षक बनाया जा सकता है। कमरे के कुल क्षेत्र का एक-चौथाई भाग ही नमूने का होने चाहिए।

नमूने के प्रकार (Types of design)

1. **प्राकृतिक नमूने (Natural Design) -** जब नमूने में प्राकृतिक दृश्यों का उपयोग किया जाता है तो उसे प्राकृतिक नमूने कहते है, जैसे- पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, फूल, पहाड़, नदियाँ, झरने, ताल-ततैया, जगंल, पर्वत आदि। प्राकृतिक दृश्यों के चित्रों को फर्श, पर्दे, कालीन, मेजपोश, बेडशीट, कुशन कवर, बीज कवर, टी. वी. कवर आदि पर सुन्दर एवं मनोहारी रंगों से चित्रित किया जाता है। गृह सज्जा में इसका प्रयोग बहुत अधिक होता है।

प्राकृतिक नमूने रूढ़िवादी/परम्परावादी भी हो सकते है और आधुनिक भी।

2. **धार्मिक नमूने (Religious Design) -** जब नमूने में देवी-देवताओं के चित्र उकेरे जाते है तो उसे धार्मिक नमूने कहते है। जैसे- लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, गणेश आदि के चित्र। इसी तरह रामायण/महाभारत के किसी पहलू अथवा भावात्मक दृष्यों को

चित्रित किया जाता है। जैसे- राम वन गमन, सीताहरण, कृष्णलीला, गोपी-कृष्ण रास, द्रौपदी चीरहरण आदि।

3. **ज्यामितीय नमूने (Geometrical Design) -** विभिन्न रेखाओं के संयोजन से ज्यामितीय नमूने बनाये जाते है। कलाकार अपनी कल्पनाशक्ति, सृजनशक्ति से रेखाओं के माध्यम से ऐसे-ऐसे चित्र उकेरेते है जो दर्शक को मंत्रमुग्ध कर देते है। इसीलिए आजकल ज्यामितीय नमूनों का प्रयोग गृह सज्जा में बहुत अधिक होने लगा है।

वस्तुत: ज्यामितीय नमूने कलाकार की कल्पना शक्ति की अनुपम देन है। यह आधुनिक चित्रकला का एक प्रगतिशील उदाहरण है। जब शक्ति प्राकृतिक नमूने, यथा- पेड़-पौधे, चिड़िया, मोर, कमल, गुलाब, शेर, मोर, आदि के चित्रों से ऊब जाता है तब वह ज्यामितीय नमूने का प्रयोग करने लग जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार की रेखाओं, आकार, वृत्त, बिन्दुओं आदि का उपयोग इस तरह से किया जाता है कि वह मनोहारी छटा बिखरने वाला बन जाता है।

4. **मिश्रित शैलीयुक्त नमूने (Mixed Stylized Design) -** एक ही प्रकार के नमूने के निरन्तर प्रयोग से ऊबाऊपन, एकरसता एवं नीरसता उत्पन्न हो जाती है। इस नीरसता को दूर करने के लिए मिश्रित शैली युक्त नमूने का उपयोग किया जाता है। वास्तव में यह शैली कलाकार की कल्पनाशक्ति, सृजनशीलता एवं अद्भूत क्षमता की देन है। इसमें प्राकृतिक दृष्यों एवं ज्यामितीय नमूने को कलाकार अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से इस प्रकार से चित्रित करता है कि दर्शक मंत्रमुग्ध होकर देखते रह जाते है। यथार्थ में, यह नमूना कलाकार की मौलिक कृति होती है। इस कारण उसे आत्म संतोष, सुख एवं नैसर्गिक आनन्द की अनुभूति होती है।

5. **अमूर्त/आधुनिक नमूने (Abstract/Modern Design)-** आजकल इस प्रकार के नमूने का काफी प्रचलन है। कलाकार अपनी इच्छा से जिस तरह का डिजाइन, चित्र बनाना चाहता है, बनाता है। चित्र में वस्तुस्थिति अस्पष्ट होती है अत: प्रत्येक व्यक्ति उस कला/चित्र का अर्थ अपनी-अपनी दृष्टि एवं मत से लगाता है। कलाकार उन्मुक्त

होकर बिना नियम के इस तरह के चित्र/कलात्मक वस्तुओं का निर्माण करता है।

गृह सज्जा में एक ही प्रकार के नमूने की पुनरावृत्ति करके विशिश्टता उत्पन्न की जाती है, जैसे- सोफासेट के सभी कुशन कवर के नमूने एक जैसे बनाये जाते है, जिसके कारण सज्जा की आकर्षण एवं रोचकता मे वृद्धि हो जाती है।

(4) बनावट (Texture) - कला के तत्वों में " **बनावट**" का भी अमूल्य योगदान है। सज्जा में आकर्षण उत्पन्न करने के लिए इसका होना अत्यावश्यक है। विभिन्न वस्तुओं के निर्माण में प्रयुक्त सामग्री अथवा निर्माण विधि का उसके धरातल पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

बनावट का ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से किया जा सकता है। इन्हें छूकर अथवा देखकर किया जा सकता है, जैसे- चिकनी अथवा रूखड़ी वस्तुएँ, कोमल अथवा कठोर वस्तुएँ।
(Texture in the tactile surface quality of material which may be felt when we touch the material or object may be identified through visual examination.)
किसी वस्तु की रचना एव चमक से भी इसके खुरदरेपन अथवा कोमलता का पता लगाया जा सकता है।
बनावट का उपयोग सज्जा में पर्दे, दरी, कालीन, फर्नीचर, बेडकवर, कालीन, कुशन कवर एवं अन्य सजावटी सामग्री पर किया जाता है। हाँ! बनावट में एकता एवं समरूपता होना जरूरी है तभी गृहसज्जा सुन्दर एवं आकर्षक प्रतीत होता है।
(5) रंग (Colour)-रंग कला के तत्वों का सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। गृह सज्जा में रंग का अपना महत्वपूर्ण स्थान है, जिसे कदापि नकारा नहीं जा सकता । रंगों का मानव जीवन से गहरा सम्बन्ध है। रंगीन वस्तुएँ मन को प्रसन्नता, उल्लास एवं उत्साह से भर देती है। जरा सोचें, यदि रंग नहीं होता तो मनुष्य का जीवन कितना नीरस, ऊबाऊ, प्राणहीन एवं उदासीन होता। प्रकृति ने स्वयं विभिन्न रंगों से अपनी कृतियों को सजाया है, संवारा है। पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, फूल-पत्तियाँ, पशु-पक्षी, मछलियाँ आदि विभिन्न

रंगों की होती है। यहाँ तक कि निर्जीव वस्तुओं में भी अनोखे रंग विद्यमान होते है जो देखने वाले को अतिशय आनन्द एवं प्रसन्नता देते है। रंगों के कारण ही प्राकृतिक वस्तु सुन्दर, मोहक, आकर्षक, नैसर्गिक एवं अद्भूत छटा बिखरने वाली लगती है। प्रात: कालीन उगते सूरज की किरणें, तालाब में खिले हुए कमल के फूल, आकाश में छाये काले-काले बादल, गगन में उड़ते पक्षी, सावन की झड़ी मे नाचता मोर, जंगल में खिले फूल, इन सभी को देखकर हमारा रोम-रोम पुलकित हो उठता है। मन हर्ष, खुषी एवं आनन्द से नाच उठता है। हम कुछ क्षण के लिए अपनी पीड़ा, दर्द एवं थकान को मिटाकर प्रकृति के इस सुन्दरतम दृश्य को निहारने लग जाते है।

स्टेला सुन्दरराज के शब्दों में - “Colour removes the drabness from life and enhances the beauty of objects. It’s appeal is universal.”
मगर ध्यान रहे! सुन्दर रंगों के उचित मेल से सजाया गया घर ही सुन्दर लगता है। यदि इसे उटपटांग, बिना सोचे-समझे रंगों का उपयोग कर सजाया जाए तो वे व्यक्ति के चित्त को अशांत, अस्थिर कर देते है। व्यक्ति को घबराहट, बेचैनी एवं व्यग्रता महसूस होने लगती है। अत: रंगों का उपयोग सोच-समझकर, बुद्धिमानीपूर्वक किया जाना चाहिए। रंगों का स्थान, समय, वातावरण, आकृति, रूप, परिस्थिति, मौसम आदि के अनुसार करने से वे सुन्दर लगते है।
रंगों का प्रयोग करना भी एक कला है। यह कला किसी व्यक्ति मे जन्मजात (ईश्वरीय गुण) होती है तो किसी को अर्जित करनी पड़ती है। रंगों का अपना विज्ञान है, सिद्धान्त है। रंगों के विभिन्न सिद्धान्तों की जानकारी करने से रंगों का प्रयोग करना सरल हो जाता है।
रंगों का व्यक्ति के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। कुछ रंग चित्त को हर्षित एवं उल्लासित करते है, तो कुछ रंग अवसाद एवं निराशा उत्पन्न करते है। रंगों से स्थान एवं दूरी का भी भ्रम उत्पन्न किया जा सकता है। हल्के रंगों से पुती हुई दीवार कक्ष को बड़ा करके दिखाती है जबकी गर्म रंगों के प्रयोग से कमरा छोटा दिखता है। ठंडे रंगों (नीला, हरा, बैंगनी) के उपयोग से भी कक्ष बड़ा दिखाई देता है। हल्के रंग (जैसे पीला, सफेद) के उपयोग

से कमरा प्रकाशयुक्त लगता है जबकी गहरे रंगों के प्रयोग से कमरा अन्धकारमय लगता है क्योंकि हल्के रंग प्रकाश को परावर्तित करते हैं तथा गहरे रंग प्रकाश को अवशोषित'।
रंगों के बारे में विस्तृत अध्ययन आगामी इकाई में किया गया है।
(6) खुला स्थान (Open Space) - गृह सज्जा में खुला स्थान का भी उतना ही महत्वपूर्ण स्थान है जितना कि रंग, आकार, बनावट, प्रकाश आदि का। खुला स्थान प्रशंसा एवं शान्ति के भाव प्रकट करते हैं। इससे कक्ष में पूर्णता एवं भव्यता (Expressiveness) आती है तथा उसकी वृहदता में वृद्धि होती है।

कक्ष की सजावट इस तरह से की जानी चाहिए कि उसमें कुछ खुला स्थान अवश्य बचा रहे। पूरा कमरा यदि सामानों, सजावटी, वस्तुओं, चित्रों, पेंटिंग्स आदि से भर दिये जाएँ तो कमरा कमरा न होकर चित्रशाला की तरह दिखने लगता है। इससे कलात्मक वस्तुओं की सुन्दरता कक्ष के सौन्दर्य एवं आकर्षण को बढ़ाने में असमर्थ हो जाती है।। इतना ही नहीं, ये देखने वालों के मन मे अशांत, बेचैनी, व्यग्रता एवं असंतोष भर देती है ।

कक्ष में बहुत अधिक सामग्री होने से वे सुन्दर नहीं दिखते है। साथ ही कक्ष की साफ-सफाई करना भी मुश्किल हो जाता है। कक्ष में आने-जाने के लिए स्वत़न्त्र मार्ग नहीं मिल पाता। वस्तु से टकराकर चोट लगने/गिरने का भय रहता है। अत: कक्ष की सज्जा करते समय उतनी ही वस्तुओं का उपयोग किया जाना चाहिए जितना कि आवश्यक है और कक्ष में सौन्दर्य एवं आकर्षण उत्पन्न कर सकते है। फर्नीचर को एक समूह में सजाना चाहिए ताकि खुला स्थान बचा रहे तथा आवागमन निर्बाध रूप से होता रहे। इसी तरह छोटे-छोटे एवं एक समान आकार-आकृति के चीजों को भी एक साथ समूह में सजाकर खुला स्थान की व्यवस्था की जा सकती है।
कमरे में स्थान की खुलाता सादे कालीन, खाली दीवार एवं कम फर्नीचर रखकर की जा सकती है। विपरीत दीवारों में दर्पण/काँच का उपयोग करने से कमरा बड़ा, खुला, वृहद एवं भव्य दिखता है। भवन निर्माण में बड़े बरामदे, बालकॉनी, गैलेरी, पोर्च, उद्यान, सीढ़ियों के नीचे की खाली जगह, आँगन आदि बनाकर खुला स्थान में वृद्धि की जा सकती है।

10.5 अभ्यास प्रश्न

1. कला क्या है ? समझाइये।
2. कला के तत्वों की विस्तृत जानकारी दीजिए।
3. नमूनों केविविध प्रकार का उल्लेख कीजिए।
4. आकार की विशेषताओं के बारे में बताइए ?

10.6 संदर्भ ग्रन्थ

1. बी.के. बख्शी गृह व्यवस्था है गृह सज्जा साहित्य प्रकाशन आगरा

2. डा. वृंदा सिंह, गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा पंचशील प्रकाशन जयपुर

3. डा. रीना खनुजा गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi

"Managment for Morden Families Sterling"

5- Nickel Dorsey M & Sons New york

"Managment in Family

इकाई 11

फर्नीचर व्यवस्था

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 फर्नीचर के प्रकार

11.3 फर्नीचर का चयन

11.4 फर्नीचर की व्यवस्था

11.5 विभिन्न कमरे में फर्नीचर की व्यवस्था

11.6 फर्नीचर का महत्व

11.7 सारांश

11.8 अभ्यास प्रश्न

11.9 संदर्भ ग्रन्थ

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत

- फर्नीचर का महत्व की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- फर्नीचर के प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- फर्नीचर का चयन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- फर्नीचर की व्यवस्था की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- विभिन्न कमरे में फर्नीचर की व्यवस्था की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

11.1 प्रस्तावना

गृह सज्जा में फर्नीचर का का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। आज फर्नीचर हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। फर्नीचर एक सजे सवरे घर की महत्ती आवश्यकता बन गई है। सुविधा उद्देश्य न केवल घर को सजाना होता है बल्कि यह विभिन्न क्रियाओं को करने में प्रदान करता है व व्यक्ति की क्रियाशीलता को बढ़ता है। थकावट कम करता है तथा समय, शक्ति की बचत करता है। उदाहरणार्थ - नीचे जमीन पर बैठकर वस्त्र धोने में अधिक ऊर्जा व्यय होती है। साथ ही शीघ्र थकान हो जाती है। परन्तु यदि वस्त्र धुलाई का कार्य चौकी या पीढ़ा पर बैठकर किया जाए तो कम ऊर्जा व्यय होती है। इसी तरह बैठकर प्रेस करने से अधिक थकान होती है। यदि प्रेस करने की क्रिया खड़े होकर की जाए तो कम ऊर्जा व्यय होती है, साथ ही

थकान भी कम होती है। अत: फर्नीचर व्यक्ति की क्रियाशीलता में वृद्धि करता है। फर्नीचर अंग्रेजी भाषा का शब्द है जिसका तात्पर्य है - मेज, कुर्सी, पलंग, बुकरैक, आलमारियां , तख्त, चारपाई, सोफा, बेंच, मोढा, डेस्क आदि। विभिन्न शब्दों में फर्नीचर का अर्थ - घर के चलायमान उपकरणों से है जो सज्जा हेतु घर में, होटल में, निजी संस्थानों में अथवा सरकारी दफ्तरों में उपयोग लिये जाते हैं जैसे मेज, कुर्सी, पलंग, सोफा सेट, डेस्क आलमारियां चारपाई आदि। यद्यपि प्रत्येक परिवार की आवश्यकता एक समान नहीं होती परन्तु अनिवार्य आवश्यकता सभी की लगभग एक जैसी ही होती है।

11.2 फर्नीचर के प्रकार

फर्नीचर को उनके आधारों पर निम्न प्रकारों में वर्गीकृत कर सकते हैं -

1- फर्नीचर निर्माण प्रयुक्त पदार्थों के आधार पर
2- सज्जा शैली के आधार पर
3- कीमत/मूल्य के आधार पर
1- फर्नीचर निर्माण प्रयुक्त पदार्थों के आधार पर फर्नीचर जिन पदार्थों से बना है, उसके आधार पर हम इसे निम्न प्रकारों में बांट सकते हैं -

1 **लकडी का फर्नीचर -** अत्यन्त प्राचीन समय से ही लकडी का उपयोग फर्नीचर बनाने में किया जाता रहा है। लकडी के बने फर्नीचर अत्यन्त मजबूत, टिकाऊ, सुन्दर आकर्षक एवं वैभवशाली होते है। फर्नीचर के लिए सामान्यत: शीशम, चीड, देवदार, आबनुस, आम, अखरोट आदि की लकडी का प्रयोग किया जाता है। सागवान, चीड शीशम, बबूल आदि की लकडियो से सामान्य किस्म का फर्नीचर बनता है जिसका उपयोग मध्यम आय वर्ग के लोग भी अपने घरों में कर सकते है। परन्तु जंगल के कट जाने से लकडियों कें काफी कमी आयी है। अत: लकडी के फर्नीचर काफी महंगे बिकने लगे है।लकडी के फर्नीचर नक्काशीदार अथवा सादे भी बनवाये जा सकते हैं। परन्तु लकडी के फर्नीचर में घुन लगने का डर रहता है।

2 **बेंत का फर्नीचर -** बेंत का फर्नीचर हल्का, मजबूत एवं टिकाऊ होता है। ये विभिन्न डिजाइनों में मिलते है। वर्तमान में बेंत की बनी मेज, कुर्सियां, सोफा, रैंक आदि काफी उपयोग मे ली जा रही है। इनकी कीमत भी अपेक्षाकृत कम होती है। ये वजन में हल्के टिकाऊ एवं काफी मजबूत होते है। बारीक डिजाइन व बुनाई से सोफा सेट, मेज, कुर्सियां, बुकरैक आदि बनाये जाते है। बेंत के बने झूले काफी मजबूत होते है तथा इन्हें बरामदें लॉबी कमरे आदि में छत से लटकाकर रखे जा सकते है।

3 **प्लाईवुड -** लकडी की कीमत में बेतहाशा वृद्धि होने से प्लाईवुड का उपयोग भी फर्नीचर बनाने में किया जाने लगा है। प्लाईवुड से मेज, पलंग, दीवान, चौकी आलमारी आदि बनाये जाते हैं। परन्तु प्लाईवुड का फर्नीचर कम मजबूत व टीकाउ होता है। साथ ही बरसात के मौसम में सीलन के कारण फूलने का भी डर रहता है।

4 **सारकंडा -** आजकल सरकंडे का भी उपयोग फर्नीचर बनाने में किया जाने लगा है । सरकंडे से बने मूढे काफी लोकप्रिय है। ये काफी सस्ते एवं वजन में हल्के होते हैं। बरामदा नॉन बगीचे आदि में बैठने के लिए इनका उपयोग किया जाता है

5 **प्लास्टिक फर्नीचर -** 21वीं सदी को प्लास्टिक का युग कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज का युग प्लास्टिक का युग है। प्लास्टिक ने अपनी पैठ हर जगह बना ली है । प्लास्टिक के बने फर्नीचर अत्यन्त टिकाऊ, मजबूत सुन्दर एवं आकर्षक होते है। साथ ही ये काफी मजबूत होते है। ये विभिन्न रंगों एवं डिजाइनों में उपलब्ध होते है। प्लास्टिक की कुर्सियों, टेबुलें मेज चौकी चारपाई आदि वजन में काफी हल्के होते है । जिन्हें आसानी से एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान तक ले जाया जा सकता है।

6 **फाइबर ग्लास का फर्नीचर -** आज के वैज्ञानिक युग में अनेक प्रकार के पदार्थों का निर्माण हो रहा है जिसे फर्नीचर बनाये जाते है। फाइबर ग्लास उन्हीं में से एक पदार्थ ह। फारबर ग्लास

के बने फर्नीचर वजन में हल्के सुन्दर टिकाऊ एवं काफी मजबूत होते है। परन्तु ये काफी मंहगे होते है। अत: इनका उपयोग ही धनाढ्य वर्ग के लोग कर पाते है।

7 **धातु का फर्नीचर -** इस्पात, लोहा, पीतल, एल्यूमिनियम, कांसा आदि के उपयोग से भी फर्नीचर बनाये जाते है। मुगलकालीन साम्राज्य में चांदी एवं सोने के सिंहासन बनाये जाते थे। जिसका उपयोग राजा, महाराजाओं महारानियों द्वारा किया जाता था। लोहे के फर्नीचर जैसे मेज, कुर्सी, स्टूल, पलंग आलमारियां, रेंक, खाट आदि बनाये जाते हैं। धातु के उपर आरामदायक गद्दियां लगाकर इसे आवश्यकता न होने पर मोडकर रखा जा सकता है। ऐसे फर्नीचर स्थानाभाव वाले जगह जैसे मुम्बई, दिल्ली, कलकत्ता आदि बडे नगरों के लिए श्रेष्ठ होते है।

8 **गद्देदार फर्नीचर -** रबर, जूट, फोम आदि के उपयोग से गद्देदार फर्नीचर तैयार किये जाते है। ये विभिन्न डिजाइन, आकार, एवं आकृति में मिलते हैं। गद्देदार फर्नीचर तैयार करने के लिए सामान्यत: लकडी या धातु का फ्रेम तैयार किया जाता है। फिर रेक्जीन, मोटे कपड़े अथवा मुलायम चमड़े से उपरी आवरण दियाजाता है। इसमें स्प्रिंग की सहायता से गद्दियां तैयार की जाती है। बैठक का सोफा सेट सामान्यत: ही मजबूत टिकाऊ हो। डिलक्स सोफे भी इसी विधि से गद्देदार बनाये जाते हैं। उत्तम कोटि के फर्नीचर में निवार पट्टी का ताना बाना इस प्रकार से बुना जाता है कि जरा सी भी जगह शेष नहीं रहे। फिर इसके उपर जूट का मोटा कपडा लगाया जाता है तथा इसके उपन नारियल के छिलके, जूट के रेशे, तथा फोम भर दिये जाते है। वैसे आजकल फोम के स्थान पर रबरकृत कोयॉर का भी उपयोग किया जाने लगा है। ये फर्नीचर वजन में भारी तथा मंहगे होते है।

2 सज्जा शैली के आधार पर

सज्जा शैली के आधार पर फर्नीचर को निम्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है -

1- ऐतिहासिक शैली
2- देशी शैली
3- आधुनिक शैली

1- **ऐतिहासिक शैली -** किसी काल विशेष के सज्जा शैली का आधार बनाकर जब फर्नीचर का निर्माण किया जाता है। तब उसे ऐतिहासिक शैली का फर्नीचर कहते है, जैसे मुगलकालीन शैली, ब्रिटिश कालीन शैली, मन्दिर शैली आदि।

2- **देशी शैली -** जब घर की सज्जा परम्परागत तरीके से अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को ध्यान में रखकर करते हैं तब उसे देशी शैली कहा जाता है। जैसे बैठक कक्ष में दीवार पर मसनद रखकर आरामदेह बनाया जाता है। स्नानगृह में लकडी का पीढा अथवा छोटी चौकी रखकर नहाने धोने के कार्य को सुगम बनाया जा सकता है। इसी तरह रसोईघर में लकडी की रैंक बनाकर उस पर मसाले रखने के डिब्बे, बर्तन आदि की व्यवस्था करना, चौकी पर बर्तन रखने की व्यवस्था करना आदि। शयन कक्ष में तख्त पर गद्देदार बिस्तर लगाकर सोने की व्यवस्था करना।

3- **आधुनिक शैली -** आधुनिक शैली पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति की देन है। इसमें डबल बेड, सोफा सेट, दीवान, पलंग, टेबुल लेम्प आदि का प्रयोग कर कक्ष को सुन्दर, सुविधापूर्ण एवं आरामदायक बनाया जाता है। आधुनिक शैली के फर्नीचर विभिन्न प्रकार के पदार्थों के बने होते है, जैसे लकडी, प्लास्टिक, प्लाईवुड, फाइबर, ग्लास धातु आदि। आधुनिक शैली में बने फर्नीचर अधिक सुविधाजनक एवं आरामदायक होते हैं तथा विलासिता के प्रतीक होते हैं।

3. कीमत/मूल्य के आधार पर - कीमत के आधार पर भी फर्नीचर को निम्न भागों में बांटा जा सकता है -

1- **उच्च कीमत का फर्नीचर** - उच्च कीमत वाले फर्नीचर काफी मंहगे होते हैं। लकडी का नक्काशीदार फर्नीचर, फोमयुक्त फर्नीचर, मुलायम, चमड़े का फर्नीचर, फाइबर ग्लास का फर्नीचर आदि काफी मंहगे होते है। लकडी के फर्नीचर में भी सागवान, महोगनी, अखरोट, देवदार, शीशम आदि की लकडियों से बने फर्नीचर काफी मंहगे होते हैं। इनमें कांच, सनमाइका रबर फोम बढिया कपडा, चमडा आदि लगाकर सुन्दर एवं आकर्षक बनाया जाता है।

2- **मध्यम कीमत का फर्नीचर -** ऐसे फर्नीचर न तो बहुत अधिक दाम के होते हैं और न ही बहुत कम। लकडी का ब हुआ सादे डिजाइन का फर्नीचर मध्यम कीमत के होते हैं । बेंत एवं केन का फर्नीचर भी सस्ते दामों में उपलब्ध हो जाता है।

3- **कम कीमत का फर्नीचर -** सस्ती एवं कमजोर लकडियों से बना फर्नीचर कम कीमत का होता है, जैसे आम, कटल, महुआ, सखुआ, बबूल आदि। ये लकडियां सस्ती मिलती है। इनमें बने फर्नीचर बहुत अधिक मजबूत एवं टिकाऊ नहीं होते हैं। अत: ये सस्ते मिलते हैं तथा निर्धन वर्ग के लोग भी इनका उपयोग अपने घरों में फर्नीचर बनाने में कर सकते हैं।

11.3 फर्नीचर का चयन

फर्नीचर आज मानव जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। हर घर की पहली आवश्यकता है फर्नीचर। इनके बिना कार्यों को सम्पन्न करने, उठने, बैठने सोने भोजन करने, रसोई पकाने, वस्त्र धोने, अतिथियों को बिठाने आदि में भारी कठिनाइयों का सामना करना पडता है। परन्तु फर्नीचर किस तरह का होना चाहिए ताकि वे अधिकाधिक उद्देश्यों की पूर्ति कर सके, इसके बारे में जानना जरूरी है। कई बार दूसरों की देखादेखी उनकी नकल करके ऐसे फर्नीचर खरीद लिये जाते हैं जिनकी वास्तव में कोई आवश्यकता नहीं होती ह। फलत: उस पर व्यय किया गया धन, समय, एवं शक्ति सभी कुछ व्यर्थ हो जाता है। इसके विपरित इन्हें घर में उपयुक्त स्थान पर रखने से कार्य करने में बाधा उत्पन्न होती है। धर की साफ सफाई करना मुश्किल हो जाता है। इसलिए यह जरूरी है कि फर्नीचर इस

तरह के खरीदे जाएं जो मजबूत टिकाऊ, उपयोगी, आरामदायक सुविधापूर्ण होने के साथ ही अनेकानेक उद्देश्यों की पूर्ति कर सके। फर्नीचर आधुनिक डिजाइन वाला एवं प्रचलित शैली का होना चाए्। साथ ही वे सस्ते भी हो तथा कम स्थान घेरते हों, इस बात का भी ध्यान रखा जाना आवश्यक है।

1. धन की दृष्टि में मितव्ययिता - फर्नीचर धन की दृष्टि से मितव्ययी होना चाहिए। फर्नीचर बनाने के संबंध में सामान्यत मत यह है कि एक मकान बनाने में जितना खर्च आता है। उसके खर्च का 1/4 से 1/5 भाग फर्नीचर पर व्यय किया जाना चाहिए। परन्तु

यह सैद्धान्तिक रूप ही सही है। व्यावहारिक तौर पर इसका प्रयोग किया जाना भारत जैसे निर्धन विकासशील देश के लिए संभव नहीं है। क्योंकि भारत की अधिकांश जनता झुग्गी - झोपडियों में रहती हैं तथा टूटी फूटी चारपाई पर सोकर जीवन गुजारती है । परन्तु इसका अर्थ न समझें कि घर में फर्नीचर होना ही नहीं चाहिए अथ्वा व्यक्ति फर्नीचर खरीद ही हीं सकता। एक सामान्य आय अर्जित करने वाला व्यक्ति भी यदि

सोच समझकर धन व्यय करे तो वह फर्नीचर खरीद सकता है और अपने जीवन को सुख, सुविधा एवं आरामदायक बिता सकता है।

2. स्थान की दृष्टि से मितव्ययिता - वर्तमान समय में, जनसंख्या वृद्धि के कारण आवास की समस्या विकट रूप धारण करती जा रही है। शहरों एवं महानगरों में लोगों को रहने के लिए मकान नहीं है। वे एक या दो कमरे में रहकर जीवनयापन हेतु विवश होते है। ऐसी स्थिति में यह जरूरी है कि फर्नीचर ऐसा हो जो कम स्थान घेरे। स्थानाभाव की दृष्टि से बहुप्रयोजनीय फर्नीचर श्रेष्ठ होते है।

- बैठक कक्ष हेतु सोफा कम बेड खरीदे जाने चाहिए जो दिन में सोफा की तरह काम आए तथा रात्रि के समय पलंग की तरह उपयोग मे लाया जा सके। सोफा कम बेड से स्थान की बचत होती है।

- पलंग इस तरह के बनवाये जाने चाहिए जिसमें बॉक्स में घर के अेक सामान, वस्त्र, बिस्तर, आदिको सुरक्षित रखे जा सकते हैं।

3. सुन्दरता नवीन फर्नीचर खरीदते समय इनकी सुन्दरता, ऐश्वर्यशीलता एवं आकर्षण पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

4. मजबूती फर्नीचर न केवल सुन्दर, मनोहारी व लुभावनी ही हो बल्कि इसके इन गुणों के साथ ही इसमें मजबूती का भी गुण विद्यमान होना चाहिए। क्योंकि फर्नीचर बार बार नहीं खरीदें जाते।

इसीलिए यह जरूरी है कि सस्ते दामों में बहुत सारे फर्नीचर न क्रय करके मंहगे दामों मे एक दो फर्नीचर ही खरीदे जाएं। फर्नीचर का मजबूती लकडी के किस्म, प्रकार एवं बनावट पर निर्भर करता है। सागवान, शीशम, महोगनी, देवदार आदि की लकडियों के फर्नीचर मजबूत एवं टिकाऊ होते हैं । हां फर्नीचर सदैव पकी हुई एवं सुखी लकडियों से बनावाया जाना चाहिए। फर्नीचर की लकडी यदि कच्ची और नई है तब उससे अच्छे फर्नीचर नहीं बनते। गर्मी के मौसम कमे इनके सुख जाने पर जोडों में दरार पड जाती है तथा वर्षा ऋतु में फूलकर उनका आकार टेढा मेढा हो जाता है। किवाड के पल्ले बरसात में नहीं लगते। लकडियां, जगह जगह से चटक जाती है। उनमें दीमक, घुन, एवं कीड़े लग जाते हैं। परिणामत: जल्दी ही सड़कर व्यर्थ हो जाता है । इसलिए सूखी लकडियों से बनवायी जानी चाहिए।

5. उपयोगिता - आधुनिक समय में आवासों को समस्या विकट रूप धारण करती जा रही है। ऐसी स्थिति में वे ही फर्नीचर खरीदे जाएं तो उपयोगी है। मोहक एवं लुभावनी क्यों हीं हो। क्योंकि फर्नीचर अनावश्यक ही मकान मे जगह रोकता है तथा व्यक्ति की क्रियाशीलता में बांधा पहुंचाता है। अत: फर्नीचर स्थान को ध्यान में रखते हों उपयोगी हो तथा बहुप्रयोजनीय हो।

6. फैशन एवं शैली फर्नीचर खरीदने से पूर्व गृहिणी को प्रचलित शैली एवं आधुनिक डिजाइन का ज्ञान होना चाहिए। अन्यथा वे हमें पिछडा होने का संकेत देते है। आजकल फर्नीचर के कौन कौने से डिजाइन प्रचलित है। इसका ज्ञान पत्र, पत्रिकाओं, पुस्तकों अखबारों

विज्ञापन आदि के माध्यम से प्राप्त हो जाता है। फर्नीचर सदैव सामयिक, फैशन एवं शैली के खरीदने चाहिए ताकि इसमें व्यक्ति को अधिकतम सुख शान्ति, आनन्द एवं संतोष की अनुभूति हो सके।

7. डिजाइन - फर्नीचर का चयन करते समय इसके डिजाइन पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है। फर्नीचर सरल एवं सादे डिजाइन का परन्तु आकर्षक होना चाहिए। वे खूबसूत, सुडौल, नवीन एवं प्रचलित फैशन के होने चाहिए। कुशल कारीगर द्वारा बनवाया गया हो। एक श्रेष्ठ फर्नीचर वहीं होता है जो सादा होने के साथ सुन्दर भी हो तथा जिसकी साफ सफाई देखभाल रख रखाव करने में कम से कम समय एवं शक्ति नष्ट हो। फर्नीचर के डिजाइन बहुत अधिक उलझे हुए व जटिन न हो बल्कि नक्काशीदार ही हो। अधिक जटिल डिजान वाले फर्नीचर को साफ सफाई करना बेहद कठिन काम है।

8. आरामदेह - फर्नीचर सुन्दर मजबूत एवं टिकाऊ होने के साथ ही आरामदेह एवं सुविधाजनक भी होना चाहिए। आरामदायिकता फर्नीचर की सबसे बडी विशेषता है। फर्नीचर का डिजाइन इस तरह का नहीं होना चाहिए। जिससे कि उस पर बैठने सोने पढने, लिखने व आराम करने में कष्ट हो। फर्नीचर का डिजाइन कार्यानुसार होना चाहिए, जैसे सोफा, पलंग, कुर्सी स्टूल, मेज, अध्ययन मेज आदि का डिजाइन आरामदायक होना जरूरी है ताकि व्यक्ति आराम से उचित शारीरिक मुद्रा अपनाकर कार्य कर सकेगा। आमतौर पर फर्नीचर औसत व्यक्ति की उंचाई 5 फीट 5 इंच को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। कुर्सियों एवं सोफे भी इसी माप को ध्यान में रखकर बनाये जाते हैं। परन्तु यदि इससे कम या अधिक माप की कुर्सी मेज, स्टूल आदि बनवाये जाने हैं तब विशेष आदेश देकर बनवाये जा सकते है। एक सिंगल बेड पलंग की औसत लम्बाई 6 फीट तथा चौडाई 3 फीट रखी जाती है। परन्तु यदि इससे बडा बनवाना है तब विशेष आदेश देकर बनवाये जा सकते है। कुर्सी की गहराई इतनी होनी चाहिए ताकि वह बैठने वाले के घुटनों के पीछे तथा दोनों कंधों एवं सिर का भी पीछे से टिकाकर पर्याप्त विश्राम किया जा सके

9. स्थायी /अस्थायी अवस्था - स्थायी/अस्थायी अवस्था से तात्पर्य है - परिवार का एक ही स्थान पर मकान बनाकर स्थायी रूप से रहने से अथवा व्यापार या नौकरी के कारण बार बार स्थानान्तरिक होते रहने से। यदि परिवार स्थायी रूप से स्वयं का निजी मकान बनाकर एक ही शहर में रहता है त बवह भारी, डिजाइनदार, अत्याधुनिक एवं कीमती फर्नीचर खरीद सकता है। मंहगे सोफा सेट खरीद सकता है। परन्तु यदि उसे बार बार स्थान्तरित होकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना पडे तो उसे हल्के वजन का कम कीमत वाला सादे डिजाइन का मजबूत एवं टिकाऊ फर्नीचर खरीदना चाहिए। फर्नीचर मुडने वाला तथा खुल जने वाला होना चाहिए तथा परिवहन में सुविधा हो तथा फर्नीचरों को कम से कम नुकसान हो।

10. पारिवारिक जीवन चक्र की अवस्था - हरेक परिवार अपने सम्पूर्ण जीवन काल में विभिन्न अवस्थाओं से होकर गुजरता है और हरेक अवस्था की अपनी विशिष्ट पहचान होती है। यदि परिवार में बच्चे छोटे हैं तब रेक्जीन, मुलायम चमडे , बहुमूल्य कपडों के फर्नीचर नहीं खरीदना चाहिए क्योंकि छोटे , नासमझ बच्चे इन्हें अपने दांतों , नाखूनों, अथ्वा छूरी चाकू से काट सकते हैं। किसी नुकीले चीजों से खरोंचकर बर्बाद कर सकते है। ऐसी अवस्था में लकडी धातु या प्लास्टिक के मजबूत फर्नीचर खरीदे जाने चाहिए। जब बच्चा बडा व समझदार हो जाए तभी नाजुक नक्काशीदार कीमती एवं खूबसूरत फर्नीचर खरीदे जाने चाहिए।

11. अभिव्यंजकता - फर्नीचर का चयन कमरे के आकार, उंचाई एवं रंग योजना के अनुसार किया जाना चाहिए। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि फर्नीचर किस कक्ष में ज्यादा शोभगे तथा किसकी कार्यात्मकता अधिक होगी। एक औपचारिक परम्परागत मकान के लिए आरामदायक फर्नीचर उत्तम रहते है। फर्नीचर का आकार माप, आकृति, शैली, रंग डिजाइन आदि कमरे के अनुरूप होनी चाहिए। कक्ष से मेल खो होनी चाहिए।

11.4 फर्नीचर की व्यवस्था

गृह सज्जा में फर्नीचर का अति महत्वपूर्ण एवं अनोखा स्थान है। केवल सुन्दर, सुडौल, आकर्षक, सुविधाजनक मोहक, कीमती व आरामदायक फर्नीचर खरीद लेना ही पर्याप्त नहीं होता है। बल्कि इससे भी जरूरी यह है कि फर्नीचर को कमरे में किस प्रकार से सुव्यवस्थित व सुसृज्जित करके लगाया जाए ताकि कक्ष की सौन्दर्यपरक एवं कार्यात्मक में दोगुनी वृद्धि हो सके तथा उपयोगकर्ता को अधिकतम मानसिक शारीरिक सुख, आनन्द शान्ति, संतोष एवं आराम की अनुभूति हो सकें।

फर्नीचर व्यवस्था करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए -

1- फर्नीचर व्यवस्था करते समय कला के तत्वों एवं सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए ताकि कक्ष एवं फर्नीचर की सौन्दर्यता एवं कार्यात्मकता में अतिशय वृद्धि हो सके तथा परिवार के सदस्य बिना बाधा के अपने अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सकें।

2- फर्नीचर की व्यवस्था एक केन्द्र बिन्दु को ध्यान में रखकर करनी चाहिए। यह केन्द्र बिन्दु प्राकृतिक दृश्य आकर्र्षण लॉन बगीचे आदि को ध्यान में रखकर किया जा सकता है। किसी सुन्दर चित्र को केन्द्र बिन्दु मानकर फर्नीचर कीव्यवस्था की जा सकती है।

3- फर्नीचर व्यवस्था करते समय कला के सिद्धान्तों में से संतुलन पर ध्यान दिया आवश्यक है। संतुलन के नियम की पालना से सज्जा अकर्षक जीवंत सुन्दर एवं अलौकिक दिखती है। छोटी वस्तुओं कोसमूह में रखना चाहिए। संतुलन बनाने के लिए सोफे के दोनों ओर कुर्सी तथा सामने की ओर मेज रखनी चाहिए। कमरे के सामान की व्यवस्था करते समय कमरे के चारों कोनों तथा आमने सामने की दीवारों की संतुलन का विशेष महत्व है। कमरे के चारों दिवारों में संतुलन की भावना का आभास करने के लिए चारों और समान भार होना चाहिए। आमने सामने की दीवार विशेष रूप से संतुलित होनी चाहिए। कमरे के आधे भाग का भार शेष आधे भाग के बराबर होना चाहिए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि केन्द्र का भाग सर्वाधिक सुसज्जित एवं आकर्षक हो। कमरे में, फर्नीचर की व्यवस्था में अनौपचारिक या औपचारिक किसी भी प्रकार से संतुलन

स्थापित किया जा सकता है। औपचारिक संतुलन में केन्द्र के दोनों ओर एक जैसी आकार, आकृति, रंग रूप के फर्नीचर रखकर सजाये जाते है। परन्तु इसप्रकार की सज्जा से कमरा कभी कभी बहुत अधिक भरा भरा दिखता है जो कमरे को छोटा होने का आभास दिलाता है। क्रियात्मकता कम करता है तथा सौन्दर्यता एवं आकर्षक में कमी ला देता है। हां यदि कमरा बडा है, तब अनौपचारिक संतुलन द्वारा कक्ष को सजायाजा सकता है। वर्तमान समय में अनौपचारिक संतुलन का अधिक चलन है, क्योंकि इसे करना आसान है।साथ ही इससे कक्ष की क्रियात्मकता में वृद्धि होती है। कमरे के आकार के अनुसार ही फर्नीचर का चयन किया जाना चाहिए। यदि कमरे छोटे हैं, तब इसमें छोटे फर्नीचर ही शोभते हैं। बड़े कमरे के लिए बड़े माप का फर्नीचर होना चाहिए। इससे फर्नीचर एवं कक्ष में अनुरूपता आती है।

1- कमरे तथा फर्नीचर निर्माण कला को ध्यान में रखकर फर्नीचर व्यवस्था की जानी चाहिए ।बडा एवं भारी फर्नीचर कमरे के बडी एवं लम्बी दीवार के साथ लगाना चाहिए। सीधी कुर्सी को दीवार के सहारे लगाना चाहिए।
2- फर्नीचर व्यवस्था करते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए। कि इससे आने जाने के रास्ते में रूकावट न हो काम करने में किसी तरह की बाधा ही उत्पन्न हो।
3- फर्नीचर कमरे के आकार के अनुपात में होना चाहिए। साथ ही इनमें आपसी अनुपात का होना भी आवश्यक है। तभी सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक दिखेगी।
4- कभी भी बडे बडे फर्नीचरों को एक साथ नहीं रखना चाहिए। फर्नीचर व्यवस्था इस तरह से होनी चाहिए कि प्रत्येक फर्नीचर तक पर्याप्त रोशनी पहुंच सके तथा उसके आस पास की सफाई अच्छी तरह से की जा सकें।
5- प्रत्येक कक्ष में फर्नीचर व्यवस्था उस कमरे में किये जाने वाले कार्यों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। यदि एक ही कमरे में बहुत सारे कार्यों को करना है तथा कमरा बहुत बडा हॉलनुमा है तो इस

प्रकार के कख में फर्नीचर व्यवस्था करते सकय यह ध्यान रखना चाहिए कि अलग अलग कार्यों हेतु अलग अलग फर्नीचर व्यवस्था हो तथा वे अलग अलग इकाई के रूप में दिखे। उदाहरणार्थ - एक हॉलनुमा कमरे में ही बैठक कक्ष एवं अध्ययन कक्ष की व्यवस्था है तो बैठक कक्ष का फर्नीचर अलग होना चाहिए तथा अध्ययन कक्ष का अलग। साथ ही कमरे में कार्यों को स्वतंत्रापूर्वक करने हेतु स्थान मिले, व्यक्ति के आने जाने में फर्नीचर रूकावट नहीं पैदा करे तथा सभी सामग्री पर उचित दृष्टि पडे। ऐसी व्यवस्था करना श्रेष्ठ रहता है।

6- स्थान की बचत उपयोगिता तथा सौन्दर्यता की दृष्टि से फर्नीचर को समूहों में संयोजित करके रखना चाहिए ताकि वे आकर्षण का केन्द्र बने।

7- छोटे फर्नीचर को समूह में रचाना चाहिए। परन्तु यदि फर्नीचर बडा है तब उसे समूह में न रखकर दूर दूर रखना चाहिए।

8- फर्नीचर व्यवस्था इस तरह से की जानी चाहिए ताकि वहां बैठकर वार्तालाप करने वाले व्यक्ति एक दूसरे को देख सकें। उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुन सकें। फर्नीचर उनके बातचीत में व्यवधान उत्पन्न नहीं करने पाये।

9- एक ही कमरे में फर्नीचर की संख्या बहुत अधिक नहीं होनी चाहिए न ही बहुत सारे फर्नीचर को कमरे के मध्य में समूहबद्ध करके रखना चाहिए। बडे फर्नीचर का स्थान निर्धारित करने के पश्चात संतुलन अनुरूपता रंग रेखा आदि को ध्यान में रखते हुए छोटे फर्नीचर लगाने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

10- फर्नीचर लगाते समय खुला स्थान पर भी ध्यान देना जरूरी है। फर्नीचर इस तरह से लगाना चाहिए ताकि आने जाने के मार्ग में रूकावट नहीं हो और न ही व्यक्ति फर्नीचर से टकराये। इसके लिए कम से कम 24 इंच, 36 इंच की जगह खुला रखना आवश्यक है।

11.5 विभिन्न कमरे में फर्नीचर की व्यवस्था

1. **बैठक कक्ष -** बैठक कक्ष में अतिथियों का स्वागत आवभगत व मेहमानबाजी किया जाता है। परिवार के सदस्य फुर्सत के क्षणों में बैठकर बातचीत करते हैं, मनोरंजन करते है और कई बार गंभीर मसले को भी सुलझाते हैं। रेडियों पत्रिकाएं, अखबार आदि पढ़ने का कार्य भी बैठक कक्ष में ही किया जाता है। कई बार आवश्यकता पडने पर बैठक कक्ष का उपयोग ऑफिस अथवा क्लिनिक के रूप में भी किया जाता है। अत: बैठक कक्ष में फर्नीचर की व्यवस्था सुन्दर, आरामदायक, लुभावनी, मनोहारी एवं सुविधाजनक होना चाहिए ताकि सौन्दर्यता के साथ ही कार्यात्मकता के उद्देश्यों की भी पूर्ति हो सके। बैठक कक्ष को सुव्यवस्थित एवं सुसज्जित करने के लिए सोफा सेट, पढने लिखने के लिए अध्ययन मेज व कुर्सियों, पुस्तक रखने के लिए आलमारियां जिसमें कांच लगा हो, बुक रैंक, कोर्नर, एवं सुन्दर व आकर्षण मूढे होने चाहिए। मेज में दरारे होनी चाहिए ताकि आवश्यक कागजों को उसमें व्यस्थित किया जा सके। साथ ही टेबुल लैम्प, कोर्नर टेबुल, टेपरिकार्डर रखने हेतु उपसाधन आदि की भी व्यवस्था की जानी चाहिए। कुर्सियां हल्की परन्तु मजबूत एवं टिकाऊ होनी चाहिए ताकि आवश्यकता होने पर आसानी से उठाया जा सके। फर्नीचर को सज्जा इस तरह से किया जाना चाहिए कि वे आकर्षक का केन्द्र बनें। बैठक कक्ष में रेडियों, वीसीआर, वीसीडी, ग्रामोफोन टेलीफोन आदि रखा गया है तब इन्हें रखने हेतु आवश्यक फर्नीचर की व्यवस्था की जानी चाहिए। वे क्षेत्र जहां मनोरंजन के साधन है, उसके आस पास 4-5 कुर्सियां अथवा मूढ़े रखे जाने चाहिए ताकि परिवार के सदस्य मनोरंजन का आनन्द उठा सकें। यदि फर्श पर बैठकर मनोरंजन का आनन्द उठाना है, तब कालीन दरी चटाई पट्टियां बिछा देनी चाहिए। सुन्दर पुस्तकें, मैंगजीनें मेज पर सुन्दरता की दृष्टि से रखे जा सकते हैं
2. **शयन कक्ष -** शयन कक्ष पूर्ण विश्राम का कक्ष होता है। दिनभर का थका हारा व्यक्ति इसी कक्ष में आराम करके थकान दूर करता है तथा ताजगी प्राप्त करता है। गहरी निद्रा के लिए शयन कक्ष का आरामदायक एवं सुविधापूर्ण होना जरूरी है। पलंग, दीवान, चौकी,

चारपाई जो कुछभी सोने हेतु उपयोग में लिए जाएं वे आरामदायक होनी चाहिए। शयन कक्ष में एक दो कुर्सी एवं एक अध्ययन मेज होनी चाहिए। मेज में दरारें होनी चाहिए ताकि अत्यावश्यक चीजों को उसमें रखा जा सके।छोटे मकानों में जहां स्थान की काफी कमी होती है, शयन कक्ष में ही श्रृंगार मेज की व्यवस्था की जाती है। वस्त्रों को संगृहीत करने के लिए आलमारियां, कपड़े टांगने के लिए एक दो खूटियां आदिकी व्यवस्था की जानी चाहिए।

3. **बच्चों का कमरा -** बच्चों के कमरे में फर्नीचर व्यवस्था बालकों की उम्र के अनुसार होनी चाहिए । इनके लिए वैसे फर्नीचर का उपयोग किया जाना चाहिए जो उनके उंचाई एंव उम्र के अनुसार हो तथा जिसमें उन्हें पूर्णत: आराम मिलता हो । बच्चों के खिलौने, किताबें, कापियां आदि रखने हेतु कम उंचाई की आलमारी होनी चाहिए ताकि बच्चा अपने मनपसन्द वस्तुओं को रख उठा सें।
4. **भोजन कक्ष -** छोटे छोटे फ्लेटों में भोजन कक्ष के साथ ही हरने का कमरा भी होता है। इसीलिए भोजन कक्ष में फर्नीचर की व्यवस्था एक कोने में काफी सोच समझकर की जानी चाहिए ताकि कक्ष में पर्याप्त स्थान मिल सके।यदि भोजन कक्ष की व्यवस्था देशी शैली में किया जाना है, तब आसान, चौकी तख्त अथवा पीढ़ी का उपयोग किया जा सकता है। बैठने का आसान सुन्दर, स्वच्छ एवं आरामदायक होना चाहिए। चौकी एवं तख्त को कपडे से ढंककर रखना चाहिए। वैसे आजकल मेज की भांति पीढा या चौकी पर भी सुन्दर रंगों एवं डिजाइनों की सनमाइका लगाये जाते है। परन्तु देशी शैली फर्श पर बैठकर आलथी पालथी मारकर भोजन करने में कुछ कठिनाइयां आती है। सूत्री वस्त्र तुडे मुडे हो जाते है, साडियां पर सिलवटें पड जाती है। सलवार कुर्ता पर भी सिकुडने पड जाती है। शर्ट पेन्ट पहनकर भोजन करने में पुरूषों को भी काफी परेशानी होती है। घुटने ठीक तरीके से मुड नहीं पाते हैं। वस्त्र सिलवटं पड जाती है। भोजन करते समय कभी कभी असावधानीवश वस्त्र पर दाग धब्बे भी लग जाते है। भोजन कक्ष की व्यवस्था यदि विदेशी शैली से की जानी है, तब एक बडी मेज की जरूरत होती है। मेज के

चारों ओर बिना हत्थे की कुसियां लगायी जाती है। कुर्सियां की संख्या 4-6 तक होती है। यदि परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक है तब कुर्सियों की संख्या बढायी जा सकती है। डाइनिंग मेज को बीच में या खिडकी बाहर की ओर लॉन या बगीचे में खुलता हो तो खाते समय प्राकृतिक दृश्यों का मजा भी लिया जा सकता है। मेज स्वच्छ सुन्दर मजबूत एवं आकर्षक होना चाहिए। मेज पर सनमाइका अथवा मोटा कांच का ग्लास भी लगाया जा सकता है

5. रसोईघर

रसोईघर में भोजन पकाने का कार्य किया जाता है। भोजन की तैयारी का केन्द्र बर्तन सफाई धुलाई के केन्द्र, सामान संग्रह के केन्द्र भी रसोईघर में ही होते है। गृहिणी का अधिकांश समय रसोईघर में ही व्यतीत होता है। परिवार के सभी सदस्यों के उत्तम स्वास्थ्य का निर्धारण करने में रसोईघर अमूल्य भूमिका निभाता है। इसीलिए रसोईघर में फर्नीचर व्यवस्था को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है। रसोई के कार्यो को सरल, सुगम व आसान बनाने के लिए जालीदार अममारी उंची स्टूल, पटरे, चौकी या पीढा होना चाहिए। यदि रसोई का काम नीचे बैठकर किया जाना है तब एक चौकी या तख्त की व्यवस्था होनी चाहिए। ताकि उस पर धुले हुए बर्तनों को रखा जा सके। बर्तनों एवं सामानों को रखने हेतु रैंक एंव आलमारियां होनी चाहिए जिससे किवाड अच्छी तरह बन्द हो जाते हैं। स्टैन्डिग रसोईघर मे प्लेटफार्म बने होते हैं तथा सामानों के भण्डारण हेतु रैक एवं दीवार से लगी आलमारियां होती है। बर्तनों को रखने हेतु प्लेटफार्म बने होते है। रसोईघर का फर्नीचर इस तरह का होना चाहिए, जिसकी साफ सफाई करना आसान हो। उस पर लगे घी, तेल, चिकनाई, हल्दी आदि के धब्बे सुगमतापूर्वक छुडाया जा सके।

11.6 फर्नीचर का महत्व

फर्नीचर का उपयोग अत्यन्त प्राचीन समय से घरों में होता आया है। ऐसा माना जाता है आज से हजारों वर्ष पूर्व सबसे पहले इसका उपयोग मिस्त्र में होता था। फिर धीरे धीरे फर्नीचर निर्माण एवं विकास में काफी प्रगति हुई

है। फर्नीचर के बैगर हमारा जीवन की अधूरा लगता है। फर्नीचर के निम्नांकित महत्व हैं -

1- **कार्यक्षमता बढ़ाना -** फर्नीचर व्यक्ति की कार्यक्षमता को बढ़ाने में अमूल्य भूमिका निभाता है। प्रेस करते समय यदि प्रेस करने वाली मेज का उपयोग किया जाए तो व्यक्ति को कम से कम थकान होती है तथा वह खड़े होकर अधिकाधिम वस्त्रों को प्रेस कर सकता है। इसी तरह अध्ययन कक्ष में अध्ययन मेज एवं कुर्सी होने से पढ़ने लिखने में सुविधा रहती है। अध्ययन में मन लगा रहता है। वहीं पढने लिखने का कार्य जमीन पर बैठकर करने में कष्ट का अनुभव होता है।

2- **श्रम एवं समय की बचत -** फर्नीचर विविध कार्यों को करने में सुगम तो बनाता ही है साथ ही समय एवं श्रम की भी बचत करता है। बार बार नीचे जमीन पर उठने बैठने में अधिक श्रम लगता है। साथ ही कई ऐसक कठिनाइयां भी सहन करनी पडती है। शयन कक्ष में चारपाई, पलंग अथवा दीवान होने से बार बार बिस्तर प्रात: होते ही पलंग को बाहर निकालने फिर रात्रि को लगाने का झंझट नहीं रहता है। परिणामत: समय एवं शक्ति की बचत होती है। इसी तरह रसोईघर में उपयुक्त उंचाई पर आलमारियाँ होने में सामान एवं शक्ति की बचत होती है। इसी तरह रसोईघर में उपुर्यक्त उंचाई पर आलमारी होने से समय निकालने रखने के लिए बार बार उठाना नहीं पडता है। बैठक कक्ष में सोफा अथवा कुर्सी मेज लगे होने से आंगतुकों को बिठाने एवं स्वागत करने में परेशानी नहीं होती।

3- **आरामदायक रहन सहन की सुविधा प्रदान करना -** फर्नीचर हमारे रहन सहन की सुविधापूर्ण एवं आरामदायक बनाता है। प्रत्येक कक्ष में उचित फर्नीचर व्यवस्था से कार्यों को करने से सुगमता होती है। अत: व्यक्ति की क्रियाशीलता बढती है। व्यक्ति उत्सापूर्वक अपने कार्यों को शीघ्रता से सम्पन्न कर लेता है। तथा उसे आन्नद, सुख एवं खुशी की अनुभूति होती है।

4- **वस्तुओं के संग्रहण हेतु -** विभिन्न सामग्रियों को उचित स्थान पर सुरक्षित तरीके से संग्रहण में फर्नीचर का अत्यन्त अमूल्य योगदान

होता है। जैसे किताब, कापियां, बर्तन, कपडे, उपकरण, खाद्य सामग्री आदि। इनके बिना चीजों को सुरक्षित रख पाना अत्यन्त ही कठिन काम होता है। वस्त्रों या किताबों के संग्रहण के उचित अभाव में दीमक, तिलचट्टे, चूहे कीट आदि इन्हें नष्ट कर जाते हैं। कपड़ों को चूहे, कुतर, कुतर कर बर्बाद कर देते हैं। जमीन पर वस्तुएं पडी रहने से कई वस्तुओं में सीलन आ जाता है। अत: वस्तुओं की सुरक्षा होती है। आजकल फर्नीचर बहुपयोगी उद्देश्यों से बनायी जाती है।

5- **उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हेतु -** फर्नीचर व्यक्ति को स्वस्थ रखने एवं उत्तम जीवनयापन में अमूल्य योगदान देते है। हम सभी ऐसा महसूस करते है। उठना बैठना, पढना, सोना, लेटना, आराम करना, सभी कुछ में कठिनाइयां ही कनगोजर छिपकली एवं अन्य जहरीले कीडों को काटने का भय रहता है। निम्न आय वर्ग के लोग इन जहरीले कीडों को सबसे अधिक शिकार होते हैं।

6- **सज्जा के लिए -** फर्नीचर का उपयोग गृह सज्जा में किया जाता है। ये घर की सुन्दरता एवं आकर्षण वृद्धि में चार चांद लगा देते है। फर्नीचर के बिना गृह सज्जा की कल्पना नहीं की जा सकती है। फर्नीचर से प्रत्येक कक्ष की भव्यता, शालीलता एवं अलंकरण में द्विगुणित वृद्धि हो जाता है। नक्काशीदार आलमारियां, आधुनिक डिजाइनों के शो केस, सोफा सेट, मेज आदि घर की सुन्दरता को अलौकिक एवं अद्भूत रूप प्रदान करते हैं। एक छोटा सा घर भी इनके सुन्दर प्रयोग से खिल उठता है।

सामाजिक प्रतिष्ठा बढाने में - कीमती व आधुनिक फर्नीचर व्यक्ति को समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। फर्नीचर एवं सजावट के माध्यम से परिवार के व्यक्तित्व तथा रूचि का पता चलता है। सुन्दर फर्नीचर वैभव एवं सम्पन्नता का प्रतीक होता है, जिसके कारण व्यक्ति को समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा मिलती है।

11.7 सारांश

गृह सज्जा अभिन्न अंग है - घर की आवश्यकता अनुसार फर्नीचर का प्रबन्ध। परिवार की रूचि घर के क्षेत्र और बजट के अनुसार फर्नीचर की व्यवस्था की जानी चाहिए।उचित फर्नीचर के प्रयोग से समय व शक्ति की बचत होती है, क्रियाशीलता बढती है और घर सुसज्जित लगता है मध्यमवर्गीय परिवार आज फर्नीचर रोजमर्रा के जीवन का अभिन्न अंग बन चूका है।

11.8 प्रश्न

1. फर्नीचर का महत्व समझाइये
2. फर्नीचर के प्रकार समझाइये
3. फर्नीचर का चयन को विस्तारपूर्वक समझाइये
4. फर्नीचर की व्यवस्था को विस्तारपूर्वक समझाइये
5. विभिन्न कमरे में फर्नीचर की व्यवस्था को विस्तारपूर्वक समझाइये

11.9 संदर्भ ग्रन्थ

1. बी.के. बख्शी, गृह व्यवस्था है गृह सज्जा साहित्य प्रकाशन आगरा

2. डा. वृंदा सिंह गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा पंचशील प्रकाशन जयपुर

3. डा. रीना खनुजा, गृह प्रबंध साधन व्यवस्था एवं आन्तिरक सौजन्य विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"

5- Nickel Dorsey M & Sons New york "Managment in Family

इकाई -12

सजावट

12.0 उद्देश्य
12.1 प्रस्तावना
12.2 घर सजाने के मुख्य सिद्धांत
12.3 लिविंग रूम की सजावट
12.4 सर्दियों में घर सजाने के उपाय
12.5 पर्दे
12.6 कालीन
12.7 अन्य सजावट
12.8 सारांश
12.9 अभ्यास प्रश्न
12.10 संदर्भ ग्रन्थ

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी-

- घर सजाने के मुख्य सिद्धांत के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- लिविंग रूम की सजावट के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- सर्दियों में घर सजाने के उपाय के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- पर्दे के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

- कालीन के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

12.1 प्रस्तावना

सजावट के दौरान सबसे पहले प्रवेश द्वार को आकर्षक बनाना बेहद जरूरी होता है। इसके लिए आप फूलों या मिट्टी के डेकोरेशन पीस का इस्तेमाल कर सकती हैं। इंटीरियर डेकोरेटर रीना उप्पल के मुताबिक आजकल बाजार में मिट्टी से बना बेहद आकर्षक सजावट का सामान उपलब्ध है। उदाहरण के तौर पर आप अपने घर के मुख्य द्वार पर मिट्टी की रंग-बिरंगी विंड चाइम लगा सकती हैं। फेंगशुई के अनुसार मुख्य द्वार पर विंड चाइम लगाने से घर में आने वाली सारी नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव खत्म हो जाता है। इसके अलावा आप दरवाजे के पास मिट्टी के आकर्षक बरतन में पानी भर कर उसमें 5 से 7 सुंदर फूल सजा सकती हैं। दरवाजे पर बेहद कम दाम में आने वाले गेंदे के फूलों की माला को आड़े-तिरछे तरीके से लगाएं। अगर उसमें आम के पत्तों या गुलाब के फूलों की माला भी लगा सकती हैं तो जरूर लगाएं। अगर आप फूलों का इस्तेमाल करना नहीं चाहतीं तो इन लडियों को बनाने के लिए रंग-बिरंगे कागजों का भी इस्तेमाल कर सकती हैं।इसके अतिखुला रंगोली का हमारे धर्म तथा पारपंरिक साज-सजावट में विशेष महत्व होता है, इसलिए दरवाजे पर रंगोली अवश्य बनाएं। रंगोली के रंगों के लिए आप घर में आसानी से उपलब्ध हल्दी, आटा, कुमकुम और नील का इस्तेमाल कर सकती हैं। दरवाजे के साथ वाली दीवार पर गणेश प्रतिमा अवश्य लगाएं। ऐसा करने से घर में सुख-शांति बनी रहती है और कोई भी नकारात्मक ऊर्जा घर में प्रवेश नहीं कर पाती। दरवाजे के ठीक ऊपर बंदनवार बांधना शुभ माना जाता है, साथ ही यह खूबसूरत भी दिखती है।घर में रखा सारा सामान और घर का पेंट आदि आपके मन का होता है। फर्नीचर कैसा होगा, पेंट कैसा होगा, फर्श पर लगी टाइल्स कैन सी होंगी और घर का थीम कैसा होना चाहिऐ आदि यह सब आप मिल कर तय करती हैं। जो चीजें आपको पंसद होगी उस चीज को आप अपने घर में रख सकती हैं और जो चीज़े नहीं , उसे आपको झेलने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि घर आपका जो है। आपका घर एक ऐसी जगंह है जिसमें आप आपनी जिंदगी का

अधिकतर समय बिताती हैं। यहीं पर आपसे मिलने आपके दोस्त, परिवार वाले आदि सभी पधारते हैं, तो ऐसे में अपने घर को खूबसूरती से सजाएं। इसे एक ऐसी जगह बनाएं जहां घुसते ही खुशी का एहसास होने लगे। आपको अपने नए घर को अपने तरीके से सजाना चाहिये। नए घर को सजाने के लिये मन में एक प्लान बना लेना चाहिये और अपन बजट भी तैयार कर लेना चाहिये। चलिऐ जानते हैं कुछ ऐसे टिप्स जो आपको अपने नए घर को सजाने में मदद करेगा।

12.2 घर सजाने के मुख्य बिंदु

फर्नीचर:फर्नीचर से घर और भी ज्यादा खूबसूरत बन जाता है। ध्यान रखें कि घर में ज्यादा फर्नीचर भर कर ना रखें। घर को खानी रखें तभी बेहतर है

पेंट का चुनाव:

पेंट करने से पहले ये सोंचे कि क्या यह रंग फर्नीचर के रंगों के साथ मेल करेगा या नहीं? साथ ही हमेशा चटख रगों का प्रयोग करें क्योंकि इससे मूड बहुत अच्छा बना रहता है।

फर्श की सजावट:

फर्श की सजावट उसकी आवश्यकता के अनुसार होना चाहिये। जैसे, ड्राइंग रूम के लिये साफ्ट कार्पेट फ्लोरिंग, किचन के लिये वुड फ्लोरिंग और बाथरूम और बेडरूम के लिये टाइल्स का इस्तमाल करें।

किचन के समान:

किचन के समानों को ध्यानपूर्वक चुन्ना चाहिये। अच्छा होगा कि आप किचन के लिये एक थीम का चुनाव करें। आप का घर जिस थीम से सजाया गया हो, वही थीम अपने किचन के लिये भी चुने।

हार्डवेयर का चुनाव:

कमरों में लगे कैबिनेट, लाइट फिक्सचर, खूंटी और दरवाज़े की कुंढी आदि कौन से डिजाइन की और किस पेंट का होना चाहिये ये भी ध्यान में रखना चाहिऐ।

12.3 लिविंग रूम की सजावट

यदि आपको लग रहा है कि घर में रंग-रोगन कराना आपके बजट से बाहर है तो चिंता की कोई बात नहीं। आप पूरे घर में पेंट न करवा कर अपने ड्राइंग रूम की एक दीवार को गहरे रंग में रंग कर नया लुक दे सकती हैं। इसके अलावा सोफे के ऊपर के भाग में किसी खास शेप में पहले से मौजूद रंग का 3 गुना ज्यादा गहरा शेड लगा कर दीवार पर आर्ट वर्क कर सकती हैं। आजकल पेपर वर्क, पेपर पेस्टिंग द्वारा भी दीवारों को सजाने का चलन है। इसकी लागत पेंट करवाने की तुलना में बेहद कम आती है और आपका घर भी बिल्कुल नया-सा दिखने लगता है। ये पेपर घर की साज-सज्जा के मुताबिक फ्लोरल, प्लेन हर प्रकार के डिजाइन में मार्केट में आसानी से मिल जाते हैं।दूसरा विकल्प यह है कि सोफा बदलने की बजाय सोफे के कवर और कुशन को बदल दें। ध्यान रहे, कुशन के कवर कॉन्ट्रास्ट में ही लगाएं। उदाहरण के तौर पर आपके सोफे के कवर का रंग क्रीम है, तो कुशन आप तीन बड़े आकार के और तीन छोटे साइज के लें। छोटे वाले कुशन का रंग थोड़ा डार्क शेड का रखें। आप अपने कुशन कवर का रंग अपने दरवाजे और खिडम्कियों के रंग से मैच करता हुआ भी रख सकती हैं।

आर्टिफिशियल फ्लोरिंग

यदि आपका फर्श खराब हो गया है या पुराने चलन के मुताबिक बना है तो चिंता की कोई बात नहीं। आप फ्लोरिंग मैटीरियल द्वारा अपने फर्श को बिना तोड़-फोड़ किए ही नया जैसा बना सकती हैं। ये फ्लोरिंग मैटीरियल हर रंग व डिजाइन में बाजार में उपलब्ध है। आप चाहें तो अगले साल इसे फिर बदल सकती हैं और घर को फिर से एक नया लुक दे सकती हैं। इस फ्लोरिंग की खासियत यह है कि इसे आप ठीक उसी प्रकार से साफ कर सकती हैं, जैसे मार्बल, टाइल्स या चिप्स के फर्श को साफ किया जाता है।

लैंप का इस्तेमाल

खूबसूरत लैंप की रोशनी का प्रयोग घर को इनोवेटिव लुक देता है। लैंप द्वारा आप बिजली की कम खपत से घर को ज्यादा जगमग व सुंदर बना सकती हैं। घर के एक कोने में कॉर्नर टेबल के ऊपर लैंप रखने का चलन अब पुराना हो चुका है। आजकल बाजार में सस्ते व महंगे सभी प्रकार के लटकने वाले (हैंगिग) व खड़े करने वाले लैंप उपलब्ध हैं, जो आपके घर को

नया व आकर्षक लुक देंगे। बाजार में लकड़ी, जूट, कपड़े, कांच व पेपर कई प्रकार के बेहद खूबसूरत लैंप मौजूद हैं। इन लैंप का इस्तेमाल आप अपने मुख्य द्वार, गैलरी, ड्राइंग रूम, बेडरूम, डाइनिंग टेबल व किचन कहीं भी कर सकते हैं।

सबसे पहले तो अपने परदों को अच्छी तरह से धो कर सुखा लें और इन्हें परदे के रंग से मेल खाते रिबन या गोटे से सजाएं। परदों के किनारों पर घुंघरू भी लगा सकती हैं।

घर में फूलों से सजावट सबसे सस्ती, सरल व आकर्षक होती है। इसके लिए आप ताजे फूल या बाजार में आसानी से उपलब्ध आर्टिफिशयल फूलों का इस्तेमाल भी कर सकती हैं। सेंटर टेबल पर कांच की कटोरी में पानी भर कर उसमें रंग-बिरंगे फूल रखें या फिर बाउल में फ्लोटिंग कैंडल जला कर भी आप कमरे की रौनक बढ़ा सकती हैं।एक घर में बेडरूम काफी महत्वपूर्ण होता है। लेकिन अगर बेडरूम छोटा हो तो वहां पर फर्नीचर रखने में थोड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ जाता है।

12.4 सर्दियों में घर के कमरों को सजाएं

1. वॉल पेंट: दिवारों पर कोई ऐसा पेंट चुनें जो रात को शांति प्रदान करे और दिन में फ्रेशनेस का एहसास दिलाए। छोटे बेडरूमों में सफेद, क्रीम और बिंज पेंट ज्यादा खिलते हैं। डार्क रंगों का प्रयोग बिल्कुल भी नहीं करना चाहिये।

2. सही लाइटिंग: अपने बेड के पास लाइट फिक्स करें। आप जमीन पर लैंप ना रख कर उसे सीलिंग से हैंग कर सकती हैं। इससे आपकी काफी जगह बचेगी।

3. बेड: बेडरूम के साइज का ख्याल रखते हुए बेड का चुनाव करें। ऐसा बेड खरीदें, जिसके अदंर काफी समान आ सके। इसके अलावा आप फोल्ड करने वाले बेड का भी चुनाव कर सकती हैं। इससे आपके बेडरूम में काफी जगह बढ जाएगी।

4. कैबिनेट: एक हाई लेवल का कैबिनेट खरीदें, जिसमें काफी सारी जगह उपलब्ध हो। कैबिनेट में कपड़े और अन्य वस्तुएं रखने के लिये जगह बहुत जरुरी है।

5. दीवार: दीवारों में छोटी छोटी आलमारियाँ बनवा लें, जिस पर सजावट का सामान रखा जा सके। इससे आप एक्सट्रा स्पेस बचा सकती हैं।

12.5 पर्दे

खिड़की व दरवाजे पर लगे खूबसूरत पर्दे हमारे घर की सजावट का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पर्दे कमरे की सुंदरता को बढ़ाने के साथ-साथ उपयोगी भी होते हैं। आजकल प्रिंटेड पर्दों के साथ-साथ गोप कर्टन और मोती वाले कर्टन भी बाजार में आ गए हैं। जिन्हें गृहिणियों द्वारा खासा पसंद किया जा रहा है।

खिड़की दरवाजों पर लगे पर्दे न सिर्फ नर्म गर्म सा अहसास दिलाते हैं बल्कि कमरे की शोभा का केंद्रबिंदु भी होते हैं। खिड़कियों पर मन चाहे आकार प्रकार के पर्दे लगाए जा सकते हैं। लेस से सजे या टसलसे बँधे नीले, हरे तथा पीले रंगों काजमाना गया अब मैरून, पिंक, डस्की रोज तथा मस्टर्ड चलन में हैं। पर्दे की रॉड पर भी लहरियेदार झालर सी लगाने का

फैशन है जो विपरीत रंग की भी हो सकती है। इनके किनारों पर मोती की या अन्य सजावट हो सकती है। खिड़कियों पर चटाई या इसी प्रकार की बनावट के कपड़े के पर्दे लगा सकते हैं।
पर्दे का कपड़ा चुनते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि यह न सिर्फ देखने में अच्छा हो बल्कि धोने, टाँगने में भी अच्छा हो। यानि जब इस पर प्रकाश पड़ेगा तो यह कैसा लगेगा। फिर यह भी देखें कि आप इसे कैसे लगाएँगी। यदि कमरे की दक्षिण भाग की खिड़कियों पर लगा रही हैं तो झीने पर्दे ही अच्छे रहेंगे क्योंकि इससे प्रकाश के आवागमन में कोई समस्या नहीं रहेगी।
यदि खिड़कियाँ बड़ी हैं तो इन पर सादे एक ही रंग के पर्दे अच्छे लगेंगे। गहरे रंगों में आड़ी या खड़ी लाइनें तथा छोटी चैक्स रसोई तथा बाथरुम में अच्छी लगेंगी। ड्राइंग रुम में सुनहरे या रुपहले रंगों का चयन करने में झिझकें नहीं। जब इन पर रोशनी पड़ेगी तो आपका कमरा स्वर्ग से भी ज्यादा सुंदर लगने लगेगा।
*__पर्दों की वैरायटियाँ :-__बाजार में आजकल पर्दे के अलग-अलग प्रकार के प्रिंटेड व प्लेन कपड़े आसानी से मिल जाते हैं। जिनमें वेलवेट, पॉलिस्टर क्रश, कॉटन-सिंथेटिक मिक्स मटेरियल आदि प्रमुख हैं। पर्दे बनवाने के झंझट से बचने के लिए रेडिमेड पर्दे खरीद सकते हैं। जो सिले सिलाए होते हैं।कुछ लोग सजावट के लिए पर्दे लगाते हैं तो कुछ धूल- धूप से बचने के लिए घरों में पर्दे लगाते हैं। आजकल तो डिजाइनर पर्दों का चलन है। जो उपयोगी होने के साथ-साथ खूबसूरत भी होते हैं।
*__मोती वाला कर्टन :-__आजकल बाजार में 'मोती वाला कर्टन' का चलन है। यह बेहद ही खूबसूरत डिजाइनर रेडिमेड कर्टन होता है।
जिसमें सुंदर-सुंदर रंग-बिरंगे मोती की लंबी-लंबी लड़ियाँ लगी होती हैं। इस कर्टन की कीमत 560 रुपए से शुरू होकर 740 रुपए तक होती है।
*__कॉटन-सिंथेटिक मिक्स मटेरियल :-__पर्दे का कॉटन-सिंथेटिक मिक्स मटेरियल 60 रुपए से 250 रुपए प्रति मीटर के हिसाब से मिलता है। यह पर्दे के कपड़े की शुरुआती रेंज रहती है। कॉटन सिंथेटिक मिक्स मटेरियल में आपको खूबसूरत फ्लावर प्रिंट व लाइनिंग के पर्दे मिल जाएँगे। दाम में

किफायती यह पर्दे हर आम व्यक्ति आसानी से खरीद सकता है।
* **वेलवेट के पर्दे :-**वेलवेट के पर्दे बहुत ही साफ्ट व मखमली होते हैं। यह प्रिंटेड व प्लेन दोनों ही वैरायटियों में मिलते हैं। वेलवेट का पर्दा अपेक्षाकृत महँगा पड़ता है। इसके दाम लगभग 225 रुपए प्रति मीटर से शुरू होते हैं।

***पॉलिस्टर क्रश मटेरियल :-**यह सिलवटों वाला मटेरियल होता है। जिसे क्रश मटेरियल कहा जाता है। क्रश के अक्सर प्लेन पर्दे बाजार में मिलते हैं। इन पर्दों के शुरुआती दाम 110 रुपए प्रति मीटर होते हैं।
***विस्कोस गोप कर्टन :-**यह एक प्रकार का रेडिमेड पर्दा है। जिसे मोटे धागों से बनाया जाता है। यह पर्दा दिखने में बहुत ही खूबसूरत लगता है। इस दिवाली पर घर सजाएँ सुंदर रंग-बिरंगे पर्दों से। खिड़की-दरवाजों पर सजते ये पर्दे आपके घर की सजावट को बदल देंगे और आपके घर को एक नया लुक देंगे।

पर्दों से सजाएं घर की खिड़कियां

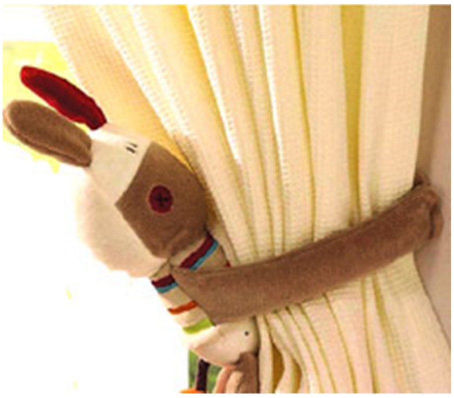

आपके घर के हर कमरे का रंग और डेकोरेशन स्वतः ही उसमें एक ऐसा माहौल निर्मित करता है, जहां बैठकर आप सुकून और तनावरहित महसूस करते हैं। कमरा किसी न किसी रूप में आपके व्यक्तित्व को भी परिलक्षित करता है। हम घर की खिड़कियों की ही बात करें तो आपके कमरे के लुक व फील को बढ़ाने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आप किसी को इंप्रेस करना या फिर अपने कमरे की खिड़कियों को बेहद ही खूबसूरत

बनाना चाहते हैं तो आप खिड़की को स्टाइलिश बनाने पर विशेष ध्यान दीजिए। यदि आप रात में अपने कमरे में प्राइवेसी पसंद का आसान तरीका खोज रहे हैं तो आप एक बार रोलर, रोमन और सिंपल शेड को जरूर ट्राय करें।

इन दिनों फेब्रिक्स के विकल्प के रूप में बांस का चलन सबसे अधिक है। कमरे में खिड़की की सजावट का एक बहुत आसान तरीका पर्दे में रिबन या गांठ बांधना भी है। आप जब भी कमरे के लिए पर्दे का चयन करें तो इस बात का विशेष ध्यान रखे कि पर्दे का रंग आपके कमरे के डेकोर से मेल खाता होना चाहिए। साधारण से कमरे में हल्के रंगों के पर्दे और बड़े कमरे स्टाइलिश लुक के लिए हेवी लुक वाले पर्दे बेहद ही उपयुक्त है।

1. हम सभी के घर में किचन में एक सिंक अवश्य होता है किंतु अक्सर सिंक के नीचे पानी का पाइप होने के कारण सिंक का निचला ब्लॉक खाली छोड़ दिया जाता है। आप चाहें तो उस ब्लॉक में ड्रावर बनवाकर या दरवाजे लगवाकर एक बाल्टी रखकर डस्टबीन के तौर पर उसका उपयोग कर सकती हैं या फिर उसमें नैपकीन, लिक्विड क्लिनर, डिश बार आदि रख सकती हैं।
2. यदि आप टीवी देखने की शौकीन हैं किंतु किचन में काम होने के कारण टीवी नहीं देख पाती हैं तो ऐसे में आप खासतौर से किचन के लिए तैयार किए गए कॉम्पेक्ट टीवी या डीवीडी को किचन में लगवाकर अपने किचन को माडर्न किचनबना सकती हैं।
3. अक्सर भोजन की भाप व दाल-सब्जी की ग्रेवी से किचन की दीवारें चिपचिपी हो जाती हैं। ऐसे में आप किचन में वेटिलेशन हेतु अत्याधुनिक चिमनी लगवा सकती हैं।

4. आग का खतरा किचन में सबसे अधिक होता है। आग से सुरक्षा के लिए आप किचन में सेफ्टी डिवाइस जरूर लगवाएँ। इसी के साथ ही आप किचन के फर्नीचर में फायरप्रूफ सनमाइका व फायरप्रूफ प्लाई का इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

12.6 कालीन

कालीन (अरबी : क़ालीन) अथवा गलीचा (फारसी : ग़लीच:) उस भारी बिछावन को कहते हैं जिसके ऊपरी पृष्ठ पर साधारणत: ऊन के छोटे-छोटे किंतु बहुत घने तंतु खड़े रहते हैं। इन तंतुओं को लगाने के लिए उनकी बुनाई की जाती है, या बाने में ऊनी सूत का फंदा डाल दिया जाता है, या आधारवाले कपड़े पर ऊनी सूत की सिलाई कर दी जाती है, या रासायनिक लेप द्वारा तंतु चिपका दिए जाते हैं। ऊन के बदले रेशम का भी प्रयोग कभी-कभी होता है परंतु ऐसे कालीन बहुत मँहगे पड़ते हैं और टिकाऊ भी कम होते हैं। कपास के सूत के भी कालीन बनते हैं, किंतु उनका उतना आदर नहीं होता। कालीन की पीठ के लिए सूत और पटसन (जूट) का उपयोग होता है। ऊन के तंतु में लचक का अमूल्य गुण होने से यह तंतु कालीनों के मुखपृष्ठ के लिए विशेष उपयोगी होता है। फलस्वरूप जूता पहनकर भी कालीन पर चलते रहने पर वह बहुत समय तक नए के समान बना रहता है।

ताने के लिए कपास की डोर का ही उपयोग किया जाता है, परंतु बाने के लिए सूत अथवा पटसन का। पटसन के उपयोग से कालीन भारी और कड़ा बनता है, जो उसका आवश्यक तथा प्रशंसनीय गुण है। अच्छे कालीनों में सूत की डोर के साथ पटसन का उपयोग किया जाता है।

बनाने की विधि

कालीन बुनने के पहले ही ऊन को रँग लिय जाता है। इसके लिए ऊन की लच्छियों को बाँस के डंडों में लटकाकर ऊन को रंग के गरम घोल में डाल दिया जाता है और रंग चढ़ जाने पर उन्हें निकाल लिया जाता है। आधुनिक रँगाई मशीन द्वारा होती है। कुछ मशीनों में रँगाई प्राय: हाथ की रँगाई के समान ही होती है, किंतु रंग के घोल को पानी की भाप द्वारा गरम किया जाता है और लच्छियाँ मशीन के चलने से चक्कर काटती जाती

हैं। दूसरी मशीनों में ऊन का धागा बहुत बड़ी मात्रा में ठूँस दिया जाता है और गरम रंग का घोल समय-समय पर विपरीत दिशाओं में पंप द्वारा चलता रहता है। ऐसी मशीनें हाल में ही चली हैं। कालीन में प्रयुक्त होनेवाले ऊन के धागे की रँगाई तभी संतोषजनक होती है जब रंग प्रत्येक तंतु के भीतर बराबर मात्रा में प्रवेश करे। इसका अनुमान तंतु के बाहरी रंग से सदैव नहीं हो पाता और अच्छी रँगाई के लिए कुछ धागों की गुच्छी काटकर देख ली जाती है। अच्छे कालीन के लिए संतोषजनक रँगाई उतनी ही आवश्यक है जितनी पक्की और ठोस बुनाई। कीमती कालीनों के लिए पूर्णतया पक्के रंगों का उपयोग आवश्यक होता है। साधारण कालीनों के लिए रंग को प्रकाश के लिए तो अवश्य ही पक्का होना चाहिए और धुलाई के लिए जितना ही पक्का हो उतना ही अच्छा।

ऊन के ऊपर प्राकृतिक चर्बी रहती है जिससे रंग भली भाँति नहीं चढ़ता। इसलिए ऊन को साबुन और गरम पानी में पहले धो लिया जाता है। साबुन के कुछ दुर्गुणों के कारण संकलित प्रक्षालकों (synthetic detergents) का प्रयोग अब ऊन की धुलाई में अधिक होने लगा है।

हाथ से बुनाई की विधि

संसार भर में हाथ की बुनाई प्राय: एक ही रीति से होती है। ताने ऊर्ध्वाधर दिशा में तने रहते हैं। ऊपर वे एक बेलन पर लपेटे रहते हैं जो घूम सकता है। नीचे वे एक अन्य बेलन पर बँधे रहते हैं। जैसे-जैसे कालीन तैयार होता जाता है, वैसे-वैसे उसे नीचे के बेलन पर लपेटा जाता है, जैसा साधारण कपड़े की बुनाई में होता है। तानेके आधे तार (अर्थात डोरे) आगे पीछे हटाए जा सकते हैं और उनके बीच बाना डाला जाता है। इस प्रकार गलीचे की बुनाई उसी सिद्धांत पर होती है जिसपर साधारणत: कपड़े की होती है, परंतु एक बार बाना डालने के बाद ताने के तारों पर ऊन का टुकड़ा बाँध दिया जाता है। टुकड़ा काटकर बाँधना और लंबे धागे का एक सिरा बाँधकर काटना, दोनों प्रथाएँ प्रचलित हैं। बँधा हुआ टुकड़ा लगभग दो इंच लंबा होता है और अगल बगल के तारों में फंदे द्वारा फँसाया जाता है। फंदा डालने की दो रीतियाँ हैं। एक तुरकी और एक फारसी जो चित्र ३ से स्पष्ट हो जाएँगी। ऊन के फंदों की एक पंक्ति लग जाने के बाद बाने के दो तार (अर्थात् डोरे) बुन दिए जाते हैं। तब फिर ऊन के फंदे बाँधे जाते हैं

और बाने के तार डाले जाते हैं। प्रत्येक बार बाने के तार पड़ जाने के बाद लोहे के पंजे से ठोककर उनको बैठा दिया जाता है, जिससे कालीन की बुनाई गफ हो। बाना डालने की रीति में थोड़ा बहुत परिवर्तन हो सकता है जिससे कालीन के गुणों में कुछ परिवर्तन आ जाता है। आजकल साधारणत: कालीन बहुत चौड़े बुने जाते हैं। इसलिए इनको बुनते समय तानों के सामने कई एक कारीगर बैठते हैं और प्रत्येक लगभग दो फुट की चौड़ाई में ऊन के फंदे लगाता है। कारीगर अपने सामने आलेखन रखे रहते हैं और उसी के अनुसार रंगों का चुनाव करते हैं। फंदे लगाने की रीति से स्पष्ट है कि ऊन के गुच्छे कालीन के पृष्ठ से समकोंण पर नहीं उठे रहते, कुछ ढालू रहते हैं। हाथ के बुने कालीनों का यह विशेष लक्षण है

कालीन बुने जाने के बाद ऊन के गुच्छे के छोरों को कैंची से काटकर ऊन की ऊँचाई बराबर कर दी जाती है। आवश्यकतानुसार तंतुओं को न्यूनाधिक ऊँचाई तक काटकर उभरे हुए। बेलबूटे आलेखन के अनुसार बनाए जा सकते हैं। ऐसे कालीनों में यद्यपि ऊन की हानि हो जाती है तथापि सुंदरता बढ़ जाती है और ये अधिक पसंद किए जाते हैं।

कुछ कालीन दरी के समान, किंतु ऊनी बाने से, बुने जाते हैं। इनका प्रचलन कम है।

हाथ से बने प्रथम श्रेणी के कालीन मशीन से बने कलीनों की अपेक्षा बहुत अच्छे होते हैं। हाथ से प्रत्येक कालीन विभिन्न आलेखन के अनुसार और विभिन्न नाप, मेल अथवा आकृति का बुना जा सकता है। ये सब सुविधाएँ मशीन से बने कालीनों में नहीं मिलतीं। कालीन में प्रति वर्ग इंच ऊन के ९ से लेकर ४०० तक गुच्छे डाले जा सकते हैं। साधारणत: २०-२५ गुच्छे रहते हैं। भारत, ईरान, मिस्त्र, तुर्की और चीन हाथ के बने कालीनों के लिए प्रसिद्ध हैं। भारत में मिर्जापुर, भदोही (वाराणसी), कश्मीर, मसूलीपट्टम आदि स्थान कालीनों के लिए विख्यात हैं और इन सब कालीनों में फारसी गाँठ का ही प्रयोग किया जाता है।

मशीन से कालीन की बुनाई

मशीन की बुनाई कई प्रकार की होती है। सबसे प्राचीन ब्रुसेल्स कालीन है। इसमें कालीन के पृष्ठ पर ऊन के धागों का कटा सिरा नहीं रहता, दोहरा हुआ धागा रहता है। बुनावट ऐसी होती हैं कि यदि ऊन पर्याप्त पुष्ट हो तो

एक सिरा खींचने पर एक पंक्ति का सारा ऊन एक समूचे टुकड़े में खिंच जाएगा। फिर कई रंगों का आलेखन रहने पर कई रंगों के ऊन का उपयोग किया जाता है और जहाँ आलेखन में किसी रंग का अभाव रहता है वहाँ उन रंगों के धागे कालीन की बुनावट में दबे रहते हैं। केवल उसी रंग के धागे के फंदे बनते हैं जो कालीन के पृष्ठ पर दिखलाई पड़ते हैं। इन कारणों से पाँच से अधिक रंगों का उपयोग एक ही कालीन में कठिन हो जाता है। बारंबार एक ही प्रकार के बेलबूटे डालने के लिए छेद की हुई दफ्तियों का प्रयोग किया जाता है, जैसे सूती कपड़े में बेलबूटे बनाते समय।

ऊन का सिरा कटा न रहने के कारण ये कालीन बहुत अच्छे नहीं लगते। ऊनी धागों का अधिकांश बुनाई के बीच दबा रहता है। इस प्रकार भार बढ़ाने के अतिखुला वह किसी काम नहीं आता और कालीन का मूल्य बेकार बढ़ जाता है। इन कालीनों का प्रचलन अब बहुत कम हो गया है।

विल्टन कालीन

विल्टन कालीन की प्रारंभिक बुनावट वैसी ही होती है जैसी ब्रुसेल्स कालीन की, परंतु बुनते समय ऊन के फंदों के बीच धातु का तार डाल दिया जाता है जिसका सिरा चिपटा और धारदार होता है। जब इस तार को खींचा जाता है तब ऊन के फंदे कट जाते हैं और पृष्ठ वैसा ही मखमली हो जाता है जैसा हाथ से बुने कालीन का होता है। मखमली पृष्ठ देखने में सुंदर और स्पर्श करने में बहुत कोमल होता है। तार खींचने का काम स्वयं मशीन बराबर करती रहती है।

विल्टन कालीन में ऊनी मखमली पृष्ठ के गुच्छे ब्रुसेल्स कालीन के दोहरे धागे की अपेक्षा अधिक दृढ़ता से बुनाई में फँसे रहते हैं। ये कालीन बहुधा ब्रुसेल्स की अपेक्षा घने बुने जाते हैं और इनमें तौल बढ़ाने का प्रयत्न नहीं किया जाता। कोमलता और कारीगरी के कारण मूल्य अधिक होने पर भी ये कालीन पसंद किए जाते हैं। सस्ते कालीनों की खपत अधिक होने के कारण सस्ते ऊनी विल्टन बनने लगे, जिनमें सस्ते ऊनी धागे का उपयोग होता है। एकरंगे विल्टन सबसे सस्ते पड़ते हैं और उन लोगों को, जो एकरंगा कालीन पसंद करते हैं, ये कालीन बहुत अच्छे लगते हैं।

चौड़े विल्टन कालीन बनाने में तारवाली रीति से असुविधा होती है। इसलिए फंदे बनाने और उनको काटने में धातु के तार की जगह धातु के अंकुशों का उपयोग होने लगा है।

एक्समिन्स्टर कालीन

मशीन से बने कालीनों में यद्यपि ये कालीन (टफ़्टेड को छोड़कर) सबसे नए हैं, तथापि बुनावट में ये पूर्वदेशीय (ईरान, भारत, चीन इत्यादि के) कालीनों के बहुत समीप हैं। समानता इस बात में है कि ये ऊन के धागों के गुच्छों से बने होते हैं, यद्यपि गुच्छे मशीन द्वारा डाले जाते हैं और उनमें गाँठें नहीं पड़ी रहतीं। एक्समिन्स्टर कालीन की विशेषता यह है कि गुच्छे खड़ी पंक्तियों में ताने के बीच डाले जाते हैं। ये डालने से पहले या बाद में काटे जाते हैं और बाने से बुनावट में कसे रहते हैं। प्रत्येक गुच्छा कालीन की सतह पर दिखाई पड़ता है और आलेखन का अंग रहता है। गुच्छों का कोई भी भाग ब्रुसेल्स और विल्टन कालीनों की तरह छिपा नहीं रहता और इस प्रकार व्यर्थ नहीं जाता। फंदे का कम से कम भाग बाने से दबा रहता है।

इंग्लैंड में इनके बुनने की कला १९वीं शताब्दी के अंत में अमरीका से आई और तब से दिनों दिन इसका विकास होता गया। इस कालीन की बुनावट में खर्च कम पड़ता है और सामान (ऊनी, सूती, पटसनी धागा) भी कम लगता है। बुनावट विशेष सघन सुंदर जान पड़ती है और ऐसे कालीनों के बनाने में असंख्य आलेखनों और रंगों के समावेश की संभावना रहती है। अन्य कालीनों के समान इनमें भी कई मेल होते हैं, परंतु बुनावट में विशेष भेद नहीं होता। भेद केवल गुच्छों के तंतुओं की अच्छाई, सघनता और उनको फँसाने की विधि में होता है।

एक्समिन्स्टर कालीनों की बनावट चित्र ८ में प्रदर्शित की गई है। अलग-अलग कंपनियों के कालीनों में थोड़ा बहुत भेद होते हुए भी साधारणतया दोहरे लिनेन का या सूती ताना, सूती भराऊ बाना और पटसन का दोहरा बाना प्रयुक्त किया जाता है।

आधुनिक मशीनें

पहले मशीन से बने कालीन बहुत चौड़े नहीं होते थे। चौड़े कालीनों के लिए दो या अधिक पट्टियों को जोड़ना पड़ता था, किंतु अब बहुत चौड़े

कालीन भी मशीन पर बुने जा सकते हैं। प्राय: सब प्राचीन आलेखनों की प्रतिलिपि बनाई जा सकती है और इस प्रकार समय-समय पर कभी एक, कभी दूसरा आलेखन फैशन में आता रहता है।

इसके अतिखुला कालीन बनाने की मशीन, कालीन की बनावट और धागों को रँगने की विधि में दिनोंदिन उन्नति हो रही है। नियत समय में अधिक से अधिक माल तैयार करना और कम से कम श्रम के साथ तैयार करना, यही ध्येय रहता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के कुछ बाद ही संयुक्त राष्ट्र (अमरीका) के दक्षिणी भाग में सिलाई द्वारा कालीन बनाने की मशीन का आविष्कार हुआ। इनसे "गुच्छित' कालीन बनते हैं। दिन प्रति दिन गुच्छित कालीनों की मशीनों में उन्नति हो रही है। इस समय अमरीका के बाजार में ये कालीन बहुत बड़ी मात्रा में बिकते हैं। गुच्छित कालीनों की मशीनों की माल तैयार करने की क्षमता बहुत अधिक होती है और मशीन लगाने का प्रारंभिक खर्च अधिक होते हुए भी सस्ते कालीन तैयार होते हैं।

इन कालीनों के मुखपृष्ठ और पीठ को एक साथ नहीं बनाया जाता। मुखपृष्ठ के फंदे या तो सिलाई द्वारा पहले से बनी हुई पीठ पर टाँक दिए जाते हैं या गुच्छे रासायनिक लेप द्वारा पीठ के कपड़े पर चिपका दिए जाते हैं। द्वितीय विधि में तप्त करने की कुछ क्रिया के अनंतर चिपकानेवाला पदार्थ पक्का हो जाता है और गुच्छे दृढ़ता से पीठ पर चिपक जाते हैं। ऊन के फंदों के दोनों ओर एक-एक पीठ चिपकाकर और फंदों को बीचोबीच काटकर एक ही समय में दो कालीन भी तैयार किए जा सकते हैं।

कालीन बनते समय ही आलेखनों का बन जाना, या कालीन बन जाने के बाद मुखपृष्ठ का रँगा जाना, या छपाई द्वारा आलेखन उत्पन्न करना, इन सब दिशाओं में भी गुच्छित कालीनों में बहुत प्रगति हुई है।

कालीन की गुणवत्ता

ऊपर कई वर्गो के कालीनों का वर्णन किया गया है। किसी भी वर्ग के कालीन के विषय में यदि कोई अकेला शब्द है जिससे उसके संपूर्ण गुण, दोष, श्रेणी और मूल्य का ज्ञान होता है तो वह कालीन की क्वालिटी है। क्वालिटी प्रधानत: कालीन के मुखपृष्ठ पर ऊनी गुच्छों के घनेपन पर निर्भर रहती है। इस प्रकार ऊँची क्वालिटी, मध्य क्वालिटी, नीची क्वालिटी,

कालीन के व्यापार में साधारण शब्द हैं। घने बुने हुए कालीन के लिए साधारणतया बढ़िया और लंबी ऊन का पतला धाग आवश्यक होता है। कीमती ऊन के अधिक मात्रा में लगने के साथ उच्च श्रेणी का ताना बाना आवश्यक होता है। बढ़िया पतले धागे के उपयोग और गाँठों के पास-पास होने से कालीन तैयार होने में समय अधिक लगता है। इस प्रकार ऊँची क्वालिटी के कालीन का मूल्य अधिक होता है।

कालीन की क्वालिटी एक वर्ग इंच में गाँठों की संख्या से प्रदर्शित की जाती है। यद्यपि यह प्रथा तब तक संतोषजनक नहीं होती जब तक यह भी निश्चय न कर लिया जाए कि गाँठें इकहरे धागे से डाली गई हैं या दोहरे अथवा तिहरे धागे से। उदाहरणत:, तिहरे धागे से बना कालीन दोहरे धागे से बने कालीन की अपेक्षा, प्रति वर्ग इंच कम गाँठों का होने पर भी, घना हो सकता है।

12.7 अन्य सजावट

1. **कलात्मक वस्तुएं -** वे वस्तुएं जिन्हें घर में केवल सौन्दर्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से लगाया जाता है, कलात्मक वस्तुएं कहलाती है। जैसे चित्र, सौन्दर्य प्राप्ति मूर्ति सज्जा प्राचीन परम्परागत एवं लोक जीवन पर आधारित वस्तुएं धातु के बने सजावटी सामग्री आदि।

2. **प्राकृतिक वस्तुएं -** वे सभी प्राकृति वस्तुएं जिनमें घर को सजाया जाता है तथा ये सौन्दर्यात्पादन में विशिष्ट सहायोग करते है, प्राकृतिक वस्तुएं कहलाते है, जैसे फूल पतियां, सूखी टहनियां, सूखे फल, बीज, मछलियां सीप, शंख आदि।

3. **उपयोगी वस्तुएं -** वे वस्तुएं जो सौन्दर्यात्मक होने के साथ ही दैनिक जीवन में भी काम आती है जिनमें कार्यात्मकता का गुण होता है, उपयोगी वस्तुएं कहलाती है जैसे घडियां, दरी, कालीन, लैम्प, फुलदान, कलमदान, ऐशे ट्रे, पुस्तकं वाद्य यंत्र , समय शक्ति की बचत के उपकरण आदि।

कलात्मक वस्तुएं

घर के भीतर सजावट में चित्रों का सबसे पहला व प्रमुख स्थान है। इससे दीवार, टेबुल, मेन्टल पीस, आलमारी आदि की सज्जा की जाती है। वे व्यक्ति की सौन्दर्यात्मक एवं कलात्मक भावनओं के प्रतीक होते है। उच्च कोटि के चित्रों में सौन्दर्यात्मक के साथ ही भावना विषय वस्तु का अनूठा समन्वय होता है। चित्रों के उचित प्रयोग किये गये चित्रों को देखकर उस परिवार के स्वभाव, कला के प्रति प्रेम, सौन्दर्यात्मक एवं कालात्मक अभिरूचि का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। चित्र सदैव उच्च कोटि के लगाये जाने चाहिए। निम्न स्तर के चित्र लगाने से बेहतर होता है क कमरे की दीवार को यों ही खुला छोड दिया जाए, कुछ भी न लगाया जाए, क्योंकि निम्न स्तर के

चित्र टांगने में कक्ष की शोभा नहीं बढती बल्कि कुरूपता एवं अनाकर्षण बढता है। साथ ही गृहिणी का फुडहडप होने का भी पता चल जाता है। अन्य सज्जा सामग्री भी इसके प्रभाव में आकार अपना मौलिक सौन्दर्य खो देते है

चित्रों के प्रकार

गृह सज्जा में प्रयक्त किये जाने वाले चित्र विभिन्न प्रकार के होते हैं। उनमें से कुछ प्रमुख निम्नानुसार हैं -

1. प्राकृतिक चित्र - प्राकृतिक दृश्यों के चित्र सभी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। फल फुलों से लदे, भरे वृक्ष, आम्र मंजर, सरसों के पीले फुल से लहलहाते खेत, कलकल करती नदियां, सागर की लहरें, पहाडों की उंची उंची चोिटां, बर्फ में लदा हुआ हिमालय, भू दृश्य आदि के चित्र प्राकृतिक चित्र होते है। इन्हें प्रत्येक व्यक्ति पसन्द करता है। ऐसे चित्रों को बैठक कख्ज्ञ में लगाकर सज्जा में चार चांद लगाया जा सकता है। प्राकृतिक दृश्यों के चित्र अनोखा छटा बिखेरने वाले होते है। जिसमें दर्शक के मन का कौना कोना खिल उठता है। आंखें तृप्त हो जाती है हृदय आहूलादिल हो जाता है। परिवार के सदस्य घर बैठे ही प्राकृतिक भ्रमण कर लेते हैं और प्राकृतिक छटा का रसपान कर लेते है। प्राकृतिक चित्रों को सीढियां, बरामदें, रहने का कक्ष, लॉबी आदि में भी लगाया जा सकता है।

2. पशु पक्षियों के चित्र - पशु-पक्षिओं के चित्र बच्चों के कमरे में लगाये जाने चाहिए। बालकों को पशु-पक्षियों से बेहद प्रेम होता है। इनके चित्र कमरे में लगाने से उन्हें इनके बारे में जानने का अवसर मिलता है। साथ ही ज्ञान वृद्धि भी होती है तथा वे जानवरों, पक्षियोंएवं प्रकृति से प्रेम करना सीख जाते है।

3. फल फूलों के चित्र - फल फूलों एवं सब्जियें के चित्र भोजन कक्ष एवं रसोईघर में लगाना चाहिए। इनमें भूख बढती है तथा क्षुधा तृप्त होती है। इन्हें लकडी के सादे फ्रेम में मढवाकर लगाना चाहिए। अगर ये चित्र छाटे है, तब इन्हें एक समूह में करके लगाना चाहिए। छोटे छोटे चित्रों को लगाने के लिए कपडे की तब इन्हें एक समूह में करके लगाना चाहिए। छोटे छोटे चित्रों को लगाने कके लिए कपड़े की तब इन्हें एक समूह में करके लगाना चाहिए। छोटे छोटे चित्रों को लगाने के लिए कपडे की पृष्ठभूमि का भी उपयोग किया जा सकता है। इन्हें बैठक में भी आलमारी के उपर मंटलपीस पर अथवा सोफे के पीछे लगाया जा सकता है। फल फूलों के चित्रात्मक एवं आनन्दमय होते है। तथा मन में खुशी, उत्साह उल्लास एवं प्रसन्नता का संचार करते है।

4. ऐतिहासिक चित्र- ऐतिहासिक चित्रो को बैठक कक्ष की दीवार पर लगाया जा सकता है।परन्तु इन्हे लगाते समय यह ध्यान रहना चाहिए कि इसमे सौन्दर्यबोध भी हो । बगैर सौन्दर्यबोध के चित्रो से कक्ष की शोभा नहीं बटती अपितु ये सज्जा को अनाकर्षक, बेजान एंव प्राणहीन कर देते है। साथ ही इनका स्वंय का अस्तित्व भी नष्ट हो जाता है।

5. लोक जीवन पर आधारित चित्र - लोक जीवन पर आधारित चित्रो को भी सज्जा हेतु प्रयुक्त किया जा सकता है। इन्हे बैठक कक्ष, बरामदा लॉबी आदि में लगाया जा सकता है। लोक जीवन पर आधारित चित्र हैं - पानी भरते पानिहारिन का चित्र खेत मे ंकाम करते किसान, आंगन बुहारते स्त्री का चित्र बैलों को चराने ले जाते ग्वाल बाल आदि। इन चित्रों के माध्यम से इनके स्वाभाविक एवं क्रियात्मक जीवन को प्रदर्शित किया जाता है। चटक रंगों के परिधानों में सजी ग्रामीण स्त्रियों का चित्र सम्पूर्ण वातावरण में उल्लास एवं उत्साह बिखेरते नजर आते हैं।

6. धार्मिक चित्र - धार्मिक चित्रों की पूजा घर, बैठक कक्ष, बरामदें आदि में लगाया जा सकता है जैसे कृष्ण लीला का चित्र, राम -सीता विवाह, का चित्र ईसा महीह का चित्र , गुरू गोविन्द सिंह का चित्र आदि। महापुरूषों के चित्र को भी बैठक कक्ष में लगाया जा सकता है। बालकों के कमरे में वैज्ञानिकों, महात्माओं, महापुरूषों स्वतंत्रता सेनानियों आदि के चित्र अवश्य लगाने चाहिए। इसमें उनमें नैतिकता एवं देशभक्ति का भाव जागृत होता है। उनमें नैतिक, सामाजिक एवं संवगेगात्मक मूल्यों का विकास होता है।

7. पोरट्रेट - पोरट्रेट को बैठक कक्ष में लगाना उपयुक्त रहता है। इससे सज्जा की सुन्दरता, मोहकत एवं आकर्षण में चार चांद लग जाता है। यदि इनके रंग कमरे की रंग योजना से संगीत करते हैं तब उन्हें किसी भी कक्ष में लगवाया जा सकता है।

8. अमूर्त चित्र - आजकल अर्मूत चित्रों का काफी प्रचलन बढा है। अर्मूत चित्रों की विशेषता यह है कि इनमें विषय वस्तु स्पष्ट नहीं ही होती है। हरेक व्यक्ति अपने अपने दृष्टि एवं सोच से इसका अर्थ लगाते है। बैठक कक्ष में ऐसे चित्रों को लगाया जा सकता है।

12.8 सारांश

इस इकाई में घर की सजावट के विभिन्न तत्वों व वस्तुओं का उल्लेख किया गया है । वाले पैंट के चुनाव से लेकर फर्श ,किचन तथा हार्डवेयर्स के चुनाव के लिए एक भीम आधारित सोच घर को सुंदर व आकर्षक बनाती है।विभिन्न पर्दे, कालीन, लैम्प और शोपीस घर की सुंदरता में चार चाँद लगा देते है जरुरत है अपने सोंदर्य बोध और भावबोध के अनुसार घर को सजाने की ।

12.9 अभ्यास प्रश्न

1.घर सजाने के मुख्य सिद्दांत बताइए ?

2.सर्दियों में घर की सजावट के समय ध्यान रखने की बातें बताइए

3. विभिन्न प्रकार के पर्दों के बारे में बताइए

4. कालीन की बुनाई किस प्रकार की जाती है ?

12.10 संदर्भ ग्रन्थ

1. बी.के. बख्शी, गृह व्यवस्था है गृह सज्जा साहित्य प्रकाशन आगरा

2. डा. वृंदा सिंह, गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा पंचशील प्रकाशन जयपुर

3. डा. रीना खनुज,ा गृह प्रबंध साधन व्यवस्था विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा एवं आन्तिरक सौजन्य

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"

5- Nickel Dorsey M & Sons New york "Managment in Family

इकाई 13

पुष्प सज्जा

13.0 उद्देश्य
13.1 प्रस्तावना
13.2 पुष्प सज्जा का अर्थ
13.3 पुष्प सज्जा करने के दिशा निर्देश
13.4 पुष्प सज्जाकी सामग्री
13.5 पुष्प सज्जा हेतु आवश्यक पौध सामग्री
13.6 पुष्प सज्जाके प्रकार
13.7 सारांश
13.8 अभ्यास प्रश्न
13.9 संदर्भ ग्रन्थ

13.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- पुष्प सज्जा का अर्थ की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- पुष्प सज्जा के प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- पुष्प सज्जा करने के दिशा निर्देश की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- पुष्प सज्जाकी सामग्री की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- पुष्प सज्जा हेतु आवश्यक पौध सामग्री की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

13.1 प्रस्तावना

पुष्प सज्जा एक ऐसी कला है जो न केवल घर की सुन्दरता बढाती है, अपितु एक खुशनुमा,जीवंत और सुगन्धित वातावरण भी तैयार करती है. रंग-बिरंगे फूलो का गुलदस्ता किसी भी उदासीन सी जगह को प्रफुल्लित कर के सकरात्मक ऊर्जा पैदा करता है. इन्ही फूलो की भीनी-भीनी खुशबू आपके मूड को शीघ्र मे अच्छा कर के आपको ताज़गी और स्फूर्ति से भर देती है.इसी वजह से पुष्प सज्जा करते हुए कुछ बातो का खास ख्याल रखा जाता है ताकि फूलो की सुन्दरता निखर कर सामने आये.फूल न सिर्फ घर को आकर्षक बनाते हैं, बल्कि माहौल को एक अलग तरह की रौनक भी देते हैं। इसके लिए आपको ऎसे फू ल चुनने होंगे, जो मौसम के अनुरूप हों। तो क्यों न घर को फ्रे श फू लों से सजाएं। कारनेशंस, आर्किड्स, एन्थूरियम्स, ओरिएंटल लिली, एशिएटिक लिली जैसे फू ल खूब चलते हैं। अगर इन फू लों का थोडा सा ध्यान रखा जाए, तो इस मौसम में भी ये 5 से 7 दिनों तक फ्रे श रह सकते हैं। इनके खूबसूरत और वाइब्रेंट कलर्स घर की शोभा को बढा देते हैं।

13.2 पुष्पसज्जा का अर्थ

पुष्प सज्जा का शाब्दिक अर्थ है पुष्पो द्वारा की गई सज्जा। जब हम पुष्प एवं फूलों से संबंधित सामग्री को विचार के द्वारा एक आकार का स्वरूप देते है, तब वह कला पुष्प सज्जा कहलाती है ।

रट के अनुसार-पुष्प व्यवस्था को पुष्पों अन्य पौध सामग्रियों और फूलदान के अनुरूपता युक्त संगठन के रूप में परिभाषित कर सकते है, जिसमें स्वरूप, पौध एबं रंगों के माध्यम से एकरूपता स्थापित की जाती है ।

- बडे और गोलाकार के फूलो को नीचे कि तरफ लगाये.लम्बे,पतले,फूलो को सबसे उपर और मध्यमाकार के फूलो को बीच मे लगाना चाहिये।
- कंटेनर और फूलो के रंग मे तालमेल भी जरूरी है.सामान्यतः हल्के रंग के फूल उपर की तरफ अच्छे लगते है जबकी गहरे रंग के फूल नीचले हिस्से को मज़बूत और संतुलित बनाते है।

- हल्के रंग के फूल कृत्रिम रोशनी के बजाय प्राकृतिक रोशनी मे लुभावने लगते है।
- फूलो की लम्बाई कंटेनर की लम्बाई से डेढ गुणा ज्यादा रखने की कोशिश करे।
- साईड टेबल या डाईनिंग टेबल के लिये मिनिऐचर अरेंजमेंट बनाये।छोटे आकार के फूलो को कांच के bowl,shell, ash tray या छोटी आकर्षक बोतल मे सजा कर मिनिऐचर अरेंजमेंट बनाये.इस अरेंजमेंट का साईज़ किसी भी दिशा मे 5 इंच से ज़्यादा न रखे।
- फूलो को आप गोलाकार मे भी सजा सकती है.यह बनाने मे सबसे आसान होता है क्योंकि अधिकतर फूलो का आकार भी गोल होता है ।
- त्रिकोणाकार मे व्यवस्थित फूल व्यक्तिगत अवसर पर इस्तेमाल किये जाते है.इस आकार मे गुलदस्ते बना कर भी भेंट मे दिये जाते है। इसके लिये पहले लम्बाई और चौडाई निर्धारित करे और फिर focal point या केन्द्र मे फूल सजाये।

- पंखे के आकार मे की गयी सजावट डाईनिंग टेबल के लिये सर्वोत्तम होती है.इस प्रकार की सज्जा समतल होती है जोकि टेबल के दूसरी ओर बैठे लोगो से बात करने मे दखल नहीं देती है।
- “S” शेप मे फूलो को सजाने के लिये लम्बी,पतली और लचीली या घुमावदार टहनी और फूलो क प्रयोग करे.पहले ऐसे फूलो से “S” शेप बनाये और फिर बीच मे छोटे फूल सजाये।
- फूलो के अलावा रिब्बन, नेट, बाज़ार मे उपलब्ध फोलियेज (foliage) आदि का भी प्रयोग किया जा सकता है।

13.3 पुष्प विन्यास करने के दिशा निदेश:

1. पुष्प एव उससे संबंधित सामग्री को काटने के लिए प्रातकालीन : समय सबसे उपयुक्त होता है।

2. पुष्प को तेज चाकू, ब्लेड आदि से तिरछा काटना चाहिए। कैंची एवं सीधा काटने पर पुष्प की नस कट जाती है जिससे पुष्प जल्दी खराब हो जाता है।

3 पुष्पों को काटने के पश्चात उसकी डंडियों क्रो तुरन्त पानी से भरी बाल्टी में डालना चाहिए।

4. पुष्प सज्जा हेतु पुष्पो का चुनाव अवसर एवं समय के अनुकूल करना चाहिए।

5. पुष्प सज्जा हेतु उचित वास, फूलदान का चुनाव करना चाहिए।

6. पुष्प सज्जा हेतु कला के सिद्धान्त एंव नियम का पालन करना चाहिए।

7. उपयुक्त पुष्प एंव टहनी का चुनाव करना चाहिए।

8. सबसे ऊंचा पुष्प एंव टहनी पहले रखनी चहिए। इसकी ऊँचाई पुष्प सज्जा के कलश से नापनी चाहिए।

9. पुष्पों का आकार कलियों से ज्यादा बडा नहीं होना चाहिए।

10. सबसै नीचे सबसे छोटा पुष्प एवं टहनी होनी चाहिए।

11. सबसे बडे पुष्प को पुष्प सज्जा के बिल्कुल मध्य में लगाना चाहिए ताकि वह पुष्प सज्जा के ध्यान केन्द्रक हो सके।

12. भारी बड़े चमकीले पुष्प नीचे को ओर लगाने चाहिए।

13. पुष्प सज्जा को लम्बे समय तक रखने हेतु पानी में नमक, विटामिन सी की गोली, डिस्प्रीन या ताम्बे का सिक्का डालना चाहिये ।

14. कोई भी पुष्प सज्जा किसी व्यक्ति, अवसर, मौलिकता, स्थान, मन स्थिति आदि को ध्यान में रखकर करनी चाहिए ।

15. मिमोसा के फूलों पर दिन में कई बार पानी छिड़के । इससे फूल नरम रहेंगे ।

16. जिन फूलों के डंठल लकडी जैसे होते है केवल उनके लिए ही गर्म या उबलते पानी के प्रयोग की सलाह दी जाती है, जैसेगुलाब-, ब्लूबेल, क्लिमेटिस आदि । इन फूलों की कोमल पंखुडियों को भापसे बचाएं ।

17. पुष्प सज्जा को तेज धूप, आग और रेडियेटर से दूर रखे ।

18. फूलों को टेलीविजन पर न रखे क्योंकि फूल अधिक गर्मी सहन नहीं कर पाते ।

19. पुष्प व्यवस्था में पिन होल्डर या जाली पूर्णत छिप जाने चाहिए :

13.4 पुष्प सज्जा की लिए सामग्री

पुष्प सज्जा करने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियों की जरूरत होती है। पुष्प सामग्री, यथा फूल, पत्तियां, कलियां, टहनियां तो नितान्त आवश्यक होती है। इसके अतिखुला सीप, पंख, घोंघा, छोटे छोटे कंकड-पत्थर आदि का उपयोग सुन्दरता बढ़ाने में किया जाता है। कुछ वस्तुओं का उपयोग आधार के रूप में किया जाता है। कुछ वस्तुएं सज्जा को सुन्दर, आकर्षक एवं मोहक बनाने के लिए जरूरी होती है। कुछ वस्तुएं सहायक सामग्री की तरह काम में ली जाती है।

पुष्प सज्जा का प्रयोग की जाने वाली वस्तुएं निम्नानुसार है -

1 फूलदान अथवा फूल लगाने के पात्र - फूलों को सजाने एवं कलात्मक रूप देने में फूलदानों/पात्रों का अति महत्वपूर्ण योगदान है। इनमें ऐसी क्षमता व शक्ति होती है कि चाहे तो ये पुष्प सज्जा की सुन्दरता में चार चांद लगा सकती है अथवा इसकी शोभा को घटा सकते हैं। फूल लगाने के पात्र के पात्र गुलदान, गमला या गुलदस्ता भी कहते है। आजकल विभिन्न

आकार रंग रूप, आकृति, बनावट, डिजाइन के फूलदान बाजार में उपलब्ध है। फूलदान विभिन्न पदार्थों के बने होते है, जैसे शीशा धातु, चीनी मिट्टी संगमरगमर, पत्थर, लकडी, प्लास्टिक आदि। धातु के बने फूलदान पर सुन्दर नक्काशी की हुई रहती है। जयपुर एवं मुरादाबाद के पीतल के फूलदान पूरे भारतवर्ष पर सुन्दर नक्काशी की हुई रहती है। जयपुर एवं मुरादाबाद के पीतल के फूलदान पूरे भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। वैसे आजकल सुन्दर रंगों एवं डिजाइनों में प्लास्टिक के फूलदान उपलब्ध होने लगे है। मिट्टी के बने छोटे छोटे चिकने घड़े, सुराही या हांडी को सुन्दर रंगों में रंगकर, चित्रकारी करके फूलदान का रूप दिया जा सकता है। गमलों में भी फूलों को सजाकर कमरे, आंगन अथवा बरामदें में रखें जा सकते है।

चित्र : विभिन्न प्रकार का फूलदान/फ्लावर पॉट

चित्र - विभिन्न प्रकार का फूलदान/फ्लावर पॉट

फूलदान विभिन्न आकृति के मिलते है। जैसे उंचे चपटे एवं नीचे, लम्बे गोल अण्डाकार, चौकोर, बेलनाकार, तंग मुंह वाले, त्रिकोण जानवरों के पक्षियों के आकार के। फूलदान का चयन सज्जाकर्ता की रूचि, पुष्प सामग्री, पसन्द आदि पर निर्भर करता है।

फूलदान के चयन में ध्यान रखने योग्य बातें

फूलदान के चयन में निम्न बातों को मस्तिष्क में रखना चाहिए -

1- पुष्प सज्जा किस शैली से की जानी है? शैली के अनुसार ही फूलदान का चयन किया जाना चाहिए।

2- पुष्प सज्जा किस स्थान की जानी है, यथा - आंगन, बरामदें, ऑफिस में, होटल में मेज पर आदि।

3- पुष्प सज्जा हेतु कितनी मात्रा/संख्या में पुष्प सामग्री प्रयुक्त की जानी है।

4- फूलों के रंग रूप, आकार, भार, किस प्रकार का है। फूलदान का रंग इस प्रकार का होना चाहिए कि फूलों का रंग खिल उठे, दबे नहीं। एक सादे फूलदान में फूल अधिक आकर्षक दिखते है। कुछ कुछ सफेद क्रीम, हाथी दांत जैसे रंग क्रीम या मिट्टी के रंग के फूलदानों में फूलों को उपयुक्त पृष्ठभूमि मिलती है और पुष्प सज्जा मोहक बन जाती है। अधिक सुन्दर फूलदान या चटक रंगों के फूलदान से पुष्प सज्जा आकर्षक नहीं बनती है बल्कि दर्शक का ध्यान पुष्प सज्जा की बजाय फूलदान पर चला जाता है। ऐसे फूलदानों में पुष्प सज्जा हेतु बेहद अनुभवी हाथों की जरूरत होती है क्योंकि फूलदान तथा पुष्प सज्जा में प्रतिस्पर्धा हो जाती है जबकी सादे या हल्के रंग के फूलदान में फूल ही मुख्य आकर्षण के केन्द्र होते है।

5- हल्के रंग के फूलों के साथ गहरे रंग के फूलदान शोभते है। इसी तरह गहरे व चटक रंग के फूलों के लिए हल्के रंग व कम अलंकरण युक्त फूलदान ही अच्छे लगते है।

6- उंचे फूलदान दीवार के उस भाग के सामने फबते हैं जिसकी उंचाई चौडाइर्ग् से अधिक हो परन्तु इनमें पुष्प विन्यास नेत्रों के स्तर से अधिक उंचा नहीं होना चाहिए।

7- कमरे की रंग योजना के अनुसार ही फूलदान का चयन किया जाना चाहिए। हल्के रंग के फूलदान में श्वेत पुष्पों की सज्जा शान्ति, शीतलता एवं आनन्द का अनुभव कराते है।

8- खाने की मेज पर उथले फूलदान लगना चाहिए ताकि भोजनकर्ता एक दूसरे को देख सकें, बातचीत कर सकें। साथ ही भोजन परोसते समय हाथ से लगाकर फूलदान नहीं गिरने पायें।

9- यदि औपचारिक पुष्प सज्जा करनी है तो कांच के चिकने धरातल वाले फूलदान का चुनाव करना चाहिए। अनौपचारिक पुष्प विन्यास में खुरदरे, चपटे व नीचे तल वाले फूलदान उपयुक्त रहते है।

टहनी होल्डर -

पुष्प सज्जा को मूजबूती प्रदान करने टहनियों को बांधे रखने एवं सहारा प्रदान करने के लिए टहनी होल्डर का उपयोग किया जाता है। टहनी होल्डर्स विभिन्न प्रकार के होते है। पिन प्वाइन्ट टहनी होल्डर्स तथा हेयर पिंन होल्डरर्स सबसे अच्छे माने जाते है। टहनी होल्डर्स की नरम मिट्टी या गर्म मोम से फूलदान में चिपका दिया जाता है। इनके सुख जाने के उपरान्त ही पुष्प सज्जा की जानी चाहिए।

1 टहनी होल्डर धातु के बने होते हैं। इनकी निचली सतह चपटी होती है तथा इसके उपरी सतह पर पिन जैसे उभार होते है। इन्हीं की सहायता से फूलों एवं टहनियों को लगाकर दृढता एवं मजबूती प्रदान की जाती है। टहनी को बांधने हेतु लोहे के पतले तारों का भी प्रयोग किया जाता है। विभिन्न रंगों के पारदर्शीप्लास्टिक के फीते भी टहनियों को बांधने में प्रयुक्त किये जाते है।

2 टहनी होल्डर्स का उपयोग करते समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि ये बाहर से नहीं दिखे। फूल एवं पत्तियों से टहनी होल्डर्स की अच्छी तरह से ढंक देना चाहिए। सीप, घोंघा, मोती, पंख, चिकने पत्थर से भी होल्डर्स को ढंका जा सकता है।?

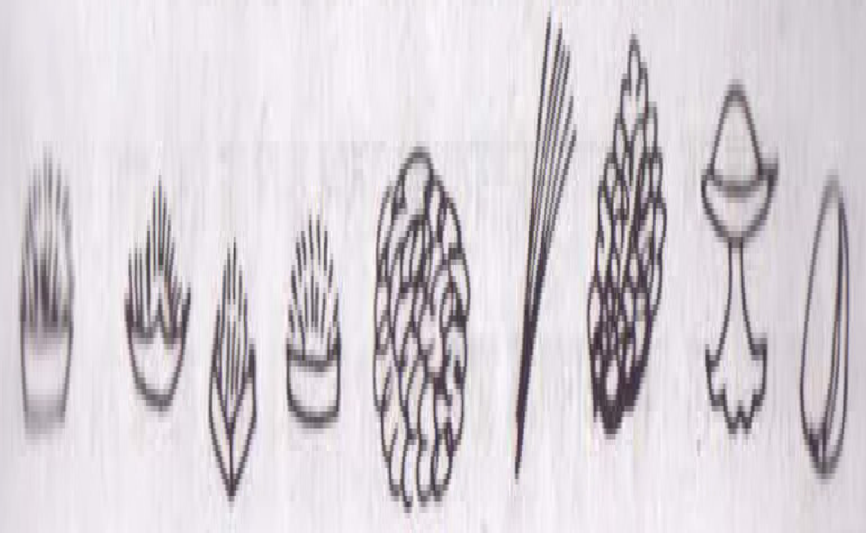

चित्र : विभिन्न प्रकार के स्टेम होल्डर एवं पुष्प सज्जा में उपयोग में लायी जाने वाली सामग्री

आजकल डालिया, सूप, बांस की बनी छोटी टोकरी, तार की जाली, तश्तरी आदि से भी पुष्प व्यवस्था की जाने लगी है। इनमें चिकनी मिट्टी या गर्म मोम फैलाकर टहनी होल्डर को लगाया जाता है फिर फूलों को मनचाहे शैली में सजाया जाता है। फूलों को सहारा देने के लिए पतली छड़ी का भी उपयोग किया जाता है।

पुष्प सज्जा को प्राकृतिक सौन्दर्य देने के लिए तथा मोहक प्रस्तुति के लिए कुछ पत्तियों को कलात्मक रूप से बिखेर दिया जाता है।

3 नरम मिट्टी, रेत, प्लास्टीसीन - जब फूलों को डलिया, उथले तश्तरी या उथले पात्र में सजाया जाता है तब इसकी जरूरत पड़ती है, ये फूलों, घासों, टहनियों आदि को कसकर पकड़े रहता है तथा गिरने से रोकता है। कभी कभी पिन होल्डर को भी स्थिर करने में इनका उपयोग किया जाता है।

4 सुईदार होल्डर - इनका उपयोग फूलदानों में फूलों को व्यवस्थित करने में किया जाता है। ये विभिन्न आकार प्रकार के होते हैं। इनमें सुई जैसे नुकीले उभार होते हैं।

5 कैंची, चाकू, ब्लेड - फूलों की टहनियों, प्लास्टिक के फीते, डंठलों, तारों आदि को काटने के लिए ये जरूरी होती है। फूलों, टहनियों को तेज ब्लेड या चाकू से काटनी चाहिए।

6 आधार - फूलदानों की सुन्दरता बढ़ाने तथा उसके नीचे के धरातल की सुरक्षा प्रदान करने के लिए आधार का उपयोग किया जाता है। आधार के रूप में लकडी /पत्थर, पीतल का स्टेण्ड, चटाई आदि का प्रयोग किया जाता है। फूलदा को स्टैण्ड पर रखने से उसके उपरी भाग के वजन का प्रभाव ठीक रहता है। पूर्वी देशों में मुख्यत: काले रंग के हल्के स्टैण्ड प्रयुक्त किये जाते हैं। आधार रूप में लकडी, पत्थर या शीशे का भी उपयोग किया जा सकता है। लकडी के टुकडों को विभिन्न आकारों में काटकर भी आधार बनाया जा सकता है।

7 सीप, घोंघा, मूंगा, स्टार फिश, पत्थर, शंख आदि - सीप, घोंघा, मूंगा, स्टारफिश, पत्थर, शंख आदि का उपयोग उपसाधनों के रूप में किया जाता है। ये फूल सज्जा की सुन्दरता एवं आकर्षण में चार चांद लगा देते है। मगर इनका प्रयोग करते समय यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि वे फूलों के साथ मिलकर एक इकाई का निर्माण कर सकें, अलग नहीं दिखें।

घोंघा, स्टारफिश, मूंगा, पत्थर, कंकड आदि भावात्मक दशा निर्मित करने में सहायक होते है। उदाहरणार्थ - फिश, मूंगा, सीप, शंख आदि के उपयोग से समुद्रीय प्रभाव उत्पन्न होता है। इसी तरह छोटी गुडिया, पशु, पक्षियों की छोटी छोटी मूर्तियां आदि के प्रयोग से पुष्प सज्जा को आकर्षण एवं सौन्दर्यशाली बनाया जा सकता है। प्रसन्नता एवं उल्लासपूर्ण वातावरण को उत्पन्न करने के लिए पुष्प सज्जा में रंगीन बल्ब, तितलियां, रंग बिरंगे कागज के झण्डे, कागज के फीते आदि का भी उपयोग किया जा सकता है। परन्तु उपसाधनों का प्रयोग करते समय यह अवश्य ध्यान रखा जाना चाहिए कि इनकी मात्रा पुष्प सामग्री से काफी कम होनी चाहिए। साथ ही

ये सज्जा की विषय वस्तु से मेल खाते होनी चाहिए तभी आकर्षक सुन्दर एवं मनोहारी पुष्प सज्जा का निर्माण हो सकेगा।

13.5 पुष्प सज्जा हेतु आवश्यक पौधे सामग्री

1 फूल पुष्प सज्जा का सबसे आवश्यक एवं महत्वपूर्ण अंग है। इसके बिना तो पुष्प सज्जा की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। फूल सुन्दर, कोमल व नाजुक होते हैं तथा वातावरण में सुगन्ध बिखेरते हैं। जहां फूल होते हैं, वहां की सम्पूर्ण वातावरण तरोजाता हो जाता है। परन्तु फूल जल्दी ही कुम्हलाकर, मुरझाकर, सूखकर नष्ट हो जाते हैं तो आइये जानें कि हम किस प्रकार फूलों को लम्बे समय तक ताजा रख सकें।

फूलदानों में फूलों को लम्बे समय तक जाता बनाये रखने के लिए निम्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं को अपने मस्तिष्क में रखना चाहिए -

1- फूलों को सूर्यास्त व सूर्योदय से पूर्व काटना चाहिए। इनकी टहनियों को तिरछा काटें।

2- कुछ फूल डाली से अलग होते ही मुरझा जाते हैं क्योंकि उनकी कटी टहनी में एयरलॉक बन जाते हैं। इस कारण वह पानी सोख नहीं पाता है। अत: फूलों को काटने के तुरन्त बाद ही पानी में डाल देना चाहिए।

3- वे फूल जिनकी टहनियां काफी सख्त एवं कठोर होती हैं उनकी बाहरी छाल को छिल देना चाहिए। ऐसा करने से फूल अधिक समय तक तरोताजा बना रहता है।

4- कुछ फूलों की हरी पत्तियां उनके जीवनकाल को कम कर देती है जैसे लाइकेन। अत: इनकी हरी पत्तियां हटा देनी चाहिए।

5- कुछ फूलों की टहनियों जैसे पॉपी, रबर, के तने को काटने से दूध जैसा श्वेत पदार्थ निकलता है। यह पदार्थ टहनी के अन्तिम छोर पर आकर जमा हो जाता है। जिसके कारण टहनी पानी ग्रहण नहीं कर पाती है। ऐसे फूलों को गीले कपड़े से लपेटकर उनकी टहनियों को उबलते पानी में 1-2 मिनट तक छोड देना चाहिए।

6- फूलें के टहनियों को सदैव तिरछा काटना चाहिए। तिरछे कटे हुए भाग को चुटकी भर नमक लेकर रगड़ देना चाहिए। इससे फूल अधिक समय तक जीवित रहते हैं।

7- बाहर से लाये गये फूलों की टहनियों को थोडा सा काटकर कुछ समय के लिए गुनगुने पानी में एक ऐसप्रिन की गोली डालकर छोड देना चाहिए। थोडी ही देर में फूल तरोताजा होकर खिल उठते है।

8- पानी में एक बडा चम्मच नमक डालने से भी फूलों की आयु बढ जाती है।

9- पानी में थोडी सी मात्रा में परमैंगनेट ऑफ पोटाश डालने से भी उनकी आयु बढ जाती है।

10- कार्नेशन फूलों की आयु बढ़ाने के लिए पानी में एक छोटी चम्मच बोरिक एसिड मिला देना चाहिए।

11- स्वीटपीज के फूलों की आयु बढ़ाने के लिए पानी में एल्होहल की कुछ बूंदे डाल देनी चाहिए। इससे फूल लम्बे समय तक ताजे बने रहते हैं।

12- ऐस्टर के फूलों को यदि चीनी युक्त पानी में रखा जाए तो इनकी आयु काफी बढ जाती है। पानी में एक छोटा चम्मच चीनी डाल देनी चाहिए।

13- फूलदान में यदि तांबे के सिक्के डाल दिये जाएं तो भी फूल लम्बे समय तक ताजा बने रहते है। तांबे के फूलदा में फूलों का जीवनकाल बढ जाता है।

14- वायलेट के फूलों के दो घंटे पाली में डुबोकर फिर उन्हें बर्फ के ठंडे जल में सजा दिये जायें तो वे काफी समय तक तरोजाता व जीवंत बने रहते है।

15- डैफोडिल के फूलों को बहुत अधिक पानी की जरूरत नहीं होती है परन्तु इनकी पानी को रोज बदलते रहना चाहिए।

16- फूलदान, पिन होल्डर, स्टेम होल्डर, आदि की सफाई अच्छी तरह से की जानी चाहिए। फूलदान का पानी दो तीन दिन में अवश्य ही बदल देना चाहिए।

17- फूलदान में फूलों की टहनियों का जितना भाग पानी में डूबा रहता है उनकी पत्तियों को तोडकर/काटकर हटा देना चाहिए क्योंकि पत्तियां पानी में जल्दी सड जाती हैं। साथ ही टहनियों के सिरों को थोडा सा नीचे से काटकर दो भागों में चीर देना चाहिए। इस प्रक्रिया में भी फूल लम्बे समय तक ताजा बने रहते हैं।

18- पुष्प सज्जा में खिले हुए फूलों की अपेक्षा अधखिले फूलों एवं कलियों को चुनें।

19- फूलों को यदि दिन में उथले पानी में रखा गया है तो रात्रि में गहरे पानी मे रखें। परन्तु डैफोडिल्स के फूलों को कम पानी की जरूरत होती है। यह अवश्य ध्यान रखें।

20- जिनिया एवं एस्टर के फूलों की आयु बढ़ाने के लिए इनके पानी को हर दूसरे दिन बदल दे, साथ ही नीचे से इनके सिरों को थोडा तिरछा काटते रहें। इस विधि से इनके फूल एक सप्ताह तक तरोताजा बने रहते हैं।

21- मनीप्लान्ट के पौधों में पानी बदलने की रोज जरूरत नहीं होती। बल्कि जितना पानी सूख जाए उतना ही पानी और उपर से डाल देना चाहिए।

पत्तियां, टहनियां और छोटे फल -

कुछ पेड़ों की पत्तियां कई महीनों तक खराब नहीं होती हैं। अत: इनका उपयोग पुष्प सज्जा में किया जाता है। जैसे - चीनी सदाबहार, रबर प्लांट, हकलबेरी, आइवी, आदि । कुछ सज्जा में छोटे फल एवं बेरियां भी उपयोग में लायी जाती है।

जापान सज्जा में सूखी टहनियों को भी कलात्मक ढंग से सजाकर पुष्प सज्जा की जाती है।

3 **घास एवं खरपतवार - प्रकृति** में अनेक प्रकार के सुन्दर सुन्दर घास एवं खरपतवार विद्यमानन होते हैं। इनका उपयोग पुष्प सज्जा में किया जाता है। जैसे स्नेकग्रास, फॉक्सटेल, मिल्कवीड आदि।

13.6 पुष्प व्यवस्था के प्रकार

व्यक्ति की दिलचस्पी फूलों के प्रति काफी बढी है। आज पुष्प सज्जा गृह सज्जा का अभिन्न अंग बन चुका है। घर हो या होटल, सार्वजनिक स्थल हो या निजी संस्थान, हर क्षेत्र में पुष्प विन्यास की लोकप्रियत काफी बढी है। साथ ही पुष्प विन्यास के विभिन्न तरीके भी परिमार्जित हुए है। सामान्यत: पुष्प व्यवस्था निम्नांकित प्रकार की होती हैं -

1 रेखीय डिजाइन में पुष्प व्यवस्था

2 समूह शैली में पुष्प व्यवस्था

3 लघु पुष्प व्यवस्था

4 मिलीजुली पुष्प व्यवस्था

1 **रेखीय डिजाइन में पुष्प व्यवस्था -** यह पुष्प व्यवस्था पूर्वी एवं पश्चिमी शैली का मिला जुला रूप है। इस व्यवस्था में फूलों, पत्तियों, टहनियों, एवं अन्य सामग्री को रेखीय डिजाइन मे इस तरह से सजाया जाता है कि पौधे की वृद्धि की सुन्दर, आकर्षक, एवं विशिष्ट रेखाएं स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो सकें। रेखाओं के उपयोग द्वारा किसी भी आकार में (जैसे- अर्द्धचन्द्राकार, त्रिकोण समानान्तर, वक्र आदि) पुष्प व्यवस्था की जाती है।

यथार्थ में यह पुष्प व्यवस्था कम समय में की जाने वाली सर्वाधिक सुन्दर व्यवस्था है। इसमें कम पुष्प सामग्री यथा - फूल, पत्तियों, टहनियों आदि की जरूरत होती है तथा सज्जा अत्यन्त ही आकर्षक, मनोहारी एवं ऐश्वर्यपूर्ण होती है।

रेखीय व्यवस्था करते समय सज्जाकर्ता को निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए -

1 इसमें प्रयुक्त की जाने वाली फूलों, पत्तियों एवं टहनियों की गुणवत्ता श्रेष्ठ होनी चाहिए। इसमें पुष्प सामग्री की गुणवत्ता पर बल दिया जाता है न कि मात्रा पर।

2 रेखीय पुष्प व्यवस्था किस आकार की बनायी जानी है, इसकी योजना स्पष्ट रूप से अपनी विलक्षण कल्पना शक्ति द्वारा मस्तिष्क में बना लेनी चाहिए।

3 रेखीय पुष्प व्यवस्था उथले फूलदान/पात्र में केवल तारों के गुच्छे से ही बनायी जा सकती है। पुष्पों को मनवांछित दिशा देने में तार सहायक होते हैं। उथले फूलदान किसी भी कोण से व्यवस्था संभव बनाते हैं।

रेखीय पुष्प व्यवस्था कैसे करें?

1 रेखीय पुष्प व्यवस्था करने से पूर्व सज्जाकर्ता को रेशमी डिजाइन की रूपरेखा मस्तिष्क में बना लेना चाहिए।

2 किस तरह् की रेखा बनाई जानी है तथा रेखाओं का प्रयोग से किस तरह् के आकार बनेंगे यह् भी कल्पना के प्रयोग से किस तरह् के आकार बनेंगे यह् भी कल्पना में स्पष्ट होना चाहिए जैसे त्रिभुज, अंग्रेजी के C अक्षर, F अक्षर, S अक्षर, Z अक्षर अथवा अन्य कोई आकृति।

3 पुष्प विन्यास की आकृति के अनुरूप ही फूलदान का चयन किया जाना चाहिए। रेखीय पुष्प व्यवस्था के लिए उथले फूलदान ही श्रेष्ठ रहते हैं। यदि पुष्प व्यवस्था चौडी आकृति में की जानी है तो चौडे फूलदान की जरूरत होती है।

4 फूलदान की उंचाई एवं चौडाई को ध्यान में रखते हुए उसी के अनुरूप टहनियों का चयन किया जाना चाहिए। सामान्यत: फूलदान की उंचाई एवं चौडाई से पुष्प व्यवस्था की उंचाई एवं चौडाई डेढ गुणी ज्यादा रहती है। यह् अनुपात आकर्षक सज्जा के लिए आवश्यक है।

5 रेखा की आकृति के अनुरूप ही टहनियों से आधार तैयार की जानी चाहिए। यह भी ध्यान रहे कि बाह्य रेखा की निरन्तरता बनी रही क्योंकि ये रेखाएं ही व्यवस्था को गति देती हैं तथा इनके लम्बाई, चौडाई एवं गहराई को स्पष्ट करती है।

6 हॉ। पुष्प सज्जा करते समय रंगों पर भी बल देना चाहिए। फूलदान का रंग, पुष्प का रंग तथा जिस स्थान पर फूल सजाकर रखा जाना है उनमें एकता एवं अनुरूपता होना जरूरी है तभी आकर्षक, मनोहारी एवं अद्भूत छटा बिखेरने वाली पुष्प सज्जा बन सकती है।

7 पुष्प व्यवस्था में खाली स्थान को भी पर्याप्त महत्व दिया जाना चाहिए। बहुत अधिक फूलों एवं पत्तियों को भर देने से सज्जा आकर्षक नहीं दिखती है। उपसाधनों, यथा सीप, शंख, स्टारफिश, पत्थर, कंकड आदि रखकर भी सज्जा को अत्यधिक आकर्षक बनाया जा सकता है।

2. समूह शैली में पुष्प व्यवस्था - इस शैली द्वारा पुष्प सज्जा का श्रेय अंग्रेजों को जाता है। आज भी भारत में परम्परागत रूप से पुष्प सज्जा में इसी शैली का प्रयोग अधिकांशत: किया जाता है। इसे गुलदस्ता सजाना भी कहते हैं।

समूह शैली में पुष्प व्यवस्था से तात्पर्य है - सुन्दर, आकर्षक एवं चटकीने रंगों के फूलों को चुनकर व्यवस्थित करके फूलदान में लगाना। इस शैली द्वारा पुष्प सज्जा में पर्याप्त मात्रा में फूलों, पत्तियों, टहनियों एवं अन्य पुष्प सामग्री की जरूरत होती है। उंचे फूलदान/पात्र का उपयोग किया जाता है। इस शैली को खास विशेषता है कि इसमें रेखाओं पर बल न देकर फूलों के रंग एवं सुन्दरता पर बल दिया जाता है। फूलों की समूहीकृत रचना गठी हुई अर्द्ध गठी अथवा बिखरी हुई हो सकती है। परन्तु इस शैली द्वारा सज्जा करते समय यह ध्यान रखना जरूरी होता है कि प्रत्येक फूल ही अपनी स्वयं की सुन्दरता बनी रहे तथा उनका आपसी मिश्रित प्रभाव भी सुन्दर, आकर्षक, मनोहारी एवं अद्‌भूत छटा बिखरने वाला हो।

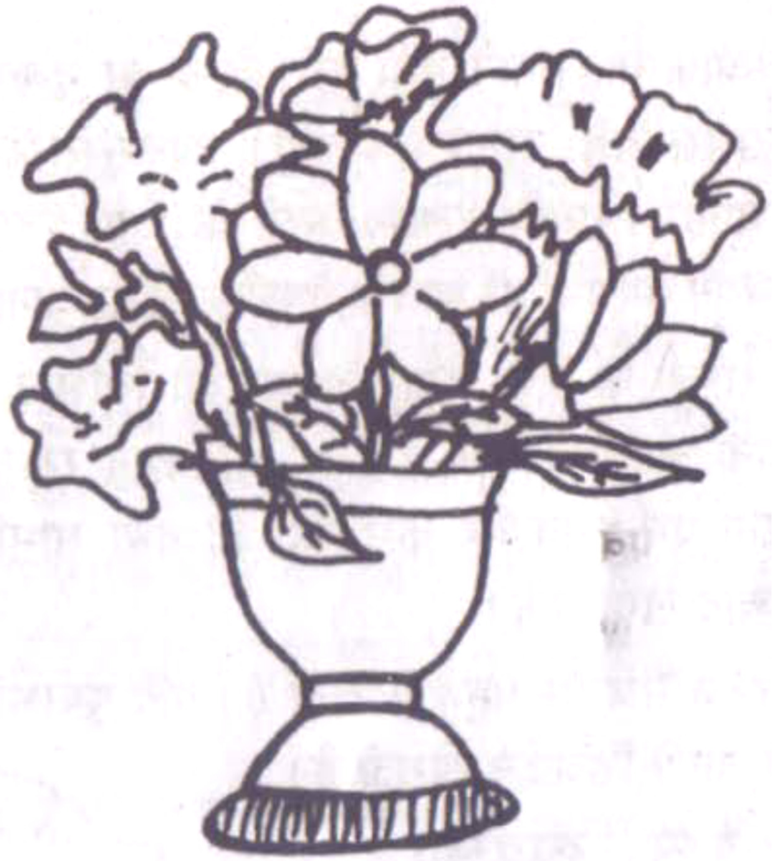

चित्र : समूह शैली में पुष्प सज्जा

फूलों का समूहीकृत विन्यास स्टाइलिश, स्वाभाविक अथवा आवर्तकाल हो सकता है। स्टालिश पुष्प विन्यास में फूलों के रंग अथवा रेखीय नमूना बनाकर आकर्षण उत्पन्न किया जाता है। अनौपचारिक कमरे में स्वाभाविक समूहीकृत पुष्प व्यवस्था की जा सकती है।

प्राचीनकाल में यूरोप के महलों में आवर्तकाल पुष्प विन्यास की जाती है।

समूहीकृत सज्जा केसे करें -

1 समूहीकृत सज्जा उंचे आकार के फूलदान में की जानी चाहिए। फूलदान में उपरी सिर तक तार की जाली लगा देनी चाहिए।फ

2 फूलदान में इतना पानी भरना चाहिए ताकि टहनियों का अन्तिम सिरा पानी में डूबा रहें।

3 फूलदान की लम्बाई एवं चौडाई को ध्यान में रखते हुए इसके करीब 1 1/2 गुणी लम्बाई की टहनियों का चयन करना चाहिए। पात्र की चौडाई से सज्जा की चौडाई दोगुनी होनी चाहिए।

4 पुष्प सज्जा किस आकार, आकृति में बनाया जाना है इसका स्पष्ट रेखाचित्र से बना लेना चाहिए।

5 फूलों की टहनियों को तार की जाली की सहायता से विभिन्न दिशा में छितराकर व्यवस्थित करें। आडी खडी, विकीर्ण रेखाओं का उपयोग किया जा सकता है।

6 पुष्प सज्जा की बाह्य रेखा को स्पष्ट करने वाली टहनियों एवं शाखाओं को दृढतापूर्वक मजबूती से लगाना चाहिए क्योंकि इन्हीं पर सम्पूर्ण सज्जा निर्भर करती है।

7 पुष्प सज्जा को आकर्षक बनाने तथा रूचि केन्द्र पर दबाव उत्पन्न करने के लिए सबसे बडे, सुन्दर, चटकीले, खूबसूरत रंग के फूलों को केन्द्र में स्थापित करना चाहिए। दबाव उत्पन्न करने के लिए जिन फूलों का प्रयोग किया जाता है उनका चयन अत्यन्त ही सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।

8 अन्त में सम्पूर्ण सज्जा के लिए तैयार आधार को विभिन्न फूलों, पत्तियों, टहनियों, घासादि में सजाना चाहिए। साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि फूलों की व्यक्तिगत सुन्दरता एवं आकर्षण कम नहीं हो तथा सामूहिक रूप से मिलकर वे सुन्दरता में चार चांद लगा सकें।

9 सामूहिक पुष्प सज्जा मेज पर बहुत खिलती है। यदि पृष्ठभूमि सादे रंग की है तो इस पर बहुरंगी फूलों वाली डिजाइन शोभती है।

3 लघु पुष्प व्यवस्था -

जब पुष्प सज्जा किसी छोटे पात्र, फूलदान में की जाती है तब इसे लघु पुष्प व्यवस्था कहते हैं । इस प्रकार की पुष्प सज्जा छोटी कटोरी, गिलास, प्लेट, चौडे मुंह की छोटी शीशी, ऐश ट्रे आदि में भी की जा सकती है। लघु पुष्प सज्जा की लम्बाई सामान्यत: 4.5 दंच - 5.5 इंच रखी जाती है।

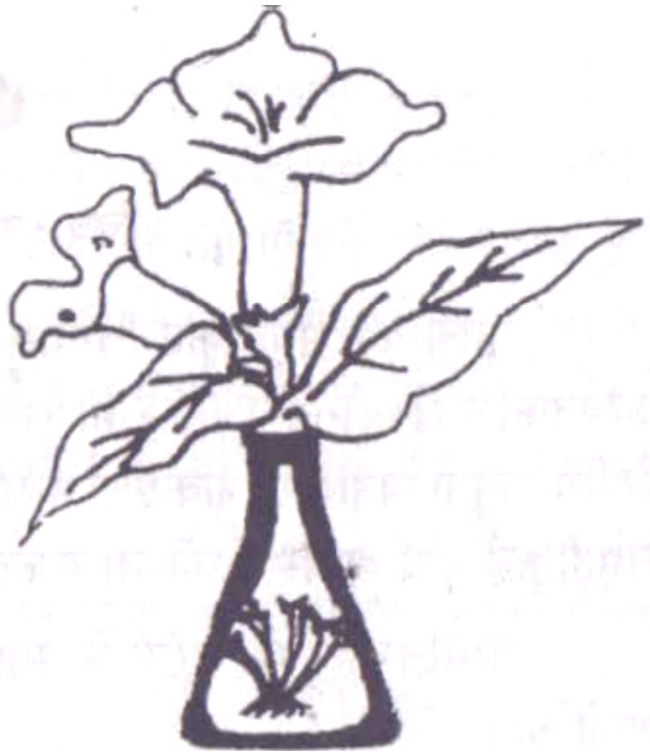

4 मिली/जुली मिश्रित पुष्प व्यवस्था -

इस प्रकार की पुष्प सज्जा को अमेरिकन शैली की पुष्प सज्जा भी कहा जाता है। आजकल यह सज्जा कॉफी लोकप्रिय है। इसमें रेखीय शैली तथा समूहीकृत शैली की सबसे अच्छी गुणों एवं विशेषताओं को चुनकर इनके उपयोग में एक नवीन सज्जा की जाती है जिसे मिली जुली अथवा मिश्रित व्यवस्था कहते है।

मिश्रित प्रकार के पुष्प सज्जा में फूलों के रंग एवं रेखा दोनों पर ही बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। केन्द्र में समूहीकृत शैली तथा बाहर में रेखीय शैली का उपयोग किया जाता है।

विभिन्न कलाकारों ने पुष्प सज्जा के विभिन्न प्रकारों को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा है। कुछ कलाकारों का मानना है कि पुष्प सज्जा की मुख्य तीन विधियां है -

1 परम्परागत विधि

2 पूर्वदेशीय विधि

4 आधुनिक विधि

परन्तु यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो पुष्प विन्यास की मुख्य दो विधियां है -

अ) औपचारिक पुष्प सज्जा -

औपचारिक पुष्प सज्जा को परम्परागत अथवा रूढिगत पुष्प व्यवस्था भी कहा जाता है। इस विधि में विभिन्न रंग, सुगन्ध के फूलों, कलियों पत्तियों, टहनियों को एक साथ फूलदान में लगाया जाता है। भारत, चीन, एवं अन्य पूर्वी देशों में यह पुष्प व्यवस्था आज भी की जाती है। इस प्रकार की पुष्प सज्जा मे परम्परागत फूलदान ही शोभा पाते है विशेषकर, सिलखड़ी चीनी मिट्टी के ही फूलदान उपयुक्त रहते है। फूलदानों का बाह्य धरातल सम एवं चिकनी होना चाहिए।

परन्तु आजकल औपचारिक पुष्प विन्यास में काफी परिवर्तन हुआ है। अब फूलों को समूहीकृत करके न केवल फूलदान में लगाये जाते हैं बल्कि कला के तत्वों की भी पालना की जाती है।

ब) अनौपचारिक पुष्प सज्जा - इस प्रकार की पुष्प सज्जा जापानी शैली पर आधारित है। इसमें अनौपचारिक संतुलन होता है। यह पुष्प सज्जा मुख्यत: सज्जाकर्ता के व्यक्तिगत रूचि एवं पसन्द पर निर्भर करता है। सज्जाकर्ता पुष्प व्यवस्था के माध्यम से अपने विचारों, भावों एवं संवेगों को अभिव्यक्त करता है। इसलिए यदि उसे व्यक्तिगत की अभिव्यंजना भी कहा जाए तो कोई अतिशोक्ति नहीं होगी। इस विधि में कम से कम फूलों, पत्तियों एवं टहनियों का प्रयोग कर सुन्दर एवं आकर्षक सज्जा की जाती है। सूखे पत्ते, सूखी टहनियां, सूखे बीजों की फलियां, गेहूं की बालें, सुन्दर घास, कुश, खरपतवार आदिसे भी सुन्दर पुष्प सज्जा की जाती है।

अनौपचारिक पुष्प सज्जा में रंगों को अधिक महत्व न देकर रेखाओं को अधिक महत्व दिया जाता है। इस सज्जा मे चौरस फूलदान का उपयोग किया जाता है ताकि टहनियों को मनवांछित तरीके से फैलाकर लगाया जा सकें।

इकेबाना

फूल सजाने की जापानी कला को इकेबाना कहा जाता है. इसमें आकाश, पृथ्वी और मानवजाति इन तीन तत्वों का एक संतुलित ढंग से प्रतिनिधित्व किया जाता है. इकेबाना कला चीन से जापान आई. कहते हैं कि छठी शताब्दी में ओनो नो इमोको ने चीन के राज दरबार का तीन बार दौरा किया और वहीं फूल सजाने की कला सीखी. जब वो जापान लौटे तो उन्हें क्योतो के बौद्ध मंदिर का संरक्षक नियुक्त किया गया. वो एक छोटे से घर में रहा करते थे जिसे इकेनोबो कहा जाता था, यानी तालाब के किनारे बनी झोंपड़ी. वहाँ उन्होंने इस कला को और परिष्कृत किया. और फिर पीढ़ी दर पीढ़ी जापानी गुरुओं ने इसमें महारत हासिल की. अब जापान में इकेबाना की अनेक शैलियाँ प्रचलित हैं, लेकिन सबसे पुरानी शैली को इकेनोबो नाम से ही जाना जाता है. यह शैली जापान से आई है । इसे पूर्वदेशीय शैली भी कहते हैं । इसमे रेखा, अनुपात को अधिक महत्व दिया गया है । इसमें अनौपचारिक सन्तुलन का प्रयोग किया जाता है तथा कम रेखाओं के प्रयोग द्वारा बल उत्पन्न किया जाता है । प्राय: इस प्रकार की शैली से व्यवस्थित पुष्प सज्जा एक ही दिशा में को जाती है । इसमें प्रमुख तीन रेखायें हैं-

प्रथम रेखा-

यह स्वर्ग को तरह संकेत करती हैं व फूलदान की लम्बाई तथा चौडाई का डेढ या पौने दो गुना होती है और यह मध्य बिन्दु से प्रारम्भ होकर अन्तिम बिन्दु के समीप समाप्त होती है ।

द्वितीय रेखा: यह मनुष्य की तरफ संकेत करती है व प्रथम रेखा को तीन चौथाई होती है । इसके माध्यम से व्यवस्था में चौड़ाई उत्पन्न होती है व यह फूलदान को चौडाई के बाहर तक आती है ।

तृतीय रेखा : यह पृथ्वी को तरफ संकेत करती है व प्रथम रेखा की आधी होती है । यह केन्द्र के समीप व फूलदान की चौड़ाई के अन्दर ही समाप्त हो जाती है ।

13.7 सारांश

इस इकाई में पुष्प सज्जा से घर को सुसज्जित करने के तरींको के बारे में बताया है । सुन्दर रंग बिरंगे सुगन्धित फूल प्रकृति के समीप होने का अहसास करते है औए मन को सकूँ पहुंचाते है । पुष्प सज्जा के लिए आवश्यक सामग्री, उसके विविध प्रकार व विभिन्न शैलियों का उल्लेख इस इकाई में हैं ।

13.8 अभ्यास प्रश्न

1. पुष्प सज्जा का अर्थ बताइए?
2. पुष्प सज्जा के प्रकार को समझाइये?
3. पुष्प सज्जा करने के दिशा निर्देश को समझाइये?
4. पुष्प सज्जाकी सामग्री को समझाइये?
5. पुष्प सज्जा हेतु आवश्यक पौध सामग्री को समझाइये?

13.9 संदर्भ ग्रन्थ

1. बी.के. बख्शी गृह व्यवस्था है गृह सज्जा साहित्य प्रकाशन आगरा
2. डा. वृंदा सिंह गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा पंचशील प्रकाशन जयपुर
3. डा. रीना खनुजा गृह प्रबंध साधन व्यवस्था विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा एवं आन्तिरक सौजन्य

4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"

5- Nickel Dorsey M & Sons New york "Managment in Family

इकाई-14

गृह निर्माण की योजना

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 गृह निर्माण की योजना के पद

14.2.1 स्थान का चयन

14.2.2 भूमि का चयन

14.2.3 आमुख दिशा विन्यास

14.2.4 मकान की बनावट

14.2.5 समुचित संवातन

14.2.6 पानी की व्यवस्था

14.2.7 विद्युत व्यवस्था

14.2.8 मॉल मूत्र निष्कासन

14.3 सारांश

14.4 अभ्यास प्रश्न

14.5 संदर्भ ग्रन्थ

14.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- गृह निर्माण के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- गृह निर्माण की योजना में महत्वपूर्ण वस्तु की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे

14.1प्रस्तावना

घर मनुष्य की मूलभूत भौतिक आवश्यकता है। उत्तम शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए शुद्ध, स्वच्छ, हवादार, रोशनीयुक्त मकान की आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु वह या तो स्वयं का निजी मकान बनाता है, किराये पर रहता है अथवा बना-बनाया मकान क्रय करता है। आज के भौतिक युग में, अधिकांश परिवार स्वयं द्वारा निर्मित घर में ही रहना ज्यादा पसन्द करते है और अपने इस दीर्घकालीन लक्ष्य की पूर्ति हेतु सदैव प्रयत्नषील रहते हैं

भवन निर्माण से पहले इसकी एक निश्चित योजना, रूपरेखा, नक्षा आदि तैयार करनी पड़ती है। यदि भवन का निर्माण योजनाबद्ध ढंग से नहीं किया जाए तो ऐसा मकान परिवार की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकेगा और न ही वह परिवार के सदस्यों की रूचियों के अनुकूल ही होगा। उसमें निवास करने वाले लोगों को मानसिक तुष्टि नहीं मिलेगी और न ही वे एकान्तता (Privacy) ही महसूस कर सकेंगे। ऐसे भवन निर्माण समय, शक्ति एवं ऊर्जा का अपव्यय होगा। अत: एक चतुर, बुद्धिमान एवं कुशल गृह प्रबन्धक/ग्रहिणी को काफी सोच-समझकर, विवेकपूर्ण निर्णय लेकर योजना बनाकर भवन निर्माण करना चाहिए।

14.2 गृह निर्माण की योजना

गृह निर्माण की योजना के विभिन्न पड़ हैं -

(1) स्थान का चयन (Selection of Site)

(2) भूमि का चयन (Selection of Land)

(3) आमुख दिशा विन्यास (Orientation)

(4) मकान की बनावट (Structure of House)

(5) समुचित संवातन (Proper Ventilation)

(6) पानी की व्यवस्था (Arrangement of Water)

(7) विद्युत व्यवस्था (Arrangement of Electricity)

(8) मल-मूत्र एवं गंदे जल का निष्काशन (Sanitation Facility)

14.2.1 स्थान का चयन (Selection of Site)

हम सभी अपनी जिन्दगी का अधिकांश समय घर में व्यतीत करतें है। घर हमें वर्षा, धूप, शीत, लू, जंगली-जानवरों, चोर, डकैत, बदमाश आदि से सुरक्षा प्रदान करता है। अत: भवन निर्माण से पूर्व स्थान का चयन करना अत्यावश्यक है। भवन निर्माण हेतु स्थान का चयन पहली आवश्यकता है। यदि भवन निर्माण के लिए जमीन पहले से ही उपलब्ध है तब कुछ नहीं किया जा सकता परन्तु यदि खरीदकर मकान बनवाना है तब स्थान का चयन काफी सोच-समझकर, विवेकपूर्ण निर्णय लेकर किया जाना चाहिए। गृह निर्माण हेतु स्थान का चुनाव करते समय निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए-

1. मकान ऊँची जगह पर बनवाना चाहिए ताकि पर्याप्त रोशनी, धूप, हवा आदि प्राकृतिक सम्पदा मकान में सुगमता से प्रवेश कर सके साथ ही वर्षा के पानी से मकान को कोई नुकसान नहीं पहुँचें। नीची जमीन में भवन निर्माण से वर्षा का पानी मकान में प्रवेश कर जाता है जिससे सीलन बनी रहती है। मकान कमजोर हो जाता है एवं दीवार, फर्श एवं छत में दरारें पड़ जाती है। सीलनयुक्त मकान में कीड़े-मकोड़े भी अपना अड्डा जमा लेते है तथा विभिन्न प्रकार की जानलेवा बीमारियाँ फैलाते है।

2. जमीन ऐसी जगह पर लेनी चाहिए जहाँ पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ वायु एवं सूर्य का प्रकाश सदैव उपलब्ध होता रहे। अर्थात् मकान तीन तरफ से खुला हो तो अच्छा है।

3. भूखण्ड के आस-पास बहुत ऊँचे-ऊँचे पेड़-पौधे, बहुमंजिली इमारतें एवं विशालकाय भवन नहीं होने चाहिए क्योंकि इससे सूर्य के प्रकाश एवं शुद्ध वायु के आवागमन में रूकावट आती है। छोटे-छोटे पेड़-पौधे शुद्ध वायु के संचरण में सहायक होते है।

4. भूखण्ड बरसाती पानी के बहाव के मध्य में अथवा रास्ते में नहीं होना चाहिए क्योंकि बरसात में बहकर आने वाला पानी मकान में प्रवेश कर जाता है तथा क्षति पहुँचाता है जिसके कारण इसकी मजबूती, जीवन क्षमता एवं दृढ़ता कम हो जाती है।

5. भूखण्ड के आस पास गड्ढा, तालाब, गंदा नाला, कसाईखाना, पशुषाला, चर्मशोधन शाला आदि नहीं होना चाहिए क्योंकि इनसे दुर्गन्धपूर्ण वायु निकलती है जो पूरे वातावरण को प्रदूषित कर देती है। ऐसे अशुद्ध एवं प्रदूषित वातावरण में साँस लेने से तमाम तरह की बीमारियाँ आ घेरती है।

गड्ढे, तालाब एवं गंदी नाली में पानी के जमाव के कारण मक्खी, मच्छर पनप जाते है। ये भी स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते है। मच्छर काटने से मलेरिया जैसे भयावह रोग हो जाते है।

6. भूखण्ड अधिक व्यस्त, शोरगुल एवं भीडभाड़ वाले स्थान पर नहीं होना चाहिए, जैसे- रेलवे स्टेषन, बस स्टैण्ड, सिनेमाघर, हवाई अड्डा, थियेटर, मुख्य बाजार, मुख्य सड़क आदि। मुख्य सड़क पर भी भारी वाहनों के आवागमन से शोर अत्यधिक होता है जिससे ध्वनि प्रदूषण (Noise Pollution) होता है। परिणामत: वहाँ के निवासियों को बहरापन होने का खतरा बढ़ जाता है। वाहनों से काफी मात्रा में धूल, धुँआ निकलने से वायु प्रदूषण होता है जिसका स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

7. भूखण्ड के आस-पास फेक्ट्री, कल-कारखाने, ईंट के भट्टे आदि नहीं होने चाहिए क्योंकि ये भी वायु प्रदूषण फैलाते है जिससे अस्थमा एवं “वसन सम्बन्धी अनेक रोग हो जाते है।

8 भूखण्ड घनी आबादी से दूर शान्त क्षेत्र में होना चाहिए। पतली एवं गंदी गलियों में मकान नहीं बनवायें तो अच्छा है।

9. भूखण्ड ऐसी जगह पर लेना चाहिए जहाँ से अस्पताल, स्कूल, कॉलेज, डाकघर, बैंक, बाजार, दफ्तर, मनोरंजन स्थल, पार्क आदि पास पड़ते है। मकान से इनकी दूरी 2-3 किलामीटर के अन्दर हो तो श्रेष्ट है । उपर्युक्त सभी स्थान समीप रहने से आने-जाने में समय, शक्ति एवं धन इन सभी की बचत होती है।

10. भूखण्ड के समीप सरोवर, पार्क, बगीचा, नदी, झील, सागर का तट हो तो बहुत ही उत्तम। ऐसे प्राकृतिक दृष्यों के भ्रमण से मानसिक

शान्ति मिलती है। शरीर में शुद्ध वायु का संचार होता है। हरियाली मन को प्रसन्न एवं आनन्द से भर देती है। शाम-सुबह इन स्थानों पर भ्रमण किया जा सकता है तथा प्रकृति के सौन्दर्य का पान किया जा सकता है।

11. पास-पड़ोस का वातावरण एवं संगति का प्रभाव परिवार के सदस्यों विशेषकर बालकों एवं किशोरों पर अधिक पड़ता है। अत: पास-पड़ोस का वातावरण अच्छा होना चाहिए। सुषील, सभ्य एवं सुसंस्कृत पड़ोसी के साथ रहने से बालकों का उत्तम शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास होता हैं।

12. भूखण्ड सदैव किसी सड़क से जुड़ा होना चाहिए ताकि आने-जाने में असुविधा नहीं हो।

13. भवन बस अड्डा, रेलवे स्टेषन आदि से बहुत अधिक दूर नहीं होना चाहिए। इनका नजदीक होना अत्यन्त सुविधाजनक रहता है।

14. कृत्रिम (बनायी गई) भूमि, भराऊ भूमि पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसे स्थान पर नींव के लिए शुद्ध आधार उपलब्ध नहीं होता है। अत: नींव के धँस जाने का भय बढ़ जाता है। नींव के धँसने से मकान की दीवारों, छतों एवं फर्श पर दरारें पड़ जाती है। मकान नीचे की ओर बैठ जाता है। अत: मकान कमजोर हो जाता है।

14.2.2 भूमि का चयन (Selection of Land)

स्थान के चयन के समान ही भवन निर्माण के लिए भूमि, मिट्टी के चयन पर यथोचित ध्यान आवश्यक है। मकान निर्माण करते समय नींव डालनी पड़ती है। नींव के लिए मजबूर आधार की जरूरत पड़ती है। शुश्क एवं ऊँची भूमि मकान निर्माण की दृष्टि से सर्वश्रेष्ट है। भूमि विभिन्न प्रकार की होती है। मकान बनवाने की दृष्टि से कौनसी भूमि उत्तम होगी, इसकी जानकारी प्राप्त कर लेना गृह निर्माता के लिए आवश्यक है। भूमि के विभिन्न प्रकारों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है-

(i) रेतीली भूमि (Sandy Soil) - भवन निर्माण के लिए रेतीली भूमि अच्छी मानी जाती है क्योंकि इसमें पानी को सोखने की अद्‌भूत क्षमता एवं विलक्षण गुण रहता है। अत: पानी धरती के भीतर बहुत गहराई तक

नीचे चला जाता है। परिणामत: मकान में सीलन नहीं रहती। ऐसी भूमि की धारण क्षमता (Bearing Capacity) भी अधिक होती है। पर हाँ, रेतीली भूमि में मकान बनवाते समय गहरी एवं चौडी नींव खोदनी चाहिए। यह थोड़ी मँहगी पड़ती है।

(ii) चिकनी भूमि (Loamy Soil) - भवन निर्माण की दृष्टि से चिकनी भूमि बहुत अधिक उपयोगी नहीं होती है क्योंकि ऐसी भूमि में पानी को काफी लम्बे समय तक सोखकर रखने का अवगुण (Demerits) होता हैं। अत: मकान में सीलन बने रहने की सम्भावना प्रबल हो जाती है। सीलन के कारण नींव कमजोर होकर नीचे की ओर धँस जाती है। इस कारण छत एवं दीवारों में दरारें पड़ जाती है। इस कारण ही सीलन वाले मकानों में मक्खी, मच्छर, तिलचट्टे, दीमक एवं अन्य कीड़े-'मकोड़े को पनपने का भी भय रहता है। उपर्युक्त कारणों से उसमें रहने वालों लागों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। परन्तु यदि ऐसी भूमि में मकान बनवाना बहुत जरूरी ही है तब गहरी एवं चौडी नींव खोदकर नीचे से पानी निकाल देना चाहिए। फिर इसमें कंकरीट, बालू, सीमेन्ट, छोटे-छोटे पत्थर एवं पानी सोखने वाले जलसह यौगिकों का प्रयोग कर नींव बनाना चाहिए।

(iii) कंकड़ीली एवं पथरीली भूमि - रेतीली भूमि की भाँति ही कंकड़ीली भूमि भी भवन निर्माण के लिए उपयुक्त मानी जाती है। ऐसी भूमि में पानी रिस-रिसकर जमीन की तहों में काफी नीचे तक चला जाता है अथवा कभी-कभी ऊपर-ऊपर ही बह जाता है। इस कारण मकान में सीलन नहीं रहता। परन्तु कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पानी भूमि के नीचे अवस्थित चट्टानों के खोखले भाग में जमा होने लगता है जिसके कारण नींव कमजोर हो जाता है। भवन कमजोर हो जाता है। अत: भवन निर्माण करते समय चट्टानों की दरारों को सीमेंन्ट, कंकरीट, छोटे-छोटे पत्थर आदि से भर देना चाहिए ताकि पानी खोखले भागों में जमा नहीं होने पाये। ऐसी भूमि में घरेलू बागवानी, पेड़-पौधे आदि लगाना कठिन होता है।

कंकड़ीली भूमि में मकान बनवाने हेतु बहुत अधिक गहरी नींव खोदने की जरूरत नहीं होती है। परन्तु चौड़ाई रहना आवश्यक है। इस भूमि पर बना मकान दिन में कुछ अधिक गर्म रहता है।

(iv) भराऊ भूमि या बनायी गई भूमि - भवन की मजबूती एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भराऊ भूमि भवन निर्माण के लिए उपयुक्त नहीं होती है। ऐसी भूमि कूड़ा-करकट, कंकड़-पत्थर, मिट्टी, गोबर, मल ओदि को गहरे गड्ढों, नाले, तालाब आदि में डालकर तैयार की जाती है। ऐसी भूमि में कई तरह की विशैली गैसें बनती है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी नुकसानदेह होती है। ये वातावरण को दूषित करती है। परिणामत: वहाँ के लागों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। परन्तु ऐसी भूमि पर मकान बनवाना आवश्यक प्रतीत हो तब इसमें मिट्टी, कंकड़-पत्थर आदि डालकर काफी दिनों तक (वर्शो तक) यों ही छोड़ देना चाहिए। फिर भवन निर्माण हेतु काम में लेना चाहिए।

(v) चूने एवं मैग्नीशियम युक्त भूमि - भवन निर्माण की दृष्टि से यह भूमि भी उपयुक्त होती है। इस भूमि में पानी सोखने की क्षमता होती है। अत: पानी रिस-रिसकर भूमि के भीतर चला जाता है। परिणामस्वरूप् मकान में सीलन नहीं रहता है। मकान मजबूत एवं सुदृढ़ बनता है।

उपर्युक्त विवेचनों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि रेतीली, चिकनी एवं कंकड़ीली भूमि मकान बनवाने की दृष्टि से उत्तम है। परन्तु सबसे अच्छी भूमि वह मानी जाती है जिसके सबसे ऊपर एक मीटर नरम मिट्टी हो तथा उसके नीचे कंकड़ीली जमीन।

जमीन ढलुआ होनी चाहिए ताकि पानी जमने नहीं पाये। समतल भूमि में पानी का स्तर कम-से-कम 5-7 फीट नीचे होना चाहिए।

14.2.3 आमुख दिशा विन्यास (Orientation)

इसे अंग्रेजी में ओरिएन्टेषन(Orientation) कहते है जिसका अर्थ होता है-आकाश के पूर्वी भाग की स्थिति।इसे आमुख भी कहते है। मकान बनवाते समय आमुख/दिशा का ध्यान रखना बेहद आवश्यक है। इसके लिए मकान के मुख्य द्वार, खिड़की, दरवाजों आदि को सही दिशा में स्थित होना चाहिए। अच्छे दिशा विन्यास के लिए कमरों की स्थिति एवं व्यवस्था इस प्रकार से की जानी चाहिए ताकि प्रत्येक कमरें में उचित सूर्यप्रकाश, हवा,

वर्षा, धूप आदि प्राकृतिक सम्पदा प्रवेश पा सके तथा बाहरी दृश्य का आनन्द उठाया जा सके।

आर- एस- देशपांडे ने आमुख के सम्बन्ध में अपने विचार इस तरह व्यक्त किये है- उचित आमुख से आशय एक भवन के नक्षे को इस प्रकार निर्धारित करना अथवा मुख प्रदान करने से है जिसके द्वारा उसमें वास करने वाले लोगों को प्राकृतिक सम्पदा, यथा- सूर्य, हवा तथा वर्षा से जो कुछ उनके लिए अच्छा है उसका आनन्द उठा सके तथा जो अहितकर है उसे हटा सकें। प्रत्येक जगह पर भवन के आमुख की स्थिति एक जैसी नहीं होती बल्कि विभिन्न जलवायु एवं भौगोलिक परिस्थितियों में भिन्नता के कारण इनमें परिवर्तन हो जाता है।

उदाहरणार्थ- ठंडे प्रदेशों में दक्षिणमुखी मकान अधिक उपयुक्त होता है क्योंकि ऐसे आमुख से दिनभर अधिक सूर्य प्रकाश, धूप एवं गर्मी मिलती है। परन्तु गर्म प्रदेशों के लिए उत्तरमुखी मकान ज्यादा उपयुक्त होते है, क्योंकि इस दिशा में सूर्य की रोशनी, एवं धूप कम पहुँचता है। फलत: मकान ठंडक पहुँचाने वाले होते है। अत: आमुख स्थान के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।

1- भवन का प्रमुख द्वार दक्षिण या पश्चिम में होना चाहिए। भूमि जिस ओर ढालुआ हो उस दिशा में मकान का प्रमुख द्वार होना चाहिए।

2- दिन के समय काम में आने वाले कमरों को उत्तर-पूर्व की ओर रखना चाहिए।

3- शयनकक्ष को हवा बहने की दिशा में रखना चाहिए।

4- भोजन कक्ष दक्षिण-पूरब, अध्ययन कक्ष उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम दिशा में रखना उपयुक्त है।

5- बैठक कक्ष दक्षिण-पश्चिम दिशा में तथा रसोईघर उत्तर-पूरब दिशा में रखना चाहिए।

6- दक्षिण दिशा की दीवारों में छज्जा या सन-ब्रेकर बनाने से दिनभर की धूप से बचा जा सकता है।

14.2.4 मकान की बनावट (Structure of House)

एक उत्तम भवन निर्माण के लिए स्थान, भूमि एवं भूमि का चयन जितना महत्वपूर्ण है उससे कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है इसकी बनावट अर्थात् मकान की संरचना। उपर्युक्त स्थिति उपयुक्त एवं श्रेष्ट रहने पर भी यदि मकान की बनावट श्रेष्ट नहीं है तब सुन्दर, सुदृढ़, कलात्मक, उपयोगी, मजबूत एवं आकर्षक भवन नहीं बनवाया जा सकता है। एक आदर्श एवं उत्तम भवन बनवाने के लिए पहली आवश्यकता है- उसका नक्शा(Map) बनवाना। मकान का नक्शा किसी योग्य एवं कुशल इंजीनियर (आर्किटेक्ट) से बनवाना चाहिए। मकान का नक्षा परिवार की आवश्यकताओं, उपयोगिताओं, स्थानीय परिस्थितियाँ, जलवायु एवं आर्थिक स्थिति के अनुरूप होनी चाहिए। अत: मकान का नक्शा बनवाते समय परिवार की आवश्यकता, आकार, बनावट, व्यय की स्थिति तथा भूमि का क्षेत्रफल की जानकारी आर्किटेक्ट (Architect) को दी जानी चाहिए। इसके पश्चात तैयार नक्शों को मूर्तरूप प्रदान करने के लिए कुशल, व्यावहारिक एवं योग्य कारीगरों की जरूरत पड़ती है। साथ ही भवन निर्माण में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्रियों (Building Materials) की भी आवश्यकता पड़ती है। तब कहीं जाकर सुन्दर, सुदृढ़ एवं मजबूत भवन का निर्माण हो पाता है। शहरों में भवन निर्माण करते समय नगरपालिका द्वारा निर्धारित भवन निर्माण के नियमों की पालना किया जाना आवश्यक है। यद्यपि मकान का आकार, श्रेणी, कॉलोनी आदि के अनुसार इन नियमों में परिवर्तन होता रहता है। मकान का निर्माण करते समय निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए।

(i) भवन का बाहरी खुला स्थान (Exterior Open Space) - मकान में उचित संवातन एवं सूर्य प्रकाश की व्यवस्था बनाये रखने के लिए उसके चारों ओर कुछ खुला स्थान छोड़ना अत्यावश्यक है। इन नियमों की पालना नहीं करने पर नगरपालिका, यू-आई-टी- द्वारा भवन निर्माण की स्वीकृति नहीं मिलती है और यदि नक्षा बनवा भी लिया जाता है तो भवन निर्माता को उनके द्वारा निर्धारित दंड भी भुगतना पड़ता है। यदि भूखण्ड का क्षेत्रफल 40x60 (चौड़ाई x लम्बाई) हो तो मकान के सामने की तरफ 10-12 फीट तथा पीछे की तरफ 8-10 फीट जमीन छोड़ना चाहिए। यदि भूखण्ड कोर्नर पर हो तो तीन तरफ से जमीन छोड़ना आवश्यक हो जाता

है। यदि मकान मुख्य सड़क पर है तथा भूखण्ड का आकार बड़ा है तब मकान के आगे और खाली स्थान छोड़ना आवश्यक है। परन्तु यदि मकान गली में है तथा उसके सामने की सड़क की चौड़ाई कम है तब कम स्थान छोड़ने की जरूरत पड़ती है।

(ii) नींव (Foundation) - मकान की मजबूती एवं दृढ़ता के लिए आवश्यक है- चौड़ा एवं ठोस नींव का होना। सुदृढ़ नींव के बगैर एक आदर्श मकान की कल्पना नहीं की जा सकती है। अत: भवन निर्माण के लिए नींव की मजबूती आवश्यक है। कहा गया है- जैसा नींव होगा वैसा मकान बनेगा। अर्थात् नींव कमजोर होगा तो मकान भी कमजोर ही बनेगा। नींव की मजबूती पर ही मकान की मजबूती निर्भर करता है। लोहा, सीमेन्ट, कंक्रीट, पत्थर के टुकड़े से बनी नींव मजबूत होती है। नींव की गहराई एवं चौड़ाई कितनी होनी चाहिए इसके भी कुछ नियम बने होते है। कुछ लोगों को भ्रम है कि नींव की गहराई इसकी चौड़ाई से अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है परन्तु यह धारणा गलत है क्योंकि नींव की जितनी अधिक चौड़ाई होगी उतनी ही अधिक उसमें भार वहन करने की क्षमता होगी। यद्यपि नींव की गहराई एवं चौड़ाई मकान की ऊँचाई पर निर्भर करती है। परन्तु फिर भी दीवार खड़ी करने के लिए 4-5 गहरा एवं दीवार की चौड़ाई से 4-5 गुणा चौड़ा नींव की जरूरत पड़ती है। नींव का आधार सीमेन्ट, लोहा, कंक्रीट एवं पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े का बना होना चाहिए। मकान को सीलन से बचाने के लिए जल प्रतिकर्षण सीमेन्ट (Water Repelling Cement) अथवा सीमेन्ट के साथ जलसह यौगिक का उपयोग किया जाना चाहिए। ऐसा करने से पानी रिसकर नींव में नहीं जा सकेगा।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में बड़ी-बड़ी बहुमंजिली इमारतें एवं विशालकाय भवन निर्माण हेतु प्रबलित कंक्रीट स्थूणों (R-C-C- Piles) का उपयोग किया जाता है। इसमें प्रबलित कंक्रीट के मोटे-मोटे खूँटे भूमि की काफी गहराई तक विद्युत हथौड़े द्वारा ठोक दिये जाते है और फिर सभी स्थूणों को आपस में मोटे-मोटे प्रबलित कंक्रीट के धरनों द्वारा जमीन की सतह से जोड़ दिया जाता है। इसे तान धरन (Tie Beam) कहा जाता है। इसी तान धरन पर ईंट की दीवार खड़ी कर दी जाती है। स्थूणों की मोटाई,

संख्या एवं गहराई भवन की ऊँचाई पर निर्भर करता है। छत का भार भी इन्हीं स्थूणों पर पड़ता है। परन्तु इन प्रबलित कंक्रीट स्थूणों का निर्माण करना इतना सहज एवं आसान नहीं है। इसके लिए योग्य एवं कुशल इंजीनियरों एवं कारीगरों की जरूरत पड़ती है। किन्ही-किन्ही स्थानों में कुछ लोग भवन निर्माण में खम्भों का उपयोग किया जाता है। इसमें नींव बनाने की जरूरत नहीं पड़ती। खम्भों के निर्माण हेतु भूमि में 25-30 सेमी- तक के व्यास की गोलाई में 2-5 मीटर से 3-75 मीटर तक गहरा गड्ढा किया जाता है। इन गड्ढो में सीमेंन्ट, कंक्रीट एवं लोहे की मोटी-मोटी छड़, पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े भर दिये जातें है। फिर इन खम्भों को एक तान धरन (Tie Beam) से जमीन की सतह पर जोड़ दिया जाता है। कुछ खम्भों को छत की ऊँचाई तक पायें के रूप में भी रखा जाता है। इन्हीं खम्भों पर छत का भार टिका रहता है।

(iii) मंच (Plinth) - इसे कुर्सी भी कहा जाता है। भवन निर्माण करते समय मंच (Plinth) बनवाना बहुत जरूरी होता है ताकि वर्षा का जल मकान में प्रवेश नहीं करने पाये साथ ही मकान के अन्दर भी ढाल की उचित व्यवस्था की जा सके। मंच निर्माण से पूर्व मंच क्या होता है? इसकी जानकारी आवश्यक है। मंच उस ऊँचाई को कहा जाता है जहाँ पर भवन निर्माण/कमरों का निर्माण किया जाता है। इसकी ऊँचाई सड़क से कम-से-कम 4-5 फीट ऊँचा होना चाहिए क्योंकि समय के साथ सड़क भरती जाती है तथा कुछ वर्षों बाद सड़क एवं मकान के मंच की ऊँचाई एक सतह तक आ जाती है। इसलिए मंच ऊँचा रखना जरूरी है। मंच की ऊँचाई पर मकान की दृढ़ता एवं मजबूती के लिए मंच-बंधन (Plinth Band) बनाया जाता है जिसकी मोटाई 6 इंच एवं चौड़ाई 1 फीट होती है।

(iv) दीवारें (Walls) - मकान की दृढ़ता एवं मजबूती के लिए दीवारों का मजबूत रहना अत्यन्त आवश्यक है। दीवारों की मजबूती मकान को दृढ़ता प्रदान करती है। सामान्यत: दीवारें ईंट, पत्थर, बालू व सीमेंन्ट के बनाये जाते है। ईंट एवं पत्थर से बनी दीवार अत्यधिक दृढ़ एवं मजबूत होते है।

दीवारें दो प्रकार की होती है-

1- बाहरी दीवार या भार झेलने वाली दीवार (Outer Wall or Load Bearing Wall) - भार झेलने वाली दीवारों की चौड़ाई अधिक होती है। इनकी मोटाई 1 फुट से थोड़ी अधिक होती है। इन्ही दीवरों पर छत का वजन डाला जाता है। सामान्य तौर पर 9 इंच या 1 फुट की दीवारें ही ठीक होती है।

2- अन्दर की दीवार या पार्टीशन दीवार (Inner Wall or Partition Wall) - ये दीवारें अन्दर की तरफ होती है इन्हे पर्दे की दीवार (Partition Wall) भी कहा जाता है। इनकी मोटाई 5-6 इंच होती है। इस दीवार पर छत का भार नहीं डाला है बल्कि यह स्थान विभाजन का काम करती है तथा एक कमरे को दूसरे कमरे से अलग करती है। बहुमंजिली इमारतों के निर्माण हेतु, जहाँ सीमेंन्ट, कंक्रीट, स्थूणों का उपयोग किया जाता है वहाँ बाहरी दीवारों की मोटाई 25 सेमी- ही रखी जाती है तथा भीतरी दीवारों की मोटाई 12-5 सेमी- तक रखी जाती है। ऐसा करने से पूरा मकान का भार कम हो जाता है। यदि दो मंजिल या तीन मंजिल भवन बनवाना हो तब पहली मंजिल की दीवार दूसरी मंजिल की अपेक्षा चौड़ी होनी चाहिए। क्योंकि इन दीवारों पर दूसरी एवं तीसरी मंजिल का वजन पड़ता है। सामान्यत: दीवारें ईंट, पत्थर के बनाये जाते है। इन्हे जोड़ने के लिए बालू, सीमेन्ट, खड्डी या चूने का प्रयोग किया जाता है। अर्थाभाव की स्थिति में ईंटों को जोड़ने के लिए मिट्टी के गारे का प्रयोग किया जाता है। परन्तु ऐसी दीवार कम मजबूत होती है तथा उनमें दीमक लगने की भी सम्भावना होती है। दीवारों के ऊपर सीमेंन्ट का प्लास्टर किया जाता है जिससे मजबूती के साथ-साथ सुन्दरता भी बढ़ जाती है। इसके ऊपर फिर पुताई, रंग, पेन्ट आदि किया जाता है। भवन निर्माण हेतु ईटों का चयन सोच-समझकर करना चाहिए। सभी ईंटें एक समान आकार एवं मोटाई की होनी चाहिए। अलग आकार एवं आकृति की ईंट लगाने से मकान की मजबूती, सुन्दरता, आकर्षण एवं कलात्मक प्रभावित होती है जिसके कारण मकान भद्दा एवं अनाकर्षक दिखता है।

(v) छत (Roof) - एक सुन्दर, कलात्मक, आकर्षक एवं आदर्श मकान के निर्माण में छत का महत्वपूर्ण स्थान होता है। दीवार की जितनी ऊँचाई

होती है उतनी ही ऊँचाई छत की होती है। ऊँची छत स्वास्थ्य, सुन्दरता एवं आरामदायिकता की दृष्टि से उत्तम होती है। ऊँची छतें कमरों को ग्रीश्मकालीन में आग उगलती धूप से बचाती है तथा ठंडक प्रदान करती है। साथ ही हवा के आवागमन एवं पर्याप्त प्रकाश के लिए भी उचित स्थान प्रदान करती है। परन्तु यदि कमरें में वातानुकूलन (Air Conditioner) लगवाना है तो छत की ऊँचाई कम रखनी चाहिए।

सामान्यत: छत चपटी एवं सपाट होती है क्योंकि इन्हीं के ऊपर दूसरी मंजिल बनानी पड़ती है। सपाट एवं समतल छत देखने में सुन्दर एवं आकर्षक लगती है। छत ढलावदार एवं विशेष आकार की भी बनायीं जाती है परन्तु यदि दूसरी मंजिल बनानी हो तो छतें चपटी एवं सपाट ही बनायीं जाती है। छत लकड़ी, घास-फूँस, गर्डर, टिन, एस्बेस्ट्स शीट, खपटा, मंगलोरी ईंट, सीमेंन्ट व कंक्रीट आदि से बनायीं जाती है। पत्थर की बड़ी-बड़ी सीलें भी डालकर छत बनायीं जाती है। घास-फूँस, खपड़ा एवं लकड़ी की छत कमजोर होती है। टिन, गर्डर, एस्बेस्ट्स शीट की बनी छतें भी मजबूत होती है। परन्तु टिन की छत गर्मी एवं सर्दी दोनों ही मौसम के लिए अनुपयुक्त होती है क्योंकि सर्दी में ये अधिक ठंडी एवं गर्मी में अधिक गर्म हो जाती है। तेज आँधी में इनके उड़ने की भी सम्भावना रहती है। गाँवों में मिट्टी एवं गोबर से लीपकर भी कच्ची छत बनायीं जाती है। बाँस, घास-फूँस, लकड़ी, खपड़ा आदि से बनी छतों का मरम्म्त प्रतिवर्ष करना जरूरी हो जाता है। अत: यह खर्चीला एवं व्यय साध्य है। साथ ही इनमें आग लगने का भी भय बना रहता है तथा साँप, चूहे, छछून्दर एवं अन्य कीड़े-मकोड़े भी उसमें अपना घर बना लेते है। ईंट से बनी छत, ठंडक प्रदान करती है। सीमेंन्ट एवं कंक्रीट की छतें सबसे अच्छी मानी जाती है। वर्तमान समय में इन्हीं का सबसे अधिक प्रयोग किया जाता है। छत चाहे जिस किसी भी चीज की बनी हो इसमें थोड़ा ढलान होना जरूरी है ताकि वर्षा का पानी बहकर नाली के द्वारा निकल जाए। परन्तु सीमेंन्ट, कंक्रीट से बनी छतों वाले कमरों में अधिक गर्मी रहती है। अत: ऐसी छतों में ऊष्मा पृथग्न्यासन (Heat Insulator) लगा देनी चाहिए। ऐसा करने से गर्मी में छत ठंडी एवं सर्दी में गर्म रहती है। आजकल ऊष्मा पृथग्न्यासन (Heat Insulator) टाइल्स (Tiles) का भी उपयोग किया जाने लगा है।

थर्माकोल, थर्मोफ्रीज आदि का उपयोग ऊष्मा पृथग्न्यासन में किया जाता है। छत के चारों ओर कम-से-कम 2-5 से 3 फीट ऊँची दीवार अवश्य बनानी चाहिए। इससे मकान की एकान्तता (Privacy) नष्ट नहीं होती है साथ ही, किसी व्यक्ति के नीचे गिरने का भय भी नहीं रहता है।

(vi) फर्श (Floor) - छत बनाने के बाद मकान में महत्वपूर्ण कार्य होता है- फर्श का निर्माण करना। फर्श इस तरह से बनायीं जानी चाहिए जो देखने में सुन्दर, आकर्षक, जीवन्त लुभावनी, मनमोहक एवं सौन्दर्य बिखरने वाली तो होनी ही चाहिए। साथ ही इनकी साफ सफाई करना भी सहज एवं आसान हो। फर्श के जोड़ भी अच्छे होने चाहिए ताकि उनमें गन्दगी जमा नहीं होने पायें। फर्श मजबूत एवं सीलन अवरोधक होनी चाहिए। फर्श बनाने से पूर्व मंच के ऊपर गर्डर का जाल बिछाकर सीमेंन्ट, कंक्रीट से भर देने से पर्याप्त मजबूती रहती है तथा सीलन भी नहीं रहती। फर्श संगमरमर, सीमेंन्ट, ईंट, टाइल्स, पत्थर (कोटा स्टोन, चितौड़ के स्टोन) आदि की बनायी जाती है। ईंट या सीमेंन्ट का फर्श जल्दी खराब हो जाता है। गाँवों में फर्श मिट्टी एवं गोबर से लीपकर बनायीं जाती है। संगमरमर से बना फर्श मँहगा होता है तथा काफी समय तक खराब नहीं होता है। फर्श चाहे जिस किसी भी चीज की बनी हुई हो परन्तु इसका उचित ढलान बाहर की तरफ होना चाहिए ताकि बरसात का पानी अथवा गंदा पानी नाली के माध्यम से बाहर निकल जाए। फर्श एंसी वस्तुओं की बनी होनी चाहिए जिसमें जल प्रतिकर्शक (Water Repellent) का विलक्षण गुण मौजूद हों। अगर मकान के मंच की ऊँचाई काफी अधिक है तब फर्श पर मिट्टी बैठ जाने के उपरान्त ही बनवाया जाना चाहिए अन्यथा मिट्टी के नीचे बैठ जाने से फर्श के नीचे धँसने एवं दरारें पड़ने की सम्भावना प्रबल हो जाती है।

(vii) सीढ़ी (Stairs) - छत पर चढ़ने एवं एक मंजिल से दूसरी, तीसरी, चौथी आदि मंजिल तक जाने के लिए सीढ़ियों की आवश्यकता पड़ती है। सीढ़ी का निर्माण भवन के मध्य भाग में करना चाहिए ताकि सीढ़ी में उचित संवातन बना रहे एवं कमरों की एकान्तता नष्ट नहीं होने पायें। यदि ऊपर की मंजिल (प्रथम मंजिल) किराये पर देनी है तो तब सीढ़ी बाहर से

बनवानी चाहिए जिससे घर के अन्दर किसी तरह की कोई बाधा उत्पन्न नहीं हो और न ही एकान्तता पर कोई प्रतिकूल प्रभाव ही पड़ें। सीढ़ी इस तरह से बनायी जानी चाहिए ताकि चढ़ने पर थकान अनुभव नहीं हो। अत: सीढ़ियाँ चौड़ी होनी चाहिए तथा पेड़ी (Steps) की ऊँचाई अधिक नहीं होनी चाहिए। ढालुआ सीढ़ी खड़ी सीढ़ी से अधिक आरामदायक एवं सुरक्षाप्रद होती है। सामान्यत: सीढ़ी की ऊँचाई एवं चौड़ाई में 1:2 का अनुपात होना चाहिए। यदि सीढ़ी की ऊँचाई 15 सेमी- हो तो चौड़ाई 30 सेमी- होनी चाहिए। इससे कम होने पर चढ़ने-उतरने में असुविधा होती है। एक फ्लाइट (चढ़ाव) पर अधिक से अधिक 12 सीढ़ी और कम से कम 3 सीढ़ी का सोपान होना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो घुमावदार सीढ़ी का उपयोग घरों में नहीं किया जाना चाहिए। ये सीढ़ियाँ खतरनाक एवं अधिक खर्चीली होती है। सीढ़ी पर चढ़ने के लिए उसके दोनो ओर जाली या पटरी लगाने की जरूरत होती है। ऐसा करने से चढ़ने-उतरने में असुविधा नहीं रहती। साथ ही लुढ़ककर नीचे गिरने का भय नहीं रहता है। यदि छत काफी ऊँची हो तो बीच में एक चौकी (Landing) अवश्य देनी चाहिए।

(viii) दरवाजे एवं खिड़कियाँ (Doors and Windows) - मकान में उचित संवातन (Proper Ventilation) एवं रोशनी के लिए दरवाजे एवं खिड़कियों की सही स्थिति में रहना नितान्त आवश्यक है। उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए भवन में सूर्य प्रकाश, धूप एवं शुद्ध हवा का आवागमन जरूरी है। मकान में शुद्ध, ताजी एवं शीतल हवा का आवागमन होता रहे इसके लिए खिड़कियों एवं दरवाजों की स्थिति इस प्रकार होनी चाहिए जो हवा बहने की दिशा में खुलते हो। यदि भवन में पर्याप्त धूप, रोशनी एवं हवा नहीं मिलती है, कमरें अंधेरे एवं सीलनयुक्त हैं तो उसमें वास करने वाले लोगों को कई तरह की बीमारियाँ घेर लेती है। ऐसे मकानों में कीड़े-मकोड़े, दीमक, छिपकिलियाँ, तिलचिट्टे आदि अपना डेरा डाल लेते है तथा भोजन, पानी एवं हवा को दूषित करते रहते है। परिणामत: व्यक्ति रोगग्रस्त हो जाता है। इसलिए भवन में शुद्ध, ताजी, शीतल एवं स्वच्छ वायु का आगमन अत्यन्त आवश्यक है। चौखट एवं दरवाजे सदैव अच्छी एवं मजबूत लकड़ी के लगवाने चाहिए जिसमें दीमक नहीं लगती है।

यद्यपि आजकल लोहे के दरवाजे एवं खिड़कियाँ भी बनने लगती है परन्तु इन्हे खोलते व लगाते समय इनसे कर्कष ध्वनि निकलती है जो सुनने वाले में खिन्नता उत्पन्न करती है। कच्ची लकड़ी के दरवाजे वर्षा ऋतु में ऐंठ जाते है। इस कारण खोलने एवं लगाने में काफी तकलीफ होता है। दरवाजे काफी मजबूत होने चाहिए। इन्हे लगाने एवं खोलने में परेषानी नहीं हो इसका ध्यान रखना चाहिए। ये ठीक प्रकार से बन्द हों एवं खुलते हों ताकि मकान में रहने वाले लोग अपने आपको सुरक्षित कर सकें। दरवाजे एवं खिड़कियों को बनाने से पूर्व काफी सोच-विचार कर लेना चाहिए। योग्य एवं अनुभवी व्यक्ति की राय लेनी चाहिए क्योंकि इसकी स्थिति से संवातन के साथ ही कमरे की एकान्तता एवं जगी भी प्रभावित होती है। यदि दरवाजे लम्बी दीवार के मध्य में बनायेंज जाए तब कमरें में स्थानाभाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसलिउ यह जरूरी है कि दरवाजे को लम्बी दीवार के एक तरफ लगवाया जाए। दरवाजे में किवाड़ एक पल्ला (पाट) के हों या दो पल्ला के, इस पर भी विचार कर लेना चाहिए। एक पल्ला के दरवाजे लगाने से एकान्तता बनी रहती है। स्नान घर में लगे हुए दरवाजो में स्टील की चादर लगवा देनी चाहिए क्योंकि यहाँ पानी का अधिक प्रयोग होता है जिसके कारण दरवाजे को सड़कर व्यर्थ होने का भय रहता है। मकान के बाहर की ओर खुलने वाले दरवाजे एवं खिडकियों में जाली (Net) या अपारदर्शी काँच लगानी चाहिए। ऐसा करने से मक्खी, मच्छर, फतींगे एवं अन्य कीड़े-मकोड़े मकान में प्रवेश नहीं कर पाते है तथा बाहर से आने-जाने वाले लोगों को अन्दर के दृश्य एवं क्रियाकलापें दिखलाई नहीं पड़ती। यदि मकान में वातानुकूलन (A.C.) का उपयोग किया जाना है तब कमरे की छत की ऊँचाई कम-से-कम 7 फीट अवश्य होनी चाहिए।

14.2.5 समुचित संवातन

एक उत्तम एवं आदर्श मकान में धूप, सूर्य प्रकाश, शुद्ध वायु का आगमन एवं उचित संवातन अत्यावश्यक है। उचित संवातन एक आदर्श मकान का हृदय है। यदि संवातन की उचित व्यवस्था नहीं होगी तो मकान में तरह-तरह के कीड़े-मकोड़े एवं सुक्ष्मजीव अपना डेरा डाल लेंगे और उसमें रहने

वाले लोगो को बीमार करके उनकी जिन्दगी तबाह् कर देंगे। अत: मकान में शुद्ध वायु के आवागमन का प्रबन्ध बेहद जरूरी हैं। शुद्ध वायु, धूप एवं सूर्य प्रकाश का मानव जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। शुद्ध वायु मनुष्य की पहली मूलभूत आवश्यक आवश्यकता है। मानव का जीवन का आधार ही शुद्ध वायु का सेवन है। हम सभी साँस के रूप में ऑक्सीजन (O_2) को लेते है तथा कार्बन डाइ ऑक्साइड (CO_2) गैस को छोड़ते है। CO_2 गैस मनुष्य के लिए अवांछित एवं जहरीली गैस है जिसका स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यदि मकान में CO_2 गैस के निकलने एवं ऑक्सीजन (O_2) गैस के प्रवेश पाने की पूरी एवं समुचित व्यवस्था नहीं होती है तथा CO_2 गैस मकान से नहीं निकल पाता है तथा O_2 गैस से मिल जाता है। इतना ही नहीं CO_2 कमरे में उपस्थित जलवाष्प, धूलकण एवं रोगाणुओं के साथ मिलकर मकान के सम्पूर्ण वायु को प्रदूषित कर देते है। ऐसे प्रदूषित वायु में साँस लेने से शरीर में कई तरह की बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती है। फलत: व्यक्ति सर्दी, जुकाम, क्षयरोग (T.B.), अस्थमा, सिर दर्द, “वसन सम्बन्धी रोग एवं अन्य संक्रामक रोगों का शिकार हो जाता है तथा नरकमय जीवन जीने लगता है। अत: कमरे में उचित संवातन हेतु रोशनदान एवं खिड़कियों की व्यवस्था आवश्यक रूप से की जानी चाहिए। जैसा कि हम सभी को ज्ञात है, दूषित वायु, गर्म एवं हल्की होती है। गर्म एवं हल्की वायु ऊपर की ओर उठती है तथा शुद्ध वायु अगल-बगल एवं नीचे की तरफ से कमरे में प्रवेश करती है। अशुद्ध वायु के निकलने पर शुद्ध वायु कमरों में भर जाती है। यदि मकान में उचित संवातन की व्यवस्था रहती है तब इन दोनों गैसों (ऑक्सीजन एवं कार्बन डाइ ऑक्साइड) का प्रवाह उत्तम बना रहता है तथा दूषित गैस CO_2 निकलती रहती है एवं O_2 अन्दर आती रहती है। इसलिए भवन निर्माण करते समय प्रत्येक कमरे में आमने-सामने अर्थात् एक-दूसरे के विपरीत दिशा में दरवाजे, खिड़कियाँ एवं रोशनदान का निर्माण करना चाहिए। रोशनदान छत के पास या निकास द्वार (Outer) के पास होना चाहिए। साथ ही इनमें ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए ताकि आवश्यकतानुसार इन्हें जब चाहें तब खोला व बन्द किया जा सकता है।

मकान में उचित संवातन व्यवस्था के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना आवश्यक है-

(i) शयन कक्ष की खिड़कियाँ, रोशनदान भवन से बाहर की ओर खुलना चाहिए।

(ii) भवन में पर्याप्त संख्या में खिड़की, रोशनदान एवं दरवाजे की व्यवस्था होनी चाहिए।

(iii) रसोईघर में चिमनी लगी होनी चाहिए तथा रोशनदान बाहर की ओर खुलना चाहिए। सम्भव हो तो एक्जॉस्ट पंखे (Exaust Fan) की व्यवस्था की जानी चाहिए।

रसोईधर में चिमनी लगी होने से धुँआ, धूल एवं दूषित गैस बाहर निकल जाता है। ठंडे प्रदेशों में जहाँ लकड़ी, कंडी या कोयला जलाकर कमरें को गर्म किया जाता है वहाँ चिमनी अवश्य लगवानी चाहिए।

(iv) स्नानागारों (Bathrooms) का रोशनदान भी ऊपर एवं बाहर की ओर खुलनी चाहिए ताकि रोशनी एवं शुद्ध वायु का संचार होता रहे व गोपनीयता (Privacy) भी भंग नहीं होने पाये।

(v) उचित वायु आवागमन के लिए भवन में कम-से-कम दो ओर खुला स्थान होना चाहिए। यदि चारों ओर खुला स्थान हो तो अति उत्तम है।

14.2.6 पानी की व्यवस्था (Arrangement of Water)

भवन निर्माण में जल का महत्वपूर्ण स्थान है। यह मनुष्य की मूलभूत आवश्यक आवश्यकता है। भोजन के बिना तो कुछ दिनों तक जिन्दा रहा जा सकता है परन्तु जल के बिना जीवन जीना सम्भव नहीं। अत: भवन निर्माण करने से पूर्व यह देख लेना चाहिए कि पानी की व्यवस्था है या नहीं। पानी के अभाव में भवन निर्माण कार्य असम्भव है। यदि सार्वजनिक पानी पूर्ति की व्यवस्था है तब तो बहुत ही अच्छा। मगर यदि सार्वजनिक पानी की पूर्ति की व्यवस्था नहीं है तब कुआँ, हैण्डपम्प अथवा अन्य व्यवस्था की जानी आवश्यक है। शहरों में जलापूर्ति (Water Supply) नल से की जाती है। नल का पानी स्वच्छ एवं साफ रहता है। इसमें जल

दूषण की सम्भावनाएँ नगण्य होती है क्योंकि पानी को शुद्ध एवं स्वच्छ करके ही आपूर्ति की जाती है। परन्तु गाँवों में आज भी कुएँ, तालाब या नदी के जल का प्रयोग घरेलू कार्यों में किया जाता है। किन्हीं-किन्हीं स्थानों में तो नदी एवं तालाब का जल भोजन बनाने एवं पीने में भी किया जाता है। यह जल अशुद्ध एवं प्रदूषित होता है जो स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। गहरे कुओं का जल शुद्ध, शीतल एवं स्वच्छ होता है।

14.2.7 विद्युत व्यवस्था (Arrangement of Electricity)

आज के आधुनिक वैज्ञानिक युग में घर के अनेक कार्य विद्युत उपकरणों की सहायता से किये जाते है, जैसे- मसाला पीसना, दाल पीसना, वस्त्र धोना, मक्खन निकालना, झाड़ू पोंछा देना, खाना पकाना, भोजन को दीर्घकाल एक सुरक्षित रूप से सरंक्षित करके रखना आदि। अत: बिजली व्यवस्था आज के मानव की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। इससे समय, शक्ति एवं धन की बचत तो होती है साथ ही काम अत्यन्त ही सुगमता, सहजता एवं सरलता से सम्पन्न हो जाता है। काम करते समय तनाव उत्पन्न नहीं होता और न ही थकान का ही अनुभव होता है। विद्युत उपकरणों से काम करने में आनन्द भी आता है। अत: भवन निर्माण करने से पहले यह देख लेना चाहिए कि जहाँ पर भवन बनावाया जा रहा है वहाँ विद्युत आपूर्ति की वयवस्था है या नहीं। यदि नहीं तो भविश्य में विद्युत आपूर्ति की क्या व्यवस्था हो सकती है।

घरेलू उपयोग में आने वाले अनेक उपकरण है जो विद्युत से चलते है, उदाहरणार्थ- फ्रीज, पंखा, कूलर, हीटर, वैक्यूम क्लीनर, मिक्सर, ज्यूसर एवं ग्राइंडर, टोस्टर, माइक्रोवेव ओवन आदि। रात्रि में रोशनी एवं गर्मी में ठंडक प्रदान करने के लिए बल्ब, ट्यूब लाइट, पंखा, कूलर, वातानुकूलन आदि का उपयोग किया जाता है। अत: मकान में बिजली व्यवस्था उचित ढंग से की जानी चाहिए।

14.2.8 मल-मूत्र एवं गंदे जल का निष्काशन (Sanitation Facility)

भवन निर्माण करते समय मलमूत्र, गंदे जल, वर्षा का जल की निकास व्यवस्था को भी ध्यान में रखना नितान्त आवश्यक है। मलमूत्र एवं गंदे जल का निष्काशन नहीं होने से इनसे दुर्गन्धपूर्ण एवं बदबूदार गैंसें निकलने लगती है और वे घर में ही जलने लगती है। मकान में सीलन भी रहने लगता है। इतना ही नहीं, इनसे मक्खी, मच्छर, चींटियाँ आदि भी पनपते है जो मकान को गंदा करते ही है साथ ही सम्पूर्ण मकान के वातावरण को प्रदूषित कर देते है। ऐसे गंदे एवं प्रदूषण युक्त मकान में रहने से परिवार के सदस्य बीमार रहने लग जाते है। अत: गृह योजना बनाते समय मल-मूत्र एवं गंदे जल के निकास की पूरी व्यवस्था की जानी चाहिए। गंदे जल के निकास के लिए आवश्यक नालियों की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए। नालियाँ पक्की एवं ढलावदार होनी चाहिए। नालियों का निकास घर से दूर किसी गड्ढे में होना चाहिए या उससे शहर के बड़े नालों के साथ सम्बन्धित होना चाहिए। यदि नालियों के जल के निष्काशन की भूमिगत (Underground) व्यवस्था है तो बहुत ही अच्छा है। मलमूत्र के निष्काशन के लिए शौचालय एंव मलमूत्र की उचित व्यवस्था करना अत्यावश्यक है। अन्यथा इनसे दूषित गैंसों का निर्माण होने लगेगा जो पूरे मकान में प्रदूषण फैलाएगा तथा स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा। अत: फ्लष विधि का शौचालय स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा है। इनसे गंदगी कम होती है। यदि मल विसर्जन के लिए नगरपालिका अथवा स्थानिक निकास की तरफ से पक्के सीवरेज लाइन की व्यवस्था है तो उसका प्रयोग किया जाना चाहिए। परम्परागत शौचालयों का प्रयोग पूर्णत: निशुद्ध समझना चाहिए क्योंकि इनसे घर में गंदगी का ही साम्राज्य फैलता है। गंदगी न केवल मलमूत्र एवं गंदे पानी से ही फैलती है बल्कि घरेलू कूड़े-करकट एवं कचरे भी इन्हे फैलाने में अह्म भूमिका निभाते है। अत: घरेलू कूड़े-करकट को ढक्कनदार कूड़ेदान में ढककर रखना चाहिए ताकि इन पर मक्खी, मच्छर नहीं बैठने पाये। कूड़ेदान को प्रतिदिन साफ किया जाना चाहिए तथा कूड़े को घर से दूर ऐसे स्थान पर फेंकना चाहिए जिससे कि आस-पास का वातावरण प्रदूषित नहीं होने पाये।

14.3 सारांश

घर का निर्माण करने से पूर्व इसकी रुपरेखा, नक्शा और एक निश्चित योजना बनानी होती है। योजनाबद्ध ढंग से निर्मित किया घर परिवार की समस्त आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति करता है इस इकाई में गृह निर्माण की योजना के विभिन्न पदों जैसे स्थान का चयन, भूमि का चयन, आमुख दिशा विन्यास, मकान की बनावट, समुचित संवातन, पानी की व्यवस्था, विद्युत व्यवस्था और मूलमंत्र निष्कासन का वर्णन किया गया है।

14.4 प्रश्न

1. गृह निर्माण में आमुखिकर्ण का अर्थ समझिए
2. गृह निर्माण में किन किन वस्तुओ की आवश्यकता होती है
3. गृह निर्माण में भूमि का चुनाव कैसे करेंगे

14.5 संदर्भ ग्रन्थ

1. बी.के. बख्शी गृह व्यवस्था है गृह सज्जा साहित्य प्रकाशन आगरा
2. डा. वृंदा सिंह गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा पंचशील प्रकाशन जयपुर
3. डा. रीना खनुजा गृह प्रबंध साधन व्यवस्था विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा एवं आन्तिरक सौजन्य
4- Gross Irma H & Cradall E.M Publisher Pvt. Ltd. Delhi "Managment for Morden Families Sterling"
5- Nickel Dorsey M & Sons New york "Managment in Family

इकाई-15

सजावट एवं सफाई

15.0 उद्देश्य (Objectives)
15.1 प्रस्तावना (Introduction)
❖ फर्श सजावट (Floor Decoration)
❖ रंगोली (Rangoli)
❖ अल्पना (Alpana)
15.2 मिट्टी के बर्तनों की सजावट (pottery Decoration)
15.3` दीवार की सजावट (Wall Decoration)
15.4 सफाई एवं चमकाना (Cleaning and Polishing)
❖ धातु (Metals)
❖ काँच (Glass)
❖ प्लास्टिक (Plastic)
❖ चमड़ा (Leather)
❖ लकड़ी (Wood)
15.5 सारांश (Summary)
15.6 स्वमूल्यांकन प्रश्न (Slef Evaluation Questions)
15.7 संदर्भ सूची (References)

15.0 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययनोंपरांत विद्यार्थी

- फर्श सजावट के बारे में विस्तार से जान सकेगें।
- मिट्टी के बर्तनों व दीवार की सजावट का भी गहन अध्ययन कर सकेगें।
- विभिन्न वस्तुओं के रख रखाव के बारे में सटीक जानकारी जुटा सकेगें।

15.1 प्रस्तावना (Introduction)

गृह सज्जा में विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर कार्य करना होता है। गृह सज्जा का अर्थ सिर्फ घर की सजावट करने से नहीं है। घर में काम आने वाली विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की साफ-सफाई, देखभाल और उन चीजों का अधिकतम उपयोग किस प्रकार किया जा सके, यह सब हम गृह प्रबन्ध या गृह सज्जा में सीखते हैं। काँच के बर्तनों को, चाँदी के बर्तनों की तरह नहीं रखा जा सकता। चमड़ें से बनी चीजों को हम लकड़ी की तरह नहीं काम में ले सकते। हर प्रकार की वस्तु का रखरखाव का तरीका अलग है।

15.2 फर्श सजावट(Floor Decoration)

भारत देश में फर्श सजावट का बड़ा ही महत्व है। भारत में हर किसी उत्सव के लिए हर प्रदेश में खास तरीके से फर्श को सजाकर खुशी का इज़हार किया जाता है। फर्श सजावट के लिए विभिन्न चीजों का प्रयोग होता है जैसे- सुन्दर टाइल्स या मार्बल, दरी, रंग या कारपेट। इन स्थायी सजावट के अलावा गृहिणी अपने हाथों का कौशल दिखाते हुए विभिन्न प्रकार के रंगोली व माण्डना बनाकर फर्श को सजाती है।

रंगोली- यह एक हिन्दू लोक कला का प्रकार है जिसे आंगन में किसी त्यौहार के लिए बनाया जाता है रंगोली के भारत में कई नाम है- दक्षिण भारत में कोलम, उत्तर भारत में चौक पूरना, राजस्थान में माण्डना, बिहार में अरिपना, बंगाल में अल्पना। रंगोली के लिए मुख्य रूप से चावल का आटा, रंग व फूलों का प्रयोग होता है।

'रंगोली' एक संस्कृत शब्द है जिसका मतलब है रंगों के माध्यम से कलात्मक अभिव्यक्ति। रंगोली को घरों के मुख्य द्वार व आंगन में बनाया जाता है। रंगोली का उद्देश्य है आंगतुकों का सहृदयता से स्वागत करना।

रंगोली एक त्रि-कोणीय, द्वि-कोणीय या प्लेन सुन्दर डिजाइन के रूप में बनाई जाती है। रंगोली बनाकर हम कई उत्सव भी मनाते हैं जैसे- जन्मोत्सव, विवाहोत्सव व त्यौहार।

भारत में कई प्रदेशों में प्रतिदिन रंगोली बनाने का रिवाज है। और रंगोली पर दिए रखकर भी उसे और अधिक सजाया जा सकता है। रंगोली के लिए निम्न निर्देशों की पालना की जानी चाहिए-

रंगोली के चरण-

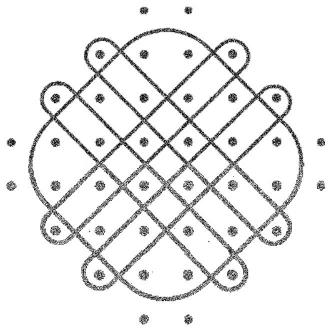
रंगोली-1

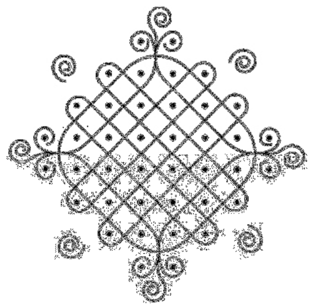
रंगोली-2

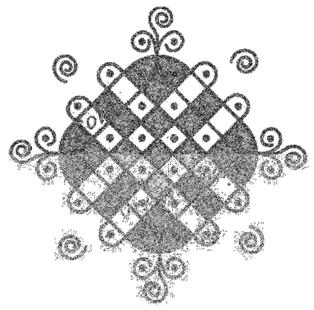
रंगोली-3

1. पंसद की डिजाइन चुन लें (मैग्जीन या किताब से या खुद ही बना लें)।
2. रंगोली की डिजाइन ज्यामितीय होती है व एक सी होनी चाहिए।
3. अगर आप पहली बार रंगोली बना रहे हैं तो एक कागज पर बनाकर रंग भरकर देख लें।
4. रंगोली बनाने के लिए सर्वप्रथम आंगन को गीले कपड़े से साफ कर सुखने दें।
5. चॉक व डोरी की सहायता से पहले रंगोली की बाह्य रेखाएं बना लें।
6. अब आप अंगूठे व तर्जनी अंगुली की सहायता से चुटकी बनाकर रंग को आंगन पर बने रेखीय चित्र में भरना शुरू करे रंग को सावधानी पूर्वक डालें एक रंग को दूसरे पर ना डाले।
7. रंग भरने की प्रक्रिया भीतर से बाहर की ओर अपनाएँ।
8. आप चावल व दाल को भी रंगों की जगह काम ले सकते हैं। इनके अलावा आप गुलाल, कुमकुम और पोस्टर रंग भी प्रयोग कर सकते है।
9. आप रंगोली पर दिए रखने के लिए भी जगह बना सकते हैं। और अपनी डिजाइन में सुन्दरता और उभार के लिए आप गैंदे, गुलाब आदि फूल की पंखुडियाँ प्रयोग ले सकते है।
10. धैर्य और बौद्धिक कौशल से आप एक साँचा बनाकर भी रंगोली बना सकते हैं।
11. रंगों के स्थान पर आप गुलाल, कुमकुम, हल्दी, मेहन्दी फूलों की पखुंडियाँ, मोम के रंग, पोस्टर रंग, चावल का आटा, रंगीन बुरादा (लकड़ी का), दालें, अनाज आदि प्रयोग कर सकते हैं।

12. रंगोली की डिजाइन आपकी जगह के अनुसार चयन की जानी चाहिए जैसे दीवार के सहारे चलने वाली किनारी, मुख्य द्वार के लिए, कोनों के लिए व पूजा स्थल के लिए।

13. सिर्फ फूलों का इस्तेमाल कर हम फूलों की रंगोली बना सकते है जो कि अत्यन्त आकर्षक होती है।

14. त्यौहारों पर जैसे दिवाली पर हम रंगोली द्वारा स्वस्तिक, कमल, पदचिन्ह, शंख आदि डिजाइन बना सकते हैं।

15. हम थाली पर तेल लगाकर उस पर रंग छिड़क कर भी रंगोली बना सकते हैं। थाली पर सबसे पहले तेल लगा लें फिर छलनी की सहायता से उस पर एक सार रंग बिछा दें, फिर अंगुलियों की सहायता से उस पर डिजाइन बनाएं व उस पर दीपक रखें ।

अल्पना- अल्पना या अल्पोना बंगाल की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। यह बंगाल की लोक कला का बेहतरीन नमूना है। अल्पना संस्कृत शब्द "अलिम्पना" से लिया गया है जिसका अर्थ है 'लीपना'। इसे पूजा, विवाह आदि अवसरों पर बनाया जाता है।

अल्पना के लिए सिर्फ चावल का घोल ही प्रयोग लिया जाता है। इसके अलावा पेड की पत्तियों से हरा व सिन्दूर से लाल रंग लिया जाता है।

आजकल अल्पना में वस्त्र रंगों व गोंद के प्रयोग से रंग व चमक लगाई जाती है। घरों में गृहिणियों मौसम व त्यौहार के अनुसार अल्पना की डिजाइन बदलती रहती हैं। मुख्य रूप से अल्पना में गोल, सूर्य, स्वास्तिक, सुपारी, मछली, सर्प आदि डिजाइन प्रयुक्त होते हैं। बेल-बूटे व पेड़-पत्तियाँ आदि भी बनाए जाते हैं।

अल्पना एक रेखीय चित्र की तरह ही होती है इसमें पूरा रंग नहीं भरा जाता। भूरे-लाल आंगन पर सफेद रंग से बनाई जाती है।

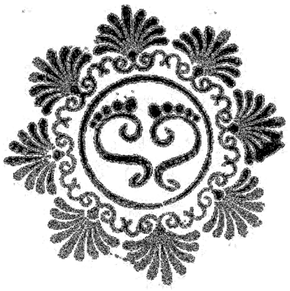 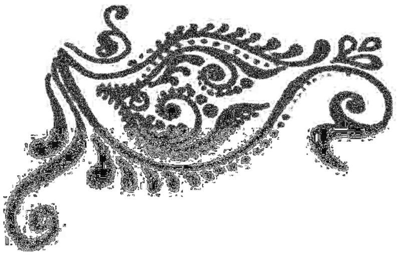

अल्पना की डिजाइन

15.3 मिट्टी के बर्तनों की सजावट(Pottery Decoration)

मिट्टी के बर्तन भारत की संस्कृति में अपनी एक अलग पहचान रखते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन, मिट्टी के बर्तनों पर काफी हद तक निर्भर हैं क्योंकि यह कम कीमत के, आसानी से मिलने वाले और कम रख-रखाव माँगने वाले बर्तन हैं।

आधुनिक समय में शहरों में मिट्टी के बर्तन केवल गृह सज्जा के काम ही आते हैं। मिट्टी के बर्तन बहुत ही नाजुक होते हैं उनहें सजाने के लिए भी हमें जरूरी ऐतिहात बरतने होंगे।

मिट्टी के बर्तनों को हम फूलदान के रूप में प्रयोग ला सकते हैं और मिट्टी की अन्य आकृत्तियाँ भी चलन में हैं जैसे मिट्टी की चेन वाले दीए, घण्टी, लालटेन और मिट्टी के सूर्य, चन्द्रमा और टेरा कोटा की पेन्टिग जैसे मिट्टी के दीवार पर लगने वाले वॉल पीस।

मिट्टी के बर्तनों को हम रंग कर, कुछ सजावटी चीजों से व काँच, धागे कागज आदि से सजा सकते हैं। मिट्टी के बर्तनों को सजाने के लिए निम्न तरीका अपनाए :-

- सबसे पहले अपना बर्तन चुन लें (उपयोग अनुसार)। जैसे कि फूलदान बनाना है या एक शो पीस बनाना है।
- बर्तन को जाँच ले कि टूटा हुआ न हो।
- अब हम बर्तन को रंगों से सजाने के लिए- आयल पेन्ट, ब्रश, प्राइमर, पुराना कपड़ा, रंग प्लेट्स, रेगमाल कागज आदि एकत्रित कर लेंगे। सबसे पहले बर्तन को कपड़े से रगड़े फिर रेगमाल से ताकि कोई अतिखुला मिट्टी, कचरा, चिकनाई आदि हट जाए। फिर हम

ब्रश से बर्तन पर प्राइमर लगाएगें व सुखाएगें। सुखाने के बाद मनचाहे रंग व डिजाइन में रंग कर सूखने के लिए रख देंगे। अगर कहीं फैल जाए तो पुराने कपड़े से पौछ दें।

- बर्तन को रंगने के बाद हम उस पर फेविकाल की सहायता से सजावटी सामान जैसे कि काँच, डोरी, मोती, सीप आदि चिपका सकते है। कागज से भी कोई डिजाइन काट कर चिपका सकते हैं।
- सजावट के बाद बर्तन को उचित समय के लिए सुखाएं व अपने घर में सजाए।
- बाजार में मिलने वाली चमकीली ट्यूब भी काम में ले सकते हैं।
- बर्तन को सजाते समय उसे कम से कम उठाएं व ध्यान रखें कि बर्तन अथवा रंग गिर ना जाए।
- ऐसे सजावटी कार्य करते समय छोटे बच्चों को पास न आने दें।

15.4 दीवार की सजावट(Wall Decoration)

दीवारों से घर नहीं बनता परन्तु घर के लिए दीवारें बहुत जरूरी है। आज के युग में जब चारों और सजने संवरने की धूम मची है तो भला घर इससे अछूता कैसे रहे। घर को अन्दर व बाहर दोनों तरफ से सजाया जा सकता है। इस पाठ में पहले हम आंगन सजाने की बात कर चुके हैं और अब हम दीवारों को सजावट की बात करेंगे।

दीवारों को सबसे पहले प्राइमर लगा कर चिकना बनाया जाता है फिर उस पर रंग किया जाता है। आज कल बाजार में भिन्न प्रकार के रंग और बनावट वाले रंग मिलते हैं। जिन से कमरे की दीवारों का एक नया ही रूप दिखता है। अब जब हमारी दीवारों पर रंग रोगन हो गया है तो हम उसे दूसरी चीजों के प्रयोग से और भी सजा सकते है जैसे कि तस्वीरें, घड़ी, लाईट, शॉ-पीस आदि।

दीवार की सजावट

1) तस्वीरें - दीवार पर तस्वीर का चुनाव कमरे की उपयोगिता उसके रंग व उसके आकार पर निर्भर करता है। अगर आपका कमरा छोटा है व चटक रंग वाला अतिथि कक्ष है, तो आप प्राकृतिक तस्वीरें (फूल, पेड़, नदी, झरने आदि) लगा सकते है, पारिवारिक तस्वीरे लगा सकते है व प्रशस्ति पत्र आदि भी फ्रेम करके लगवा सकते हैं।

2) घड़ी- आप दीवार पर कमरे की आवश्यकतानुसार छोटी या बड़ी सजावटी दीवार घड़ी लगवा सकते हैं। घड़ी को हम लगभग हर कमरे में लगा सकते हैं।

3) दर्पण- हम शयनकक्ष में दर्पण भी लगा सकते हैं जिससे कि कमरे की दीवार खाली न लगे और दर्पण होने से प्रकाश भी परावर्तित होता रहे। दर्पण को हम अतिथि कक्ष में नहीं लगा सकते।

4) शो-पीस- बाजार में कई प्रकार के प्लास्टि, लकड़ी, जूट, काँच, कपड़े आदि के बने दीवार पर लगने वाले शो-पीस मिलते हैं। हमें बस अपने कमरे को ध्यान में रखते हुए इनका चयन करना है।

5) इन सब के अलावा दीवार पर हस्त निर्मित कला कृतियाँ भी लगा सकते हैं और सुन्दर डिजाइन के वाल पेपर भी आप की दीवारों को सजाने का काम कर सकते हैं।

6) थोड़े समय बाद अपनी दीवारों की सजावट में बदलाव करते रहना चाहिए। ऐसा करने से नयापन अनुभव होता है और एक अनोखी ऊर्जा प्राप्त होती है।

7) पूजा कक्ष के लिए हम देवी देवताओं की तस्वीरों व धार्मिक चिन्हों का चुनाव कर सकते हैं।

8) रसोई कक्ष की दीवारों को सजाने के लिए हम फल, सब्जी या चाय की केतली वाली टाइलें लगा सकते हैं। व भोजन से संबंधित विचार भी फ्रेम करवा कर लगा सकते हैं।

9) स्नान कक्ष आदि में आप दीवार पर दर्पण व प्राकृतिक दृश्य की तस्वीर लगा सकते हैं। स्नानघर में भी टाइलें (डिजाइन वाली) लगाकर हम दीवारों को सजा सकते हैं।

15.5 सफाई एवं चमकाना(Cleaning and Polishing)

घर में ऐसी अनगिनत चीजें हैं जिन्हें नियमित रूप से साफ करना व चमकाना आवश्यक है। साफ करने से घर तो सुन्दर लगता ही है और कई पुरानी चीजों से मुक्ति मिल जाती है। जिन चीजों को साफ करते है और पॉलिश करते हैं उनकी उम्र भी बढ़ जाती है। घर में मिलने वाली चीजें सब अलग होती है, जैसे धातु, काँच, प्लास्टिक, चमड़ा, लकड़ी आदि, तो उनका रख रखाव भी अलग होता है। आगे हम एक-एक चीज के बारे में पढ़ेगें।

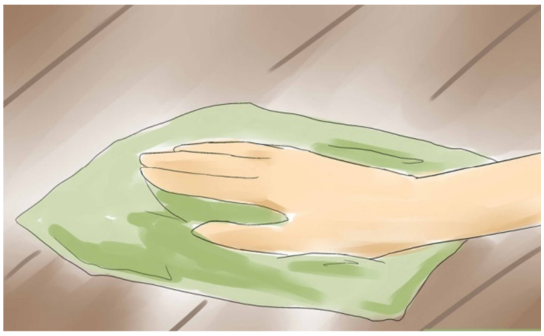

पौछना

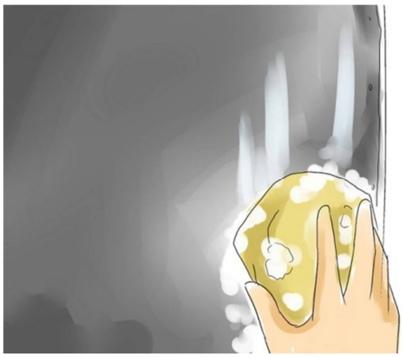

गीले कपड़े से साफ करना

दाग छुड़ाना

पॉलिश के लिए

धातु- घर के बर्तन मुख्य तौर पर धातु के बने होते हैं। स्टेनलैस स्टील, एलम्युनियम, पीतल, तांबा, लौहा, चांदी आदि धातु रसोई घर के लिए प्रयुक्त होती है। इन सभी का रखरखाव थोड़ा अलग है।

1) स्टेनलैस स्टील- स्टील के बर्तन ही सबसे ज्यादा प्रयोग में आते हैं। चिकनाई वाले बर्तन को साबुन के गर्म पानी से धो सकते हैं। इन पर रगड़ने के लिए आप नारीयल की जूट या स्टील की जाली काम में ले सकते हैं। चिपके हुए खाने को आप स्टील जाली व पाऊडर विम की सहायता से हटा सकते हैं। बहुत गन्दे स्टील के बर्तन के अन्दर सिरका मिश्रित पानी को आधा घण्टा उबालने से बर्तन अन्दर से चमक जाएगा। सबसे बाद में बर्तन को ठण्डे पानी से धोकर साफ पकड़े से पौंछकर रखें।

2) एल्युमिनियम- एल्युमिनियम के बर्तन चमकाने के लिए हम राख (बारीक), उबले आलू या सेव के छिलकों से रगड़कर साफ कर सकते हैं। इन बर्तनों पर क्षार या नमक का प्रयोग इन्हें काला बना देता है। ज्यादा गन्दे बर्तनों को आप इमली या नींबू के रस से नारीयल की जूट या स्टील की जाली की सहायता से साफ कर सकते हैं। गर्म साबुन मिले पानी से इन्हें धोकर फिर साफ पानी से धोकर नम कपड़े से पौंछकर रखें।

3) पीतल- पुराने समय में पीतल के बर्तनों का चलन था। पीतल के भगोनें व थाली काम में लिए जाते थे। पीतल के भगोने में कलई करवाई जाती है क्योंकि पीतल खट्टे खाद्य पदार्थों से शीघ्र प्रतिक्रिया करता है। नम स्थानों पर रखने से पीतल पर धब्बे दिखने लगते हैं जिन्हें हम नींबू या इमली रगड़कर साफ कर सकते हैं। कलई वाली हिस्से को हम स्टील की तरह रख सकते है। आजकल बाजार में पीतल के बर्तनों को चमकाने के लिए पीताम्बरी पाउडर मिलता है जिसके प्रयोग से पीतल के बर्तन नए जैसे चमक उठते हैं।

4) तांबा- तांबा खाने के बर्तनों में काम कम ही लिया जाता है। तांबा से बने बर्तनों को सजाने के काम ही लिया जाता हैं। तांबा पर बहुत जल्दी ही कालापन आ जाता है इसे हटाने के लिए हमें इमली के पानी से तांबे को रगड़कर धोना चाहिए। ईट का चूरा भी नारीयल की जूट की सहायता से लगाकर तांबे को चमकाया जा सकता है। इसके अलावा सिरका और नींबू के रस से भी तांबा साफ किया जा सकता है। ज्यादा गन्दे

बर्तन को सोड़ा के घोल से भी साफ किया जा सकता है। इनसे उपचार करने के बाद, आप बर्तन को सादे पानी से धोकर 'ब्रासो' पॉलिश लगाकर चमकाएँ।

5) लोहा- लोहे के बर्तन में खाना बनाने से हमारे शरीर में लौह तत्व की पूर्ति होती है। लौहा भी खट्टी चीजों के सम्पर्क में आने से काला पड़ जाता हैं। सबसे पहले कागज की सहायता से चिकनाई हटाएँ फिर स्टील की जाली और राख से रगड़कर बर्तन धोएँ। फिर साफ पानी से धोकर सूखे कपड़े से पौंछकर हल्का सा तेल लगाकर रखें जिससे कि बर्तन में जंग न लगे।

6) चाँदी- दूसरी धातु की अपेक्षा चांदी थोड़ी मंहगी धातु है और कोमल भी है। चाँदी से बर्तन, सजावटी सामान व गहने बनए जाते हैं। चाँदी को बहुत ध्यान से रखना पड़ता है। साबुन के गर्म पानी से चाँदी आसानी से साफ हो जाती है। चाँदी को कोलगेट पाऊडर, स्पिरिट और सोड़ा मिश्रित पानी से भी साफ किया जा सकता है। चाँदी के बर्तन को साबुन आदि से धोने के बाद साफ पानी से धोकर सूखे कपड़े से पौछंकर "सिल्वो" पॉलिश से चमकाएँ।

2. काँच (Glass)- घर की खिडकियों में काँच लगाए जाते हैं। घर में काँच के बर्तन फूलदान व शो-पीस भी होते हैं। काँच ऊष्मा को भली प्रकार अवशोषित कर सकता है। काँच पर चिकनाई लगी हो तो उसे साबुन के गर्म पानी से साफ किया जा सकता है। रोज के लिए काँच को चमकाने के लिए सिरका मिले पानी से धोकर सूखा कर, मुलायम सूखे कपड़े से पौछंकर रखना चाहिए। कांच को साफ करते समय उठाने व रखने में सावधानी बरतें।

3. प्लास्टिक(Plastic)- आज के युग में हर घर में प्लास्टिक का अपना महत्व है। घर में बहुत ज्यादा स्थानों पर प्लास्टिक का प्रयोग देखा जा सकता है। घर में प्लास्टि के बर्तन, टेबल, कुर्सी, खिलौने, शो पीस आदि बहुत से सामान होते हैं। प्लास्टि का चलन इसलिए ही बढ़ा है कि यह आसानी से साफ हो जाता है। प्लास्टिक मजबूत, रंगीन, पानी, बिजली व गर्मी की मार सह सकता है।

प्लास्टिक को साफ करने के लिए केवल गीला कपड़ा ही काफी है। अगर ज्यादा ही गंदा है, आपका सामान, तो आप साबुन व गर्म पानी को काम में ले सकते हैं। ध्यान रहे कि प्लास्टिक को जाली या पत्थर आदि रगड़ा न जाए। क्योंकि इसमें प्लास्टिक पर निशान बन जाते है।

4. चमड़ा(Leather)- मानव ने सबसे पहले चमड़े को ही अपना आवरण बनाया था। इस बात से हम यह जान जाते है कि मानव के जीवन में चमड़े का कितना महत्व है। घर में बहुत सी चीजें चमड़े की बनी हुई होती हैं जैसे- जूते, पर्स, बेल्ट, सोफा, बैग आदि। चमड़ा वैसे तो बहुत ही मजबूत होता है परन्तु दाग-धब्बे लग जाने पर इसे साफ भी करना पड़ता है।

चमड़ा पानी लग जाने से सिकुड़ जाता है और सूखने पर उसकी शक्ल बदल जाती है। चमड़े को हमें यथा सम्भव पानी से बचाना होगा। कोमल साबुन का घोल बनाकर स्प्रे बोतल में भर लें और सूखे कपड़े पर छिडक कर दाग वाली जगह पर मल लें। फिर उस जगह को कुदरती सूखने के लिए छोड दें। धूप में नहीं रखें। सबसे अन्त में चमड़े की क्रिम को पॉलिश कर दें।

5. लकड़ी (Wood) - घरों में लकड़ी का प्रयोग भी काफी होता है। टेबल, कुर्सी, दरवाजे, पंलग, सोफा, अलमारी आदि लकड़ी से बनी चीजों का प्रयोग हम रोजमर्रा में करते हैं। लकड़ी भी काफी देखभाल मांगती है।

लकड़ी की सतह पर कभी भी गर्म चीजें ना रखें। चिकने व गंदे लकड़ी के फर्नीचर को साफ करने के लिए सिरके का घोल बनाकर कपड़े की सहायता से उसे लाकर साफ किया जा सकता है। फिर लकड़ी को सूखे कपड़े से पौंछ दे। ज्यादा चिकनाई हटाने के लिए कास्टिक सोडा काम में लेना चाहिए। कास्टिक सोडे का पेस्ट बनाकर रूई की सहायता से लगाकर दाग छुड़ाएँ।

इन सब के अलावा आप आयोडिन (लिक्विड) और अलसी के तेल से भी दाग छुड़ा सकते हैं। बहुत अधिक गंदा हो जाने पर लकड़ी को पहले रेगमाल कागज से रगड़कर साफ करें। फिर जो रेखाएँ या छेद हो उन्हें मोम से भरें उसके बाद उसे सूखने दें।

सबसे अन्त में फूलालेन कपड़े की सहायता से 'मेशन' पॉलिश रगड़कर लकड़ी को चमकाएँ।

लकड़ी को खराब होने से बचाने का एक अन्य प्रचलित तरीका है रंगना। हमारे घर में खिड़की दरवाजों पर इसी वजह से रंग किया जाता है।

15.6 सारांश (Summary)

उपरोक्त पाठ पढ़कर हमने जाना कि कैसे घर में प्रयुक्त होने वाली चीजों की साफ सफाई करके हम उन्हें लम्बे समय तक प्रयोग कर सकते हैं। बहुत सारी बातें ऐसी होती है जो हमें मालूम ही नहीं होती और हम गलत तरीकें से उस काम को करते रहते हैं। उपर्युक्त पाठ पढ़ने के बाद विद्यार्थी रंगोली, अल्पना व गृह सज्जा के बारे में कुशल जानकार बन सकेगा। विद्यार्थी हर प्रकार की वस्तु की साफ सफाई भी कर पाएगा।

15.7 स्वमूल्यांकन प्रश्न (Self Evaluation Questions)

प्र. 1 फर्श सजावट के अन्तर्गत रंगोली पर छोटा निबंध लिखें।

प्र. 2 मिट्टी से बने फूलदान को सजाने की प्रक्रिया लिखें।

प्र. 3 घर में अतिथि कक्ष की दीवारों को सजाने के लिए आप किसका चयन करेगें।

प्र. 4 टिप्पणी करें निम्नलिखित की साफ-सफाई पर

प्र. 5 काँच, चमड़ा व चाँदी।

15.8 सदंर्भ सूची (References)

1. Handbook for Home Makers– Premlata Mullick
2. Home Science– Vijay Laxmi Yadla & Sucheta Jasraj
3. गृह प्रबन्ध - डॉ. मंजू पाटनी